RASTRBHASHA 1950 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112530

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.F. 5414

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी १९५०

तपस्या अिस जीवनकी सबसे बड़ी कला है। जो सु
जीवन जीना जानते हैं, वही श्रेष्ठ कलाकार है।

—महात्मा गांधी

जो कमजोर, परावलंबी और आगा पीछा करनेवा
हैं वे आत्म-निर्भर रहनेवालोंके अुदार अहंकारको समझ न
सकते। आत्म-निर्भर मनुष्यको अिस बातकी खुशी न
रहती कि अुसे राजमुकुट मिल गया, बल्कि अिस ब
की खुशी रहती है कि मुझमें राजमुकुट प्राप्त करनेकी श
है।

—शेक्सपीयर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[illegible] जीवन है।

—रशाळ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय				पृष्ठ
१. नया वर्ष (कविता)	...	...	...	९९
२. कहानीपर दो दृष्टि	...	...	...	१००
३. जीवन और कविता	....	....	...	१०५
४. अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन		...	....	१०९
५. हमारी नजरोंमें	...	....	...	११६
६. अ. भा. द्वितीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन		...	....	११८
७. प्रान्तीय हलचलें	...	....	....	११९
८. परीक्षा-विभाग	...	....	....	१२५

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है । वी. पी से अंक नहीं भेजा जाता । मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही राष्ट्रभाषा भेजा जा सकेगा ।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक हर महीनेकी १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है । अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये । अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें ।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक-नम्बर साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये ।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि राष्ट्रभाषामें प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें । अस्वीकृत लेखोंको टिकट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा । लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112530
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]
सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, जनवरी—१९५० [अंक ३

नया वर्ष

: श्री. अनिलकुमार, साहित्यरत्न :

नया वर्ष है आया !
आज सूर्य की नअी किरण में, नया वर्ष मुसकाया !
आओ भाअी बाँह बाँधकर
हँसकर सबके गले मिलें,
अेक डालपर झूलें, जैसे—
हिले मिले कुछ फूल खिले ।
नये देशकी नअी दिशामें
नया हर्ष लो छाया !
नया वर्ष है आया ।
भले-बुरे दिन-दिनकी गठरी ले
अेक वर्ष वह लौट गया,
जाने कितनी नअी अुमंगें
लेकर आया वर्ष नया ।
नये गीतकी नअी तान में
नया राग है आया !
नया वर्ष है आया !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
112530

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी

कहानीपर दो दृष्टि

(१)

मनुष्यकी अपनी बात दूसरेसे कहने और दूसरेकी सुननेकी प्रवृत्ति ही कहानीके मूलमें है। भावोंके आदान-प्रदानके सहारे ही हमारे कहानी-साहित्यका जन्म हुआ और अिसके रूपके परिष्कारके साथ साथ ही हमारा कहानी साहित्य भी परिष्कृत होता गया।

कहानीका आदि स्वरूप हमें घरमें दादी और नानीके "अेक था राजा और अेक थी रानी" द्वारा प्रारंभ की जानेवाली कहानियोंमें देखनेको मिलता है। धीरे धीरे कहानीका यह रूप हमारे अपने ज्ञानके परिवर्धन अेवं परिष्कारके साथ ही परिवर्धित अेवं परिष्कृत होता गया।

हमारे सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं। अिनमें भी ऋग्वेद सबसे अधिक पुराना है। अिसमें शुनःशेप कथा, यम-यमी संवाद आदि कअी कहानियां पाअी जाती हैं। अुपनिषद् अेवं पुराण भी कथा-साहित्यके अक्षय भंडार हैं। पुराणका तो अर्थ ही है 'प्राचीन कथा'। संस्कृतमें पंचतंत्र तथा हितोपदेशमें दी हुअी कहानियोंसे हमें पता चलता है कि राजाअोंके बालकोंको राजनीतिके दुरूह सिद्धांतोंको समझानेके लिये अिनमें कहानियोंका अुपयोग किया गया है।

प्राचीन कालमें भारत धन धान्यसे परिपूर्ण था। जीवनकी जटिल समस्याअें अितने अुलझे हुअे रूपमें सामने नहीं आअी थीं अतः मनोविनोदके लिये कहानियोंका अुपयोग किया जाता था और वे प्रायः लंबी भी होती थीं। किन्तु जैसे जैसे हमारी आवश्यकताअें बढ़ने लगी, जीवन जटिल बनता गया और हमारे पास समयकी कमी होती गअी वैसे वैसे ही कहानीका कलेवर छोटा होता गया और अब तो वही कहानी सबसे अधिक पसंद की जाने लगी है जो अेक ही बैठकमें समाप्त की जा सके।

हिन्दी कथा-साहित्यका अितिहास अधिक पुराना नहीं है। संस्कृत कहानियोंके भाषांतरसे अुसका श्रीगणेश हुआ और अठारहवीं शताब्दीमें हिन्दीकी मूल कहानी लिखना प्रारंभ हुआ। अिंशाअल्लाहखांकी 'रानी केतकीकी कहानी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी सर्व प्रथम मौलिक कहानी है। अठारहवीं शताब्दीके अंतमें राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' ने "राजा भोजका सपना" और भारतेंदु हरिश्चंद्रने "आपबीती और जग-बीती" की रचना की। अुन्नीसवीं सदीमें 'सरस्वती'में कअी कहानियां प्रकाशित हुअीं जिनमें किशोरीलाल गोस्वामीकी 'अिन्दुमती' तथा प्रसादजीकी 'अिन्दु'में प्रकाशित 'ग्राम' कहानी प्रसिद्ध हैं।

बीसवीं सदीके अुत्तरार्धमें चन्द्रधर शर्मा गुलेरीकी प्रसिद्ध कहानी 'अुसने कहा था' प्रकाशित हुअी और सं. १९७३ से प्रसिद्ध कहानी लेखक प्रेमचंदजी की कहानियां सामने आअीं। धीरे धीरे कहानी साहित्यके महत्व-वृद्धिके साथ साथ ही लेखकोंमें भी अुत्तरोत्तर वृद्धि होती गअी। आज तो हिन्दीके कथा-साहित्यने जीवनके प्रत्येक अंग अेवं भावनाका दिग्दर्शन करनेका सफल प्रयास किया है।

सर्वश्री सुदर्शन, जैनेंद्र कुमार, चतुरसेन शास्त्री, कौशिक, रायकृष्णदास, विनोद शंकर व्यास, भगवतीप्रसाद बाजपेयी, पांडेय बेचन शर्मा 'अुग्र', सियारामशरण गुप्त, सद्गुरुशरण अवस्थी, श्रीनाथसिंह, वृंदावनलाल वर्मा, शिवपूजनसहाय, चंडीप्रसाद हृदयेश, श्रीराम शर्मा, स्व. सुभद्राकुमारी चौहान, अुषादेवी मित्रा, सत्यवती मलिक आदि आधुनिक कहानी लेखकोंमें प्रमुख हैं।

कहानीकी कहानीके अिस विहंगावलोकनके बाद कलाकी दृष्टिसे थोड़ा विचार करेंगे।

कहानीका पढ़ना प्रारंभ करनेके पहले हमारा ध्यान शीर्षकपर ही जाता है। अतः कहानीका शीर्षक हमेशा कहानीके विषयका निर्देशक होना चाहिये। सुंदर शीर्षक कहानीकी ओर आकर्षित करनेमें सहायक होता है। शीर्षक हमेशा छोटा अेवं अुपयुक्त होना चाहिये। 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी' के समान लंबे शीर्षक न तो आकर्षक ही होते हैं और न अुपयुक्त ही।

कहानीमें जिन घटनाओं अथवा विषयोंका वर्णन रहता है वही कहानीकी कथा-वस्तु कहलाता है। कथा-वस्तु जीवनकी प्रतिदिनकी घटनेवाली घटनाओंमेंसे ही चुना जाना अधिक अच्छा होगा। कहानीके लिये कथा-वस्तुकी कमी नहीं। प्रतिदिन हम कअी अैसी घटनाओंको देखते हैं कि जिनपर सहजहीमें कहानी लिखी जा सकती है। वास्तवमें अिन घटनाओंको समझकर अिनपर ढांचा खड़ा करनेकी शक्ति होनी चाहिये।

"कथा-वस्तुको निर्दिष्ट स्थानतक ले जानेमें प्रयत्नशील रहनेवाले व्यक्ति पात्र कहलाते हैं"। चूंकि कहानीका कलेवर छोटा होता है अतअेव अुसमें अधिक पात्रोंकी गुंजाअिश नहीं है, अेक या दो ही मुख्य पात्र हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथोपकथन कहानीकी जान है। कथोपकथन स्वाभाविक तथा पात्रोंके अनुकूल ही होना चाहिये। कहानीमें लंबे-लंबे तथा अनावश्यक वाक्योंकी आवश्यकता नहीं। कथोपकथन अकदम सुगठित होना आवश्यक है।

घटनाओंके घटित होनेके स्थान और समयको देशकाल कहते हैं। कहानीमें—विशेषकर अैतिहासिक-स्वाभाविकता लानेके लिये देश कालका ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा विरोधी बातोंका अेक ही समय अुल्लेख करके लेखक हास्यका विषय बन जायगा।

कहानी लिखनेकी मुख्य तीन प्रकारकी शैलियां हैं। अेक तो अैतिहासिक जिसमें लेखकका कहानीमें वर्णित घटनाओंमें कोअी सक्रिय भाग नहीं होता। तटस्थ दर्शककी भाँति वह घटनाओंका वर्णन करता है। दूसरी चरित्र प्रधान जिसमें पात्र स्वयं अपनी कहानी कहता है और तीसरी है पत्र शैली जिसमें कहानीका कथानक पत्रोंके रूपमें आगे बढ़ता है।

कुछ लोग अुपन्यासको कहानीका विकसित रूप मानते हैं और कहानीको अुपन्यासका संक्षिप्त रूप। किन्तु बात अैसी नहीं है। न तो कहानीका विकसितरूप अुपन्यास ही है और न अुपन्यासका संक्षिप्त रूप कहानी ही। कहानी और अुपन्यासमें केवल आकारका ही नहीं वरन् प्रकारका भी अंतर है। कहानीमें जीवनके किसी अेक अंगका ही वर्णन होता है और अुपन्यासमें जीवनके सभी अंगोंका दिग्दर्शन कराया जा सकता है, कराया जाता है।

जीवन संबंधी हमारे दृष्टिकोणमें परिवर्तनके साथ साथ ही कहानीके टैकनिकमें भी परिवर्तन होता जा रहा है। अब अुपदेशात्मक अेवं लंबी कहानियाँ पसंद नहीं की जाती अपितु वे ही कहानियाँ अधिक पसंद की जाती हैं जो पढ़ी जानेके बाद विचार करनेके लिये, चिंतन करनेके लिये हमारे सामने अेक समस्या छोड़ जाती हैं।

हर्षका विषय है कि हिन्दीका कहानी साहित्य नये नये सफल अुदीयमान लेखकोंकी कृतियोंसे अितना भरा पूरा होता जा रहा है कि अेक दिन वह अपने कथा साहित्यके बलपर विश्व साहित्यमें आदरणीय स्थान प्राप्त करनेमें समर्थ होगा।

—श्री मदन मोहन शर्मा, बी. अे. 'साहित्यरत्न'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

कहानी साहित्यका प्रधान अंग है। आजकल कहानीने साहित्य जगतमें अेक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है जिसके लोकप्रिय होनेका प्रधान कारण आजकलके जीवनकी व्यस्तता, और समयाभाव है। समयाधिक्य न होनेकी वजहसे, विस्तृत अुपाख्यानों व अुपन्यासोंके पन्ने अुलटने और अलिफलैलाके किस्से लेकर बैठ जानेका समय अब नहीं रहा। संघर्षमय जीवनके कार्य व्यवहारोंसे अूबे हुअे हृदयको, आनन्दित अेवं व्यवस्थित बनानेको, कहानी जैसी सरल, लघु तथा रोचक वस्तु अपनाना सर्वोत्तम ही नहीं, अचूक अुपाय है।

कहानीका आकार प्रायः छोटा होना चाहिये। चूँकि कहानीकी रचना जीवनके किसी अेक पहलू विशेष अथवा किसी अेक घटना विशेषको लेकर की जाती है, और अुसमें अति विस्तृत विश्लेषणकी गुंजायश नहीं रहती, अतअेव कहानी में अेक भी अप्रासंगिक अेवं अनावश्यक शब्द न आना चाहिये। अन्यथा, वह कहानी, कहानी नहीं, अुपन्यासकी-सी प्रतीत होगी। यद्यपि छोटी होनेसे ही कहानी कहानी नहीं बन जाती, न कि बड़ी होनेसे वह अुपन्यास ही कहलाती है, अुसमें कलाकी दृष्टिसे और भी अनेक गुण अपेक्षित हैं, तथापि कलेवरकी संक्षिप्तता आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

कहानीमें कल्पनाकी प्रचुरता कम, अनुभूतियोंकी मात्रा अधिक होनी चाहिये। आजकल कहानी मानव-जीवनके बहुत ही समीप आ चुकी है। कहानीको मनुष्य-जीवनका दर्पण भी कहा जा सकता है। अतः अुसमें विभिन्न अनुभूतियोंका अंकन होना ही चाहिये।

अुच्च श्रेणीकी व सुंदर कहानी वही हो सकती है, जिसमें मानव-जातिके दुःख-सुख, लाभालाभ, शान्ति-अशान्ति, कोमलता-कठोरता, हास्य-रुदन सबका पूर्ण चित्रण किया गया हो। यही नहीं, कहानीसे मानव-हृदयको आनन्द प्राप्त होना भी पूर्ण अपेक्षित है। कहानीमें मनोरंजनका पुट भी होना चाहिये। मानव हृदय जब संघर्षमय जीवनसे अूब जाता है, तब वह न्यूनातिन्यून समयमें अधिकाधिक मनोरंजन चाहता है अतअेव वह कहानी जैसी छोटी से छोटी सरल अेवं आनन्ददायक कला-वस्तुके सहारे मनोरंजन करना चाहता है।

कहानीका शीर्षक छोटा, और अुसका पहला ही वाक्य और अनुच्छेद मनको आकर्षित कर लेनेवाला हो, जो अन्त तक पाठकको मुग्ध किये रहे। अुसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ चटपटापन हो, कुछ विकास हो और हो अुसमें हृदयको तल्लीन करनेकी श शक्ति । अुसमें कुछ न कुछ तत्व भी हो । क्योंकि तत्वहीन कहानीसे मानसि तृप्ति नहीं हो सकती । वही कहानी सफल कही जाती है, जिसमें अुपरोक्त स बातें पूर्ण रूपमें आ गयी हों ।

यदि कहानी आकाश-पातालकी न होकर स्वाभाविक हो, और अुस शुभ संकेत अुच्च आदर्शकी ओर हो, तो कलाकी दृष्टिसे अुस कहानीका सौन्द और मूल्य और भी बढ़ जाता है ।

सफल कहानी वही कहलाती है जो अन्ततक पाठकको अपने साथ चले, और समाप्त हो जानेपर भी पाठकको अुसका परिणाम सोचनेको बाध्य करे।

पात्रोंके अनुकूल भाषा शैलीका प्रयोग भी अत्यावश्यक व वाँछनीय है अुनके आचार-विचार, अुनके मानसिक धरातलके अनुसार होने चाहिये । अन्यथ सारा संवाद कृत्रिम-सा प्रतीत होने लगेगा ।

कहानीकी भाषा शैली भी रोचक, मनमोहक तथा आकर्षक हो चाहिये । शैलीमें प्रसाद गुण अत्यावश्यक है । अुचित मुहावरों व अलंकारों स्वाभाविक प्रयोगसे सुसज्जित, प्रभावोत्पादक अेवं हृदयस्पर्शी भाषा शैली पाठकको मुग्ध किये बिना नहीं छोड़ती । अतः अैसी ही मुहावरेदार अेवं अलंकृ भाषाका समुचित प्रयोग कहानीमें करना चाहिये ।

कहानीका साहित्य-जगतमें अुच्चतम स्थान है, जिसमें तो कोअी सन्दे ही नहीं । कहानी पढ़कर हम फूले नहीं समाते, हर्षयुत हमारा मन-मयूर ना अुठता है । कहानीसे हमारी मानसिक तृप्ति हो जाती है, हम आनन्दविभोर हो जाते हैं ।

—श्री. रूपकुमार जेठानी "घायल"
रा. भा. 'कोविद'

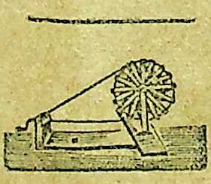

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन और कविता

:श्री. रामेश्वर दयाल दुबे, अेम. अे. साहित्यरत्न:

मनुष्य सौन्दर्यका प्रेमी है। सुन्दरके प्रति आकर्षित हो जाना अुसका सहज स्वभाव तो है ही किन्तु वह अितनेपर ही सन्तोष नहीं कर लेता। अपनी मनःतृप्तिके लिये वह सौन्दर्यकी सृष्टि भी करता है। अपने सभी कार्योंमें सभी व्यवहारोंमें अुपयोगितासे अूपर अुठकर वह सौन्दर्यके दर्शन करना चाहता है। सौन्दर्यप्रियताकी यह मनोशक्ति ही, कविताका; सभी कलाओंकी जन्मदात्री है।

मनोगत भावों और विचारोंको व्यक्त करना मनुष्यकी अेक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। भाव व्यक्त करनेमें अुसे सन्तोष मिलता है और न कर सकनेकी दशामें वह बेचैनी अनुभव करता है। वाणीका वरदान अुसे चिरकालसे प्राप्त है ही जो भावाभिव्यक्तिका सबसे सरल साधन है। वाणीके सहारे भाषा द्वारा व्यक्त किये गये भाव और विचार ही संकलित रूपमें साहित्यकी संज्ञा पाते हैं।

हृदयपर किसी बात अथवा घटनाका प्रभाव पड़नेसे, अुसमें जो विकार पैदा होते हैं, अुन्हें भाव कहते हैं। हृदय-मानसमें ये भाव लहरियां प्रायः लहराया करती हैं परन्तु जब किसी कारणसे हृदयके भाव भावावेशमें परिणित होते हैं, हृदयमें नहीं समाते; तब वे शब्दोंका रूप धारण कर बाहर आनेका प्रयत्न करते हैं; कभी कभी तरल आँसुओंमें ढलकर बह जाते हैं।

कविता साहित्यका अेक अंग और सर्वोत्तम अंग है। भावमय हृदयके अुद्‌गारोंका ही दूसरा नाम कविता है।

यद्यपि मनुष्य संसारमें जन्म लेता है, पर यदि देखा जाय तो; वास्तवमें मनुष्य ही अेक संसारको जन्म देता है। भूगोल और खगोलकी दृष्टिसे अिस व्यापक संसारसे अुसे अुतना कुछ लेना देना नहीं रहता; जितना अुसे अपने स्वनिर्मित संसारसे। जीवनके साथ-साथ मनुष्यका यह स्वनिर्मित संसार विकसित होता जाता है। शिशु जब कुमार बनता है; तब अुसका संसार खिलौनेकी दुनियाकी सीमाको पार कर जाता है। आगे बढ़कर युवक तो अपने ही जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवित सहृदय पात्रोंको लेकर अपने संसारको नया रूप देता है। यह क्रम चालू ही रहता है और जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपना अेक अलग संसार रचकर अुसमें जीता है। यह अुसका अपना संसार ही अुसके लिये सत्य है।

मनुष्यका यह अपना लघु संसार भी अपनेमें भिन्न-भिन्न रूप; आधार और तथ्य रखता है। मनुष्य समय-समयपर अुनसे प्रभावित होता है। कभी वह अपने ही जैसे व्यक्तियोंके सुखसे आल्हादित होकर नाच अुठता है तो कभी किसीके दुखसे द्रवीभूत होकर करुणाकण बिखेरता है। राग रोष, प्रेम प्रतिकार, आनन्द, विषाद, तृष्णा, और तृप्तिकी विभिन्न भाव लहरियाँ अुसके मानसमें अुठा और मिटा करती हैं। भोले-भाले बालकोंकी धूलभरी क्रीड़ाअें, कामिनीकी कमनीय कनीनिकाअें, ममताकी मूर्ति माँकी स्नेहमयी भावनाअें यदि अुसे अेक ओर भाव विभोर कर देती हैं, तो दूसरी ओर दीन-हीन दलितोंका करुण क्रन्दन, करुण मूर्ति विधवाका विदग्ध विलाप, स्वेच्छाचारी निरंकुश राज्यमें पददलित प्रजाकी असहाय अवस्था अुसे आठ-आठ आँसू रुलाती हैं। सहृदय व्यक्ति अुन भाव-धाराओंमें बिना बहे रह भी कैसे सकता है। मनुष्य मात्र बहता है क्योंकि अुसके वामकक्षमें धकधक करनेवाला हृदय होता है।

जब हृदय-भाव ही कविताका आधार है तब मनुष्य मात्रको कवि कहा जा सकता है क्योंकि वह हृदयवान है ही, अुसे मौन कवि कहना होगा। मुखर कवि अुससे थोड़ा भिन्न है ही। जहाँ सहृदय व्यक्ति किसी घटनासे प्रभावित होकर नव भावोंकी अनुभूति स्वयं करता है, मुखर कवि अुन नवीन भावोंका अनुभव तो करता ही है, अुन्हें शब्द दान देकर, अुन्हें अपनी वाणीमें व्यक्त कर अन्य व्यक्तियोंको भी अुसी अनुभूतिका अनुभव कराता है। कविके अिन भावोंको अपनाकर अक्षर सचमुच अक्षर बन जाते हैं। भाव और भाषाके सुन्दर संगीतमय गठबन्धनको ही लोग कविता कहने लगे हैं। सफल कविता कवि-हृदयकी भाव-भूमिसे अुठकर दूसरेके हृदयमें जब पहुँचती है तब वहाँ भी वैसी ही भाव सृष्टि कर देती है।

प्रारम्भसे प्रायः व्यक्ति अपने स्वनिर्मित संसारकी संकुचित सीमामें ही चक्कर लगाता रहता है। किन्तु मानवका जन्म किसी पिंजड़ेमें बन्द रहनेके लिये नहीं हुआ है। वह अपने जीवनके प्रत्येक विभागमें विकास करना चाहता है। जीवनके विकासमें ही जीवनका वास्तविक तत्व निहित है। विकासहीन जीवन तो मृत्युका ही दूसरा नाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्येतर बाह्य सृष्टिके साथ भी मनुष्यका अुतना ही सहज और सरस सम्बन्ध है जितना अपने ही जैसे मनुष्यसे। दूरस्थ 'चन्दा मामा'को जब अबोध हाथ नहीं पकड़ पाते तब पासके दीपककी हंसती हुअी ज्योतिको ही अुसकी कोमल अँगुलियां पकड़ना चाहती हैं। बिल्लीके बच्चोंपर शिशु अवस्थामें ही मानवका प्यार बरस पड़ता है। अिस विस्तृत विश्वके कण-कणके लिये हृदयमें अेक अनाथ आकर्षण लेकर ही शिशु जन्म लेता है। जीवन विकासके साथ ही मनुष्येतर बाह्य सृष्टिकी सीमा भी बढ़ती जाती है। वस्तुओंके बाह्य सौन्दर्यके साथ साथ वह अुनमें आन्तरिक सौन्दर्य भी खोजने लगता है। मूर्तसे अमूर्तकी ओर अुनकी गति हो जाती है।

अिस प्रकार कविता द्वारा बाह्य सृष्टि और प्रकृतिके साथ मनुष्यकी अन्तःप्रकृतिका सरस सम्बन्ध स्थापित होता चलता है। अिस सुन्दर और सरस सम्बन्धमें ही मनुष्यकी मनुष्यताका निवास है।

अनन्त मनोवृत्तियोंका आदि स्रोत मानव हृदय अपनी अभिव्यंजना अेक ही दिशामें नहीं करता। विभिन्न रूपात्मक दिशाओंकी ओर अुसके भाव शतधार होकर प्रवाहित होते हैं। अिसी अनेकरूपताके कारण काव्य क्षेत्रमें हम विविधताके दर्शन पाते हैं।

कविताके अुद्देश्यके सम्बन्धमें जिज्ञासा हुआ करती है। जहाँ प्रयोजन प्रमुख है वहाँ अैसी जिज्ञासाका होना स्वाभाविक ही है।

प्रयोजन दो प्रकारका हुआ करता है। जब हम किसी वस्तुसे अपना सीधा काम निकालते हैं, जैसे भोजनसे अपनी क्षुधा, जलसे अपनी तृषा शान्त करते हैं। यह प्रयोजनका सीधा स्पष्ट रूप है। प्रयोजनका दूसरा रूप वह है जब हम वस्तुओंके बाह्य या आन्तरिक सौन्दर्यपर मुग्ध होकर आनन्द लाभ करते हैं। यह मानसिक आनन्द भी मनुष्यके लिये अुतना ही जरूरी है जितना भोजन और जल। अिसलिये प्रयोजनके अिस रूपकी महत्ताको भी समझ लेना चाहिये।

प्रयोजनको लेकर नहीं, प्रयोजनको भी लेकर मनुष्य चला करता है। पशु और मनुष्यमें यही विशेष अन्तर है। पशु आवश्यकताकी जंजीरसे जकड़ा हुआ जीव है। वह स्वभावतः वही काम करता है जो अुसके जीवन रक्षणके लिये, अुसके जीवनकी आवश्यकता पूर्तिके लिये आवश्यक होता है। किन्तु मनुष्य अिस क्षेत्रमें स्वतन्त्र है। वह आवश्यकताकी सीमासे बद्ध प्राणी नहीं है। वह अपने जीवनकी आवश्यकताओंको पूर्ण तो करता ही है, पर यहीं अुसकी गति रुक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है। वह आगे बढ़ता है। वह अपनी बची हुअी शक्ति, अपना विशेष ज्ञान अपने हृदयकी भावनाओंको व्यक्त करनेमें पूर्ण स्वतंत्रतासे काम लेता है। पशुकी तुलनामें मनुष्यमें यही विशेषता है और अिसी विशेषताके फलस्वरूप कविता क्या, सभी कलाओंका लाभ संसारको मिला करता है।

कला कभी असुन्दर नहीं होती। कविता को सुन्दर होना ही चाहिये चाहे वह किसी विषय अथवा किसी रसकी हो। जो सुन्दर होगा वह असत्य और अशिव हो ही नहीं सकता। सत्य, शिव और सुन्दर साथ-साथ ही चला करते हैं।

यद्यपि भाव ही को कविताका प्राण कहा जाता है और अिसलिये कवितामें भावको ही महत्ता दी जाती है किन्तु भावको धारण करनेवाले शब्दोंका भी कविताके क्षेत्रमें कम महत्व नहीं है। शब्दोंके द्वारा ही भाव व्यक्त हुआ है। अिसलिये शब्दोंकी शक्तिका पूर्ण ज्ञान अेक सफल कविके लिये कितना आवश्यक है अिसका सहज अनुमान किया जा सकता है।

कवि कर्म कम कठिन नहीं है, जीवन भी कहाँ सरल है? जीवनको सफल बनानेके लिये कितना-क्या परिश्रम करना पड़ता है! कविताका क्षेत्र भी दुरूह ही है। भावोंको शब्द देना "गिरा अनयन, नयन बिनु बानी"वाली बात हो जाती है। फिर शब्द शक्तिका ज्ञान, अुनका समयोचित यथास्थान प्रयोग, संगीत तत्वकी रक्षा, काव्य दोषोंसे बचते हुये सभी अंगोका संतुलन बनाने रखना और सबसे अधिक भावकी प्राण रक्षापर ध्यान रखना होता है! कवि कर्मकी कठिनताको देखकर ही मैथिलीशरण गुप्तजी जैसे सफल कविको भी कहना पड़ाः—

हहा! जीवन व्यर्थ बहा बहा सरस। दो पद भी न हुये अहा॥
कठिन है कविते! तव भूमि ही। पर यहाँ क्षण भी सुख-सा रहा।

"पर यहाँ क्षण भी सुख सा रहा" ही अिस काव्य क्षेत्रकी वह मुग्ध माधुरी है जिससे आकर्षित होकर भावुक व्यक्ति अिस क्षेत्रमें पदार्पण करता है।

जीवन और कविताका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कविताके बिना जीवन सरस नहीं रह सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन

हैदराबाद अधिवेशनकी अेक झाँकी

२४ दिसंबरको सायंकाल हैदराबादके गोशामहलके प्रांगणमें अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलनका २७ वाँ अधिवेशन समारोह-पूर्वक प्रारंभ हुआ। मंचपर सभापति आचार्य पं. चन्द्रबली पांडेय के अतिरिक्त सर्वश्री राजर्षि टण्डन, पं. रविशंकर शुक्ल, राहुल सांकृत्यायन, बाबा राघवदास, सेठ गोविंददास, रामवृक्ष बेनीपुरी, बलभद्र प्रसाद मिश्र, पं. अंबिकाप्रसाद बाजपेयी, पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र, पं. भगवतीप्रसाद बाजपेयी, सीताराम चतुर्वेदी आदि हिन्दीके गण्यमान विद्वान कलाकार और राष्ट्रभाषा प्रचारक अुपस्थित थे।

सम्मेलनका अुद्घाटन करते हुअे मध्यप्रदेशके प्रधानमंत्री माननीय पं. रविशंकर शुक्लने कहा कि हिन्दी अब जनभाषासे राजभाषा होने जा रही है। राजप्रासादमें अुसकी प्रतिष्ठा हुअी है यह गौरवका विषय है किन्तु स्मरण रहे कि यह समय विजयोल्लासका नहीं आत्म-निरीक्षणका है।

हिन्दी भक्तोंके दायित्वकी ओर अिंगित करते हुअ माननीय शुक्लजीने बतलाया कि अुन्हें १५ वर्षके समयसे व्याकुल नहीं होना चाहिये और अभीसे भाषा भंडारको समृद्ध करनेके कार्यमें जुट जाना चाहिये। अपने अितिहासकी जिस महत्वपूर्ण देहलीको पारकर आज हिन्दी हमारे सम्मुख खड़ी हुअी है, अुससे अेक नये युगका आरम्भ हुआ है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका यह २७ वाँ अखिल भारतीय अधिवेशन आज सचमें अखिल भारतीय हो रहा है। संविधान सभा द्वारा राष्ट्रभाषा के सिंहासनपर पदारूढ़ कर दिअे जानेके बाद हिन्दी अब केवल हिन्दी भाषियोंकी ही भाषा नहीं रही, अब यह समूचे देशकी सम्पत्ति बन चुकी है। अिसलिये आवश्यक हो गया है कि हिन्दी भाषी अेकत्र हों और विचार करें कि हिन्दीके मस्तकपर जो राजमुकुट पहिनानेका निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया है अुसका क्या अर्थ है। अिससे कौन-कौन-सा नया अुत्तरदायित्व आ पड़ा है। यही, मैं समझता हूँ अिस अधिवेशनके सम्मुख आजका मुख्य कार्य होगा। यदि राष्ट्रभाषाका प्रश्न तय नहीं हुआ होता तो अंग्रेजी भारतकी आत्माको जकड़े रहती। महात्मा गांधीकी पारदर्शी दृष्टिने यह बात पहिले-पहल समझी थी और अिसीलिये अुन्होंने राष्ट्रभाषाके प्रश्नको स्वराज्यसे कम महत्वपूर्ण नहीं माना था। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय अेकताकी प्रतीक है और चूंकि समस्त देशके प्राचीन दर्शन, आयुर्वेद, छन्दशास्त्र, साहित्य-समीक्षा तथा भावनाओंके अुद्गारके लिये संस्कृत शब्दोंका प्रयोग होता है और संस्कृतके कारण ही भारतवर्षकी भाषाअें अेक सूत्रमें आबद्ध हैं अिसलिये हमारी जो नअी पारिभाषिक शब्दावली होनी चाहिये वह संस्कृतनिष्ठ होगी। हिन्दीकी शब्दावली प्रायः संस्कृतकी शब्दावली होगी अन्य भाषाओंकी शब्दावली भी होगी। अिसलिये हमारे अूपर नया अुत्तरदायित्व आया है। हमें चाहिअे कि देशके सब महान प्रांतीय भाषाओंके साहित्यकारोंको निमंत्रित करें कि वे राष्ट्रभाषाके निर्माणमें, देवनागरी लिपिको आधुनिक छपाअी यंत्रोंके अनुकूल व तार और टेलीप्रिंटर आदिके निर्माणमें सहयोग दे सकें। हिन्दीका गौरव सम्पूर्ण भारतवर्षका गौरव हो गया है अतः अीश्वर हिंदी सेवियोंको बल दे कि वे अपने अुत्तरदायित्वका निर्वाह कर सकें। जय हिन्दी।

अुद्घाटन भाषणके अुपरान्त आचार्य चन्द्रबली पांडेयका नाम सभापति पदके लिये नियमानुसार प्रस्तावित किया गया जिसका समर्थन सेठ गोविंददासजी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, पं. अंबिकाप्रसाद बाजपेयी और राजर्षि टंडनने किया।

सभापति आचार्य पं चन्द्रबली पांडेयने अपने भाषणमें घोषित किया कि हिंदीका किसी भी प्रांतीय भाषासे कोअी विरोध नहीं। जहां तक अुर्दूका सम्बन्ध है यदि वह हिन्दीका विरोध नहीं करेगी तो अुर्दूको भी हमसे कोअी अलग नहीं कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीका वनवास

रामको वनवास मिला था चौदह वर्षका; किन्तु नपातुला चौदह वर्षका। चौदहवां वर्ष बीता नहीं कि 'राजाराम अवध राजधानी'। परन्तु हिंदीकी स्थिति निराली है। अुसे पन्द्रह वर्षका वनवास है कुरु-प्रदेशमें ही। डर है कि कहीं हिंदीके प्रकट होनेसे यह काल और भी न बढ़ जाय और हमारा राष्ट्र निर्माण कार्य और भी पीछे न रह जाय।

नागरी अंक

कहा जाता है कि यह तो हमारे गौरवकी बात है कि हम अेकदेशीय अंकको छोड़कर अपना सर्वदेशीय सार्वभौम अंक अपना रहे हैं। ठीक है, विराट रूपका यह दर्शन। पर देखनेको दिव्य चक्षु कहाँ ? नागरी अक्षर और नागरी अंकमें जो लगाव है वह कभी नागरी अक्षर और विलायती अंकमें नहीं आ सकता।

दुख है कि नागरी अंकको त्यागते समय अुसके महत्वको नहीं आंका गया। नागरीमें अंग्रेजी अंकका व्यवहार अंग्रेजी सरकारके शासन में न हो सका, कहा गया है कि हमारी राष्ट्रभाषाका नाम होगा हिन्दी और हमारी राष्ट्रलिपिका नाम होगा देवनागरी। किन्तु हमारे राष्ट्र-अंकका नाम होगा 'सार्वभौम भारतीय अंक' अथवा यों कहें कि 'अन्तर्राष्ट्रीय रूपमें भारतीय अंक' या और कुछ नहीं, वही, पुराना, दासताका पदक, अंग्रेजी अंक है जिसको न अपनानेके कारण कभी सोटराबीशोंको दंड भी मिला है।

हिन्दी, अुर्दू, हिन्दुस्तानी आदिके प्रश्नोंपर विद्वत्तापूर्ण ढंगसे प्रकाश डालते हुअे आपने राष्ट्रभाषा हिन्दीकी क्षमता, अुसकी गरिमा, अेवं सरलताका जोरदार शब्दोंमें समर्थन किया और अहिन्दी भाषियोंसे भी निवेदन किया कि वे हिंदीको सहयोग दें।

अुपेक्षा नहीं हो सकती

हिंदी आज राष्ट्रभाषा है, राज्यभाषा है, अिस तथ्यकी अुपेक्षा नहीं की जा सकती। अुसने यह पद लिया है किसीसे छीनकर नहीं लड़कर नहीं। अुसको तो यह पद मिला है सभी देशी भाषाओंके सहयोगसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता

कोष और व्याकरणका अभाव पूरा हो। अैसा कोष हो कि राष्ट्रके सभी शब्द अेकत्र अेकही भूपामें दिखाअी देते फिरें और घूम-घूम कर अपनी कथा सुनाते फिरें। फिर तो कोअी न कहे हम अेक नहीं हमारी भाषा भी अेक नहीं। व्याकरण भी अैसा कि सीखने वालेको अपनी भूलका पता पहिलेसे हो।

अिसके बाद सम्मेलनके प्रधान-मंत्री पं. बलभद्रप्रसाद मिश्रने पिछले वर्षकी रिपोर्ट पढ़कर सुनाअी और शुभ कामनाओंके सन्देश पढ़े गअे।

सम्मेलनके दूसरे अेवं तीसरे दिन साहित्य, विज्ञान, दर्शन राष्ट्रभाषा, समाजशास्त्र आदि परिषदें हुअीं।

साहित्य परिषदः— साहित्य परिषदके अध्यक्ष पं. लक्ष्मीनारायण मिश्रने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणमें अिस बातपर प्रकाश डाला कि साहित्यके सिद्धान्त भारतीय संस्कृतिके रक्षक हो सकते हैं। आपने यूनानी साहित्य जो पश्चिमी साहित्यका मूल अुद्गम है से भारतीय साहित्यकी तुलना करते हुअे बतलाया कि मृत्युपूजा, निराशा, वेदनाकी प्यास, प्रतिहिंसा यूनानी साहित्यकी सिद्धि है दूसरी ओर भारतीय साहित्यके राक्षस चरित्र भी दशग्रंथी और शिवोपासक हैं। अतः हमें अपने साहित्यमें विदेशी विरूपताओंकी नकल न करके सर्वात्मभावेन भारतीय संस्कृतिकी रक्षा करनी होगी।

विज्ञान-परिषदः—विज्ञान-परिषदके अध्यक्ष डा. श्री रंजनने अिस बातकी ओर संकेत किया कि सम्मेलनको चाहिये कि वह शीघ्रातिशीघ्र अपनी संरक्षतामें देशके विज्ञान-विशारदों तथा भाषा-विशारदोंकी अेक समिति बनाकर वैज्ञानिक शब्दावली कोषका व्यापक और सर्वमान्य कार्य करे और विविध प्रकारके विद्वानोंके सुंदर-सुंदर ग्रंथोंका प्रकाशन भी करे। सम्मेलन अेक औद्योगिक विज्ञानकी प्रयोगशाला भी स्थापित कर सकता है। जहां दैनिक व्यवहारकी वस्तुओंके सम्बन्धमें नअे अविष्कार किये जा सकें और स्वल्पमूल्यके साथ अधिक मात्रामें दैनिक जीवन सम्बन्धी आवश्यक वस्तुअें बनायी जा सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन-परिषदः—दर्शन परिषदके अध्यक्ष पं. कमलाकान्त मिश्रने अपने भाषणमें प्राच्य-दर्शनकी महत्ता और विशेषताओंपर विद्वत्तापूर्ण ढंगसे प्रकाश डाला। आपके भाषणके अुपरान्त भदन्त आनन्द कौसल्या-यनने बौद्ध दर्शन और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद जैसे नीरस अेवं जटिल विषयको भी आकर्षक रूपमें प्रस्तुत किया।

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

राष्ट्रभाषा-परिषदः—राष्ट्रभाषा परिषदके अध्यक्ष श्री क्षेत्रेश-चन्द्रजी चट्टोपाध्यायने जोरदार शब्दोंमें कहा कि अेक विदेशी भाषाका प्रयोग आवश्यकतासे अधिक अेक दिनके लिये भी सहा नहीं जा सकता। प्रान्तीय भाषाओंमें हिन्दी अधिक संख्यामें बोली जाती है और हिंदी भारतवर्षकी राजधानीकी भाषा है। अतअेव हिंदीको राष्ट्रभाषाके रूपमें स्वीकृत करना अुचित ही था परन्तु अिस स्वीकृतिके साथ जो भय और लांछनकी भावना दीख रही है वह सर्वथा अनुचित है। हिन्दी भाषियोंके अतिरिक्त अन्य भाषा-भाषियोंका केन्द्रीय सरकारमें नौकरी प्रभृतिका अधिकार अक्षुण्ण रहना चाहिये और अिस अुद्देश्यसे और प्रांतके लोगों को हिन्दी सीखनेके लिये पर्याप्त समय देना चाहिये परन्तु १५ वर्षतक या अुससे अधिक समय तकके लिये अंग्रेजी भाषाको राष्ट्रीय सिंहासनपर बैठा रखना अत्यंत अनुचित बात है।

समाज-शास्त्र-परिषदः—समाज-शास्त्र-परिषदके अध्यक्ष डा० रमाशंकर त्रिपाठीने अपने भाषणमें अिस बातकी ओर संकेत किया कि हमारा साहित्य सुँदर काव्य, मनोरंजक नाटक, अुपन्यास, निबन्ध आदिमें तो दिन-प्रति-दिन अुन्नति कर रहा है किन्तु समाज-शास्त्रके विभिन्न अंगों तथा अुससे सम्बन्धित विषयोंपर न तो अच्छे लेख नकलते हैं न कोअी मासिक या त्रैमासिक पत्रिका छपती है न पुस्तकें। हम नम्रतापूर्वक ग्रंथकर्ताओंसे निवेदन करेंगे कि वे हिन्दीमें वैज्ञानिक साहित्यकी सृष्टि करें। अिस अवसरपर सर्वश्री आचार्य नरेन्द्रदेव, पं० जयचन्द्र विद्यालंकार, राहुल सांकृत्यायनके सामयिक सारगर्भित अुपयोगी भाषण हुअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनके प्रस्ताव

सम्मेलनमें अनेक प्रस्ताव स्वीकृत हुअे जिनमेंसे प्रमुख ये हैं—

" यह सम्मेलन भारतीय संविधान परिषद्के अिस निर्णयपर कि देवनागरी लिपिमें लिखी हिंदी देशकी राष्ट्रभाषा स्वीकार की जाय संतोष प्रकट करता है और परिषदके सदस्योंको बधाअी देता है परन्तु बहुत खेदके साथ सम्मेलनको अपना यह सच्चा मत प्रकट करना पड़ता है कि अंग्रेजी भाषाके पुराने प्रभावके कारण संविधान परिषदने राष्ट्रभाषाके महत्वपूर्ण प्रश्नको सही दृष्टिबिन्दुसे नहीं देखा । अंग्रेजी भाषाको केन्द्रीय शासन तथा व्यवस्थापिका सभाओं और केन्द्रीय न्यायालय और प्रांतीय हाअीकोर्टोंके कामोंमें कमसे कम १५ वर्ष तक प्रभुत्व देना और केन्द्रीय कामोंके लिये नागरी लिपिमें अंग्रेजी अंकोंका मिश्रण—ये दो संविधान में भाषा और लिपि संबंधी भारी दोष हैं ।

जन भावनाकी रक्षा तथा देशके भविष्यको ध्यानमें रख सम्मेलन पूर्ण सद्भावनासे केन्द्रीय सरकारको यह सुझाव देता है कि संविधानके अंतर्गत जो अवसर १५ वर्षके भीतर अंग्रेजीके साथ अथवा अंग्रेजीके स्थानपर हिन्दीके प्रयोग तथा नागरी लिपिमें देवनागरी अंकोंके प्रयोगके संभव हैं अुनका वह पूरा अुपयोग करे और हिन्दी भाषा तथा देवनागरी अंकयुक्त देवनागरी लिपिके अधिकाधिक व्यवहारमें सहायक हो । केंद्रीय संसदके सब सदस्यों तथा देशकी जनताको सम्मेलन अिस विषय में बराबर सावधान रहनेकी चेतावनी देता है ।"

(२)

हिन्दी विश्वविद्यालय (सम्मेलन परीक्षाओंकी संचालक संस्था) की परीक्षा समितिके पुनर्निर्माण जैसे प्रश्नपर लगभग साढ़े तीन घंटे तक गरमागरम बहस हुअी । परीक्षा समितिके सदस्योंकी जो सूची अुपस्थित की गअी थी अुसके विरुद्ध श्री रामवृक्ष बेनीपुरीने अेक संशोधन अुपस्थित किया कि अुक्त समितिके सदस्योंको नामज़द करनेका अधिकार सर्वश्री राजर्षि टण्डन, सेठ गोविन्ददास तथा वर्तमान सभापति श्री चन्द्रबली पांडेय की अेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति को दिया जाय। अुत्तेजनापूर्ण वातावरणमें घोर संघर्षके पश्चात् यह संशोधन सिर्फ चार वोटोंसे स्वीकृत हो सका।

आगामी भाद्रपदमें भारतेन्दु शताब्दी मनाअी जाय, अिस आशयका अेक प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ। यमुना नदीकी धारासे गोस्वामी तुलसीदासके घरकी रक्षा करनेके प्रश्नपर भी प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। डाक तार विभागसे अेक प्रस्ताव द्वारा अनुरोध किया गया कि समस्त कार्य वे हिन्दीमें ही करें। टेलीप्रिंटर हिन्दीमें चालू किअे जांय, अिस आशयके प्रस्ताव स्वीकृत हुअे तथा अेक प्रस्ताव द्वारा अुस्मानिया विश्वविद्यालयसे अनुरोध किया गया कि हैदराबादमें शिक्षाका माध्यम हिन्दी हो। सिनेमामें जो अश्लील गीतों अेवं भारतीय संस्कृतिको विद्रूप करनेवाले दृश्योंकी भरमार रहा करती है, अुसके प्रति भी अेक प्रस्ताव द्वारा घोर क्षोभ प्रकट किया गया। सम्मेलनके तत्वावधानमें हिन्दी नाटकोंके अभिनयमें और हिन्दी रंगमंचके विकासकी व्यवस्था की जाय अिस आशयका अेक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। अेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव द्वारा रेडियोकी हिन्दी द्रोही अेवं भारतीय संस्कृति विरोधी नीतिकी तीव्र भर्त्सना की गअी। निर्णय हुआ कि पटनेमें सम्मेलनका अेक विशेष अधिवेशन बुलाया जाय जिसमें सम्मेलनका विधान स्वीकृत किया जा सके।

निम्नलिखित व्यक्तियोंको साहित्य वाचस्पतिकी अुपाधि प्रदान की गअी:—

सर्वश्री डा. भगवानदास, सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, गिरधर शर्मा नवरत्न, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, सेठ गोविन्ददास, महादेवी वर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, भवानीदयाल सन्यासी, अिन्द्र विद्यावाचस्पति और आयुर्वेद पंचानन पं. जगन्नाथ शुक्ल।

पदाधिकारी:—

सम्मेलनके अगले वर्षके लिये डा. अमरनाथ झा कार्यवाहक सभापति, सेठ गोविन्ददास अुपसभापति और श्री बलभद्र प्रसादजी मिश्र प्रधान मंत्री चुने गअे। मंत्रिमंडलके निर्माणका कार्य प्रधान मंत्रीके सुपुर्द किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

अेक धर्म युद्ध : लेखक— श्री महादेवभाअी देसाअी, अनु. श्री काशिनाथ त्रिवेदी, प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद। पृष्ठ-संख्या ९८, मूल्य ॥।)।

प्रस्तुत पुस्तकमें अहमदाबादके मिल-मजदूरोंकी लड़ाअीका अितिहास सरल भाषामें वर्णित है। सन् १९१८ में 'मिल मालिकों' से आर्थिक अधिकार प्राप्तिके अुद्देश्यसे, अहमदाबादके मजदूरों द्वारा किये गअे आन्दोलनको ही लेखकने 'धर्मयुद्ध' का नाम दिया है।

आज यद्यपि मजदूरोंकी समस्याओंसे सम्बन्धित अन्य कअी पुस्तकें प्रकाशित हो गअी हैं। किन्तु विश्ववन्द्य बापूके सहयोगसे लड़ी गअी लड़ाअीका यह अितिहास श्रमिक वर्गके हितचिन्तक व्यक्तियों तथा संस्थाओंके लिअे विशेष महत्व रखता है।

—कृपाल द्विवेदी

हिन्दी कविताका अध्ययनः—लेखक—प्रो. शिवनन्दन प्रसाद, अेम. अे. साहित्य-रत्न। पृष्ठ-संख्या-१६६ मूल्य—१॥।)। प्रकाशक—रामसहायलाल, बुकसेलर गया।

परीक्षार्थियोंके दृष्टिकोणसे लिखी गअी अिस पुस्तकमें हिन्दीके नये और पुराने प्रमुख कवियोंका विवेचन किया गया है। जैसा कि लेखकने स्वयं कबूल किया है अिसमें कवियोंके काव्यके सभी पहलुओंपर विचार नहीं किया गया। पुस्तक विद्यार्थियोंके लिये बहुत अुपयोगी है, क्योंकि कविताके तत्व और हिन्दी कविताके क्रमिक विकासके विवरणके साथ-साथ अिसमें कवियोंपर जो संक्षिप्त आलोचनाअें दी हुअी हैं, वे सरल, स्पष्ट और परीक्षोपयोगी हैं। अपने कथनकी पुष्टिमें लेखकने पर्याप्त अुद्धरण भी दिये हैं। आशा है, परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

—हरिदत्त मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-मराठी व्यवहार-कोष :— संपादक-प्रकाशक, श्री ग. र. वैशंपायन, हिन्दी-मराठी-कोष-कार्यालय, १३४।२ शुक्रवार पेठ, पुणें। पृष्ठ-संख्या ५१३। मूल्य सजिल्द ५।)। छपाअी-बंधाअी अुत्तम।

श्री वैशंपायनजीके कोष-माला-कार्यके प्रति राष्ट्र कृतज्ञ रहेगा। प्रस्तुत पुस्तक राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेवाले मराठी-भाषियोंके लिये बहुत अुपयोगी है। मराठी सीखनेवाले हिन्दी-भाषी भी लाभ अुठा सकेंगे। कोषके अंतमें हिन्दी मुहावरोंका मराठी मुहावरोंमें सुन्दर अनुवाद है।

—बलभद्र ठाकुर

नया-जीवन (मासिक-पत्र) :— प्रधान-सम्पादक—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', प्रकाशक—विकास लिमिटेड सहारनपुर (यू. पी.) वार्षिक-मूल्य-५॥), अेक प्रतिका ॥)।

जीवन और जवानीसे ओतप्रोत यह मासिक पत्र गत कअी वर्षोंसे हिन्दी साहित्यकी सेवा कर रहा है। श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' अनुभवी लेखक हैं और अपने सम्पादन कौशलसे आपने 'नया जीवन' को बिल्कुल नअे किस्मका पत्र बना दिया है। हिन्दीके अन्य मासिक-पत्रोंकी तुलनामें अिसमें अनेक विशेषताअें हैं। टिप्पणियां मार्मिक होती हैं तथा सामग्रीके चयनमें अत्यंत सूझ-बूझसे काम लिया जाता है। आजके चलतू व्यवसायिक पत्रोंकी भरमारमें 'नया जीवन' का प्रकाशन सचमुच अेक स्तुत्य प्रयास है। आशा है, पत्रकी लोकप्रियता अुत्तरोत्तर बढ़ती जायगी।

—प्रशान्त

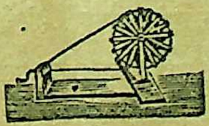

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक-सम्मेलन

आगामी २५, २६ फरवरी, (शनिवार, रविवार) को अहमदाबादमें अखिल भारतीय द्वितीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन आचार्य श्री मुनि जिनविजयजीकी अध्यक्षतामें होगा। सम्मेलनके निमन्त्रण-पत्र यथा समय हरअेक राष्ट्रभाषा प्रचारकके पास पहुँच जायेंगे। हमारा सभी प्रचारकोंसे साग्रह निवेदन है कि वे अिस सम्मेलनमें अवश्य पधारें और अुसे सफल बनावें।

निवेदक
जेठालाल जोशी
मन्त्री
गुजरात प्रान्तीय रा. भा. प्र. समिति,
अहमदाबाद

गुजरातके राष्ट्रभाषा प्रचारकोंसे—

अखिल भारतीय द्वितीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन आगामी मासमें अहमदाबादमें होने जा रहा है। सम्मेलनके निमन्त्रण-पत्र जल्द ही सबके पास पहुँच जायेंगे। गुजरातके प्रचारकोंसे हमारा निवेदन है कि जो अिस सम्मेलनमें किसी प्रकारकी सहायता करना चाहें वे नीचे लिखे पतेपर पत्र-व्यवहार करें। हम हरअेकसे सहयोगकी आशा करते हैं।

पताः—श्री. जेठालाल जोशी, मंत्री गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति खाड़िया, वाला हनुमान अहमदाबाद (गुजरात)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय हलचलें

गुजरात

सूरत:—स्थानीय सार्वजनिक हाअी स्कूलमें कोविद अुत्तीर्ण बहिनोंका स्नेह-सम्मेलन मनाया गया। श्री साकरलालजी सरैयाकी अध्यक्षतामें सगरामपुरा शाखाका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव हुआ तथा श्री अीश्वरलालजी देसाअीके करकमलोंसे राष्ट्रभाषा पुस्तक मन्दिरका अुद्घाटन हुआ। यह संस्था पुस्तक-बिक्रीका काम करेगी। सूरत केन्द्रसे गत सितम्बर परीक्षामें करीब पन्द्रह सौ परीक्षार्थी सम्मिलित हुअे। यह गुजरात प्रान्तका बड़ा ही व्यवस्थित केन्द्र है।

पोरबन्दर:—पोरबन्दरमें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापना हो चुकी है— पदाधिकारियोंका चुनाव अिस प्रकार हुआ है—

श्री नगीनदास मोदी—अध्यक्ष, श्री नसरवानजी दोषी—अुपाध्यक्ष, श्री पुरुषोत्तम थानकी, श्री छगनलालजी परमार बी. अे संयुक्त-मन्त्री श्री जेठालालजी वाजा—कोषाध्यक्ष, श्री जयेन्द्र पाठक बी. अे. बी. टी, आचार्य, हेन्कोक सिडिलस्कूल— श्री अजीतराय जोशीपुरा आचार्य, महाराणी कन्या विद्यालय— श्री देवजीभाअी मोढा अेम. अे. आचार्य नवयुग विद्यालय— श्री दामोदरभाअी ज्योतिषी आ. डिप्टी-अिन्स्पेक्टर-पोरबन्दर— श्री रतिलाल छाया, मन्त्री-पथदीप— श्री जन्मशंकर जोषी बी. अे. अेल अेल. बी. — श्री गिरधरभाअी दयालजी शाह—सुश्री शांतिलाबहन त्रिवेदी बी. अे. टी. डी— सुश्री लाभुबहन पंड्या— श्री दिनकरराय वैष्णव—सदस्य

पोरबन्दरके भावसिंहजी हाअीस्कूलमें गुजरातके प्रसिद्ध कवि श्री देशळजीभाअी परमारकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण भाअी-बहिनोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अिस अवसरपर गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेठालालजी जोशी भी अुपस्थित थे। श्री देशळजीभाअी और जोशीजी के जोरदार भाषण हुअे। समारोह बड़ा ही सफल रहा।

राजपीपला:—श्री मोहनलालजी पेन्टरकी ओरसे राजपीपला केन्द्रमें कोविद, परिचय, प्रवेश और प्रारम्भिकमें प्रथम आनेवालोंको क्रमशः ७), ६), ५) और ४) पारितोषिकके रूपमें प्रदान किये गये। अिसके लिये हम आभारी हैं।

अहमदाबाद:—गत रविवारको अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यालयके गुजराती शालामें न्यु अेज्युकेशन हाअी स्कूलके आचार्य श्री रतिलाल मोहनलाल त्रिवेदी की अध्यक्षतामें श्री जेठालालजी जोशीको "अभिनन्दन-पत्र" प्रदान किया गया। समारंभमें राष्ट्रभाषा प्रचारक और विद्यार्थी अुपस्थित थे। सबसे पहले ओश्वरकी प्रार्थना हुअी। तत्पश्चात् श्री रणधीरजी, रामअवधेशजी आदिने श्री जोशीजीकी पचीस वर्षोंकी राष्ट्रभाषा हिन्दीकी सेवापर प्रकाश डाला और अुन्हें अपनी श्रद्धांजलियां समर्पित कीं। समारोहमें श्री जोशीजी की कर्तव्यनिष्ठा, सहनशीलता तथा कार्यक्षमता आदिकी प्रशंसा की गअी। तत्पश्चात् विद्यार्थियोंने अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया। अध्यक्ष महोदयने अपने प्रभावशाली भाषणमें श्री जोशीजी को प्रचारक वीर, श्रेष्ठ राष्ट्रभाषा सेवक तथा अुत्तम-शिक्षक बतलाया। संगीतके अुपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ।

महाराष्ट्र

अंकली (द. सातारा):—दक्षिण महाराष्ट्र विभागके संगठक श्री. श्रीराम अट्ठावलकर 'राष्ट्रभाषा रत्न' सांगली होते हुअे गत २६-१२-४९ को अंकली और जयसिंगपुर पहुँचे। आपने अंकली केन्द्र तथा वर्गोंका निरीक्षण किया। श्री. रा. कृ. अुपाध्येके प्रयत्नसे अंकली केंद्र स्थापित हुआ है। आप बड़े अुत्साहसे विद्यार्थियोंको पढ़ाते हैं। अंकलीके श्री. दादा पाटील भी प्रचार कार्यमें अच्छा सहयोग दे रहे हैं।

जयसिंगपुर (कोल्हापुर)— कोल्हापुर जिलेके शिराळ तालुकेमें जयसिंगपुरके प्रचारक श्री ल. क. अकिवटे 'हिन्दी भाषा रत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा कार्यका अच्छा संगठन कर रहे हैं। आपके प्रयत्नसे कअी नवीन केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। अिस काममें स्कूल लोकल बोर्डकी पूरी सहानुभूति और मदद मिल रही है। पुस्तकालयकी स्थापना भी शीघ्र होने वाली है।

बम्बअी

घाटकोपरः—आग्रारोडपर चिराग नगरमें श्री चिराग-अुद्दिन हिन्दी-विद्यालयमें सिर्फ लडकियोंके लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी बातचीतकी परीक्षाके लिये गत १-१२-४६से बातचीत परीक्षा अध्यापन मन्दिर (Training School) शुरू हुआ है। बातचीतकी तालीम देनेके लिये २० विद्यार्थियोंका अेक हिन्दी वर्ग शुरू किया गया है। बातचीत परीक्षा अध्यापन मन्दिरके संचालक हिन्दी-विद्यालयके प्रिन्सिपल डा० पंडित पुरुषोत्तम शिवोहम शिक्षा-विशारद (प्रयाग) हैं। बातचीत अध्यापन मन्दिर और वर्गके साथ सिर्फ शनि. रवि. को प्रातः ८ से १०–३० तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी परीक्षाओंका वर्ग भी चलता है। बातचीत अध्यापन मन्दिर और वर्गके साथ अन्य परीक्षाओंकी पढ़ाअी भी मुफ्त होती है।

राजस्थान

अजमेरः—गत २ जनवरीको अजमेरके मुसलमानोंका अेक भारी अुत्सव दरगाह शरीफ़में हज़रत मुहम्मदका जन्म दिवस मनानेके अुपलक्ष्यमें हुआ जिसमें दूसरे धर्मावलम्बियोंको भी निमन्त्रित किया गया था। अिस अुत्सवमें पंडित दौलतराम शर्माका अेक अत्यंत प्रभावशाली भाषण हुआ। आपने कहा कि भारतके मुसलमानोंको अब बदले हुअे जमानेके अनुसार अपने को बदलना चाहिये और राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनी चाहिये।

जोधपुरः—जोधपुरमें रहनेवाले जिन सिंधी बन्धुओंने गत अप्रैल १९४६ की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी विभिन्न परीक्षाओंमें सफलता प्राप्त की थी, अुनको स्थानीय अिन्टरमीडियेट कालेजमें गत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-११-४९ की शामको ८ बजे प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। राजस्थान हाओकोर्टके चीफ जस्टिस श्री कमलाकान्तजीने अपने कर कमलों द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित करना स्वीकार किया था, किन्तु अुस वक्त रेलवे मंत्री श्री संतानमके साथ कार्यक्रममें व्यस्त रहनेके कारण वे अिस अुत्सवमें भाग न ले सके। अतः कालेजके प्रिन्सिपल श्री रामचन्द्र वामन कुम्भारेने यह कार्य संपन्न किया। प्रारंभिक, प्रवेश व परिचय परीक्षाओंमें सर्व-प्रथम आनेवाले छात्र व छात्राओंको पुरस्कार भी प्रदान किये गये। अिस अवसरपर स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रधान श्री सोमनाथजी गुप्त अेम. अे., पी. अेच. डी. ने राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी अुपयोगिता और जोधपुरमें चल रहे प्रचार कार्यके संबन्धमें दो शब्द कहे। अन्तमें श्री कुम्भारजीने अपने लघु भाषणमें सिन्धी भाअियोंके राष्ट्रभाषा-प्रेमकी सराहना की और अिस कार्यमें हाथ बंटानेके लिये स्थानीय बन्धुओंसे अपील की।

आसाम :

मणिपुरः—मणिपुरके सभी मिशनरी स्कूलोंमें हिन्दीकी शिक्षा अनिवार्य कर दी गअी है। आगामी राष्ट्रभाषाकी परीक्षाओंमें अीसाअी धर्मावलंबी छात्र भी बड़ी संख्यामें शामिल होंगे। स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिस संबन्धमें अुत्साहसे कार्य कर रही है।

विदर्भ-नागपुर-प्रान्त

नागपुरः—स्थानीय मुले हाय स्कूलमें, 'राष्ट्रभाषा सहकार मंडल' धंतोली में रा. भा. प्रचार समितिकी परीक्षाओंके वर्ग नियमपूर्वक चलते हैं। अिसके संस्थापक और प्रमाणित प्रचारक श्रीयुत खडपेकरजी अब नागपुर छोड़कर दिल्ली जा रहे हैं। अेक छोटा-सा बिदाअी समारोह युगसंदेशके सम्पादक श्री तिवारीजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अल्पोपहार और वंदेमातरमके पश्चात अिस अवसरपर अध्यक्ष महोदयने मंडलके हिंदी वाचनालयके लिये ५०) रु. प्रदान किये।

अेलिचपुर तहसील का राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्य संगठित करनेके अुद्देश्यसे ता. ८-१२-४९ को काकड़ा-केन्द्रके व्यवस्थापककी (हेडमास्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिडिल स्कूल) अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रेमियोंकी अेक बैठक हुअी। अिस बैठकका संगठन हमारे अुत्साही जिला प्रमाणित प्रचारक-साधु- भास्कर शास्त्रीजीने किया था। अिस बैठकमें "अेलिचपुर तहसील रा. भा. प्रचार समिति" स्थापित हुअी। श्रीयुत देशभक्त न. की कालेजी रा. भा. कोविदको अध्यक्ष बनाया गया। निश्चय हुआ कि तहसीलके हरेक केन्द्र में हिंदीका वाचनालय स्थापित किया जाय, प्रत्येक तीन मासमें प्रचारार्थ बैठक बुलाअी जाय और वर्षमें अेक बार तहसीलके समस्त प्रचारकों व रा. भा. प्रेमियोंका प्रचार-सम्मेलन हो। अिस समितिके कार्यकारी मंडलमें १४ सदस्य हैं। आशा है, यह तहसील समिति अच्छा कार्य करेगी।

अेलिचपुर-शहरः—स्थानीय सिटी हायस्कूलमें श्री बाबासाहब देशमुखकी अध्यक्षतामें टूर्नामेंट समारोहके साथ-साथ राष्ट्रभाषा-प्रमाण-पत्र वितरण समारोह भी मनाया गया! अुक्त हाअीस्कूलके मुख्या-ध्यापकजीने अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको राष्ट्रभाषाकी योग्यताको अधिकाधिक बढ़ानेके लिये प्रोत्साहित किया। राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्यमें श्री वाडोकरजी जो सक्रिय स-अुत्साह सहयोग दे रहे हैं अिससे काम बढ़ रहा है यह खुशीकी बात है।

बुलडाणा जिला रा. भा. प्रचारः—जिला रा. भा प्र. स. खामगांवके मंत्री श्री सेवकजीने संगठनार्थ १५ दिनका दौरा अपने जिलेके कुछ केन्द्रोंमें किया। गोंधनापुर, माटरगांव, शेगांव, अत्री, शेम्बा, नादुरा, अमदापुर, संगरूळ नवघरें, जळगांव, बुलडाणा, मलकापुर, दाताला, पहूरजीरा, मेहेकर, लोणार, सुलतानपुर, साखरखेर्डा—अिन केन्द्रोंमें जाकर वहांके केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे राष्ट्रभाषा-प्रचारार्थ चर्चा की, वहाँ के सहयोगी प्रचारक भाअियोंके साथ विचार-विनिमय किया, कुछ स्कूलोंमें व्याख्यान दिये। जहाँ केन्द्र बंद थे, शिथिलता थी, अुन्हें अुत्साहित किया। पुनः संगठन किया, जिला समितिके कुछ नये सदस्य बनाये। जिला और खामगांव नगरके राष्ट्रभाषा प्रचारमें प्र. प्रचारकों, परीक्षाकेन्द्र-व्यवस्थापकोंसे, सरकारी स्कूलों और सार्वजनिक शालाओंके अधिकारियों अेव शिक्षकोंसे पर्याप्त सक्रिय सहयोग मिल रहा है। अतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वे धन्यवादके पात्र हैं। खामगांव नगर केन्द्रसे फरवरी' ५० की रा. भा परीक्षाओंके ३२७ आवेदन-पत्र सशुल्क वर्धा कार्यालयमें निश्चित ता० को पहुँचाये गये हैं।

ब्रम्हपुरी:— श्री. शिरपूरकरजी सिविलजज अेक अुत्साही सुसंस्कृत राष्ट्रभाषा-प्रेमी सज्जन हैं। आपने हमारी 'परिचय' और 'कोविद' दोनों परीक्षाअें पास कीं और अब 'विशारद' की तैयारी कर रहे हैं। जज साहबकी प्रेरणासे रा भा. प्र. परीक्षाका केन्द्र ब्रम्हपुरीमें दिसम्बर १९४८, को स्थापित हुआ, तबसे यह केन्द्र बराबर तरक्की ही कर रहा है। फर्वरी ४९ में प्रारंभिक में २९ परीक्षार्थियोंमेंसे २३ अुत्तीर्ण हुअे। ब्रम्हपुरीके कअी सरकारी आफीसर भी बड़े प्रेमसे राष्ट्रभाषाका अभ्यास करने लगे और समितिकी 'प्रवेश', 'परिचय' परीक्षामें बैठकर सफल हुअे। यहाँकी सुशिक्षित महिलाअें भी दिलचस्पीके साथ राष्ट्रभाषा सीखने लगीं और परीक्षामें अुत्तीर्ण हुअीं। गत सितंबर ४९ की राष्ट्रभाषा प्रारंभिक परीक्षामें ७७ परीक्षार्थी शामिल हुअे ५४ अुत्तीर्ण हुअे। 'प्रवेश' में २६ बैठे, २२ पास हुअे। अिसमें ४ को पहली श्रेणी और ११ को दूसरी श्रेणी मिली। यहांके परीक्षा-केन्द्र-व्यवस्थापक वयोवृद्ध हेडमास्टर श्री कडूजीके अुत्साह, कोशिश और परिश्रमका ही यह फल है कि यह केन्द्र अुन्नति कर रहा है। अे. व्ही. अेम. स्कूलके वर्तमान हेडमास्टरजी भी विशेष धन्यवादके योग्य हैं कि वे भी राष्ट्रभाषा-प्रचार-कार्यमें सदैव अपना अुत्साह दिखाते हैं।

सूचना:— विदर्भ-नागपुर प्रांतके सभी सहयोगी प्रचारक भाअियों और केन्द्र-व्यवस्थापक महाशयोंको सूचित किया जाता है कि वे अपने-अपने केन्द्रोंका कार्य-वितरण-समारोह आदिके समाचार प्रति-मास अपने प्रांतीय समिति के संचालकजीके पास अवश्य भेजा करें। वे प्रतिमास 'राष्ट्रभाषा' में प्रकाशित किये जायंगे।

मध्यप्रांतीय सरकार द्वारा समितिको मान्यता :—मध्यप्रदेशकी सरकारने विदर्भ-नागपूर प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको गत १ ली नवंबर १९४९ से सरकारी मान्यता प्रदान कर दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

विदर्भ-नागपुर, उत्कल, राजस्थान, तथा हैदराबाद रियासतके लियेः—

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदनः—

अपने केन्द्रके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर ३५ परीक्षार्थियोंके लिये अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंकी नियुक्ति आप कर लें। नियुक्त निरीक्षकोंके नाम परिपत्र नं. १३ पर भरकर वर्धा कार्यालय भेजें।

हर निरीक्षकको प्रति प्रश्नपत्र (For each meeting) के लिये १) रु. पुरस्कार देनेका नियम है। यह १) रु. पुरस्कार परीक्षाके प्रश्नपत्रोंके हिसाबसे नहीं, बल्कि ३ घंटे समयके लिये है।

परिचयकी मौखिक परीक्षा—

परिचय-मौखिक परीक्षाकी व्यवस्थाका सारा भार केन्द्र-व्यवस्थापकोंपर रखा गया है। वे ही अिसके लिये परीक्षककी नियुक्ति और तारीख निश्चित करेंगे। परीक्षकके लिये किसी योग्य स्थानीय व्यक्तिका चुनाव करना चाहिये।

मौखिक परीक्षाके प्राप्तांक भरनेके लिये प्राप्तांक-विवरण-पत्रक शीघ्र ही भेजे जा रहे हैं। मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही प्राप्तांक सूची सील-मुहरकर हमारे पास कृपया भेज दें।

कोविद-मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना समयपर अलगसे भेजी जायेगी।

पुस्तकालय
112530

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपया सोमवारको अवश्य भेजें—

(१) प्रत्येक समयकी परीक्षाकी अुत्तर पुस्तकोंका बंडल निरीक्षकके हस्ताक्षरके साथ अुसी समय सील हो जाना चाहिये। शनिवार और रविवारके सील किये हुये अुत्तर-पुस्तकोंके चारों बंडल समय-सूचक-पत्रकके साथ (पत्रक नं. ८६) कृपया सोमवारको अवश्य रजिस्ट्रीसे भेज दें।

(२) मौखिक परीक्षकोंसे प्राप्त मौखिक प्राप्तांक तथा लेखन-कार्य प्राप्तांक और कोविद लेखन-कार्यकी बहियाँ भी सोमवारको ही रवाना कर दें।

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाअें
कार्यक्रम

शनिवार १८।२।५० रविवार १९।२।५०

१०॥ से १॥	२॥ से ५॥	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
कोविद १	कोविद २	कोविद ३	कोविद ४
×	परिचय १	परिचय २	परिचय ३
×	×	प्रवेश १	प्रवेश २
×	×	प्रारम्भिक	×

मंगलवार ता. २०।९।४९ ७॥ से १०॥	बुधवार ता. २१।९।४९ ७॥ से १०॥
कोविद प्राचीन-पद्य	कोविद अुर्दू
×	परिचय अुर्दू

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा तारीख १९।९।४९ सोमवारको सुबह होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखन-कार्य— (फरवरी/अप्रैल ५० के लिये)

कोविद लेखन-कार्यके लिये स्वतंत्ररूपसे ५० अंक रखे गये हैं। जिसमें १८ अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। परीक्षार्थी अपनी तैयारीकी अवधिमें ८ निबन्ध लिखकर अपने हिन्दी शिक्षकसे जँचवालें। निबन्धोंकी सूची नीचे दी जा रही है। जिन्हींमेंसे कोअी भी ८ निबंध लिखें।

निबन्ध-सूची —

(१) शिक्षाका माध्यम मातृभाषा या राष्ट्रभाषा? (२) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी, (३) स्त्रियोंकी अुच्च शिक्षा. (४) सहशिक्षा (५ विधान-परिषदका राष्ट्रभाषा संबंधी निर्णय (६) वसंत ऋतु (७) साहित्यका अितिहाससे सम्बन्ध (८) नागरिकके कर्तव्य (९) अन्न-समस्या और अुसका हल (१०) अैतिहासिक स्थलकी यात्रा।

आसाम, बंगाल, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बअी, कर्नाटक, आंध्र, लंका के लिये:—

आगामी प्रचार परीक्षाअें ता. १५। १६ अप्रैल ५० कोहोगी।

सशुल्क आवेदन पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख २९ जनवरी है।

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन—

(१) आवेदन-पत्रोंकी खानापूर्ति अधूरी या गलत न हो। अन्यथा आवेदन-पत्र अस्वीकृत ही रहेंगे।

(२) प्रमाण-पत्रकी चिट आवेदन-पत्रपर अवश्य चिपकाअी जावे।

(३) सभी आवेदन-पत्र रजिस्ट्रीसे अेक साथ ही भेजे जावें।

(४) सम्पूर्ण शुल्क-ब्यौरा पत्रक तथा परीक्षार्थी नामावली भी आवेदन-पत्रोंके साथ भेजना न भूलें।

राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा—

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा ता. १५, १६, १७, व १८ अप्रैल का होगी।

आवेदन पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख २९ जनवरी ५० है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—:— सन् ५० के लिये स्वीकृत कोविद-केन्द्र —:—

परीक्षा समिति द्वारा नीचे लिखे केन्द्र सन् ५० के लिये कोविद-केन्द्र स्वीकृत किये गये हैं। कोविदकी परीक्षा केवल अिन्हीं केन्द्रोंमें होगी। पाँचसे कम कोविद परीक्षार्थी रहनेपर अिन केन्द्रोंमें भी कोविद परीक्षाकी व्यवस्था न हो सकेगी।

—आसाम—

केन्द्र	जिला
१. गौहाटी	(गौहाटी)
२. जोरहट	(शिवसागर)

—मनिपुर-स्टेट—

केन्द्र	जिला
१. अिम्फाल	(मणिपुर स्टेट)

—बंगाल—

केन्द्र	जिला
१. कलकत्ता (दक्षिण)	(कलकत्ता)
२. कर्सियांग	(दार्जिलिंग)
३. दार्जिलिंग	,,

—अुत्कल—

केन्द्र	जिला
१. कटक	(कटक)
२. जयपुर	(कोरापुट)
३. ब्रह्मपुर	(गंजाम)
४. पुरी	(पूरी)
५. बालेश्वर	(बालेश्वर)
६. बारीपदा	(मयुरभंजस्टेट)
७ बलांगिरी पटना	(सम्बलपुर)
८ सम्बलपुर	,,

—राजस्थान—

केन्द्र	जिला
१. अजमेर	(अजमेर)
२. जोधपुर	(जोधपुर)
३. अुदयपुर	(अुदयपुर)
४. जयपुर	(जयपुर)

—मध्यभारत—

केन्द्र	जिला
१. जावरा	(मध्यभारत)
२ नीमच	(मंदसौर)
३. मंदसौर	(मध्यभारत)

—गुजरात—

केन्द्र	जिला
१. अंजार	(कच्छ)
२. अहमदाबाद	(अहमदाबाद)
३. अंकलेश्वर	(भरूच)
४. आणन्द	(खेड़ा)
५. कड़ी	(अु. गुजरात)
६. कपडवणज	(खेड़ा)
७. कलोल	(अु. गुजरात)
८ कालोल	(पचमहाल)
९. कुशलगढ़	,,
१०. खेड़ा	(खेड़ा)
११. गोधरा	(पंचमहाल)
१२. जामनगर	(सौराष्ट्र)
१३. जूनागढ़	,,
१३. डभोअी	(वड़ौदा)
१५. डाकोर	(खेड़ा)
१६. धोराजी	(सौराष्ट्र)
१७. धोलका	(अहमदाबाद)
१८. नडियाद	(खेड़ा)
१९. नवसारी	(सूरत)
२०. पाटण	(अु. गुजरात)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र	जिला
२१. प्रान्तीज	(अहमदाबाद)
२२. पादरा	(बड़ौदा)
२३. पालनपुर	(उ. गुजरात)
२४. पिलवाओ	,,
२५. पेटलाद	(खेड़ा)
२६. पोरबन्दर	(सौराष्ट्र)
२७. पोरबन्दर स्त्री	,,
२८. बड़ौदा	(बड़ौदा)
२९ बलसाड़	(सूरत)
३० बोरसद	(खेड़ा)
३१ भरूच	(भरूच)
३२. भावनगर	(भावनगर)
३३. भुज	(कच्छ)
३४ महेसाना	(उ. गुजरात)
३५. मियासरआण	(बड़ौदा)
३६. मोर्वी	(सौराष्ट्र)
३७. राजकोट	,,
३८ राजपीपला	(भरूच)
३९. लुणावाड़ा	(पंचमहाल)
४०. बढ़वानशहर	(सौराष्ट्र)
४१ वसो	(खेड़ा)
४२. व्यारा	(सूरत)
४३ विसनगर	(उ. गुजरात)
४४. वीरमगांव	(अहमदाबाद)
४५ सूरत	(सूरत)
४६ सोजित्रा	(खेड़ा)
४७. हालोल	(पंचमहाल)
४८ हाँसोट	(भरूच)
४९ महुवा	(सूरत)
५०. कोसिन्द्रा	(बड़ौदा)
५१. छोटा उदयपुर	(रेवाकाण्ठा)

केन्द्र	जिला
—महाराष्ट्र—	
१ जलगांव	(पूर्व खानदेश)
२. फैजपुर	,,
३ धुलिया	(पश्चिम-खानदेश)
४ नासिक शहर	(नासिक)
५. मनमाड़	,,
६ सटाणा	,,
७. ठाणें	(ठाणा)
८. बसई	,,
९ उरण	(कुलाबा)
१०. पुणें	(पूना)
११. जुन्नर	(पूना)
१२. बारामती	,,
१३. अहमदनगर	(अहमदनगर)
१४. संगमनेर	,,
१५. सोलापुर	(सोलापुर)
१६. पंढरपुर	,,
१७ बार्शी	,,
१८. सातारा	(सातारा)
१९ सांगली	,,
२० जमखंडी	,,
२१. कोल्हापुर	(करवीर)
२२. राजापुर	(रत्नागिरी)
२३ चिपलुन	,,
२४. नवागावा	(गोमांतक)
२५. बेलगांव	(बेलगाम)
—बंबई—	
१. गिरगांव	(बम्बई)
२. दादर	,,
३. खार	,,
४. विलेपार्ले	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र	जिला	केन्द्र	जिला
५. मालाड	,,	९. यवतमाल	(यवतमाल)
६. घाटकोपर	,,	१०. वाशीम	(अकोला)
— विदर्भ-नागपुर —		११ वर्धा	(वर्धा)
१. अकोला	(अकोला)	१२. हिंगणघाट	,,
२. अमरावती	(अमरावती)	**हैदराबाद (दक्षिण)**	
३. अलिचपुर शहर	,,	१. अम्बाजोगाओ	
४ कारंजा	(अकोला)	२. गुलबर्गा	
५. खामगांव	(बुलढाणा)	३ जालना	
६ दर्यापुर (आ)	(अमरावती)	४. लातुर	
७. धंतोली	(नागपुर)	५. हिंगोली	
८. भंडारा	(भंडारा)	६. हैदराबाद दक्षिण	

सूचनाः—(१) अिन स्थायी कोविद केन्द्रोंके अलावा अुन केन्द्रोंमें भी कोविद परीक्षाकी व्यवस्था की जा सकेगी, जिनमें:—

[क] कोविद परीक्षार्थियोंकी संख्या १० या १० से अधिक है।

[ख] परीक्षाकी व्यवस्था किसी हायस्कूलके अन्तर्गत है।

[ग] जो स्थायी कोविद केन्द्रसे ५ मीलसे अधिक दूरी पर है।

(२) कोविदके अस्थायी-केन्द्र खोलनेके लिये आवेदन-पत्र भरनेकी तारीखसे १५ दिन पहले प्रांतीय संचालकके द्वारा आवेदन-पत्र आना चाहिये।

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
बंगाल	श्री अशोककुमार भट्टाचार्य	१८७७	कलकत्ता
अुत्कल	,, म. सीताराम मूर्ति	१८७८	पारलाखिमेंडी
राजस्थान	,, अमृतकुमारजी	१८७९	अजमेर
,,	,, परमानन्द जेसाराम हरवाणी	१८८०	,,
,,	,, पहलूमल	१८८१	,,
गुजरात	,, गमनलाल वजोभाओ चौधरी	१८८२	कोसम्बा
,,	,, मोहनलाल शिवशंकर त्रिवेदी	१८८३	धर्मज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त		नाम	क्रमांक	स्थान
"	"	घनश्यामभाई भा. अमीन	१८८४	बड़ौदा
"	"	हंसमुखलाल मोहनलाल शाह	१८८५	पादरा
"	"	मनहरलाल बालाशंकर भट्ट	१८८६	"
"	"	लक्ष्मीलाल ओझा	१८८८	दोहद
"	"	कल्याणभाई पु. पटेल	१८८७	मोरी
महाराष्ट्र	"	कु. वेणु दत्तात्रय गर्गे	१८८९	धुलिया
"	"	कान्तीलाल रामचन्द्र गुजर	१८९०	अहमदनगर
"	"	पंढरीनाथ श्रीधर माटे	१८९१	"
"	"	रसिकलाल वाड़ीलाल शाह	१८९२	"
"	"	रामराव हरि शिन्दे	१८९३	"
"	"	शिवराम वामन आटवले	१८९४	पूना २
"	"	शंकर विनायक कुलकर्णी	१८९५	कोल्हापुर
"	"	दामोदर माधव सुखसे	१८९६	जामखेड़
"	"	कुशाबा ओंकार चौधरी	१८९७	पाडलसा
"	"	सदाशिव आबाजी टिपरे	१८९८	संगमनेर
"	"	शिवनाथ बद्रीनारायण बंग	१८९९	अहमदनगर
"	"	कु. कमल गोपाल पेंडसे	१९००	पूना
बम्बई	"	रमाकान्त कृष्णदास शाह	१९०१	मालाड
"	"	रमेश केशवलाल त्रिवेदी	१९०२	कालबादेवी
"	"	वे. कृष्णन्	१९०३	माटुंगा
"	"	कपिलाबहन ठा. शाह	१९०४	गिरगांव
"	"	नरेन्द्र दयाशंकर पंड्या	१९०५	बम्बई-६
"	"	हरगोविन्द लक्ष्मीदास आशर	१९०६	कोट
"	"	छोटुभाई मयाराम जोशी	१९०७	बम्बई-४
"	"	दिवाकर बालाजी जोगलेकर	१९०८	दादर
विदर्भ-नागपूर	"	गणपत गंगाधर गायकवाड़	१९०९	खामगांव
"	"	नवीनचन्द्र नर्मदाशंकर शुक्ल	१९१०	नागपूर
"	"	अमरसिंह दगडूसिंह चंदेल	१९११	अमरावती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक	प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
गुजरात	प्रभासपट्टन	३७६	महाराष्ट्र	गांधली	३६८
,,	डभाली	३८८	,,	भिंगार	४०१
,,	पारखेत	३५९	,,	सातारा रोड (पाडली)	४११
,,	समौ	३६४	,,	निझामपुर	४९७
,,	कलक	३६६	वि. नागपुर-	भिच्छापुर	४०१
,,	वरोवल	३६७	,,	सिन्देवाही	४२५
,,	मोरचन्द्र	६६८	,,	तलेगांव दशासर	३९१
,,	कोसम (घोलाकुवा)	३६९	,,	पदूरजरी	४४५
,,	मांडल	३७१	,,	साखरखेडी	४४४
,,	आछोद	४१७	,,	नांदोगांव पेठ	४६५
,,	सुरासामल	४१८	राजस्थान-	राणावास	४०७
,,	दावड	४२१	,,	आमेर	४१३
,,	आलसा	४८४	बम्बई-	वरसोवा	४३८
,,	शिवराजपुर	४८५	अुकल	खर्घा	४३५
,,	मोरज	४८६	,,	ढेंकानाल	४३६
,,	बामणा	४६०	हैदराबाद-	बिदर	४५०
,,	वडथल	४६२	,,	यादगीर	४०६
,,	राजुवाडिया	४९३	,,	शाहबाद	१०६७
,,	चूडा	४६४	बंगाल	पूर्वस्थली	७९१
,,	पडवा	४६८	,,	काटवा	४२१
,,	रामोल	४६६			
,,	रडू	५४०			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: जय हिन्द ! जय हिन्दी !! :

--:-- राष्ट्रभाषा विद्यालय, वर्धा --:--

(ता. ५-१२-४९ से चालू)

हिन्दी आज हमारी राष्ट्रभाषा घोषित हो चुकी है । अतः प्रत्येक व्यक्तिका हिंदी सीखना अनिवार्य है। अभी तक वर्धामें अिसकी अुचित व्यवस्था नहीं थी । अिस कमीको दूर करनेके लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी ओरसे अेक राष्ट्रभाषा विद्यालय (तेलंगपुरा स. नं. १३ में) स्थापित किया गया है । अुसका कार्य सोमवार ता. ५-१२-४९ से आरंभ हो गया है। जो भाअी-बहन राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखना चाहें, या हिन्दीकी परीक्षाओं (प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय, कोविद, राष्ट्रभाषा-रत्न, प्रथमा, विशारद, साहित्य-रत्न) में बैठनेके लिये अभ्यास करना चाहें वे निम्नलिखित पतेपर (संचालक, राष्ट्रभाषा विद्यालयसे) मिलें या पत्र-व्यवहार करें ।

—श्रीचरण आजाद 'विशारद'
संचालक,
राष्ट्रभाषा-विद्यालय, वर्धा

❀ हमारे नये प्रांतीय संचालक ❀

१. श्री छगनलाल जैन अेम. अे. को गत १ दिसम्बरसे "असम प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति" के संचालक पदपर नियुक्त किया गया है। अुनका पता यों है:—

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल कांगड़ी.

श्री छगनलाल जैन अेम. अे.
असम प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
फैंसी बाजार, गोहाटी, असम।

२. श्री प्रेमसिंह चौहान 'दिव्यार्थ' को गत १०-१२-४९ से "मध्यभारत प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति" के संचालक पद पर नियुक्त किया गया है । अुनका पता यों है:—

डा० प्रेमसिंह चौहान 'दिव्यार्थ'
पो० त्योंदा (Teonda) जि० भेलसा (Bhilsa)
मध्यभारत

—मंत्री, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

पुराने प्रश्नपत्र प्राप्य

१. प्रारंभिक-प्रश्नपत्र [प्रेसमें]

२. प्रवेश-प्रश्नपत्र [प्रेसमें]

३. परिचय-प्रश्नपत्र [सन् ४७ से ४९ तक परीक्षाओंके] ०-८-०

४ कोविद-प्रश्नपत्र [„ „] ०-१०-०

राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके पुराने प्रश्नपत्रोंकी मांग हमेशा अधिक रही है। पीछे हम अपने बहुतसे ग्राहकोंको अुनके मँगाअे हुअे संपूर्ण सेट नहीं भेज सके। कारण, खुले प्रश्न-पत्र होनेसे अुनके चुनने और भेजनेमें काफी परेशानी व विलंब होता था। अिस कमीको दूर करनेके लिये अब परीक्षा-क्रमके अनुसार पुराने प्रश्नपत्र अलग अलग पुस्तकाकार छपाअे गअे हैं। परीक्षार्थी जिस परीक्षाके प्रश्न-पत्र चाहे, मँगा सकता है।

परीक्षामें बैठनेके पूर्व यह जान लेना अत्यंत जरूरी है कि अुसमें किस तरहके प्रश्न पूछे जाते हैं। अिसके लिये हरेक परीक्षार्थीको चाहिये कि वह पुराने प्रश्नपत्रोंको अेक बार अवश्य पढ़े,—पढ़े ही नहीं—अुन्हें अपनी बुद्धिसे, अपने अनुभवसे हल भी करे, ताकि अपनी परीक्षामें पूछे जानेवाले प्रश्नोंको वह ठीक ठीक समझ सके और अुनके सही अुत्तर लिख सके। परीक्षार्थियोंको यह सुविधा प्रदान करना ही अिन प्रश्न-पत्रोंको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेका अुद्देश्य है।

हरेक खुला प्रश्नपत्र दो पैसेके हिसाबसे बेचा जाता है। लेकिन अिन संगृहीत प्रश्नपत्रोंका मूल्य हमने अपेक्षाकृत कम रखा है। आशा है, परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

—प्रकाशन विभाग

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

अितिहासमें अेक युगान्तरकारी घटना

भारतका विधान हिन्दीमें

स्वतन्त्र भारतमें प्रजातंत्रकी स्थापना होते ही राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसादने सर्वप्रथम जो महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया है, वह है विधानके हिन्दी अनुवादपर राजकीय मुहर लगाना।

विधान परिषदने अध्यक्षको यह अधिकार दिया था कि वे विधानके हिन्दी अनुवादको प्रमाणित घोषित कर सकते हैं। तदनुसार विधान परिषदके अध्यक्ष अेवं भारतीय गणतंत्रके प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसादने अुसपर अपने हस्ताक्षर कर दिये। विधानकी जिन तीन प्रतियोंपर पं० जवाहरलाल नेहरू, डॉ. पट्टाभिसीतारमैया अेवं विधान परिषदके प्रायः अन्य सभी सदस्योंने गत २६ जनवरीको हस्ताक्षर किये हैं, अुनमेंसे अेक प्रति हिन्दीकी भी है। यह हिन्दीके अितिहासमें अेक युगान्तरकारी घटना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय			पृ
१. मातृ-वंदना	...	...	१३
२. साहित्यका प्रयोजन	...	...	१३
३. पंचवटीपर अेक दृष्टि	...	...	१४
४. सिन्धी जनता और हिन्दी	...	...	१५
५. राष्ट्रभाषा-संसार	...	...	१५
६. हमारी नजरोंमें	...	...	१५
७. प्रांतीय हलचलें	...	...	१६
८. प्रधान मंत्रीकी ओरसे	...	...	१७
९. द्वितीय अ. भा. राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन		...	१७
१०. सम्मेलन निमंत्रण-पत्र	...	...	१७
११. परीक्षा विभाग	...	...	

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है। वी.
अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभा
भेजा जा सकेगा'।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक हर महीनेकी १६ तारीखको कार्यालयसे अ
तरह जाँचकर भेजा जाता है। अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्था
डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्रा
नम्बर साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि वे राष्ट्रभाषामें प्रकाशनार्थ लेख आदि
अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको
आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक
पास आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, फरवरी—१९५० [अंक ४

मातृ-वंदना

: श्री. अनिलकुमार, साहित्यरत्न :

जय भारत जननी !
जय जय जय भारत जननी !

बंधमुक्त, स्वाधीन, सुसज्जित,
हे सुहागिनी गौरव-गर्वित,
विगत युगोंका पराधीनता-
तिमिर तुम्हारे पद-तल विदलित ।
कोटि कंठ कल-कल निनादिनी !
जय भारत जननी !

बंदिनि ! तेरे बंधन खंडित,
भाग्य भाल विस्तृत रवि-मंडित,
प्रभापूर्ण साकार चेतना—
तुम जीवित, जागृत, जन पूजित ।
सित तुषारयुत हिम किरीटिनी !
जय भारत जननी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूँज रहा अुन्मुक्त विजय-रव,
भारतभूमि, भूमिका वैभव,
शोभित यह तिरंग चक्रांकित,
नव स्वाधीन, सुखद, चिर अभिनव।

मुकुट-शिरोमणि वीर प्रसविनी !
जय भारत जननी !

आज मुक्तिका पर्व अमर हो,
जग-जीवन आनंद-मुखर हो,
मिटे क्रूर शासनका नर्तन
अन्न-वसन-पूरित घर घर हो।

जन जनके अन्तरकी वाणी—
जय भारत जननी !

स्वतन्त्र प्रजातन्त्रीय भारतमें श्रमका श्रेय बढ़ना चाहिअे—कार्यकी प्रतिष्ठा होनी चाहिअे। हम मानवके अैसे तत्वोंको अूँचा अुठाना चाहते हैं, जिनसे सुख और समृद्धिकी ओर—प्रगति और प्रतिष्ठाकी ओर हम बढ़ सकें। हमने विरासतमें जो कुछ पाया है, अुससे हम देशको नयी जागृति तथा नये सृजनकी ओर ले जा सकते हैं, बशर्ते कि अपने मतभेदोंको दूर कर दें।

—डा० राजेन्द्रप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यका प्रयोजन

: श्री. नर्मदेश्वर अुपाध्याय :

कोअी भी नया लेखक या कवि कुछ लिखनेके पहले यह सोचनेकी कोशिश करता है कि वह क्या लिखे और किसके लिअे लिखे ? वह किसी अैसे मौलिक विषयकी खोजमें विकल रहता है जिसपर अब तक कुछ लिखा ही न गया हो, अथवा वह किसी व्यापक अेवं असाधारण विषय को लेकर ही अपने कौतुक दिखाना आरम्भ कर देता है। आखिर यह अटकलबाजी कब तक चलेगी ? क्या हमारे पुरखोंने अिन्हीं अटकल-बाजियोंके बूते अितने बड़े-बड़े वेद और पुराण रचे थे ? बात कुछ अजीब-सी है। लगता है, जैसे हमारे सोचनेका ढंग कुछ बेतुका हो गया है। अतअेव आवश्यकता अिस बातकी है कि हम अपने सोचनेका ढंग किंवा अपना दृष्टिकोण बदलनेका प्रयत्न करें।

नअे साहित्यकार

हमारे नये साहित्यकारकी गतिविधि कुछ अनिश्चित-सी दिखाअी पड़ रही है। तनिक ध्यानसे देखनेपर हमें अुसकी रूपरेखा कुछ अैसी ज्ञात होती है जैसे वह परिपक्व होनेसे पहले ही किसी न किसी वर्ग अथवा दलकी संकुचित राजनीतिमें बरबस ही प्रविष्ट होता जा रहा है। और धीरे-धीरे कुछ समय बाद अुसके मस्तिष्कपर अुस दल-विशेषका प्रभाव किसी गहरे नशेकी तरह छा जाता है। कभी-कभी वह अुस नशेसे चौंक अुठता हुआ-सा भी जान पड़ता है। फिर भी लगता है कि वह अुस नशेमें चूर होता जा रहा है। अुसका और निकटसे विश्लेषण करनेपर हमें ज्ञात होता है कि असकी भी अेक छोटी-सी जिंदगी है, जिसमें अुसे बड़ी ठोकर खानी पड़ी है, जिसकी प्रतिक्रियास्वरूप वह अमुक दल अथवा वर्ग-संघर्षोंमें पड़कर रूढ़िवादी परम्पराओंके प्रति विद्रोही हो अुठा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबकी भाँति वह भी अेक साधारण और मध्यम श्रेणीका मनुष्य है अुसका भी अेक परिवार है, जिसके पोषणके लिअे वह किसी अेक दफ्तर में गुलामी करना भी स्वीकार करता है। किन्तु यह सब होते हुअे भी वह अपने जीवनके अत्यन्त पवित्र अेवं अेकांत क्षणोंमें कुछ-न-कुछ लिखता रहता है। कारण बिना लिखे अुससे रहा भी नहीं जाता। लिखनेके साथ-साथ अुसे छपानेकी प्यास पैदा होती है। छप जानेपर भी कोअी जरूरी नहीं है कि पाठक या आलोचक अुसकी हर अेक चीज पसन्द ही करें और अुसकी तारीफके पुल बांधना शुरू कर दें। वस्तुतः होता यह है कि अुसकी आलोचना होती है। कभी-कभी बड़ी कटु आलोचना होती है। आलोचनाकी आंचको सब नहीं सह पाते। अिसकी कसौटीपर अुतर जाना ही लेखक की प्रामाणिकताकी सबसे बड़ी निशानी होती है। परीक्षाके अिन क्षणोंसे गुजरना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। तो, आलोचककी चोट खाकर हमारा प्रयोगकालीन साहित्यकार अेक बार तिलमिला अुठता है। वह समझ ही नहीं पाता कि आखिर वह क्या लिखे जिससे जनता-जनार्दनको भी संतोष हो तथा अुसके टूटे हुअे दिल को भी दिलासा मिल सके। यहीं अपने जीवनके महाकाव्यकी भूमिका लिखते-लिखते अुसे अेक बार थकान महसूस होती है, और लेखनी अुसके हाथोंसे गिर पड़ती है अैसी अवस्थामें वह अपने गंभीर अुत्तरदायित्वका वहन नहीं कर पाता अपने महाकाव्यका प्रथम अध्याय आरम्भ करनेके पूर्व ही वह पस्त होकर रास्तेमें किसी ओर ढुलक जाता है। फिर अुसकी ओर आँख अुठाकर देखना भी हम या आप पसन्द नहीं करते।

अैसे प्रयोगकालीन साहित्यकारोंकी कृतियोंकी शव-परीक्षा नित्य ही किसी प्रकाशक या बड़े अखबारके दफ्तरमें होती रहती है। यह है हमारे प्रयोगकालीन साहित्यकारोंकी रूपरेखा जिनमें अधिकांश अपने जीवनकी भूलभुलैयामें ही दौड़धूप मचाकर रह जाते हैं।

गंभीर चिन्तनकी आवश्यकता

तो, अैसी स्थितिमें आवश्यकता अिस बात की है कि हमारा आजका साहित्यकार चाहे वह बुद्धिजीवी हो अथवा श्रमजीवी-प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालीन हो अथवा अुससे आगे बढ़ा हुआ–अपनी गतिविधिपर गम्भीर होकर विचार करे। वह तनिक ध्यानसे देखे कि वह अपने प्रति, समाज और राष्ट्रके प्रति तथा अुसके बाद समस्त मानवताके प्रति कितना अीमानदार है। यदि अिस मौकेपर वह अपने को कुछ भी कमजोर पाता है तो आगे और अधिक दृढ़ होनेका प्रयत्न करे। अपनी आलोचनाओंसे अुसे निराश नहीं होना चाहिअे, कारण वे तो अुसे भविष्यमें सावधान होनेकी चेतना प्रदान करती हैं। आलोचनाके माध्यमसे ही वह अपनी त्रुटियोंका निवारण करते हुअे अपने भविष्यको अेक नया और मौलिक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है ! अतअेव अुसे किसी प्रकारकी भी आलोचनाका खुले हृदयसे स्वागत करना चाहिये। आज नहीं तो कल दुनिया अुसकी कृतियोंका तथा अुसका सम्मान करेगी ही, बशर्ते वह किसी वर्ग-संघर्ष या दल-विशेषमें पड़ कर अपनी सृजन शक्ति अर्थात प्रतिभाको कुंठित न बना बैठे।

प्रगतिशीलता साहित्यका शाश्वत आधार

कारण साहित्यकारको आज तक कभी भी किसी प्रकारकी सस्ती अथवा संकीर्ण राजनीति से प्रेरणा नहीं मिली है। यह सोचना कि राजनीति या अमुक वर्ग-विशेषसे अुसके विचारों को किसी प्रकारकी प्रगति मिलनेकी संभावना है, बिल्कुल गलत और निराधार है। प्रगतिशीलता तो साहित्यकार का अपना शाश्वत गुण है। विश्वास मानिअे : वाल्मीकि और कालिदास अपने युगके सबसे अधिक प्रगतिशील रचनाकार थे, कारण अुन्होंने अपने युगधर्मको पहचाना था।

आज आवश्यकता अिस बात की है कि हमारा साहित्यकार अपने युगके सत्यको स्वीकार करता हुआ आगे बढ़नेका संकल्प करे। युगका सत्य ही कलाकारका सत्य होता है तथा अुस सत्यकी अवतारणा करना ही कलाकार का सबसे बड़ा धर्म है। हमारे सांस्कृतिक मनीषियोंने सदैव 'लोक हिताय' किंवा 'बहुजन हिताय' साहित्य-सृजन करने की आवाज अूँची अुठाअी है। क्या हमारा आजका साहित्यकार अुन महर्षियोंकी पुकार को अनसुनी कर आगे बढ़ सकेगा ? कदापि नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यकार और जनता

आज कोटि-कोटि मुखों और कोटि-कोटि हाथोंवाली जनता अपने साहित्यकारके मुखसे अपनी महागाथा सुननेको अुत्सुक है। वह आसमान की नहीं, धरतीकी बातें सुनना चाहती है। अुस शस्य-श्यामला धरतीकी बातें सुनना चाहती है, जिसकी कोखसे नया युग जन्म ले रहा है। वह अपने साहित्यकारकी आँखोंमें अपने आंसू और अुसके ओठोंपर अपनी पवित्र मुस्कान की निर्मल छाया देखनेके लिअे व्याकुल हो रही है और यही हमारे साहित्यकारका तथा अुसके साहित्य-का वास्तविक प्रयोजन है। साथ ही, अुसे अपनी वाणीमें अितनी सहज शक्ति और निश्छल सरलता लानी होगी जिसके बलपर अुसकी आवाज कोटि-कोटि निरीह जनताके कानोंतक पहुँच सके। आज अुसकी आवाज में अुस क्षमताकी आवश्यकता है जो कराहती हुअी मानवताको स्वास्थ्य अेवं सौन्दय प्रदान कर सके और यहीं हमारे कलाकारकी, कलाकी यथार्थ परिणति परिलक्षित होती है।

—'भारत'

क्षमाशीलता तो आत्माका गुण है और अिसलिअे वह अहिंसाके ही अन्तर्गत है। प्रेमके दानसे ही क्षमाशीलता आ सकती है; क्योंकि आत्मिक शक्ति द्वारा क्रोधका अक्रोधसे प्रतिकार किया जाता है। क्षमाशीलतासे मनुष्य तंग वातावरणको साफ कर देता है और धरातलको अूँचा अुठा देता है। अिसीलिअे क्षमाशीलता वास्तवमें शक्तिशाली व्यक्ति ही पारिष्कृत कर सकता है। यदि व्यक्तिके लिअे क्षमा आवश्यक है तो राष्ट्रोंके लिअे भी वह अुपयोगी है। कमजोर कभी दूसरोंको क्षमा नहीं कर सकता। प्रेम और सहिष्णुतासे ही क्षमाशीलता आती है।

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी

पंचवटीपर अेक दृष्टि

: श्री. मो. द्रि. पराड़कर, अेम. अे. राष्ट्रभाषा-कोविद :

जीवन क्या है ? अिस प्रश्नका अुत्तर है 'जीवन अेक संघर्ष है'। 'संघर्ष' शब्दसे ही मालूम होता है कि जीवनमें कठिनाअियाँ बहुत हैं, नहीं तो संघर्ष कैसे पैदा हो सकता है ? श्री महादेवी वर्माके शब्दोंमें कहना हो, तो जीवनमें फूलोंके नहीं, बल्कि 'काँटोंके हार' पहनने पड़ते हैं। अगर यह सच हो तो अिन कठिनाअियोंसे, अिन कंकड़ोंसे, थोड़ी देरके लिये क्यों न हो छुटकारा पाना आवश्यक है और अिस आवश्यकताको पूरा करना यही साहित्यका काम है। अैसा साहित्य जीवनमें अेक अपूर्व और अनुपम स्थान प्राप्त करेगा, यह कहनेकी जरूरत नहीं।

साहित्य अनेक प्रकारका होता है। अुन सब प्रकारोंमें काव्य अपनी विशेषता रखता है। काव्य वह चीज है जो हृदयसे निकलकर कम-से-कम शब्दोंमें गहरा अर्थ भर देती है। हृदयसे निकलनेके नाते कविता जितना हमारे निकट आती है अुतना अितर साहित्य नहीं आ सकता। अिसीलिये पंतजी कविताके बारेमें लिखते हैं "वियोगी होगा पहला कवि। आहसे अुपजा होगा गान।" दूसरे चरणसे मालूम होता है कि काव्यकी शक्तका असर क्यों होता है। जिस भाषामें काव्य अूँचे दर्जेका है अुस भाषाके साहित्यकी कीमत भी अुतनी ही बढ़ती है, अिसमें शक नहीं।

हिन्दी काव्योंमें 'साकेत', 'प्रिय प्रवास' और 'कामायनी' ये तीन महाकाव्य माने जाते हैं। अिन महाकाव्योंके बाद 'स्वप्न', 'पथिक', 'मिलन' 'जयद्रथ-वध', यशोधरा', 'पंचवटी' आदि खंडकाव्योंकी ओर हमारी दृष्टि जाती है। अिन सब खंडकाव्योंमें मैथिलीशरण गुप्तकी 'पंचवटी' मेरी दृष्टिसे सर्वोत्तम है और अुसीके बारेमें अपने विचार प्रकट करनेका यहाँ साहस कर रहा हूँ।

'पंचवटी' में प्रारंभिक अेक तिहाअी अंशमें, शान्तिकी मन्दगति, स्रोतस्विनी बहती है जिसमें प्रहरी लक्ष्मणका मनःप्रवाह छोटी-छोटी तरंगोंके रूपमें सहयोग देता है और पाठकके मनको हलके-हलके अपने साथ तैराता है। अुसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद शूर्पणखाके अेक सुन्दर रमणीके रूपमें आनेसे थोड़ा विनोदपूर्ण वार्तालाप चलता है; और फिर जब राक्षसी निराश होकर अपनी प्रकृतिका दर्शन कराती है तब अद्भुत, भयानक और बीभत्स रसके साथ काव्यका कार्य संपन्न हो जाता है। अिस काव्यमें भाषा और वर्णनशैली अितनी प्रसादयुक्त और मधुर विनोदसे भरी हुअी है कि भाषा और भाव अेक हो जाते हैं; वर्णन तथा वर्ण्यका भेद मालूम ही नहीं होता।

शुरूमें लक्ष्मणका परिचय ही अेक बड़े कुतूहलपूर्ण ढंगसे दिया है—

पंचवटीकी छायामें है सुन्दर पर्णकुटीर बना।
अुसके सम्मुख स्वच्छ शिलापर धीर वीर निर्भीक मना॥
जाग रहा यह कौन धनुर्धर, जब कि भुवनभर सोता है।
भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है॥

कुटीमें राम और सीता निद्राका अनुभव कर रहे हैं; बाहर 'स्वच्छ चाँदनी बिछी हुअी है' और लक्ष्मण पहरा दे रहे हैं। अुस समय लक्ष्मण 'भाव-सिन्धुमें पैठे' हैं। कभी पुरानी बातोंकी याद आती है, कभी वर्तमान परिस्थितिपर सन्तोष होता है, कभी प्राकृतिक दृश्योंको देखकर मुग्ध हो जाते हैं और कभी तत्व-निरूपण, भी होता है; क्योंकि 'कोअी पास न रहनेपर भी जन-मन मौन नहीं रहता। आप आपकी सुनता है, वह आप आपसे है कहता।' अुस जीवनमें लक्ष्मणके लिये आनन्दकी सब सामग्रियाँ मौजूद हैं। अेक यह भी है —

आकर विचित्र पशु पक्षी यहाँ बिताते दोपहरी।
भाभी भोजन देतीं अुनको, पंचवटी छाया गहरी॥
चारु चपल बालक ज्यों मिलकर मा को घेर खिजाते हैं।
खेल खिजाकर भी आर्याको वे सब यहाँ रिझाते हैं॥

यह सोचते-सोचते सामने गोदावरीपर दृष्टि जाती है। अुस नदीका बहना अुनके लिये अुत्सव है। गोदावरी शायद जानती है कि राम राजा हैं अिसलिये

गोदावरी नदीका तट वह ताल दे रहा है अब भी।
चंचल जल कलकल कर मानों तान ले रहा है अब भी॥
नाच रहे हैं अब भी पत्ते, मनसे सुमन महकते हैं।
चन्द्र और नक्षत्र ललककर लालच भरे लहकते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आर्यके विपिन राज्यमें' राज-दरबारकी महफिल सजानेके लिये देखिये :—

वैतालिक विहंग भाभीके सम्प्रति ध्यान-लग्नसे हैं।
नये गानकी रचनामें वे कवि-कुल-तुल्य मग्नसे हैं॥
बीच-बीचमें नर्तक केकी मानों यह कह देता है।
मैं तो प्रस्तुत हूँ, देखें कल कौन बड़ाअी लेता है॥

अिस प्रकार लक्ष्मणको 'वनमें ही विश्वानुकूल्य' का अनुभव हो रहा है। अगर किसी बातका अुन्हें दुख है तो वह है 'नहीं जानती हाय हमारी माताअें आमोद-प्रमोद।' खासकर 'बेचारी अुर्मिला हमारे लिये व्यर्थ रोती होगी' यह विचार लक्ष्मणको अस्वस्थ बना देता है, और अिसी यादगारके बाद 'मग्न हुअे सौमित्रि चित्र-सम नेत्र निमीलित अेक निमेष' यह कितना अर्थ रखता है!

अिसके बाद नाटकका दृश्य बदल जाता है और 'अनुपम रूप अलौकिक वेष', धारण करनेवाली 'हास्य-वदनी बालाके' रूपमें शूर्पणखा अुपस्थित होती है। अुसके अंगोंमें रत्नाभरण थे और दायें हाथमें 'चित्र-विचित्र सुमनमाला' थी। थोड़ी ही देरमें वह रमणी 'हा निष्ठुर कान्त' कहकर लक्ष्मणसे 'विषम-विराग' का त्याग करनेको कहती है। यहाँसे शूर्पणखाकी भर्त्सना तक का वार्तालाप पढ़नेकी चीज है। यहाँ हमें शूर्पणखाकी विदग्ध तर्क पद्धति और मानसिक असमंजसताका बहुत अच्छा प्रमाण मिलता है। अुसकी धमकी देखिये 'पर क्या पाप न होगा तुमको आश्रमके धर्मक्षयमें?" । शूर्पणखा और लक्ष्मणका संवाद अेक पुराने ज़मानेका नहीं बल्कि आधुनिक युवतीका, अेक गम्भीर-प्रकृति अतअेव अरसिक युवकके साथ चलनेवाला संवाद है। जब लक्ष्मण अपने विवाहित होनेकी बात बतलाकर अुसे रोकनेका प्रयत्न करते हैं, तब वह कहती है—

पर क्या पुरुष नहीं होते हैं दो दो दाराओं वाले?
नर-कृत शास्त्रोंके सब बन्धन हैं नारी को ही लेकर,
अपने लिये सभी सुविधाअें पहले ही कर बैठे नर।

कैसी आलोचना है मीठी लेकिन चुभनेवाली। शूर्पणखा मानों यहाँ आजकलकी युवती बनकर पुरुषोंकी निर्ममता और अत्याचारके खिलाफ़ बग़ावतका झंडा अुठा रहा है। लक्ष्मणकी ओर आकर्षित होनेमें अगर दोष है तो लक्ष्मणके सौंदर्यका है अिस बातको सिद्ध करनेके लिये शूर्पणखाका तर्क देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह सकते हो तुम कि चन्द्रका कौन दोष जो ठगा चकोर ?
किन्तु कलाधरने डाला है किरण-जाल क्यों अुसकी ओर ?
दीप्ति दिखाता यदि न दीप तो जलता कैसे कूद पतंग ?
वाद्य-मुग्ध करके ही फिर क्या व्याध पकड़ता नहीं कुरंग ?

ये बातें चल ही रही थी कि अुषाके साथ सीताका आगमन हुआ। सीता और लक्ष्मणकी बातचीतमें घरेलू जीवनके कितने ही हृदयंगम पहलू दिखाअी देते हैं। सीताका 'हमारे ये देवर हैं अैसे ही' यह कहना कितना मनोहर है। अिस दृश्यको पूर्ण करनेके लिये सीताने थोड़ी ही देरमें रामको जगाया और वह 'श्याम शोभा बाँकी' देखकर शूर्पणखाके प्रेमका प्रवाह रामकी ओर अुमड़ पड़ा। फिर वार्तालाप शुरू हुआ और शूर्पणखाको मालूम हुआ कि अुसको देनेके लाले पड़ गये, तब वह आग बबूला होकर बोल अुठी।

'मेरे भ्रुकुटि-कटाक्ष तुल्य भी ठहरेंगे न तुम्हारे चाप'

अिसपर 'परवशता हो सकती है पर होती नहीं भीतिमें प्रीति' अितना कहकर प्रभु तो 'मौन हुअे तनिक गम्भीर हुअे' लेकिन लक्ष्मणकी 'और अिसे तुम भी न भूलना, तुम नारी होकर अितना। अहम्भाव जब रखती हो तब रख सकते हैं नर कितना।' यह चेतावनी सुनकर 'झंकृत हुअी विषम तारोंकी तंत्रीसी स्वतंत्र नारी' यहाँ राम, लक्ष्मण और शूर्पणखाके स्वभावोंकी झलक कितनी कुशलतासे चित्रित की है! अितना होनेके बाद देखिये अद्भुत और भयानकका मेल

गोल कपोल पलटकर सहसा बने भिड़ोंके छत्तोंसे,
हिलने लगे अुष्ण साँसोंसे ओठ लपालप लत्तोंसे,
कुंद-कलीसे दाँत हो गये बढ़ वराहकी डाढ़ोंसे
जहाँ लाल साड़ी थी तनुमें बना चर्मका चीर वहाँ।
हुअे अस्थियोंके आभूषण थे मणि-मुक्ता हार जहाँ॥
कन्धोंपरके बड़े बाल वे बने अहो आँतों के जाल।
फूलों की वह वरमाला भी हुअी मुंडमाला सुविशाल॥

तदनंतर प्रभुका अिशारा पाकर लक्ष्मणने अुसके नाक कान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये, प्राण नहीं लिये तब

और कुरूपा होकर तब वह रुधिर बहाती बिल्लाती।
धूल अुड़ाती आँधी अैसी भगी वहाँसे चिल्लाती॥

पंचवटीका दूसरा गुण है प्रकृतिके साथ आत्मीयता। मनुष्यका हरेक काममें साथ देनेवाली प्रकृति अुसके सुखमें सुखी और दुखमें दुखी बन जाती है। प्राकृतिक दृश्योंके वर्णन 'पंचवटी' में जहाँ तहाँ बिखरे हुअे हैं। काव्यकी शुरूआत ही देखिये —

चारु चन्द्रकी चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थलमें।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुअी है अवनि और अम्बर-तलमें॥
पुलक प्रकट करती है धरती हरित-तृणोंकी नोकोंसे।
मानों झीम रहे हैं तरु भी मन्द पवनके झोकोंसे॥

सबसे अच्छा और हृदयंगम वर्णन प्रातःकालका या अुषाके आगमनका है जो पाठकके मनपर सदाके लिये अंकित हो जाता है:—

अितनेमें पौ फटी पूर्वमें पलटा प्रकृति-पटी का रंग।
किरण-कण्टकोंसे श्यामाम्बर फटा, दिवाके दमके अंग॥
कुछ कुछ अरुण सुनहली कुछ कुछ प्राची की अब भूषा थी।
पंचवटी की कुटी खोलकर खड़ी स्वयं क्या अूषा थी॥

अंतिम चरण सीताके आगमनको कितनी कुशलतासे सूचित करता है! खासकर काव्यमें तीसरी पंक्ति अपूर्व है। सबेरा होनेपर 'स्वच्छन्द सुमन्द गन्धवह' बहने लगा, विकसित फूलोंपर भौंरे टूट पड़े, यह दृश्य कविकी लेखनीके प्रभावसे कैसा सजीव हो अुठा है देखिये:—

हँसने लगे कुसुम काननके देख चित्रसा अेक महान्।
विकस अुठी कलियाँ डालोंमें निरख मैथिली की मुसकान॥
कौन कौनसे फूल खिले हैं, अुन्हें गिनाने लगा समीर।
अेक अेक कर गुन गुन करके जुड़ आयी भौंरोंकी भीर॥

'योजकस्तत्र दुर्लभः' अुक्तिकी यथार्थता यहाँ मालूम होती है। सीताके आगमनका परिणाम अेक शब्द-चित्रके जरिये प्रकट हुआ—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मुख देख, पाण्डुसा पड़कर, गया चन्द्र पश्चिमकी ओर।
लक्ष्मणके मुँहपर भी लज्जा लेने लगी अपूर्व हिलोर॥

पंचवटीमें विनोदकी लहरें भी अुछलती हुअी दिखाअी देती हैं। सीता लक्ष्मणको रमणीके साथ बातचीत करते देखकर बोल अुठी 'कबसे चलता है बोलो, यह नूतन शुक-रंभा संवाद?' (यह सुनकर किसको हंसी न आयेगी?) अुसी विनोदमें सीता लक्ष्मणसे कहती हैं 'देनेमें कार्पण्य तुम्हें हो तो लेनेमें है क्या सोच?' लेकिन जब शूर्पणखा रामके गलेमें वरमाला डालनेके लिये तैयार हुअी तब लक्ष्मण भाभीको अुलाहना देनेका सुअवसर छोड़ते नहीं —

पञ्चायत करने आयी थी, अब प्रपञ्चमें क्यों न पड़ो।
वञ्चित ही होना पड़ता है यदि औरोंके लिये लड़ो॥

मैथिलीशरणजी अलंकारोंकी मदद लेनेमें बहुत प्रवीण हैं। अर्थान्तर-न्यासपर अुनकी विशेष भक्ति है। मनकी प्रसन्नतासे अनुपम आनन्द मिलता है। यह विचार पंचवटीमें अर्थान्तरन्याससे प्रकट हुआ है—

मनःप्रसाद चाहिये केवल क्या कुटीर क्या प्रासाद।
भाभीका आल्हाद अतुल है, मँझली माका विपुल विषाद॥

भाभीकी खेती और अुसमें मिलनेवाली सन्तोषकी विपुलता देखकर लक्ष्मण आनन्द-विभोर होकर कह बैठते हैं 'स्वावलंबकी अेक झलकपर न्योछावर कुबेरका कोष'। जीवनमें कष्टोंकी कीमत दिखानेके लिये मैथिलीशरणजी परंपरित रूपकका अुपयोग करते हैं:—

जितने कष्ट-कंटकोंमें है जिनका जीवन-सुमन खिला।
गौरव गन्ध अुन्हें अुतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला॥

विजन देशमें रातके समय अेक सुन्दर रमणीको सामने देखकर लक्ष्मण अपना अचरज अेक सुन्दर संदेहके द्वारा व्यक्त करते हैं—

कहूँ मानवी यदि मैं तुमको तो वैसा संकोच कहाँ?
कहूँ दानवी तो अुसमें है लावण्यकी लोच कहाँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनदेवी समझूँ तो वह तो होती है भोली भाली,
तुम्हीं बताओ कि तुम कौन हो हे रंजित रहस्यवाली ?

'झंकृत हुअी विषम तारोंकी तंत्री सी स्वतंत्र नारी' या 'लगी नावकी ज्यों प्रवाहके और पवनके भिन्नाघात' जैसी अुपमाअें मौजूद हैं।

कहीं कहीं व्यतिरेकसे काम लिया गया है। जैसे 'अवनिकी अुषा सजीव थी, अंबरकी सी मूर्ति न थी' यहाँ सीताको अंबरकी अुषासे भी अधिक शोभायुक्त कहा है।

मनोहर अनुप्रासोंकी भी 'पंचवटी'में कमी नहीं, देखिये:—

ममता तो महिलाओंमें होती है 'हे मंजुमुखी'। अनुप्रासका दूसरा अुदाहरण है 'जहाँ तहाँ झाड़ीमें झिरती है झरनोंकी झड़ी यहाँ।'

गुप्तजी शब्दोंके चुनावमें भी सफल हैं। पंचवटीमें खासकर विशेषणोंका अुपयोग बहुत ही सुन्दर हुआ है। रमणीको लक्ष्य कर लक्ष्मणके विशेषणोंमें 'चण्डि,' 'रंजित रहस्य वाली,' 'मंजुमुखी,' 'शुभ मूर्तिमती माये' ये विशेषण बहुत ही अच्छी व्यंजना करते हैं। शूर्पणखा लक्ष्मणको जब 'सुभग' (औरतें जिसकी ओर आकर्षित होती हैं अैसा पुरुष) कहती है, तब गुप्तजीका शब्दोंकी ओर ध्यान देनेका तरीका देखकर अुनकी कलाका कौतुक किये बिना नहीं रहा जाता।

अिस प्रकार विचारोंकी अुदारता, चित्रोंकी प्रत्यक्षता, भाषाकी मधुरता, संभाषणकी कुशलता, प्रकृतिकी प्रतिसंवादिता आदि कुछ गुण अैसे हैं कि जो 'पंचवटी' को गुप्तजीकी कीर्तिका महान प्रकाश-स्तम्भ बना देते हैं। सचमुच 'पंचवटी' हिन्दीका जगमगाता रत्न है।

तेरे पथमें अितना अंधकार कहाँ है कि तू अुसे दूर कर ही नहीं सकता? जरा अपने मनके द्वार खोल! अखंड प्रकाशकी किरणें तुझे मार्ग दिखाने गाती हुअी चली आ रही हैं— उठ! चल! आगे चला चल!

—श्री. आशाकान्त वी. आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधी जनता और हिन्दी

: श्री. दौलतराम शर्मा :

विद्वानोंके कथनानुसार सिन्धी भाषामें ७५ प्रतिशत संस्कृतके शब्द हैं। सिन्धमें जब मुस्लिम राज्य था तब भी सिन्धी भाषा देवनागरी लिपिमें ही सिखलाअी जाती थी। जब अंग्रेज आये तब अुन्होंने भी फारसीके बदले नागरी लिपिको ही रखना चाहा। अिसी समय अेक अंग्रेज कलेक्टरने अेक अैसा कोष प्रकाशित कराया जिसमें सिन्धी भाषा देवनागरी लिपिमें थी किन्तु दुर्भाग्यवश फारसी जाननेवाले राजकर्मचारियोंने अिसका विरोध किया और अिस तरह अस्वाभाविक रूपसे फारसी लिपि सिन्धियोंपर लाद दी गअी। सिन्धियोंने अिसका घोर विरोध किया, किन्तु नतीजा कुछ नहीं निकला।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीने प्रारंभसे ही अेक राष्ट्रभाषाकी आवश्यकतापर बड़ा जोर दिया था। राष्ट्रपिताकी दूरदर्शी आँखोंने बहुत पहलेसे ही देख लिया था कि आखिर वह समय आयेगा जब अिस देशको अेक राष्ट्रभाषाकी जरूरत होगी। सिन्धमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार सन् १९३८ से प्रारम्भ हुआ और वर्धा समितिके अन्तर्गत सिन्ध राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिकी स्थापना हुअी। समितिके प्रथम संचालक स्व. पं. अिन्द्रदेवजी अिसी समय वर्धासे विशेष शिक्षा लेकर आये थे। समितिका कार्यालय कराचीमें स्थापित हुआ और गांव-गांवमें हिन्दीका संदेश फैलने लगा। अिससे पहले भी सन्त महात्माओं द्वारा प्रान्तमें हिन्दी प्रचार हुआ था। शिकारपुरकी प्रियतम धर्म सभाने अिस दिशामें अच्छा काम किया था। दूसरे स्थानोंमें भी थोड़ा बहुत प्रचार कार्य चला था, किन्तु वह आवश्यकताको देखते हुअे बहुत कम था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्ध राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके बहुत प्रयत्न करनेपर भी प्रथम वर्ष सारे प्रान्तमें केवल १४ विद्यार्थी हिन्दी परीक्षाओंमें बैठे। कुछ पढ़े-लिखे लोग तो अुल्टे खिल्लियां अुड़ाने लगे। वे कहते थे कि हमें अपने बच्चोंको साधु ब्राह्मण नहीं बनाना है, जो अुन्हें हिन्दी सिखायें। पर समितिके निरंतर प्रचारसे लोगोंकी धारणा क्रमशः बदलने लगी और प्रचार कार्य बराबर बढ़ता गया। सन् १९४६ में समितिके ७० केन्द्र थे, जहाँसे पाँच हजार विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रभाषाकी परीक्षाओंमें बैठते थे।

कामके बढ़ जानेसे प्रांतीय कार्यालयको कराचीसे हैदराबाद (सिंध) लाया गया। पहले प्रो. अेन. आर मलकानी और बादमें श्री भाअी प्रताप डियलदासकी अध्यक्षतामें काम चलने लगा। पंडित देवदत्त शर्माने मंत्रीका पद ग्रहण किया। समितिकी ओरसे "कौमी बोली" नामक अेक हिन्दी मासिक पत्रिका भी प्रकाशित हुअी। अिस तरह सिन्धमें हिन्दीकी लोकप्रियता बढ़ने लगी। पर सन् १९४७ में भारत दो भागोंमें विभक्त हो गया और सिन्धके हिन्दुओंको सदाके लिये सिन्धसे बिदा लेनी पड़ी। हिन्दुस्तानके विभिन्न प्रान्तोंमें सिन्धी बिखर गये। राजस्थान सिन्धका पड़ोसी प्रान्त है और अुसका सिन्धसे पुराना संबंध रहा है अतः अधिक संख्यामें सिन्धी अिसी प्रान्तमें आअे।

सिन्ध राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके कार्यकर्ताओंने अब बदले हुअे जमानेके अनुसार सिन्धी बन्धुओंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार प्रारंभ किया। राजस्थान तब अेक नहीं था। अनेक रियासतें थी। अतः समितिका कार्यालय अजमेरमें स्थापित हुआ। आर्थिक अवस्था गिरी हुअी थी। किंतु फिर भी राष्ट्रभाषा प्रचारकोंने हिम्मत न हारी और जोरशोरसे कार्य करने लगे। अिस समय सिंध राष्ट्रभाषा प्रचार-समितिके सिन्धी बन्धुओंके लिये ३० केन्द्र हैं—जयपुर, जोधपुर, अजमेर, अुदयपुर आदि। अिस वर्ष २५०० विद्यार्थी राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें बैठे थे। राजस्थानमें आकर समिति सिन्धी भाअियोंपर अेक सदीसे लादी गअी अरबी लिपिको हटानेमें सफल हुअी है। गत २ अगस्त १९४९ को अजमेर-मेरवाड़ाके पुनर्वास बोर्डने सिन्धियोंकी भाषाके सम्बन्धमें अेक प्रस्ताव द्वारा घोषित किया कि (१) भविष्यमें सिन्धी भाषाकी लिपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबीके स्थानमें देवनागरी होगी। (२) पहली और दूसरी कक्षाओं सिन्धी भाषाको देवनागरी लिपिमें सिखाना जुलाअी १९४९ से शु किया जायगा और तीसरी और चौथीमें १९५० से।

अजमेर-मेरवाड़ामें यह प्रस्ताव कार्य रूपमें परिणत हो चुका और देवनागरी लिपिमें सिन्धी भाषाकी पुस्तकें भी तैयार हो गअीं है न केवल प्रा अमरी स्कूलोंमें किन्तु हाअीस्कूलोंमें भी राष्ट्रभाषाकी पुस्तं पढ़ाअी जातीं हैं।

अिस अवसरपर मैं सिन्धी बन्धुओंसे राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेव आग्रह करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। मैं नहीं समझता कि कोअ अैसा भी सिन्धी भाअी होगा, जिसे भाषा और लिपिके संबंधमें विधान सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्तावकी खबर न हो। कअी भाअी और बहिनें जिन्होंने सिन्धमें हिन्दीकी शिक्षा ग्रहण की थी, आज सुखी जीव बिता रहे हैं। अिसलिये दूसरे भाअियों व बहनोंको भी चाहे वे सरकार नौकर हों, व्यापारी हों, कारीगर हों या मजदूर-हिन्दी अवश्य सीखनं चाहिये। जो भाअी सिन्धी साहित्यके विद्वान हैं, अुनके लि हिन्दी सीखना अत्यावश्यक है। वे सिन्धी साहित्यको हिन्दीमें अनूदि करें जिससे सिन्धी साहित्यका समस्त भारतवासी लाभ अुठा सकें अरबीमें अंकित सिन्धी साहित्य अब और अधिक दिन प्रचलित न र सकेगा। यदि हम अीमानदारीसे चाहते हैं कि हमारे और स्थानी जनताके बीच भेदभाव न बढ़े और हम अेक दूसरेको समझकर अपन राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक अुन्नति कर सकें तो यह बिल्कु आवश्यक है कि हम राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखें।

अन्तमें मैं राजस्थानी जनता व राजस्थानी सरकारसे निवेद करता हूँ कि वे हिन्दी प्रचारके अिस पुण्य कार्यमें सिन्ध राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको हर तरहका सहयोग दें, ताकि प्रत्येक सिन्धी भाअ हिन्दी सीखकर योग्य नागरिक बन सके। ❋

❋ २६ दिसंबर सन् १९४९ को राजस्थान रेडियो जोधपुर प्रसारित सिन्धी भाषणका सारांश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

राष्ट्रभाषा संसार

राष्ट्रभाषा प्रमाणीकरण परिषद

गत मासके प्रथम सप्ताहमें मध्यप्रदेशके मुख्य मंत्री माननीय पं. रविशंकर शुक्ल द्वारा निमंत्रित राष्ट्रभाषा प्रमाणीकरण परिषद तीन दिनोंतक नागपुरमें हुअी। परिषदमें बिहार, युक्तप्रांत, बंगाल, अुड़ीसा, बम्बअी, आसाम, हिमाचल प्रदेश, मद्रास तथा मध्यभारतके २० प्रतिनिधि अुपस्थित थे। हिन्दीकी देवनागरी लिपि, हिज्जे, व्याकरण और शब्दावलीका स्वरूप निर्धारित करनेके सम्बन्धमें यह परिषद बुलाअी गअी थी। परिषदका अुद्घाटन करते हुअे राष्ट्रपति देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसादने कहा कि अिस परिषद द्वारा किया जानेवाला कार्य अपने ढंगका नया होनेके कारण अत्यन्त महत्व रखता है। जब विधान-सभा द्वारा विधान तैयार कर दिया गया है और राजभाषा हिन्दी मान ली गअी है तब हिन्दीवालोंपर यह दायित्व आ गया है कि वे जिन प्रांतोंमें हिन्दी नहीं बोली जाती है अुन्हें सिखानेके लिअे हिन्दीका सार्व-देशित स्वरूप निश्चित करें।

प्रांतीय शिक्षा विभागके डायरेक्टर डा. वेणीशंकर झा द्वारा राजस्थानके प्रधान मंत्री अेवं सौराष्ट्रके शिक्षण मंत्री आदिके शुभ-कामना संदेश पढ़े गअे। फिर मध्यप्रदेशके गृहमंत्री पं. द्वारकाप्रसादजी मिश्रने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणमें भारतीय शब्दावली, व्याकरण, नागरी लिपि आदिके सम्बन्धमें विचार प्रकट किया। मध्यभारतके शिक्षण मंत्री श्री. कालूरामजी विरूलकर, पंजाबके शिक्षा मंत्री श्री. नरोत्तम सिंह, हिमाचल प्रदेशके चीफ कमिश्नर श्री अेन. सी. मेहता, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके मंत्री श्री सत्यनारायणजी, पटिया-लाके लिपि-विशेषज्ञ सन्त अिन्द्रसिंहजी, मद्रास गवर्नमेंट कालेजके हिन्दी प्रोफेसर श्री के. जी. शर्मा, बम्बअी सरकारके सचिव श्री के. बी. आर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राय, युक्तप्रांतीय सरकारके अनुवाद विभागके संचालक श्री. जी. अेस. सिनहा, मध्यभारतके श्रीयुत भारद्वाजजी, आसामके शिक्षा-विभागके सभा-सचिव श्री अेम. अेम. चौधरी, बिहारके शिक्षा मंत्री माननीय आचार्य बदरीनाथ वर्मा, बिहारके प्रसिद्ध साहित्यकार श्री शिवपूजनसहाय, पंजाब विश्वविद्यालयके प्रोफेसर डा. सूर्यकान्त, अुड़ीसाके श्री अनसूया-प्रसाद पाठक, अुस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबादके श्री डा. अीश्वरनाथ टोपा आदि आदि परिषदमें पधारे थे।

श्री सत्यनारायणके अेक संशोधनके अनुसार परिषदको हिन्दी-प्रमाणीकरण परिषद कहना स्वीकार किया गया।

प्रो शिवपूजनसहायने कहा कि मध्यप्रदेशने आरंभसे ही हिन्दीकी अुन्नति और प्रभाव-विस्तारके लिअे बहुत बड़ी सहायता की है। अुन्होंने डा. रघुवीर जैसे विद्वानोंको आश्रय देने और अुनके गुणकी कद्र करनेके लिअे मध्यप्रांतीय सरकारकी प्रशंसा की। कुछ व्यक्तियोंने संस्कृतनिष्ठ हिन्दीको रघुवीरी हिन्दी कहकर अुसकी आलोचना भी की और कहा कि अनिवार्य होनेपर ही हिन्दीपर संस्कृतके शब्द लादे जाँय। अिसका अुत्तर देते हुअे मध्यप्रदेशके गृहमंत्री पं. द्वारिकाप्रसाद मिश्रने कहा कि डा. रघुवीरकी शब्दावलीको मुहर लगानेके लिअे ही हमने यह बैठक नहीं निमंत्रित की है हम तो यहाँ अिसलिअे अेकत्र हुअे हैं कि पारस्परिक सहयोगसे हिन्दीकी अुन्नतिका कार्य करें।

शब्दावली, वर्णयोग, लिपि और व्याकरण आदिके विषयमें कअी महत्वपूर्ण सुझाव स्वीकृत हुअे। भाषा, लिपि और व्याकरणके स्वरूपमें अेकरूपता लानेके लिअे अिस परिषदमें स्वीकृत प्रस्तावोंको कार्य रूपमें परिणत करनेके लिअे अुक्त विषयोंके विद्वानोंकी अध्यक्षतामें कअी समितियोंका निर्माण हुआ।

विदेशी भाषापर निर्भर रहना घातक

केन्द्रीय धारासभाके अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकरने हिन्दी प्रचार सभा भवन मद्रास द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यकर्ताओं तथा विद्यार्थियोंकी अेक सभामें भाषण करते हुअे दक्षिण भारतके निवासि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योंसे अपील की कि वे अपने अन्दरसे यह भय निकाल दें कि हिन्दी पढ़नेसे अुत्तर भारतीयोंके दास बन जांयगे। आपने कहा कि अेक स्वतंत्र देशमें अेक समान भाषाका होना अत्यन्तावश्यक है अतअेव हम लोग किसी विदेशी भाषापर जिसे बहुत थोड़े ही लोग समझते हैं, निर्भर नहीं रह सकते। श्री मावलंकरने अिस बातको अनुचित बताया कि हिन्दीके पठन-पाठनसे प्रादेशिक भाषाओंका विकास रुक जायगा। आपने कहा कि प्रादेशिक भाषाओंका प्रान्तोंमें राजकीय भाषाके रूपमें प्रयोग किया जायगा।

हिन्दीकी अुन्नतिका भार सारे देशपर

आल अिंडिया रिपोर्टर नागपुरसे प्रकाशित अेवं हिन्दीके वयोवृद्ध साधक पं. हृषीकेश शर्मा द्वारा सम्पादित 'भारती' मासिक पत्रिकाका अुद्घाटन करते हुअे मध्यप्रदेशके गृहमंत्री पं. द्वारकाप्रसाद मिश्रने कहा कि आज यह प्रायः कहा जाता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दीमें अभी बड़ी कमियाँ हैं। यद्यपि गत २० वर्षोंमें अुसकी काफी प्रगति हुअी है। अब जब अुसका व्यवहार करने वाले ८-१० करोड़के स्थानपर ३२ करोड़ हो जांयगे, तब अुसकी स्वयं ही अुन्नति होने लगेगी।

पण्डित मिश्रजीने हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओंके सामीप्यकी आवश्यकता बतलाते हुअे कहा कि हिन्दी अब हिन्दीवालोंकी ही सम्पत्ति न रहते हुअे सारे देशकी सम्पत्ति है।

विश्वविद्यालयोंमें हिन्दी माध्यम

हर्बर्ट कालेज कोटामें विशाल जनसमुदायके बीच श्रीमती सरोजिनी नायडूके तैल चित्रका अुद्घाटन करते हुअे गुजरातीके श्रेष्ठ अुपन्यासकार अेवं देशके सुप्रसिद्ध विधानवेत्ता श्री कन्हैयालाल मा. मुन्शीने कहा कि हिन्दी विधान परिषद द्वारा राष्ट्रभाषा मान ली गअी है. परन्त अुसका विस्तार भारतकी अैक्य शक्तिपर निर्भर है। हिन्दीको हमने राष्ट्रभाषाके सिंहासनपर आरूढ़ किया क्योंकि अिसकी जननी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत हमारी पुरानी संस्कृतिकी द्योतक है। आज हमें हिन्दीको अैसा रूप देना है जिससे यह भारतकी ही भाषा नहीं अपितु अंग्रेजीकी तरह सारे संसारकी भाषा बन जाय। आज हिन्दीका प्रश्न केवल भाषा का प्रश्न नहीं; भारतीय संस्कृतिका प्रश्न है। भाषासे ही अेकता सम्भव है और भाषा ही अेकताका मूलमंत्र है। हमारी अेकता तभी स्थिर रह सकती है जब हमारी भाषा अेक हो। यदि भारतके विश्वविद्यालय प्रांतीयताके वशीभूत हो प्रांतीय भाषाओंका माध्यम स्वीकार करेंगे तो अुनकी संस्कृति नष्ट हो जायगी। अुन्हें तो अंग्रेजीके स्थानपर हिन्दीको ही शिक्षाका माध्यम स्वीकार करना चाहिये।

साहित्य मानव अनुभूतियोंका प्रतिबिम्ब है

मुजफ्फरपुरके 'नवीन कला मंदिर' द्वारा आयोजित अेक साहित्यिक सभामें भाषण करते हुअे कुरुक्षेत्रके कलाकार--कवि श्री 'दिनकर'ने कहा कि साहित्य मानव अनुभूतियोंका प्रतिबिम्ब है जो मानव समाजको नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है। साहित्य नयी विचारधाराओंका कोष है जिसका अुपयोग समाजको सुन्दर बनानेमें होता है। आज जब सारे संसारमें शान्ति स्थापना मुख्य विषय है, साहित्य अपने विचारोंके माध्यमसे अुस लक्ष्यकी पूर्तिमें तत्पर है। साहित्य सामाजिक वातावरण के अनुसार परिवर्तित होता है जिससे युगको नया सन्देश दिया जा सके।

प्रसिद्ध समाजवादी पत्रकार अेवं हिन्दीके यशस्वी लेखक श्री. रामवृक्ष बेनीपुरीने सभामें भाषण करते हुअे बतलाया कि आधुनिक समाज आर्थिक समस्याओंसे लिपटा हुआ है। सर्वत्र भौतिकवादी सिद्धांतोंने अपना जाल फैला रखा है, हमें समाजको सुखद बनाना है। अिसी दिशामें अब साहित्यको प्रयत्न करना चाहिये।

महाकवि निरालाका अभिनंदन

हिन्दीके युगप्रवर्तक कवि पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को अुनकी ५३ वीं वर्षगांठके अुपलक्ष्यमें अभिनन्दन करनेके लिये प्रयागकी लोकप्रिय साहित्यिक संस्था 'परिमल'के तत्वावधानमें साहित्यकार संसदमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक समारोहका आयोजन किया गया। समारोहके अध्यक्ष पं. अिला-चन्द्र जोशी संपादक 'संगम' ने; रोली, अक्षत तथा नारियलसे अभि-नन्दन कर निरालाजीको मानपत्र भेंट किया। सर्वश्री बच्चन, प्रभाकर माचवे तथा अज्ञेय आदिने भी निरालाजीका अभिषेक किया। समारोहमें अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक अुपस्थित थे।

अभिनन्दन पत्रके अुत्तरमें निरालाजीने आधे घंटे तक भाषण देते हुअे हिन्दीके कलाकारोंसे विभिन्न भाषाओंके प्रति सामंजस्य बनाये रखने का आग्रह किया और बतलाया कि हिन्दी साहित्यमें जातपांत रंग आदि का कोअी भेदभाव नहीं है। निरालाजीने अंतमें कहा कि मेरा कार्य अब समाप्त प्राय है। अब आप लोगोंको ही अुत्तरदायित्व संभालना है। आप बंधुभाव अपनाये रखें अुसीमें सबका कल्याण होगा।

धनका मूल्य अुसके द्वारा लोगोंका परिश्रम प्राप्त करनेपर निर्भर है। यदि मेहनत मुफ्तमें मिल सके तो पैसेकी कोअी जरूरत नहीं रहती। यदि हम मान लें कि आदमियोंसे काम लेनेकी शक्ति ही धन है, तो हम यह भी देख सकते हैं कि वे आदमी जिस परिमाणमें चतुर और नीतिमान होंगे, अुसी परिमाणमें दौलत बढ़ेगी। अैसी हालतमें सच्ची दौलत सोना-चांदी और मुद्रा नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य ही है। धनकी खोज धरतीके भीतर नहीं मनुष्यके हृदयमें ही करनी चाहिअे। अिस प्रकार धन-शक्तिसे नीति-शक्ति बड़ी है। आजकी व्याख्याके अनुसार यह भी कहा जा सकता है कि धनवान होनेका मतलब अधिकसे अधिक आदमियोंको गरीब रखना है। रुपयेका अधिकार तो अुसपर चलता है, जिसके पास यह नहीं होता। जहाँ गरीबी है; वहीं अमीरी चल सकती है और रुपयेकी शक्ति अिसपर अवलम्बित है कि दूसरेके पास अिसकी कितनी तंगी है।

—जॉन रस्किन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

हिन्दी प्रारंभिक शिक्षा—लेखक व प्रकाशक—श्री. टी. कृष्णास्वामी, संपादक 'भाग्योदय' जबलपुर। पृष्ठ सं. ६६। मूल्य—दस आने। तृतीय संस्करण।

अिस छोटी-सी पुस्तकमें लेखकने हिन्दी सिखानेके अपने वर्षोंके अनुभवको मूर्त्तरूप दिया है। हिंदी सीखनेवालोंकी प्रारंभिक कठिनाअियोंको ध्यानमें रखकर वर्णमाला, बारह खड़ी, संयुक्ताक्षर और साधारण वाक्योंसे लेकर लिंग, वचन, पुरुष, काल और विभक्तियों (कारकों) आदिकी आवश्यक जानकारी बोल-चालकी सहज, सुबोध भाषामें देनेका प्रयत्न किया गया है। शैली सरल और बोधगम्य है। हिन्दीके साथ-ही-साथ अंग्रेजीके समानार्थी शब्द व वाक्य दे दिये गये हैं। विशेष प्रयोगोंको फुटनोटों (टिप्पणियों) में समझा दिया गया है। अंतिम ५-६ पृष्ठोंमें कुछ (संज्ञा-सर्वनाम) शब्दोंके रूप, संख्या, शरीरके अंगों आदिके नाम देनेसे पुस्तककी अुपयोगिता और भी बढ़ गअी है। अंग्रेजीके माध्यमसे राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेवालोंके लिये यह पुस्तक बहुत सहायक सिद्ध होगी। आज जब हमारा सारा राजकीय व राष्ट्रीय कारबार अंग्रेजीसे हिन्दीमें होने जा रहा है, हमें "हिन्दी प्रारंभिक शिक्षा" जैसी पुस्तकोंकी बड़ी आवश्यकता है, जिनके द्वारा हम शीघ्रसे शीघ्र राष्ट्रभाषा हिन्दीको सीख सकें—अपना सकें। आशा है राष्ट्रभाषा सीखनेवाले अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

निबंध कुसुमाकर—संपादक—साहित्य सौध। प्रकाशक—बंगीय हिंदी-साहित्य परिषद, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या—१०४। मूल्य-१।≈)।

हिन्दीकी गद्य-शैलीका परिचय करानेके निमित्त हिन्दीके सुप्रसिद्ध गद्य-लेखकोंके ग्यारह निबंधोंका संग्रह प्रस्तुत पुस्तकमें मिलेगा। पुस्तक विद्यार्थियोंके लिये अुपयोगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-कलानिधि—संपादक—साहित्य सौध; पृष्ठ संख्या--१०४। मूल्य--१॥) ।

बंगीय हिन्दी साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित अिस पुस्तकमें हिन्दीके प्रमुख कवियोंकी कुछ रचनाओंका संग्रह है। पुस्तकका संपादन विद्यार्थियोंको लक्ष्य करके किया गया है। अंतमें कवियोंका संक्षिप्त परिचय जोड़ देनेसे वह और भी अुपयोगी हो गअी है। पुस्तक विद्यार्थियोंके बड़े कामकी है। —हरिदत्त मिश्र

गुरुकुल पत्रिका—स्वर्ण जयंती विशेषांक—सम्पादक-श्री दीन-दयालु शास्त्री सिद्धांतालंकार, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार। वार्षिक-मूल्य--४), अेक प्रतिकी कीमत ।=)।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वारकी गुरुकुल पत्रिकाका यह विशेषांक गुरुकुलकी स्वर्ण जयंतीके अवसरपर निकाला गया है। स्वामी श्रद्धानंद द्वारा संस्थापित अिस विद्यालयका देशकी शिक्षा संस्थाओंमें महत्वपूर्ण स्थान है। अपने ढंगकी यह अेक ही संस्था है। प्रस्तुत विशेषांक में गुरुकुल कांगड़ीके सम्बन्धमें विस्तृत जानकारी है। अनेक देशमान्य विद्वानोंके दीक्षांत भाषणोंके संकलनसे अंकका महत्व और भी बढ़ गया है। गुरुकुल प्रेमी सभी महानुभावोंके लिये यह पठनीय वस्तु है। हम स्वर्ण-जयंती महोत्सवकी हृदयसे सफलता चाहते हैं। —प्रशान्त

हिन्दी-मराठी स्वयं शिक्षक—लेखक—श्री स. कु. कुलकर्णी। प्रकाशक--भारत पुस्तक भंडार, पुणें २। पृष्ठ-संख्या १२८। मूल्य--१।) ।

हिन्दी भाषाके माध्यमसे मराठी भाषा सीखनेवालोंके लिये पुस्तक बड़ी अुपयोगी है। अन्तर्प्रान्तीय सहभाव अुत्पन्न करनेकी दिशामें यह पुस्तक अेक महत्वपूर्ण प्रयत्न है।

राष्ट्रतीर्थ-वर्धा और सेवाग्राम—लेखक—श्री. अुमाशंकर शुक्ल। प्रकाशक—भारतेंदु हिन्दी सिंडीकेट, वर्धा। पृष्ठ संख्या २८। मूल्य ॥)।

पूज्य बापूने वर्धा व सेवाग्रामको राष्ट्रतीर्थमें परिणत कर दिया। यहाँकी संस्थाओंके बारेमें सरसरी संक्षिप्त जानकारीके लिये पुस्तक बहुत अुपयोगी होगी।

—बलभद्र ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

गुजरात

आणन्द —स्थानीय पायोनियर हाअी स्कूलमें गत ३० दिसंबर ४९ को प्रसिद्ध विद्वान पं. सातवलेकरजी की अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अध्यक्ष महोदयने राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यकी प्रगतिपर संतोष प्रकट किया। अपने भाषणमें आपने कहा कि आज जब कि भारतीय विधान-परिषदने राष्ट्रभाषा हिन्दीके पक्षमें निर्णय किया है, हमारा यह कर्तव्य है कि हम हिन्दुस्तानी और अर्दूकी बातें छोड़कर सच्चे राष्ट्र-सेवककी तरह हिन्दीको अपनाअें।

स्थानीय शारदा हाअी स्कूलमें राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण भाअी-बहनोंको गुजरात कला-संघके संस्थापक और कलागुरु श्री रविशंकरजी रावलने प्रमाणपत्र प्रदान किअे। आपने हिन्दीके महत्वपर अेक सुन्दर भाषण दिया।

हिन्दी हीच आमची राष्ट्रभाषा (मराठी)—लेखक-प्रा० शं. दा. चितले विशारद अेम. अे. बी. टी., प्रकाशक-श्री मनोहर महादेव केळकर, मनोहर ग्रंथ माळा, १६६/८५ टिळक रोड, पूना २। पृष्ठ संख्या—१६०, मूल्य तीन रुपये मात्र।

प्रस्तुत पुस्तकमें विद्वत्तापूर्ण ढंगसे हिन्दी, अुर्दू, हिन्दुस्तानी आदिका शास्त्रीय विवेचन करते हुअे लेखकने बतलाया है कि केवल हिंदी ही अन्य भारतीय भाषाओंके निकटकी होनेके कारण राष्ट्रभाषा होने योग्य है। यद्यपि विधान-परिषदने हिन्दी नागरीको राज्यभाषा मान लिया है, तथापि अिस मराठी ग्रंथकी भाँति ही अन्य भाषाओंमें भी हिन्दी संबंधी पुस्तकोंकी नितांत आवश्यकता है।

—शीलभद्र साहित्यरत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरत —गत दिसंबरमें सर्वश्री जे. सी. कुमारप्पा, छोटूभाअी पुराणी, अशोक मेहता और अच्युत पटवर्धन सूरत पधारे। सभीने स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडलके कार्यपर हर्ष प्रकट किया। स्थानीय यूनियन हाअीस्कूल तथा मिडिल स्कूलमें आप लोगोंके व्याख्यान भी हुअे।

मंडलके अुपसभापति श्री रतनलाल खांडवालाके दुखद निधन पर सभी जगह शोक मनाया गया। मंडलने अुस दिन अपना सारा कार्य बन्द रखा। अीश्वर अुनकी आत्माको शांति दे!

अिस बार यहाँसे राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके लिअे १७०० परीक्षार्थी तैयार किअे गअे हैं।

पोरबंदर —गत २१ दिसंबर ४९ को स्थानीय कन्या गुरुकुलमें पूज्य महंत श्री गयाप्रसादजी महाराजकी अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरण समारोह मनाया गया। अिस अवसर पर शेठ श्री चीनुभाअीजी विशेष रूपसे निमंत्रित किये गअे थे। सब प्रथम मेरूला गढवीने राष्ट्रगीत गाया। अुसके अुपरान्त कन्याओंको प्रमाणपत्र, पारितोषिक आदि दिअे गअे। श्री महाराजके व्याख्यानके बाद समारोहका कार्यक्रम समाप्त हुआ।

भुजकच्छ —स्थानीय अलफ्रेड हाअीस्कूलमें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव भारतीय विधान परिषद्‌के सदस्य श्री भवान्‌जी खीमजीके सभापतित्वमें मनाया गया। स्थानीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष महोदय तथा मंत्रीजी भी अिस अवसरपर अुपस्थित थे। जिला प्रचारकने सारे जिलेके राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यका ब्यौरा पेश किया। तत्पश्चात् सभापतिजीका व्याख्यान हुआ तथा प्रमाणपत्र वितरित किये गअे। स्थानीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष महोदयने भी हिन्दीमें भाषण दिया। 'जन गण-मन' गीतके पश्चात सभा समाप्त हुअी। अिस मास सारे गुजरातमें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव धूमधामसे मनाअे गअे। निम्नलिखित केन्द्रोंके प्रमाणपत्र वितरणोत्सव विशेष अुल्लेखनीय हैं— अुमता— अध्यक्ष— कांग्रेस कार्यकर्ता श्री रीखवदासजी; चोरंदा—अध्यक्ष—श्री मोतीभाअी भगवानदास, सूंढिया—अध्यक्ष—सेठ श्री अम्बालाल जयचन्दभाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावाडा—अध्यक्ष—पूज्य रविशंकरजी महाराज, पादरा—अध्यक्ष-मामलतदार कांतिलाल पटेल, भालोद—अध्यक्ष—डॉ. गणेशचन्द्रजी धीनोज—अध्यक्ष—माननीय हरिवैद्य छोटालाल पुराणी, वाघोडिया-अध्यक्ष— मामलतदार श्री यशवंतराय गायकवाड़ साहब।

बम्बई

प्रजातन्त्र दिवस— गत २६ जनवरीको बम्बई प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाकी ओरसे प्रजातन्त्र दिवस मनाया गया। अिस अवसरपर कांग्रेस खादी समितिके सदस्य श्री विमलशंकर शास्त्री साहित्याचार्यने राष्ट्रीय झण्डा फहराया।

राष्ट्रभाषा पुस्तकालय— प्रजातंत्र दिवसके अवसरपर सभा कार्यालयमें श्री विमलशंकर शास्त्रीने राष्ट्रभाषा पुस्तकालयका अुद्घाटन किया। काफी राष्ट्रभाषा प्रेमी सज्जनोंने अुद्घाटन समारोहमें भाग लिया। अध्यक्ष महोदयने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषाका महत्व बताते हुअे हिन्दीके ज्ञानको बढ़ानेके लिये पुस्तकोंके पठनकी आवश्यकतापर जोर दिया।

आर्यनस्कूल राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव- गत २९ जनवरीको श्री गोविन्दलालजी पित्तीकी अध्यक्षतामें अिस केन्द्रके अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाणपत्र प्रदान किअे गये। अिसी अवसरपर प्रोफेसर जगदीश चन्द्र जैनका भाषण हुआ। अध्यक्ष तथा प्रोफेसर जैनने सभी विद्यार्थियोंसे राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेकी अपील की।

भारतीय विद्याभवन-राष्ट्रभाषा वर्ग— गत १५ जनवरीको श्रीमती लीलावती मुंशीकी अध्यक्षतामें विद्याभवन राष्ट्रभाषा वर्गके विद्यार्थियोंका प्रमाणपत्र वितरण समारोह मनाया गया। अिस अवसरपर श्री कान्तिलाल जोशीका भाषण हुआ। संगीत, नृत्य तथा अन्य कार्यक्रम भी सफल रहे।

आर्यनस्कूल तथा मारवाड़ी विद्यालयके राष्ट्रभाषा वर्गोंका स्नेह सम्मेलन गत २१ जनवरीको मारवाड़ी विद्यालय हालमें श्री श्यामबहादुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहजी की अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर मनोरंजक कार्यक्रम भी हुअे।

बापू निर्वाण दिवसः—गत ३० जनवरीको सभा कार्यालय बापू-निर्वाण-दिवसके अुपलक्ष्यमें बंद रहा। प्रातःकाल गीताका प्रवचन हुआ।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन—कोट राष्ट्रभाषा सम्मेलन का अष्टम वार्षिकोत्सव गत ८ जनवरीको कोट स्थित कामा ओरिअंटल अिन्स्टीट्यूट हालमें "सरगम" के संपादक श्री ख्वाजा अहमद अब्बास की अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अुत्सवमें गत अप्रैल और सितंबरकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

श्री ख्वाजा अहमद अब्बासने अपने भाषणमें कहा कि बहुत दिनोंसे अुत्तर और दक्षिण भारतके बीचमें जो अेक दीवार खड़ी थी, अुसे तोड़नेका काम राष्ट्रभाषाने किया है। देशभरकी अेक भाषा होनेसे हम अुत्तरवाले दक्षिणवालोंसे बड़ी आसानीसे मिल सकते हैं और आप लोगोंकी बातें समझ सकते हैं। सारे देशके लिये अेक राष्ट्रभाषाकी अत्यंत आवश्यकता थी और हर्षकी बात है कि विधान परिषदने अुसका निर्णय कर दिया है। राष्ट्रभाषाके स्वरूपके सम्बन्धमें बोलते हुअे आपने कहा कि राष्ट्रभाषा सरल होनी चाहिये ताकि समस्त देशवासी अुसे अच्छी तरह समझ सकें। अपने भाषणके अन्तमें आपने हिन्दी सीखनेकी आवश्यकता पर जोर दिया।

बम्बअी प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मंत्री श्री कांतिलाल जोशी, श्री. वासुदेवानन्द शास्त्री, श्री. टी. अेस. हेगडे और श्री. बलराज सहानीने भी सम्मेलनमें भाषण दिअे।

अिस अवसरपर 'नो वेकेन्सी' नामक अेक अेकांकी भी खेला गया।

राष्ट्रभाषा प्रचार मंडलकी स्थापना—गत २६ जनवरीको राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाके कार्यमें सहयोग देनेके लिये यहाँ राष्ट्रभाषा प्र. मंडलकी स्थापना हुअी। आशा है, मंडल अुत्साहपूर्वक अपना कार्य करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानीय विलेपारले केन्द्रसे राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाणपत्र वितरण समारोह गत १४ जनवरीको 'श्री कुमारिका और स्त्री मंडल' के भगिनी समाजके सभा खंडमें बम्बअी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक श्री. कान्तिलाल जोशी अेम. अे. के सभापतित्वमें मनाया गया। समारोहमें दैनिक 'विकास'के सम्पादक श्री करुणाशंकर पंड्याने राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें प्रभावशाली भाषण दिया। श्री जोशीजीके व्याख्यानके अुपरान्त सभा समाप्त हुअी।

श्री पांचाल विद्यार्थी मन्डल द्वारा संचालित म्युनि. हिन्दी विद्यालयका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत रविवार १-१-५० को श्री विमलशंकर नागेश्वर शास्त्रीके सभापतित्वमें मनाया गया।

गत सितम्बर १९४९ की परीक्षाओंमें याहाँसे निम्नलिखित परीक्षार्थी सफल हुअे हैं।

प्रारंभिकः— १. श्री रामुभाअी न. पांचाल २. श्री विनोदराय जमनादास ३ श्री रामूभाअी मोरारजी ४. श्री नटवरलाल गोविंदजी ५. श्री कान्तव्य द. करकेरा।

प्रवेशः— १. श्री नगीनभाअी जीवाभाअी २. श्री अुत्तमभाअी लालभाअी ३. श्री अमृतलाल नरसिंहदा ४. कु. दिव्यकान्ता नगीनदास ५. श्री पुरुषोत्तम सुखाभाअी पंड्या।

परिचयः— १. अीश्वरलाल नरसिंह पांचाल।

कोविदः— १. श्री वल्लभदास।

महाराष्ट्र

कागल (कोल्हापुर)— ३१ दिसंबरको कागलकी सौ वर्ष पुरानी हिंदूराव घाटगे मराठी शालामें श्री वि. द. घोटणे, श्री मा. कृ. गुरव, मंत्री हिंदी विद्यालय कोल्हापुर, श्री शा. आ. मोरे अुपमंत्री, हिंदी विद्यालय कोल्हापुर और श्री श्रीराम अट्टावलकरके राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें भाषण हुअे। कागलके अध्यापकों तथा विद्यार्थियोंने राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेका निर्णय किया। वंदेमातरम्के परान्त सभा समाप्त हुअी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भालोद—भालोद केन्द्रका प्रमाणपत्र वितरण समारोह श्री नाना साहब जाधव की अध्यक्षतामें धूमधामसे मनाया गया। सभामें गर्ल स्कूलकी अेज्यु. अिन्स्पेक्टर श्रीमती गंगूबाअी वैद्य भी अुपस्थित थीं। व्यवहारेजी और बोंडे गुरुजीके भाषण हुअे। श्रीभादू महाजन (प्रेसिडेंट लो. बोर्ड) ने कोविद अुत्तीर्ण सभी विद्यार्थियोंको अपनी ओरसे पुरस्कृत किया।

मालेगांव — स्थानीय म्यु. हाअीस्कूलमें २१ जनवरीको राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरण समारोह श्री पं. मु. डांगरे बी. अे. बी. टी. कोविद संचालक महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) पूनाकी अध्यक्षतामें हुआ। आपने राष्ट्रभाषा हिन्दीके संबंधमें कहा कि अब जब हिन्दी राष्ट्रभाषा हो चुकी है तो हमें अुसकी वृद्धि करनी चाहिये। अिसी अवसरपर अु. म. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) मनमाड़के संचालक श्री शान्तिभाअीका भी हिन्दी प्रचारके बारेमें भाषण हुआ।

हिंगणे (महाराष्ट्र) — स्थानीय महिलाश्रममें राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका प्रमाणपत्र वितरण समारोह प्रांतीय संचालक श्री पं. मु. डांगरेजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। श्री डांगरेजीने राष्ट्रभाषा प्रचार की आवश्यकतापर महत्वपूर्ण भाषण दिया। श्री सज्जनराम केणीने भी समारोहमें भाषण दिया। राष्ट्रगीतके बाद समारोह समाप्त हुआ।

यहांके केन्द्र व्यवस्थापक श्री श्रीधर शं. पतके तथा श्री बा. गु. कुलकर्णी बड़े अुत्साह और लगनसे राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्रभाषा सेवा मंदिर, पूना :—गत ८ जनवरी १९५० को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके प्रधान मंत्री भदन्त आनंद कौसल्यायन सेवा-मंदिरमें पधारे। सेवा मंदिरके कार्यकर्ताओंसे अुन्होंने विचार-विनिमय किया तथा कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

सटाणा (महाराष्ट्र) —राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सटाणा केन्द्रमें महाराष्ट्र रा. भा. प्रचार समितिके संचालक श्री पं. मु. डांगरे अुत्तर महाराष्ट्र संगठक श्री शान्तिभाअी जोवनपुत्राके साथ पधारे। श्री न. ब.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोरातजीकी अध्यक्षतामें श्री डांगरेजीने राष्ट्रभाषा परीक्षोत्तीर्ण छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किये। डांगरेजीने अिस अवसरपर अेक महत्वपूर्ण भाषण दिया।

यहाँके मु. का. पाटील, जयकृष्णीयाँ, थोरात, ना. स. पाटील, भा. अ. चान्दोरकर, सोनवणे तथा श्री वाणी अुत्साहपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

अु० सातारा जिला—दिसंबर ४९ और जनवरी ५० में केन्द्र निर्माण करनेके अुद्देश्यसे अुत्तर सातारा जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रधान मन्त्री श्री माधवराव धुमाळने कुछ अुत्साही कार्यकर्ताओंके साथ जिलेका दौरा किया। आपको अिस काममें आशातीत सफलता मिली —सातारा रोड, तरडगांव, मरीचीवाड़ी (लोणंद), भुअिज और कराड़में नअे केन्द्र स्थापित हुअे।

सातारा रोड— यह केन्द्र 'राष्ट्रभाषा-विद्यालय सातारा' के संस्थापक श्री ल. दा. नवरेके प्रयत्नसे स्थापित हुआ। वर्ग चलाने तथा पढ़ानेमें श्री. सोनूताअी पालकरका सहयोग मिल रहा है। श्री माधवराव धुमाळको यहांकी मराठी शालाके अध्यापकोंसे भी सहयोगका आश्वासन मिला है।

तरडगांव— यहाँकी मराठी शालाके मुख्याध्यापक अनुभवी कार्यकर्ता हैं। आपके प्रयत्नसे यहाँ प्रारंभिक और प्रवेशाके वर्ग खुल गये हैं। श्री रा. ग. गायकवाड़की देखरेखमें, आशा है, यह केन्द्र अच्छी तरह चलेगा।

मरीचीवाड़ी— श्री माधवराव धुमाल यहांके प्रमुख कार्यकर्ता श्री नानासाहब भोअीटे तथा कअी अध्यापकोंसे मिले मरीचीवाड़ीमें भी प्रचार-कार्य प्रारंभ हो गया है।

भुअींज—मुख्याध्यापक श्री देशमुख और अध्यापिका श्री. कमल देशपांडे 'रा. भा. कोविद'के प्रयत्नोंसे यहाँ केन्द्र स्थापित हुआ। कार्य संतोषजनक ढंगसे चल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराड— यहाँ श्री बापट शास्त्री, श्री. ना. गो. अलाटे, श्री श्रोत्री आदि सुयोग्य कार्यकर्ता कार्य कर रहे हैं। वर्ग खोल दिये गये हैं तथा कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है।

कलवन— तालुका राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी बैठक दिनांक १ । १ । ५० को हुआी । सभाने कार्यकारिणी समितिके लिये निम्नलिखित सदस्योंको चुना—

अध्यक्ष— श्री रा. वा. पाटील बी. अे. अेल. बी. कलवन, अुपाध्यक्ष— श्री तु. का. पाटील. (देवली), कोषाध्यक्ष-- श्री का. गो. वाणी (कलवन), मन्त्री— श्री गं. ग. कुलकर्णी (कलवन), अुपमंत्री— श्री शा आ. मालपुरे. (कलवन), संचालक अेवं प्रचार मंत्री— श्री वि. ता शिम्पी. (कलवन) नासिक जिला समितिके लिये प्रतिनिधि— श्री नि. का शिम्पी (कलवन)।

नासिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री श्री भा. आ. चान्दोरकरके प्रयत्नसे यहाँ १ ली जनवरीको कलवन तालुका राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापना हुआी । चुनाव अिस प्रकार हुआ— श्री रा. ता. पाटील, बी अे.अेल. अेल. बी., अध्यक्ष श्री तु. का. पाटील बी. अे. बी. टी.-अुपाध्यक्ष, श्री का. गो. वाणी-कोषाध्यक्ष, श्री गं. ग. कुलकर्णी--मन्त्री, श्री शां. आ. भालपुरे- अुपमन्त्री ।

मनमाड़— नासिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी नयी कार्यकारिणीकी प्रथम बैठक राष्ट्रभाषा कार्यालय, मनमाड़में श्री कृ. ब. महाबलकी अध्यक्षतामें हुआी । सहायक मंत्री श्री चांदोरकरने वार्षीक-बैठकका विवरण सभाके सामने रखा चालू सालके लिये बजट भी स्वीकृत हुआ । अिस अवसरपर अुत्तर महाराष्ट्रके संगठक श्री शान्तिभाअी जोवनपुत्राने सारगर्भित भाषण दिया ।

स्थानीय जी. आअी. पी. हायस्कूलमें नासिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी अेक साधारण बैठक हुअी । बैठकमें प्रान्तीय संचालक श्री. पं. मु. डांगरे और अुत्तर महाराष्ट्रके संगठक श्री शान्तिभाअी जोवन-पुत्रा अुपस्थित थे। सभाका कार्य श्री कृ. ब. महाबलकी अध्यक्षतामें हुआ । जिला समितिके विधानपर चर्चा की गअी और अुसे स्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया। कार्यकारिणीका भी चुनाव हुआ। निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये:— अध्यक्ष— श्री. कृ. व. महाबल (नासिक) अुपाध्यक्ष— श्री. डॉ. द.तो. सोमवंशी (सिन्नर) कोषाध्यक्ष— श्री. द. वि. केतकर (मनमाड़) मंत्री— श्री का. का. धुले (मनमाड़) सहायक मन्त्री— श्री भा. अ. चांदोरकर (सटाणा), प्रान्तीय समितिके लिये प्रतिनिधि १. श्री द. वि. केतकर (मनमाड़) २. श्री का. र. वैशंपायन (येवला)

रावलगांव (जि. नासिक)— यहाँ २० जनवरीको पाठशालाके प्रांगणमें राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्रका प्रमाणपत्र-वितरणोत्सव प्रांतीय संचालक श्री. पं. सु. डांगरेजी द्वारा सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम श्री का. बा. पंडित प्रचारकने केन्द्रका विवरण पढ़कर सुनाया। तदुपरांत 'प्रारंभिक' से 'कोविद' तक अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये गये। सौ. कुमुदिनी बाअी, श्री शान्तिभाअी जीवनपुत्रा तथा श्री मु. ह. अहिरेके राष्ट्रभाषाके महत्ता आदि विषयोंपर प्रभावोत्पादक भाषण हुअे। श्री डांगरेजीने केन्द्रके कार्यकी सराहना की और कहा कि हिन्दी पढ़ना मानवता और राष्ट्रके गौरवको बढ़ाना है।

समारोहमें सर्वश्री गोविंदजी, रावजी, पत्कीजी सभी प्रमाणित प्रचारक तथा अनेक हिन्दी प्रेमी सज्जन बड़ी संख्यामें अुपस्थित थे।

हैदराबाद

अम्बाजोगाअी (मोमिनाबाद):— गत ११ जनवरीको स्थानीय योगेश्वरी विद्यालय हॉलमें प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सव मनाया गया। हैदराबाद निवासी मा. राजा पन्नालालजी पित्तीके कर कमलोंसे हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद अेवं राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सवके पूर्व मा. राजा पन्नालालजी, वॅ. श्रीधर वामन नाअिक, बापूसाहब अिटगावपल्लीकर आदि सज्जनोंने यहांकी लोकप्रिय संस्था "साहित्यनिकेतन"का निरीक्षण किया। मा. राजा साहबने १०१) तथा बॅ. श्रीधर वामन नाअिकने २५) संस्थाको दान दिये। अिस अवसरपर सर्वश्री स्वामी रामानंद तीर्थ, सेठ पूरनमल लाहोटी, विष्णुदास राठी तथा नगरके अनेक प्रतिष्ठित सज्जन अुपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

अजमेर— सिंध राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (अजमेर)के तत्वावधानमें 'बापू निर्वाण दिवस' मोनियाँ प्रायमरी स्कूलमें पंडित देवदत्त शर्माके सभापतित्वमें मनाया गया। मास्टर नारायण दासने अेक भजन गाया। अुसके बाद समितिके संचालक श्री पंडित दौलतराम शर्माका बापूकी जीवनी तथा आदर्शोंपर अेक सारगर्भित भाषण हुआ अन्तमें पंडित देवदत्त शर्माने महात्माजीके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

दुर्गापुर कैंप (जयपुर)— दुर्गापुर कैंप राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे २० जनवरीको अेक अुत्सव मनाया गया। अिस अुत्सवमें शरीक होनेके लिये पं. दौलतराम शर्मा संचालक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति राजस्थान विशेष रूपसे निमन्त्रित किये गये थे। श्री वीरूमलजी अुत्सवके सभापति थे। आपने अेक छोटे भाषणमें बतलाया कि यदि कैंप तोड़ दिया जाअे तो भी अध्यापकगण जहाँ भी जायेंगे, राष्ट्रभाषा हिन्दीका ही प्रचार करेंगे। राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री सेवारामजीने दुर्गापुर केन्द्रकी रिपोर्ट पेश की और बतलाया कि अनेक कठिनाअियोंके बावजूद भी यहाँ प्रचार कार्य जारी रखा गया है। अिसके बाद पं. दौलतराम शर्माने अपना भाषण दिया। आपने हर सिन्धी भाअी व बहिनसे अपील की कि वे हिन्दी जरूर सीखें। अुत्सवकी समाप्तिपर श्री अूधाराम प्रधानाध्यापक कैम्प स्कूलने सभी लोगोंको धन्यवाद दिया।।

मणिपुर (आसाम)—गत ८ जनवरीको श्री भीमासिंहजीकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मालामें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अिस अवसरपर राष्ट्रभाषा प्रेमी सज्जन काफी संख्यामें अुपस्थित थे। श्री युमनाम थंबाल, अड़ोसिंहजी आदिने राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर प्रकाश डाला। अन्तमें सभापतिजीने प्रमाण-पत्र वितरित किये।

मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक श्री छत्रध्वज शर्माने थौबाल केन्द्रका निरीक्षण किया और स्थानीय केन्द्र व्यवस्थापक श्री निमाअीचांद सिंहसे प्रचार कार्यके संबंधमें चर्चा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत ३ जनवरीको निंबोल हाअीस्कूलमें श्री अिबोदलसिंह बी. अे. बी. अेल. के सभापतित्वमें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अिस अवसरपर छात्रोंके भाषण, गायन आदि कार्यक्रम हुअे।

राष्ट्रभाषा स्नेह सम्मेलन

वर्धा—भारतीय प्रजातंत्र दिवसके अुपलक्ष्यमें राष्ट्रभाषा विद्यालय वर्धाकी ओरसे श्री सत्यनारायण बजाजकी अध्यक्षतामें राष्ट्र-भाषा स्नेह सम्मेलनका आयोजन किया गया। विद्यालयके संचालक श्री श्रीचरण 'आजाद' ने आगत समुदायका स्वागत करते हुअे राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रभाषा विद्यालयके महत्वको सामने रखा। अध्यक्ष श्री सत्य-नारायण बजाजने विद्यार्थियोंको प्रोत्साहित करते हुअे कहा कि हमें विश्वास है कि राष्ट्रभाषा विद्यालयसे निकले हुअे विद्यार्थीगण घरमें चुप-चाप बैठे नहीं रहेंगे, बल्कि वे अन्य अहिन्दी भाषियोंको भी राष्ट्रभाषाका महत्व समझाकर अुन्हें हिंदी सीखनेके लिये प्रेरित करते रहेंगे। श्री बजाज ने वर्धाके नागरिकोंकी ओरसे विद्यालयको हर तरहके सहयोगका आश्वासन दिया।

स्नेह सम्मेलनके अवसरपर सर्वश्री गिरधारीलाल मलिक, अेम. अे. लाल, करंदीकर वकील, रामेश्वर दयाल दुबे, बलभद्र ठाकुर, हरिदत्त मिश्र, के. भैय्या, डॉ. महोदय, आशाकांत बी. आचार्य, शीलभद्र साहित्य-रत्न, परमेश्वरदीन तिवारी, सुमन वात्स्यायन आदिकी अुपस्थिति अुल्लेख-नीय है। अंतमें राष्ट्रगीत 'जन गण मन' गाया गया और विद्यालयकी ओरसे अगन्तुकोंको 'स्वल्पाहार' दिया गया।

प्रजातंत्र स्थापना दिवस— गत २६ और २७ जनवरीको राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति वर्धामें प्रजातंत्र स्थापना दिवस धूमधामसे मनाया गया। २६ तारीखको प्रातःकाल परीक्षामंत्री श्री रामेश्वर दयाल दुबेकी अध्यक्षतामें झंडा-वंदन हुआ तथा गणतंत्र दिवसकी महत्तापर श्री शील-भद्र साहित्यरत्नने प्रकाश डाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन रात्रिके ८॥ बजे समितिके प्रांगणमें स्नेह-सम्मेलन मनाया गया जिसमें सर्वश्री आशाकांत बी. आचार्य, देशमुख, देवीदास चौधरी आदि सज्जनोंने गायन-वादन अेवं हास्यपूर्ण भाषणसे श्रोताओंका मनोरंजन किया। बाहरके सर्वश्री सत्यनारायण बजाज, आनंदीलाल तिवारी आदि सज्जन भी अिस अवसरपर अुपस्थित थे।

बापू निधन तिथि—गत ३० जनवरीको श्री रामेश्वर दयाल दुबे की अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके भवनमें बापू निधन तिथि मनाअी गअी। अिस अवसरपर सभापति श्री दुबेजीके अतिरिक्त सर्वश्री शीलभद्र साहित्यरत्न, जमालुद्दीन तुरक आदिने महात्मा गांधीके प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

[प्रमाणित प्रचारकों अेवं परीक्षा केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे अपने स्थानोंके समाचार प्रांतीय संचालकोंके ही द्वारा भेजा करें तभी अुन्हें 'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशित किया जायगा —सम्पादक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका नवीन संगठन

प्रतिवर्षकी तरह अिस वर्ष भी हिंदी साहित्य सम्मेलनकी नियमा वलीके अुपनियम ३८ के अनुसार राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका नवीन संग ठन होना आवश्यक है। सम्मेलनके हैदराबाद अधिवेशनमें स्वीकृत प्रस्ता (सं. ११) के अनुसार समितिके अिस नवीन संगठनका कार्य-का तीन वर्षका होगा। सम्मेलनके सभापति, राष्ट्रभाषा परिषदके सभापति कार्यवाहक अुपसभापति, प्रधानमंत्री तथा परीक्षामंत्री अपने पद कारण समितिके सदस्य होते हैं। आगामी वर्षके लिये अुक्त पदाधि कारियोंकी नामावली अिस प्रकार है—

१. सभापति — पं. चन्द्रबली पांडेय
२. राष्ट्रभाषा परिषदके सभापति— श्री क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय
३ कार्यवाहक अुपसभापति — डॉ. अमरनाथ झा
४. प्रधानमंत्री — श्री बलभद्रप्रसाद मिश्र
५. प्रबंध मंत्री } ,, राय रामचरण अग्रवाल
६. परीक्षामंत्री }
७. प्रचारमंत्री ....

अिसी ३८ वें अुपनियमके अनुसार स्थायी समिति अपनी ओर ९ सदस्योंका निर्वाचन करती है। अिस नअी प्रचार समितिके लि सम्मेलनकी स्थायी समितिने निम्नलिखित ९ सदस्योंका निर्वाचन कि है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ माननीय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन
२ महापंडित राहुल सांकृत्यायन
३ भदन्त आनन्द कौसल्यायन
४ श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी
५ ,, प्रभात मिश्र
६ ,, करुणापति त्रिपाठी
७ ,, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
८ ,, रामनाथ सुमन
९ ,, सीताराम चतुर्वेदी

अहिन्दी भाषी प्रांतीय समितियोंको नीचे दी गअी संख्याके अनुसार १९ प्रतिनिधि सदस्य निर्वाचित करनेका अधिकार है।

असम २, बंगाल २, अुत्कल २, सिन्ध २, गुजरात ३, बंबअी २, महाराष्ट्र ३, विदर्भ नागपुर २, हैदराबाद १।

प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितियोंके मंत्री तथा संचालकोंसे प्रार्थना है कि वे अपनी प्रांतीय समितियों द्वारा अपने-अपने प्रान्तके प्रतिनिधि सदस्योंका चुनाव कर अुनके नाम व पते यथासंभव शीघ्र वर्धा कार्यालयमें भेजनेकी कृपा करें।

—आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीय अ. भा. राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन

स्वतन्त्र भारतमें हिन्दीके महत्वके साथ-साथ अुसके प्रचार कार्यका अुत्तरदायित्व भी बढ़ रहा है। अिस अुत्तरदायित्वको भली भांति निबाहनेके लिये तथा राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यको सुचारु रूपसे चलानेके अुद्देश्यसे गत वर्षकी भांति अिस वर्ष भी आसाम, बंगाल, अुड़ीसा, आन्ध्र, कर्नाटक, हैदराबाद, विदर्भ-नागपुर, राजस्थान, महाराष्ट्र, बंबअी, गुजरात आदि प्रांतोंके कर्मठ राष्ट्रभाषा प्रचारकोंके अखिल भारतीय सम्मेलनका आयोजन किया जा रहा है।

यह सम्मेलन आगामी २५-२६ फरवरीको भारत सरकारकी संविधान अनुवाद समितिके सदस्य प्रसिद्ध भाषा तत्वविद् आचार्य मुनि जिन विजयजीकी अध्यक्षतामें अहमदाबादमें होगा। संयुक्त प्रान्तके तपस्वी नेता बाबा राघवदास सम्मेलनका अुद्घाटन करेंगे। अिस अवसरपर अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलनके सभापति पं. चंद्रबली पांडेय, अखिल भारतीय अितिहास परिषद्के प्रधान मन्त्री पं. जयचन्द्र विद्यालंकार, शिक्षाशास्त्री पं. सीताराम चतुर्वेदी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके प्रधान मंत्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा अन्य प्रतिष्ठित विद्वान पधारेंगे।

समस्त राष्ट्रभाषा प्रेमी सज्जनों, प्रचारकों अेवं केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे हमारा अनुरोध है कि वे अधिकसे अधिक संख्यामें अुपस्थित होकर अिस सम्मेलनको सफल बनावें।

विनीत
शारदाबहन मेहता
जेठालाल जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—❀ सम्मेलन निमंत्रण-पत्र ❀—

प्रिय महोदय,

आगामी २५, २६ फरवरी ५० तदनुसार शनि-रविवारको प्रसिद्ध भाषा-तत्वविज्ञ आचार्य श्री. मुनि जिनविजयजी की अध्यक्षतामें द्वितीय अ. भा. राष्ट्रभाषा-प्रचारक-सम्मेलन प्रेमाभाअी हॉल, भद्र, अहमदाबादमें होने जा रहा है।

सम्मेलनका अुद्घाटन संयुक्त प्रान्तके तपस्वी नेता बाबा राघवदासजी करेंगे।

अिस समारंभमें आपको सादर निमंत्रण है।

निवेदक :—

कन्हैयालाल मा. मुन्शी अध्यक्ष	शारदाबहन मेहता स्वागताध्यक्ष
हरिप्रसाद प्र. देसाअी अुपाध्यक्ष	जेठालाल जोशी स्वागत-मंत्री

: कार्यक्रम :

ता. २५-२-५० शनिवार

समय—१ बजे, स्थान—न्यू अेज्यूकेशन हाअीस्कूल-रिलीफ रोड प्रचारकों और केन्द्र-व्यवस्थापकोंका परिचय सम्मेलन।

समय—अपराह्न बजेसे, स्थान—प्रेमाभाअी हॉल, भद्र।

(२) मंगलगान
(३) अुद्घाटन भाषण
(४) स्वागताध्यक्षका भाषण
(५) मंत्रीकी रिपोर्ट आदि
संदेश-वाचन
(७) अध्यक्षका भाषण
(८) अितिहासाचार्य . जयचन्द्र विद्यालंकारका भाषण
(९) वन्देमातरम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

समय—रात्रिके ९ बजे

(६) विषय विचारिणी सभा

ता. २६-२-५० रविवार

समय—प्रातः ८॥ बजे, स्थान—प्रेमाभाओ हॉल

(१) खुला अधिवेशन

समय—अपराह्न २ बजे

(२) खुला अधिवेशन २ से ४ बजे तक

(३) विशिष्ट व्यक्तियोंके भाषण-
४ से ५॥ बजे तक

समय—रात्रिके ८॥ बजे

(४) मनोरंजक कार्यक्रम

(नोटः—कृपया प्रत्येक कार्यक्रममें निश्चित समयसे १० मिनि
पहले पधारें ।)

: आवश्यक सूचनाअें :

(१) राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिकी प्रान्तीय समितियोंके पदा धिकारी, राष्ट्रभाषा-रत्न-अुपाधिधारी, प्रांतीय संचालक, प्रमाणित-प्रचार और केन्द्र-व्यवस्थापक ही सम्मेलनके प्रतिनिधि बन सकेंगे । श्रद्धा-प्रती प्रतिनिधि शुल्क १) रु. रखा गया है ।

(२) सम्मेलन अहमदाबाद शहर ही में होगा । स्टेशनपर सम्मे लनके कार्यकर्ता और स्वयंसेवक स्वागतके लिअे अुपस्थित रहेंगे ।

(३) फरवरीके अंतमें अहमदाबादमें सामान्यतः जाड़ा कम पड़त है । प्रतिनिधि-गण आवश्यकतानुसार ओढ़ने-बिछानेके वस्त्र आदि साथ लावें ।

(४) राष्ट्रभाषा प्रेमी सज्जन ५) या अुससे अधिक देकर सहाय सदस्य बन सकते हैं । सहायक सदस्य बननेके अुपरान्त ही वे मनोरंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रममें सम्मिलित हो सकेंगे। मनोरंजक कार्यक्रमके प्रवेश-पत्र ता. २४-२-५० तक कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकेंगे।

(५) बाहरसे आनेवाले दर्शकोंसे भोजन-खर्च प्रति-दिन ३) के हिसाबसे लिया जायगा। अपने आनेकी पूर्व सूचना हमें अवश्य देनी होगी।

(६) प्रतिनिधि-गण तथा बाहरसे आनेवाले सहायक सदस्योंके ठहरने तथा भोजनकी व्यवस्था समितिकी ओरसे की गओ है। पूर्व सूचना आनी आवश्यक है।

—जेठालाल जोशी
मन्त्री

: अहमदाबादके दर्शनीय स्थान :

(१) सत्याग्रह आश्रम साबरमती— महात्मा गांधीका जगत-प्रसिद्ध निवास स्थान।
(२) गुजरात विद्यापीठ—अनेक राष्ट्रीय प्रवृत्तियोंका केन्द्र।
(३) हठीसिंहकी वाडी—प्राचीन भारतीय शिल्प और स्थापत्यके कलापूर्ण नमूनोंका संचय गृह।
(४) नगीनी वाड़ी—मनोहर बगीचा।
(५) भद्रका किला—अेक प्राचीन अैतिहासिक किला।
(६) गांधी-हाट—ग्रामोद्योगकी आकर्षक वस्तुओंका बिक्री केन्द्र।
(७) माणेकलाल जे.-पुस्तकालय—गुजरातका अद्वितीय पुस्तकालय।
(८) शाह आलमका रोजा—भव्य अैतिहासिक अिमारत।
(९) जुम्मा मस्जिद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

फरवरी ५० की परीक्षाओंके लिये—(अुत्कल, राजस्थान, विदर्भ-नागपुर, तथा हैदराबाद रियासत)

परीक्षा-फलः—फरवरी ५० की परीक्षाओंका परीक्षा-फल १५ अप्रैल ५० को प्रकाशित होगा।

अप्रैल ५० की परीक्षाओंके लियेः—(आसाम, बंगाल, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, बंबअी, कर्नाटक, आंध्र, अफ्रीका तथा लंका)

परीक्षा-तिथिः—

आगामी प्रचार परीक्षाअें:—परीक्षा ता. १५, १६ अप्रैल को होंगी। 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा ता. १५ से १७ तक होगी।

लेखन-कार्यः—

कोविद लेखन-कार्यके लिये स्वतंत्र रूपसे ५० अंक रखे गये हैं। जिसमें १८ अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। परीक्षार्थी अपनी तैयारीकी अवधिमें ८ निबंध लिखकर अपने हिंदी शिक्षकसे जँचवा लें। निबंधोंकी सूची नीचे दी जा रही है। अिन्हींमेंसे कोअी भी ८ निबंध लिखें।

अप्रैल ५० के लिये निबंध-सूचीः—

(१) शिक्षाका माध्यम मातृभाषा या राष्ट्रभाषा ? (२) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी. (३) स्त्रियोंकी अुच्च-शिक्षा. (४) सह-शिक्षा. (५) विधान परिषदका राष्ट्रभाषा सम्बन्धी निर्णय. (६) वसन्त ऋतु. (७) साहित्यका अितिहाससे सम्बन्ध. (८) नागरिकके कर्तव्य. (९) अन्न समस्या और अुसका हल. (१०) अैतिहासिक स्थलकी यात्रा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत परीक्षा-समितिके महत्वपूर्ण निर्णयः—

कोविद-केन्द्रः—

स्थायी-केन्द्रः—स्थायी कोविद केन्द्रोंकी सूची परीक्षा समितिमें ही स्वीकृत की जाय, और अिस सूचीमें कोअी भी परिवर्तन अेक वर्षके बाद ही किया जाय।

स्थायी कोविद-केन्द्रमें कम-से-कम ५ परीक्षार्थी होना आवश्यक है। ५ से कम परीक्षार्थी होनेपर परीक्षाकी व्यवस्था न हो सकेगी।

अस्थाअी-केन्द्रः—अस्थाअी कोविद केन्द्रके लिये नीचे लिखी शर्तें पूरी करना आवश्यक होगा।

[च] —परीक्षाकी व्यवस्था किसी हायस्कूलके हेडमास्टर द्वारा या प्रान्तीय समितिसे सम्बन्धित किसी संस्था द्वारा हो।

[छ] स्थाअी कोविद-केन्द्रसे ५ मीलके अन्दर न हो।

[ज] कोविदका अस्थाअी केन्द्र खोलनेके लिये परीक्षा आवेदन-पत्र भरनेकी तारीखसे १५ दिन पहले प्रान्तीय संचालकके द्वारा आवेदन-पत्र आना चाहिये।

[झ] कोविद परीक्षार्थी-संख्या १० या १० से अधिक हो।

प्रमाणित-प्रचारकः—

कम-से-कम दो सत्रोंकी परीक्षाओंके लिये परीक्षार्थी तैयार करनेके बाद ही प्रमाणित-प्रचारक बनाये जाँय।

परीक्षा-फलः—

परीक्षा-फल परीक्षा तारीखसे दो माहके बाद निश्चित तारीखको प्रकाशित किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. कोविद परीक्षामें श्रेणी केवल लिखित ४ प्रश्न-पत्रोंके प्राप्तांकके आधार पर ही दी जाय। मौखिक तथा लेखन-कार्यके प्राप्तांक श्रेणी विभाजनमें सम्मिलित न किये जायँ।

परिचय शिक्षार्थियोंको अुत्तीर्ण होनेके लिये कम-से-कम ३५ प्रतिशत अंक प्राप्त करना होगा।

मौखिक सुविधाके विषयमें:—

परिचय परीक्षाके मौखिक सुविधा प्राप्त परीक्षार्थियोंकी पुनः परीक्षा परीक्षा-फल निकलनेके दो महीनेके भीतर हो सकती है। कोविद मौखिक और लेखनमें सुविधा प्राप्त परीक्षार्थी अिस नियमका लाभ न अुठा सकेंगे।

पाठ्य-सूची:—

कोविद परीक्षाके अतिरिक्त विषयोंमेंसे 'प्राचीन-पद्यका' प्रश्नपत्र हटा दिया गया है। 'परिचय-अुर्दू'का प्रश्नपत्र साधारण ज्ञानके आधारपर निकाला जाय। कोअी पाठ्य-पुस्तक अिसके लिये नियत न की जाय।

—कोविद प्रश्नपत्र चौथेमें 'साहित्य शिक्षा' पुस्तककी जगह 'साहित्यका साथी' पुस्तक विकल्परूपमें रखी जाय।

रत्न-परीक्षा:—

रत्न परीक्षाके निम्न लिखित नये केन्द्र स्वीकृत किअे जाँय:— राजकोट, बड़ौदा, (गुजरात) तेनाली, हैदराबाद (दक्षिण) अिम्फाल, (आसाम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सितम्बर ५० के लिये)

राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाके पाँचवें प्रश्नपत्रके पाठ्य-क्रमसे भाषा शिक्षण-पद्धतिका विषय हटा दिया गया है। अतः अिस विषयकी पाठ्य-पुस्तक 'भाषा-शिक्षण-पद्धति तथा' पाठ्य विषय अंशमेंसे 'शिक्षण-कला' का अंश पढ़नेकी आवश्यकता नहीं है।

अिसी प्रश्नपत्रमें व्याकरणकी पाठ्य-पुस्तक 'मध्य हिन्दी व्याकरण' के स्थानपर 'संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण' (ले. कामताप्रसाद गुरु) पाठ्य-पुस्तकके रूपमें स्वीकृत की जाय।

परीक्षा-सामग्रीः—

—परीक्षा ता. से अधिकसे अधिक २० दिनके अन्दर परीक्षा सामग्री वर्धा कार्यालय आनी चाहिये। २० दिनके बाद प्राप्त सामग्रीको साधारणतया अमान्य समझी जाय।

मौखिक परीक्षाके प्राप्तांक परीक्षा तिथिके २० दिनके अन्दर अवश्य वर्धा कायालय पहुँच जाने चाहिये। अवधिके बाद प्राप्त होनेवाले प्राप्तांक आमान्य समझे जावेंगे।

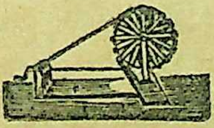

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त		प्र० नाम	नम्बर	स्थान
सिन्ध	श्री.	अश्विनी कुमार चितौड़ा	१६१२	बिजौलियाँ
गुजरात	,,	रमणलाल धुलचंद ठक्कर	१६१३	असलाली
,,	,,	भगवानदास प्रभुदास पटेल	१६१४	भोज
,,	,,	मनुभाओ अमृतलाल ठक्कर	१६१५	वड्डू
,,	,,	मोहनलाल छोटालाल शाह	१६१६	,,
,,	,,	जयन्तिलाल ब्रजलाल जानी	१६१७	अहमदाबाद
,,	,,	नारायणभाओ हरगोविंददास पटेल	१६१८	पिलवाओ
,,	,,	मगनभाओ मथुरदास पटेल	१६१६	अहमदाबाद
,,	,,	अुमेदभाओ छोटाभाओ पटेल	१६२०	सहिज
,,	,,	रामभाओ शंकरभाओ पटेल	१६२१	चांगा
,,	,,	साकरलाल झीणाभाओ पंचाल	१६२२	भरुच
,,	,,	प्रेमशंकर जटाशंकर भट्ट	१६२३	धर्मज
,,	,,	अनंतप्रसाद हरनारायण त्रिवेदी	१६२४	अहमदाबाद
,,	,,	सूर्यकान्त द्वारकादास अमीन	१६२५	वीरसद
महाराष्ट्र	श्री.	पांडुरंग गिरधर बोंडे	१६२६	वराडसीम
,,	,,	सोनु पंढरीनाथ रोटे	१६२७	नशिराबाद
,,	,,	पांडुरंग दिनकर दीक्षित	१६२८	,,
,,	,,	मधुसूदन विष्णु कौंडिण्य	१६२६	,,
,,	,,	जनार्दन बळीराम पिंगले	१६३०	,,
,,	,,	भाअुलाल मोतीराम साळी	१६३१	,,
,,	,,	गोपाल विठू जंगले	१६३२	,,
,,	,,	तुकाराम नाटु पाटील	१६३३	,,
,,	,,	चिंतामण लक्ष्मण चौधरी	१६३४	,,
,,	,,	सोपान पुंडलीक वाणी	१६३५	,,
,,	,,	बाबुराव यादव नारखेड़े	१६३६	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	प्र० नाम	नम्बर	स्थान
बम्बअी	,, गणेश वासुदेव देसाअी	१६३७	गिरगाँव (बंबअी)
,,	,, विट्ठल कुड़प्पा अंचन	१६३८	बंबअी
,,	,, शीणा अेस सुवर्ण	१६३९	,,
,,	,, के० अे० अमीन	१६४०	,,
,,	,, अचण्ण अे० अमीन	१६४१	,,
,,	,, बि. कृष्णप्प	१६४२	कोट, बंबअी
,,	,, ठाकोरलाल नगीनदास पारेख	१६४३	बंबअी
,,	,, डी. जी दलाल	१६४४	विलेपारले
,,	,, बालकृष्ण नारायण गायकवाड	१६४५	घाटकोपर (बं.)
,,	नटवरलाल शिवशंकर याज्ञिक	१६४६	मालाड़ (बंबअी)
,,	,, तुकाराम सखाराम राणें	१६४७	कोट ,,
,,	,, नरहर भिवाजी प्रभु	१६४८	बंबअी
,,	,, जगदीशलाल हशुराम शर्मा	१६४९	,,
,,	,, खोरसेद धनभूरा	१६५०	,,
,,	,, भगवान तुकाराम भावे	१६५१	,,
,,	,, सीताकांत भाअुराव कुन्टे	१६५२	माटुँग (बंबअी)
,,	,, महादेव शंकर गोडबोले	१६५३	दादर ,,
,,	,, रंगनाथ रामकृष्ण देशपांडे	१६५४	,, ,,
,,	,, सौ. लक्ष्मीबाअी विष्णु भांडारी	१६५५	बंबअी
,,	,, विट्ठल रामचंद्र कारखानीस	१६५६	दादर (बंबअी)
,,	,, अनंत विष्णु पेंढारकर	१६५७	चेंदणी
,,	,, चम्पावती खंडेराव जोशी	१६५८	ठाकुरद्वार ,,
,,	,, जनक हरिशंकर दवे	१६५९	,,
,,	,, चन्द्रकांत कांतिलाल जरीवाला	१६६०	नारदेव ,,
,,	,, वेणीबहन विनयचन्द्र कापडियाँ	१६६१	बंबअी
,,	,, गुलाबभाअी खंडूभाअी नायक	१६६२	गिरगांव ,,
,,	,, अण्णा श्रीपत विश्वासराव	१६६३	,, ,,
वि. नागपुर	,, शंकर पुंजाजी अवचार	१६६४	लोणार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक	प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
गुजरात	औखर	४४०	महाराष्ट्र	येलावी	६७
,,	रांधेजा	४४२	,,	सारंगखेडा	६७
,,	बसावड	४४६	,,	सोमेश्वर	६७
,,	सजोद	४५०	,,	कसबे डिग्रज	६७
,,	टीम्बाकामुवाड	४५५	,,	मंचर	६७
,,	वडताल	४५६	,,	साकोरे	१५६१
,,	वनोडा	४५७	,,	मणगांव	१५६२
,,	भड़ियाद	४५६	,,	शिर्डी	१५६३
,,	चितल	५६०	,,	साखरवाडी	१५६४
,,	रोजका	५६१	,,	वसगडे	१५६५
,,	घमडाछा	५६२	,,	खिरमाणी	१५६७
,,	बहियाल	५६०	,,	तांवबे	१५६८
,,	आलन्दा	५६१	,,	डोमरी	१५६९
,,	राघनपुर	५६२	,,	कुकाणे	१५७०
,,	मढ़ी	६७६	,,	सलाबतपुर	१५७१
,,	जखाज	६७७	,,	चोपड़ा	१५७२
,,	सुदासना	६७८	,,	तलवेल	१५७३
,,	बाबरा	५३१	,,	विचखेडे	१५७४
,,	जादर	१५६४	,,	ककंब	१५७५
,,	जबुगांव	१६००	,,	नातापुता	१५७६
,,	कोडाय	१६०३	,,	मालशिरस	१५७७
,,	समाघोघा	१६०४	,,	गडहिंग्लज	१५७८
,,	रहियाद	१६०५	,,	वादुवली	१५७९
,,	विदड़ा	१६०६	,,	मरीआओवीवाडी	१५८०
,,	मगरोड़ा	१६०७	,,	माजरोद	१५८१
,,	वडीआ	१६०८	,,	विरदेल	१५८२
			,,	गरताड	१५८३
			,,	मांजगांव	१५८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	केन्द्र	मांक	प्रांत	केन्द्र	क्रमांक
महाराष्ट्र	कवलापुर	१५८५	महाराष्ट्र	होलनांथा	१६१६
,,	कुंडल	१५८६	,,	म्हैसाल	१६१७
,,	शेटफले	१५८७	,,	शेडशाल	१६१८
,,	बहादुरवाडी	१५८८	,,	रिलीफकॅम्प पिंपरी	१६१९
,,	बोरगांव	१५८९	,,	नांदणी	१६२०
,,	मलणगांव	१५९०	त्रि. नागपूर	नेरी	५०३
,,	पन्हाला	१५९८	,,	तलोधी-बालापुर	५९७
,,	समडोली	१५९९	,,	मोला	४३९
,,	डिचोली	१६०२	,,	निमगांव	१५९७
,,	कापकोष	१६०१	राजस्थान	बूँदी	१५९५
,,	कुसूर	१६०९	बंबई	लालबाग	१५९६
,,	कराड	१६१०	अुत्कल	गोडिपडा	४५४
,,	अुमदी	१६११	,,	सिको	५०६
,,	नांद्रा	१६१२	आसाम	सदिया	२३४
,,	खानोलीबायंगणी	१६१३	,,	नलबारी	५८३
,,	भुअिंज	१६१४	अफ्रीका	बुकोबा	४६१
,,	कडे	१६१५			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तार
'राष्ट्रभाषा'

पुराने प्रश्नपत्र प्राप्य

१. प्रारंभिक-प्रश्नपत्र [सन् ४५ से ४९ तक] 0
२. प्रवेश-प्रश्नपत्र [सन् ४४ से ४९ तक] 0
३. परिचय-प्रश्नपत्र [सन् ४७ से ४९ तक परीक्षाओंके] ०-८-०
४. कोविद-प्रश्नपत्र [,, ,,] ०-१०-०

राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके पुराने प्रश्नपत्रोंकी माँग हमेशा आ रही है। पीछे हम अपने बहुतसे ग्राहकोंको अुनके मँगाअे हुअे संपूर्ण नहीं भेज सके। कारण, खुले प्रश्न-पत्र होनेसे अनके चुनने और भेज काफी परेशानी व विलंब होता था। अिस कमीको दूर करनेके लिये परीक्षा-क्रमके अनुसार पुराने प्रश्नपत्र अलग अलग पुस्तकाकार छ गअे हैं। परीक्षार्थी जिस परीक्षाके प्रश्न-पत्र चाहे, मँगा सकता है।

परीक्षामें बैठनेके पूर्व यह जान लेना अत्यंत जरूरी है कि अ किस तरहके प्रश्न पूछे जाते हैं। अिसके लिये हरेक परीक्षार्थीको चा कि वह पुराने प्रश्नपत्रोंको अेक बार अवश्य पढ़े,-पढ़े ही नहीं-अुन्हें अ बुद्धिसे, अपने अनुभवसे हल भी करे, ताकि अपनी परीक्षामें जानेवाले प्रश्नोंको वह ठीक ठीक समझ सके और अुनके सही अु लिख सके। परीक्षार्थियोंको यह सुविधा प्रदान करना ही अिन प्र पत्रोंको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेका अुद्देश्य है।

हरेक खुला प्रश्नपत्र दो पैसेके हिसाबसे बेचा जाता है। लेकि अिस संगृहीत प्रश्नपत्रोंका मूल्य हमने अपेक्षाकृत कम रखा है। आ है, परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

—प्रकाशन विभाग

मुद्रक--सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

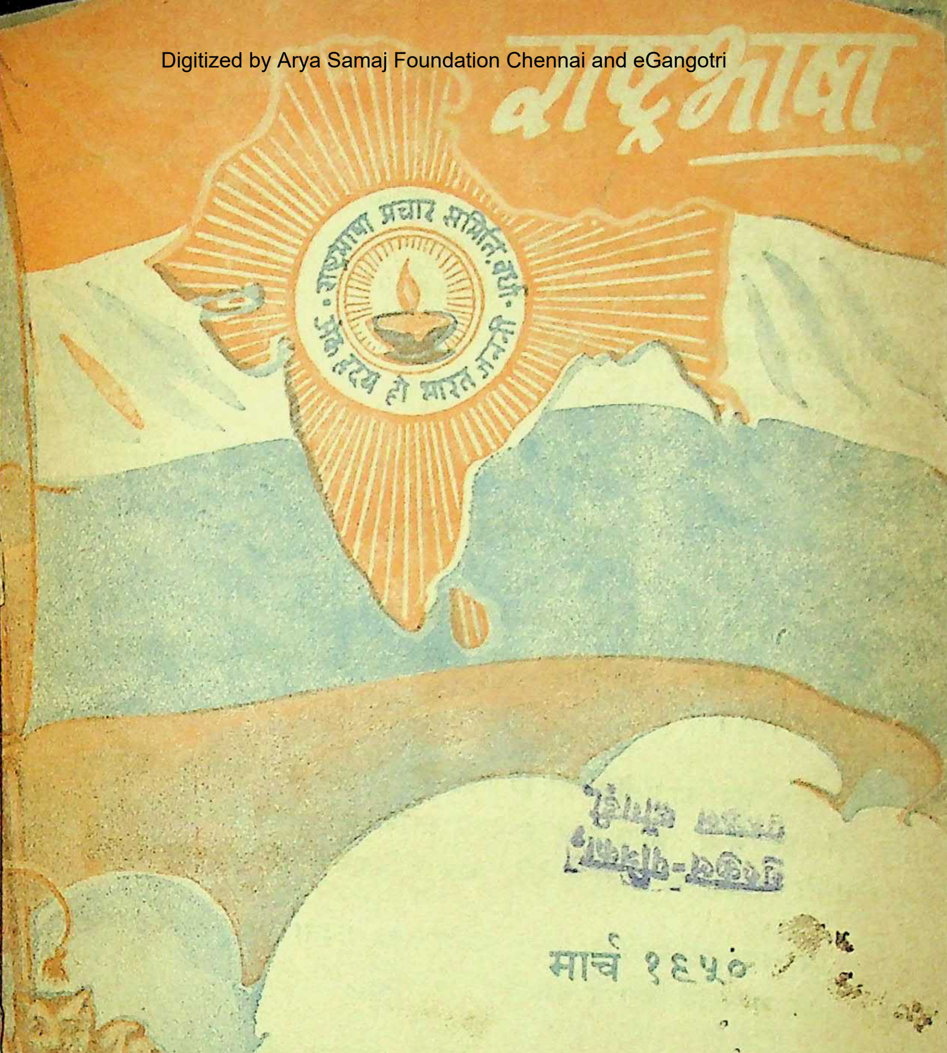

मार्च १९५०

"विजय अुन्हें मिलती है जिनमें अुसे पानेकी क्षमता हो। किसी भी आदमीके लिअे तरक्कीकी सबसे अूँची मंजिलपर पहुँचना नामुमकिन नहीं है बशर्ते कि अुसमें दृढ़ निश्चय, लगन व आदर्शपर पहुँचनेके लिये बड़े-से-बड़ा त्याग करने की तैयारी हो।"

—शैल

"विषमताको पनपाकर हम समताकी दुनिया नहीं बना सकते। राष्ट्र और विश्वको अेक दिन वर्गोंकी शृंखलाअें तोड़ शोषण और असमानताकी दीवार खतम करनी होगी।"

—साने गुरुजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख		पृष्ठ
१. राष्ट्रभाषा हिन्दी और हमारा अुत्तरदायित्व	...	१८९
२. अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन	...	१९६
३. सम्मेलनके लिये शुभ कामनाअें	...	२१९
४. परीक्षा-विभाग	...	२२३

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है। वी. पी.से अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभाषा' भेजा जा सकेगा।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक हर महीनेकी १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है। अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक-नम्बर साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारक अेवं केन्द्र-व्यवस्थापक पत्र-व्यवहारके समय अपनी क्रम संख्या का अुल्लेख अवश्य करें।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि वे राष्ट्रभाषामें प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, मार्च—१९५० [अंक ५

राष्ट्रभाषा हिन्दी और हमारा अुत्तरदायित्व

: आचार्य श्री मुनिजिन विजयजी :

हमारे हिन्दी-हितैषी बन्धुओं और नेताओंके प्रयत्नसे हिन्दीका राष्ट्रकी राज्यभाषा बननेका अधिकार मान लिया गया है, लेकिन अिस अधिकारको अमलमें लानेके निमित्त कुछ कालावधि बतलाअी गअी है और साथमें कुछ विशिष्ट प्रकारकी मर्यादाअें भी लगाअी गअी हैं जो भविष्यमें हमारी ध्येयसिद्धिमें यथेष्ट विघ्न भी अुपस्थित कर सकती हैं। हमारे अिस संविधानके मूल निर्माता अैसे विद्वान् हैं जिनमेंसे न किसीकी हिन्दी मातृभाषा है और न किसीकी हिन्दी लिखने-बोलनेमें दिलचस्पी ही है। ये सबके सब अंग्रेजीके भक्त और अंग्रेजीसे परिपुष्ट अतअेव अुसके परिपोषक हैं। बात भी कुछ ठीक ही कहनी चाहिये। क्योंकि अिनको जो कुछ कीर्ति, संपत्ति या प्रतिष्ठा मिली है वह अंग्रेजी ही की अुपासनाका फल है। अिसलिये अिन महामनीषियोंका अंग्रेजी-परस्त होना स्वाभाविक ही है। अपवाद रूपसे अिनमें अेक सदस्य श्री मुन्शीजी ही अैसे हैं जिनका हिन्दीपर अच्छा प्रेम होकर, अंग्रेजीके साथ साथ अपनी मातृभाषा (गुजराती) पर भी अुत्कट अनुराग और पूर्ण प्रभुत्व है। अिन्हींकी देशभक्तिके कारण हिन्दीको हमारे अिस संविधानमें अुक्त प्रकारका कुछ अर्धदग्ध-सा भी स्थान मिला है, अैसा समझना चाहिये। संविधानके निर्माताओंने संविधायक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभाको सलाह दी है कि हिन्दीको भले ही भारतीय राज्य संघकी भावी राष्ट्र भाषा अभी घोषित कर दी जाय, लेकिन आगामी १५ वर्ष तक तो देशका कामकाज बहुत करके अंग्रेजी द्वारा ही चलते रहना चाहिये। बादमें अेक कमीशन द्वारा विचार कराया जाय कि हिन्दीको अब कितना अधिकार समर्पित किया जाय—अित्यादि अित्यादि।

यह कहनेमें दुःख होता है लेकिन कहे बिना कुछ रहा भी नहीं जाता—कि अैसा संविधान करनेमें अुन महाशयोंका अेक मात्र निजी स्वार्थ हेतु होनेकी ही हमें कुशका हो रही है। क्योंकि अभीसे हिन्दीको अंग्रेजीका विशिष्ट स्थान दे दिया जाय, तो अिन और अिनके ही समानशील वयोवृद्ध कानून जीवियोंकी क्या स्थिति हो? अिनके अधिकार पद और आर्थिक आयकी क्या गति हो? केवल अन पलितकेशी मस्तिष्कस्वामियोंकी देशभक्ति-निरपेक्ष स्वार्थमूलक वृत्तिने राष्ट्रभाषाके वास्तविक अधिकारको और वैसा करके देशकी समूची प्रगतिको – कमसे कम अेक पीढ़ी तक तो आगे ढकेलनेका अनिष्ट काम किया है। यदि अिन महानुभावोंके हृदयोंमें महात्माजी जैसी राष्ट्रभक्तिकी अुज्ज्वल ज्योति प्रज्ज्वलित होती, तो ये संविधान सभाको आग्रहपूर्वक अैसी सलाह देते कि ५ वर्षके भीतर ही अंग्रेजी भाषाके सर्व अधिकार हिन्दीको समर्पित कर देने चाहिये और देशको अंग्रेजीके जालसे मुक्त कर हिन्दीके लिअे सब ज्ञान-द्वार खुले कर देने चाहिये। परतु अिनका ख्याल तो शायद यह रहा है कि १५ वर्ष तक अंग्रेजी बनी रहनेसे हमारा जीवन तो बिना किसी हिचकिचाहटके अिसी तरह अमन-चमनमें पूरा हो जायगा। आगेकी बात आगेवाले जाने-सोचें।

हमको अिन अिने-गिने अंग्रेजी-परस्तोंसे पूरी तरह सावधान रहना होगा। हमारी राष्ट्रभाषाके भविष्यको यदि किसीका भय है तो अिन्हीं अंग्रेजी भक्तोंका है। अिन्हीं अंग्रेजी प्रेमियोंकी कृपाका फल है कि हमारा नूतन संविधान, अपने देशकी भाषामें न बनकर, अुन अंग्रेजोंकी भाषामें बना जिनको अपने देशमेंसे निकाल देनेके लिये और जिनके नाम-निशान मिटा देनेके लिअे हमने अितने कष्ट अुठाये, अितनी यातनायें सहीं और अितने बलिदान दिये। आजके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३० वर्ष पहले हमारे राष्ट्रपिताने जिस भाषाके अधिकार और संस्कारका बहिष्कार करना अुद्घोषित किया और जिसको अमलमें लानेके लिअे अपना समग्र सामर्थ्य समर्पित किया अुसी अंग्रजीमें, अुन अंग्रेजोंके चले जाने पर भी, हमारे देशका यह नूतन संविधान बनता है, और वही हमारे पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्रका शिरोधार्य शासन निबंध माना जाना चाहिये अैसा राष्ट्रपतिका आदेश होता है।

अिस संविधानमें अंग्रेजीकी सत्ता कायम रखनेकी दृष्टिसे और भी अनेक तरह की कअी कलमें दर्ज की गअी हैं और भावी राज्यभाषा हिन्दीको अनेक तरहकी कसौटियोंसे कसते रहनेकी सूचनायें दी गअी हैं। यदि अिन कसौटियों द्वारा हिन्दीकी ठीक ठीक योग्यता सिद्ध हो गअी तो अुसे अपना अधिकार मिल जायगा, नहीं तो फिर अुसके लिअे क्या करना चाहिये अिसका विचार देशकी केंद्रीय संसद (पार्लियामेन्ट) को करना होगा अित्यादि।

हिन्दीको यदि हमें वास्तवमें ही राष्ट्रभाषा बनानी है—अखिल भारतकी साम्राज्य भारती बनानी है—और अुसे राष्ट्रकी सभी प्रादेशिक भाषाओंमें अग्रस्थान लेने जितनी क्षमता देनी है, तो हमें न केवल अिसके जानने-समझने-वालोंकी मात्र बाह्य संख्यावृद्धि ही से संतुष्ट हो जाना चाहिये; अपितु अिसकी आन्तरिक गुणवृद्धिकी ओर भी हमारा वैसा ही महत्तम प्रयत्न होना चाहिये। बिना गुणवत्ताकी वृद्धि और आन्तरिक समृद्धिके अिसकी महत्ताकी विशिष्ट सिद्धि नहीं होगी। यदि यह अन्तरसे गुणवृद्ध और सत्वसमृद्ध नहीं होगी तो संसारकी अन्यान्य प्रौढ़ और प्रभावशाली भाषाओंमें अिसका गौरवपूर्ण स्थान नहीं बनेगा। वैसी दशामें यह 'भारत-भारती' के विभूतिमद् विशेषण द्वारा विभूषित न होकर, केवल 'हिन्दीबोली' के अेक क्षुद्र संकेत—लघुतम विरुदके भाजन योग्य बनी रहेगी। यह चपरासीकी भांति राजदरबारकी सेवा-वाहिनी 'खड़ी बोली' ही बनी रहेगी।

संख्याबलकी दृष्टिसे आज संसारमें अिसका तीसरा स्थान है। लेकिन आभिजात्य और आनुवंशिक महत्वकी दृष्टिसे तो संसारमें अिसका पहिला स्थान है। यह अुस दिव्य और भव्य संस्कृत भाषाकी अविच्छिन्न सम्बन्धवाली औरस सन्तान है, जो संसारकी सबसे प्राचीन, सजोव, सुघटित, सर्वांगपरिपूर्ण अेवं सर्वश्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतअेव सर्वोत्कृष्ट भाषा है। परन्तु अंग्रेजी भाषाके आधुनिक विशाल कलेवरका अूपर अूपरसे अवलोकन करनेवाले, और केवल अुदरपूर्तिके साधनकी दृष्टिसे, अन्यमनस्क होकर, अनेक वर्षोंतक अुसका आरटन करके अुसके भक्त कहलानेकी अुत्कंठा रखनेवाले, अंग्रेजोंके जीहुजूरवर्गीय अंग्रेजी-परस्त भारतीयोंकी, यह अज्ञानमूलक भ्रान्त कल्पना है कि—संस्कृत अेक मृत भाषा है; तथा गम्भीर भाव और प्रौढ़ विचारोंका प्रकाशन करनेमें हिन्दी या भारतकी अन्य किसी भाषामें वैसी क्षमता नहीं है, जो अंग्रेजीमें है—अित्यादि अित्यादि।

संस्कृत मृत है या सजीव तथा अुनकी योग्य वारसदार हिन्दी अेवं अन्य भारतीय भाषाओंमें गम्भीर भाव और प्रौढ़ विचारोंके प्रकाशनकी क्षमता है या नहीं—अिसकी मीमांसामें मैं यहाँ नहीं अुतरना चाहता। क्योंकि वह अेक दूसरा विषय है, और बहुत बड़ा विषय है। प्रस्तुतमें वह विषयान्तर-सा होगा। और फिर अिस चर्चाके लिये यहाँपर समय भी कहाँ है? लेकिन मैं यहाँ अितना अवश्य कहना चाहूँगा कि न संस्कृत भाषा मृत है, और न अुसकी हिन्दी आदि पुत्रियाँ किसी भी प्रकारकी क्षमताके अयोग्य हैं। देवताओंकी प्रिय वह दिव्य संस्कृत वाणी आज भी वैसी ही सजीव सचेतन है, जैसी वह अपने आद्य महावैय्याकरण महर्षि पाणिनिके वक्त थी। बल्कि अुससे भी अधिक अलंकृत, समृद्ध, स्फूर्तिमान और वीर्यवान है। अिसकी-सी अद्भुत क्षमता रखनेवाली संसारमें कोअी भाषा अद्यावधि अुत्पन्न नहीं हुअी है। यह अलग बात है कि अिसका अधिकार-प्रदेश आज बहुत संकुचित हो गया है, अिसके जाननेवालोंकी संख्या बहुत कम हो गअी है। अिस दृष्टिसे देखें तो जर्मन भाषाके जानने और बोलनेवालोंकी संख्या अंग्रेजीकी अपेक्षा कितनी कम है? लेकिन जिनको जर्मनका, किंचित भी परिचय है वे जानते हैं कि ज्ञान विज्ञानके भंडारकी दृष्टिसे अंग्रेजी जर्मनके सन्मुख दासी-सी दिखाअी देती है।

संस्कृत हमारी हिन्दीकी सगी मातामही है। अुसकी समग्र शब्दसमृद्धि और अर्थनिधिकी वह अधिकृत वारसदार है। अुसके अक्षय शब्दकोषका और अनन्त अर्थसंचयका यह यथेष्ट अुपयोग और अुपभोग कर सकती है। साथ ही मैं यह अपनी सब अन्य बहिनों और समकक्ष पड़ोसिनों—तामिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम आदि द्राविड़ प्रादेशिक भाषाओंके भंडारोंमेंसे अभिल्षित शब्दालंकरणों और अर्थाभूषणोंसे यथेष्ट रूपमें अपने अंगप्रत्यंगोंको अलंकृत कर सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबी, फारसी, लेटिन, हीब्रू, ग्रीक आदि संसारकी पुरातन भाषाओंके और फ्रेंच, जर्मन, रूसी, अंग्रजी आदि यूरोपकी आधुनिक प्रचलित भाषाओंके अत्युपयोगी और अत्यावश्यक शब्दोंको अपनानेमें भी अिसको कोअी रोक-टोक नहीं है, किसी प्रकारका सोच-संकोच नहीं है।

सौभाग्यसे अिसके सामर्थ्यको स्पष्ट रूपसे व्यक्त करनेवाली हमारी देव-प्रिय देवनागरी वर्णमाला भी वैसी ही सर्वरूपग्राहिणी और सर्वध्वनि प्रकाशिनी है, जिसके आधारसे यह अनायास ही सब भाषाओंके संकेतों और अुच्चारणोंको अविकृत रूपमें अपने अन्दर समा सकती है और अुनको आत्मसात कर सकती है। अल्बत्त अिसके लिये हमें अपनी लिपिमें कुछ सुधार करना आवश्यक है।

अैसी विलक्षण क्षमता और विशिष्ट योग्यता रखनेवाली हमारी अिस भारती देवीके विरुद्ध, यदि कोअी भारतजन किसी प्रकारके कुत्सित विचार प्रकट करे तो अुन्हें हमें भ्रान्तचित्त और विकृतमस्तिष्कके विशेषणके सिवाय, अन्य किस विशेष नामसे पुकारना चाहिये अिसकी मुझे तो कोअी सूझ नहीं हो रही है।

हम सबको अब यह स्पष्ट रूपसे समझ लेना चाहिये कि 'हिन्दी' नाम-धारिणी यह हमारी नूतन राष्ट्रभाषा अब न केवल काशी, अिलाहाबाद या कानपुर दिल्लीकी 'खड़ीबोली' के रूपमें रहेगी; अपितु अखिल भारतकी राष्ट्रभारती—समुच्चय हिन्दकी हिन्दीके रूपमें व्यवहृत होगी। अिसको अब अैसा अखिल भार-तीय स्वरूप देनेके लिये, हमें अिसके व्याकरणविधानमें और शब्दस्वरूपमें कुछ विशेष संशोधन-परिवर्तन करने होंगे।

शब्दोंका संग्रह भंडार बढ़ानेकी दृष्टिसे तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओंके साथ अिसका विशिष्ट सामिप्यकरण करनेकी दृष्टिसे अुन अुन भाषाओंके अनेका-नेक विशिष्टार्थवाचक शब्दोंको अिसके शब्दकोशोंमें और पाठ्य-पुस्तकोंमें समाविष्ट करने होंगे। ये शब्द फिर चाहे तामिल, तेलगु, आदि द्राविड़ भाषाओंके हों, चाहे अरबी-फारसी आदि अिस्लामी प्रादेशिक भाषाओंके हों, चाहे अंग्रेजी, फ्रेंच आदि यूरोपीय भाषाओंके हों, अेवं फिर चाहे चीनी जापानी आदि पीतवर्णीय प्रजाकी भाषाके हों। मैं तो मानता हूँ कि श्यामवर्णीय निग्रो प्रजाकी भाषाके भी अनेक शब्द हमारी हिन्दीमें लाने होंगे, क्योंकि आफ्रिका वगैरह निग्रो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीय जनपदोंके साथ हमारा बहुत बड़ा व्यापारिक और औपनिवेशिक सम्बन्ध बना हुआ है।

हिन्दी राष्ट्रकी राज्यभाषा होने जा रही है, अिसलिये राज्यका अन्तः प्रान्तीय व्यवहार अिसी द्वारा होगा और राज्यकी नौकरी चाहनेवाले सबको अिसका अध्ययन करना अनिवार्य होगा। अिस विचारको लक्ष्यमें रखकर हमको अभीसे सब प्रान्तीय देशभाषाओंमें अैसी सुगम, परन्तु क्रमबद्ध पाठमालाअें तैयार करनी-करानी चाहिये जिससे पढ़नेवालोंकी अुत्तरोत्तर हिन्दीके अध्ययनमें रसवृत्ति जाग्रत होती जाय और थोड़े समयमें वे हिन्दीका अुतना ही अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लें, जितना अुन्हें अपनी मातृभाषाका हो।

प्रान्तीय भाषाभाषियोंको सुगमतासे और ममतासे हिन्दीके अध्ययनकी ओर आकृष्ट करनेका मेरी समझमें सबसे अच्छा अुपाय यह होगा कि —अुन अुन प्रान्तीय भाषाओंमें जो जो विशेष लोकप्रिय कथा-कहानियोंका साहित्य है अुसका सुन्दर,सरल और सुबोध रूपमें हिन्दी भाषान्तर किया जाय। कथा-कहानियोंसे मेरा मतलब प्राचीन लोक-कथाअें तथा आधुनिक लिखित नअी शैलीके अुपन्यास आदि दोनोंका है। अिसी तरह हिन्दीका जो अिस प्रकारका मौलिक कथा-साहित्य है, अुसका भाषान्तर अुन अुन प्रान्तीय भाषाओंमें किया जाय। अैसा करनेसे हिन्दीका विकास होता जायगा और विस्तार बढ़ता जायगा तथैव प्रान्तीय भाषाओंकी समृद्धि और शक्ति बढ़ती जायगी।

अन्तमें मैं कुछ शब्द अपने हिन्दीके विशिष्ट लेखक बन्धुओंके प्रति कहना चाहता हूँ। अिसमें कोअी शक नहीं कि हिन्दीके लेखकोंकी और अुपासकोंकी संख्या अब दिन प्रतिदिन बड़ी तेजीके साथ बढ़ती जा रही है। परन्तु अिन अुत्साही लेखकोंका लक्ष्य, स्थायी साहित्यके सर्जनकी ओर अभीतक जैसा चाहिये वैसा नहीं हो रहा है। हिन्दीमें कविता लिखनेवाले युवकोंकी जितनी विशाल संख्या है अुतनी शायद अन्य किसी भाषामें न होगी। मैंने अैसे अनेक युवक देखे हैं कि जिनको हिन्दीमें सामान्य व्यवहारकी घटनाका भी व्यवस्थित वर्णन लिखना नहीं आता, लेकिन वे भी कविता करनेकी ओर कवि कहलानेकी बड़ी अुत्सुकता रखते मालूम दिये। कविताके आगे किसीकी कुछ दौड़ होती है तो वह कुछ छुट-फुट और अस्त-व्यस्त विचारोंवाली कहानियाँ लिखनेकी होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु अिसके सिवाय भिन्न-भिन्न प्रकारके विषयोंके निबन्ध, प्रबन्ध, लेख आदि लिखकर अपनी मातृभाषाके भंडारको पुष्ट करनेका और अुसके द्वारा अपने करोड़ों अज्ञान देशवासियोंकी अन्धकारपूर्ण झोपड़ियोंमें, ज्ञान ज्योतिके दीपक जगानेका कोअी विशेष लक्ष्य नहीं हो रहा है। अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओंकी बातको तो सर्वथा जाने दें। परन्तु अपने देशकी बंगला, मराठी, गुजराती आदि प्रान्तीय भाषाओंके पुस्तक भंडारोंकी तरफ ही हम कुछ विशेष नजर डालकर देखेंगे, तो हमें प्रतीत होगा कि अिन भाषाओंके गण्यमान्य लेखकोंने विविध विषयोंके जितने भी छोटे बड़े ग्रंथ निबन्ध आदि लिखकर अपनी मातृभाषाके चरणोंमें चिरंजीवी साहित्यक पुष्प समर्पित किये हैं और कर रहे हैं, अुसकी तुलनामें हिन्दीका नंबर कहाँ है, यह आप जरा गंभीरताके साथ जरूर सोच-विचार करनेकी कृपा करें।

[द्वितीय अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनके सभापति पदसे दिअे गअे भाषणका प्रमुख अंश]

याद रखो, जीवन और मृत्युकी चिन्ता व्यर्थ है। अूर्ध्वगामी होना ही हमारा अेकमात्र कर्तव्य है। बस, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो और तब तक बढ़ते चलो जब तक कि तुम आकाशके तारोंके पास न पहुँच जाओ। कौन हमारी प्रगतिमें बाधा अुपस्थित करेगा! कौन हमें आदेश दे सकता है कि बस यहीं रुको, आगे नहीं बढ़ सकते। हम चाँदके लिये नहीं रोते! हम तो चाँदको आकाशसे तोड़ लायेंगे और अेशियाकी स्वतंत्रताके मुकुटमें जड़ देंगे!

अुठो और प्रतिज्ञा करो कि हम अेक-साथ अभाव, गरीबी, अशिक्षा, शोषण, निराशा दुख और मृत्यु तक को मिटा देंगे। तुम सभ्यता और संस्कृतिके अग्रदूत हो। आज फिर तुम शंख-ध्वनि करो कि शांति और अहिंसाके द्वारा ही समस्त मानव समाज की प्रगति संभव है।

—सरोजिनी नायडू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय

राष्ट्रभाषा प्रचारक-सम्मेलन

: श्री हरिदत्त मिश्र, अेम. अे., साहित्यरत्न :

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनका द्वितीय वार्षिक अधिवेशन गत २५, २६ फरवरी ५०, को प्रेमाभाअी हाल, भद्र, अहमदाबादमें प्रसिद्ध भाषा-तत्ववेत्ता आचार्य श्री मुनि जिन विजयकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष श्री चंद्रबली पांडेय, अितिहासाचार्य पं. जयचद्र विद्यालंकार, शिक्षा-शास्त्री पं. सीताराम चतुर्वेदी, अुत्तर प्रांतके तपस्वी नेता बाबा राघवदास, साहित्य मर्मज्ञ श्री वियोगी हरि अेवं अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन प्रभृति आगत अतिथियोंने सम्मेलनमें भाग लिया। बंबअी, गुजरात, महाराष्ट्र, विदर्भ नागपूर, राजस्थान, मध्यभारत आदि प्रांतोंसे आअे हुअे लगभग ५०० प्रतिनिधि अुपस्थित थे। प्रांतीय संचालकोंमें श्री जेठालाल जोषी, (गुजरात) श्री कान्तिलाल जोषी, (बंबअी) श्री पं मु. डांगरे, (महाराष्ट्र) श्री दौलतराम शर्मा (राजस्थान) और श्री प्रेमसिंह 'विद्यार्थी' (मध्यभारत) सम्मेलनमें पधारे।

देशकी और विशेषकर गुजरातकी कुछ महान विभूतियोंके चित्रोंसे सुसज्जित, राष्ट्रपताकाओंसे परिवेष्टित प्रेमाभाअी हाल प्रतिनिधियों अेवं दर्शकोंसे खचाखच भरा था। मंगलगानका मधुर ध्वनिके साथ ही सम्मेलनकी कार्यवाही ठीक ४ बजे आरंभ हुअी।

अुद्घाटन

सम्मेलनका अुद्घाटन करते हुअे बाबा राघवदासने राष्ट्रपिता पूज्य बापूजीके आश्रमसे पुनीत नगरीमें आयोजित अिस सम्मेलनमें सबका हार्दिक अभिनन्दन किया। पूज्य बापूजीकी राष्ट्रभाषाके प्रति अटूट आस्था तथा अुसके प्रचार अेवं प्रचलनके प्रति अुनके सतत प्रयत्नकी चर्चा करते हु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुन्होंने अुस चिर-स्मरणीय महात्माके साथ साथ राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यमें हाथ बँटानेवाले अुन सभी भाअी-बहनोंके प्रति अपना आभार प्रदर्शित किया, जिनकी अनवरत साधनासे हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुअी — हमारी अपनी भाषा, अपने देशकी भाषा, राष्ट्रभाषा घोषित हुअी, लेकिन, "आज जितनी प्रसन्नता हमें होनी चाहिये अुतनी नहीं है। अुसका कारण है भारतीय विधान परिषद्का वह निर्णय, जिससे १५ वर्षोंतक विजेताकी भाषा हमारे भारतीय शासनमें अपना अधिकार जमाये रहेगी।" अगस्त सन् ४२ के 'भारत छोड़ो' प्रस्तावको अुपस्थित करनेवाली घटनाका अुल्लेख करते हुअे अुन्होंने पूज्य बापूजीके अुन मार्मिक शब्दोंको दुहराया, जो अुन्होंने अंग्रजीमें बोलनेका आग्रह करनेवालोंके प्रति कहे थे कि "मैं दया करके अंग्रेजीमें बोल रहा हूँ।" आपने कहा कि राष्ट्र-पिताकी आत्माके प्रति, देशके प्रति, देशकी जनताके प्रति यह अेक कलंककी बात है कि १५ वर्षतक अंग्रेजी हमारे अूपर लदी रहे, हमें शीघ्रसे शीघ्र अिस कलंकको दूर करनेके लिये कटि-बद्ध हो जाना चाहिये।

अुसके पश्चात् अुन्होंने सम्मेलनके सामने ये सुझाव अुपस्थित किये- "(१) अहिन्दी भाषा-भाषियोंको राष्ट्रभाषा हिन्दीमें मौलिक ग्रंथ लिखनेके लिए प्रोत्साहित किया जाय। मंगलाप्रसाद पारितोषिक की तरह ही अिसके लिअे अेक पुरस्कार रखा जाना चाहिअे। (२) हिन्दी टाअिपिस्टों अेवं शीघ्रलिपि लेखकोंकी प्रतियोगिता हो और अनमेंसे प्रथम तीनको पुरस्कृत किया जाय। (३) दिल्लीमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका अेक अच्छा पुस्तकालय स्थापित किया जाय। (४) हिन्दीमें अब तक जिन पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण हुआ है अुनका जनसाधारणमें प्रचार हो। विदेशोंमें पत्र-व्यवहार द्वारा जिस प्रकार पढ़ानेकी व्यवस्था है वैसा ही प्रबन्ध यहाँ भी किया जाय। (५) अहिन्दी भाषा भाषी प्रांतोंसे जो दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र प्रकाशित होते हैं अुनमें अेक या दो कालम हिन्दीके लिअे रखे जायँ जिससे जनतामें राष्ट्रभाषाके प्रति प्रेम जाग्रत हो। (६) हिन्दी प्राकृत-पाली की पुत्री है और पाली पूर्वी अेशियाअी राष्ट्रोंमें सीखी जानेवाली भाषा है; अतः विश्वविद्यालयोंमें पालीके अध्ययनकी विशेष व्यवस्था हो।"

अंतमें, "राष्ट्रभाषाको अुसके योग्य स्थान मिले और सदियोंके बाद अमर शहीदोंकी पुण्य तपस्यासे प्राप्त स्वतंत्रताकी रक्षा करनेकी क्षमता हममें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवे" — यह शुभ कामना करते हुअे बाबा राघवदासजीने अपना भाषण समाप्त किया।

स्वागत-भाषण

सम्मेलनमें आये हुअे सभी अतिथियोंका हार्दिक अभिनंदन करते हुअे स्वागताध्यक्षा श्रीमती शारदा बहन मेहताने वतमान कालकी विषम परिस्थितियों के कारण स्वागत-सत्कारमें जो त्रुटियाँ रहीं हों, अुनकी ओर ध्यान न देने तथा सहृदयतापूर्वक आतिथ्य स्वीकार करनेका आग्रह किया। भारतीय संस्कृतकी अेकतापर जोर देते हुअे आपने कहा —

"हमारा देश बहुत विशाल है। अुसमें अनेक प्रांत हैं और अनेक भाषाअें हैं। यह स्थिति स्वाभाविक भी है। हमारी गुजरातीमें अेक कहावत है— "बार गाअुअे बोली बदलाअ" फिर भी काश्मीरसे कन्याकुमारी तक और द्वारकासे आसामतक अेक अविभक्त संस्कृत हजारों बरसोंसे चली आ रही है। अिस संस्कृतके विशेष विकासके लिअे, अन्तरप्रान्तीय विचार-विनिमयके लिअे और हमारे अविभक्त राष्ट्रकी अेकता और व्यवहारको कायम रखनेके लिअे अेक सर्वमान्य राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता स्वाभाविक है।"

भाषाका झगड़ा—राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापनाके अितिहास पर प्रकाश डालते हुअे आपने हिन्दी-हिन्दुस्तानीके झगड़ेके बारेमें कहा— "मुस्लिम जनताकी भावनाओंको कहीं ठेस न पहुँचे और अुनसे मन-मुटाव न हो जाय अिस डरसे कांग्रेसने समझौतेके कअी मार्ग ग्रहण किये थे। अुनमेंसे अेक यह 'हिन्दुस्तानी' वाला मार्ग भी था। अतः हिन्दी-हिन्दुस्तानीका झगड़ा पैदा हुआ। हिन्दकी भाषा हिन्दी हो अिसमें किसी तरहकी अस्वाभाविकता नहीं थी। हिन्दी प्रचारवाले तो यह मानते थे कि आम जनता जिसे समझती है और जो अन्य भाषाओंकी शब्द-सामग्री लेकर विकसित हुआ है—वही सरल हिन्दी राष्ट्रभाषा है। ...... और भारतीय संस्कृतिके अुत्कर्षके लिये भारतभूमिमें अुत्पन्न, विकसित हिन्दी भाषाका ही प्रचार होना चाहिये।"

हिन्दीकी विजय—आगे आपने बताया कि "अब तो भाषाका झगड़ा सौभाग्यसे टल गया है। विधान परिषद्ने यह सिद्धान्त मंजूर कर लिया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी हो। अिसलिये अब तो सबका कर्तव्य अिस निर्णयको स्वीकार करना ही है। हिन्दी प्रेमी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति तो हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिका व्यापक प्रचार करती ही रही है। अिसका प्रत्यक्ष सबूत तो देश भरमें प्रचलित राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियोंकी बढ़ती हुअी तादाद है। अब अिस महान कार्यको संकुचित मताग्रह द्वारा दबाकर झगड़ेको चालू रखनेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये। जो अस्वाभाविक विरोध अुठा था वह तो आप ही आप खतम हो जायगा, अैसी हम आशा करते हैं।"

हमारा अुत्तरदायित्व—राष्ट्रभाषा प्रचारकोंके बढ़े हुअे अुत्तरदायित्वकी ओर संकेत करते हुअे स्वागताध्यक्षाने कहा कि—"राष्ट्रभाषाका काम पूरा हो गया है अैसा नहीं मानना चाहिये। बल्कि कुछ अंशोंमें हमारा कार्य और अुत्तरदायित्व बढ़ गया है। पहली महत्वपूर्ण बात यह है कि विधान-परिषद्ने हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिके पक्षमें अपना निर्णय तो दिया; किन्तु अंग्रेजीको राष्ट्रके अुपयोगके लिये पन्द्रह वर्षकी अवधि दे दी। अिसमें हमें परिवर्तन करवाना है। पन्द्रह वर्षकी अवधि बड़ी लम्बी है, अुसे कम करवाना और अुसके लिअे राष्ट्रभाषाका खूब ज़ोरोंसे प्रचार करके अनुकूल वातावरण पैदा करनेका काम बाकी है। अुसकी पूर्तिके लिअे यथासंभव प्रत्येक प्रवृत्तिमें हिन्दीको शीघ्र ही स्थान मिलना चाहिये, और अुसके लिअे जोरदार आंदोलन शुरू करना चाहिये। अिसमें प्रत्येक व्यक्ति सक्रिय सहयोग दे सकता है। अन्तरप्रांतीय व्यवहारमें अंग्रेजीका स्थान हिन्दीको प्राप्त हो अैसा क्रियात्मक प्रयत्न व्यक्तिगत और सामूहिक रूपसे होना चाहिये। अिस बारेमें रचनात्मक योजना हमारी यह परिषद् तैयार कर सकती है। जब तक विकल्प रहेगा तब तक ढीलापन भी बना रहेगा और स्खलन न होगा।

सांस्कृतिक अेकता—"व्यक्तिगत प्रयत्नकी सफलताके लिये हिन्दी शिक्षाके वर्गोंकी तादाद काफी बढ़नी चाहिये। अब तो सरकारी कर्मचारी क्लर्क, अध्यापक आदि सबको हिन्दी सीखना पड़ेगी। हमारा कर्तव्य है कि हम अुनके सहायक हों। अिस प्रयत्नका परिणाम अवश्य ही सुन्दर होगा। हमारी सांस्कृतिक अेकता अिससे साधी जा सकेगी और सांस्कृतिक अेकता ही महान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति है। अुच्च संस्कृति सारी दुनियाको सुगठित कर सकती है। हमारे देशने तो जगत्‌की अनेक संस्कृतियोंको आत्मसात् करके अपनी संस्कृतिको व्यापक बनाया है। अिस सांस्कृतिक अैक्यको हमें कायम रखना है। भाषावार प्रांत रचना, भाषावार विद्यापीठोंकी घोषणा आदिके आंदोलनोंसे कुछ लोग भयभीत हो रहे हैं। पर भयका कोअी कारण नहीं। भाषा भावोंको व्यक्त करनेका साधन मात्र है। महत्त्वपूर्ण वस्तु तो विचार-तत्व है। अिस तत्वकी अभिव्यक्ति किसी भी भाषामें हो सकती है। कलाका आविर्भाव भी भाषा द्‌वारा हो सकता है और अुसमें भी आविर्भाव महत्वको चीज है। हम किसी भी भाषाका अुपयोग क्यों न करें महत्व अिस बातका है कि हमारी संस्कृतिसे अुत्पन्न विचार (imagination) कलाको अुस भाषामें सुन्दरता और सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया जाय और अुसकी अमिट छाप जनतापर पड़े। यह असर और छाप जितनी व्यापक होगी अुतनी ही संस्कृतिकी अभिवृद्धि होगी। अिसीलिये अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओंके साथ ही साथ अन्य प्रान्तोंकी भाषाका ज्ञान आवश्यक है।

हम क्या करें?—"अतः हमारे स्कूलोंके पाठ्यक्रमोंमें कमसे कम अेक अन्य प्रांतीय भाषाका ज्ञान अनिवार्य होना चाहिये। अिससे दो लाभ होंगे। अेक तो दूसरे प्रांतकी संस्कृतिका ज्ञान प्राप्त होगा। प्रत्येक प्रांतमें प्रादेशिक अध्यापक रखे जा सकेंगे और अुससे अन्तर्प्रांतीय अेकता सिद्ध की जा सकेगी। अपनी भाषाकी खूबियों और खराबियोंका तुलनात्मक परिचय प्राप्त किया जा सकेगा। अिसके अलावा प्रत्येक प्रांतमें अैसे कुछ व्यक्ति भी हों जो अन्य प्रांतोंकी भाषाके पूर्ण निष्णात हों। वे अन्य प्रान्तोंके साहित्यकी विशेषताअें अपने प्रांतकी भाषामें ला सकेंगे। अिस तरीकेसे साहित्यिक आदान-प्रदान सुचारु रूपसे हो सकेगा और अस्वाभाविक भेदभाव खतम हो जायगा।

कुछ सुझाव—"अिस चर्चासे यह स्पष्ट होता है कि हमारी शिक्षाकी योजना माकूल बनानेके लिअे तीन प्रश्नोंको हल करना जरूरी है:—

(१) "अंग्रेजी भाषाने जो आक्रमण किया है वह हमारे स्वाभिमानके लिअे विघातक चीज है। अुसे जल्दीसे जल्दी बदल देना चाहिये और राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपिका प्रचार समस्त देशमें होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) "प्रांतीय भाषाओंको शिक्षामें गौरवमय पद प्राप्त होना चाहिये। अुन्हें शिक्षाका माध्यम ही नहीं बनाना चाहिये, किन्तु अुनका ज्ञान अिस कोटि तक देना चाहिये कि हिन्दवासियोंका सर्वदेशीय ज्ञान आजके जमानेके लिअे सब तरहसे अनुकूल हो।

(३) "प्रांतीय भाषाओंके बीच जो आपसी संघर्षकी भावना पैदा की गअी है अुसे मिटानेके लिअे शिक्षाक्रममें अनेक प्रांतीय भाषाओंका ज्ञान आवश्यक माना जाय। हमारी संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान, तत्वज्ञान आदिके द्वारा युवकोंकी अुच्च भावनाओंको पुष्ट करना चाहिये। विदेशी कला, साहित्य आदिके अन्ध अनुकरणसे हमारा गौरव क्षीण हो गया है और हममें लघुता आ गअी है। अिस लघुताको हम छोड़ दें। अूपर अुठें। जिन-जिन भाषाओंका ज्ञान दिया जाय, अुस ज्ञानको सहर्ष संपूर्ण रूपसे हम अपनालें। केवल पाठ्य-क्रममें या परीक्षामें स्थान देकर संतोष मान लेना ठीक नहीं। पर अुन्नत विचारों द्वारा संस्कृतिकी अभिवृद्धि हो, अेकता और प्रेमकी भावनाका विकास हो, अिस दृष्टिसे भाषाओंका स्थान निभाया जाय।

"हमारे सामने अब नया वातावरण पैदा हुआ है। अुसे लक्ष्यमें रखकर देशकी संस्कृतिकी अभिवृद्धिमें भाषा द्वारा जितना योग दिया जा सकता है, अुतना दिया जाय। राष्ट्रभाषा तथा प्रांतीय भाषाओंका सुयोग करके नयी परंपरा पैदा की जाय। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिस क्षेत्रमें सुयोजित पद्धति अपनाकर मार्गदर्शक बनेगी, अैसी आशा है।"

गुरुकुल पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

प्रान्तीय मंत्रीका निवेदन

स्वागत भाषणके पश्चात् गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री जेठालाल जोशीने भारतके दूर-दूर प्रदेशोंसे आये हुअे अतिथियोंका हृदयसे स्वागत किया और गुजरात प्रांतीय समितिके गत वर्षका वार्षिक विवरण प्रस्तुत करते हुअे कहा—"हमारी हार्दिक अिच्छा थी कि हम प्रति वर्ष अेक बार अवश्य मिलें और अपनी समस्याओंपर विचार-विनिमय करके अपना कार्य आगे बढ़ाते रहें। गत वर्ष हम अिन्हीं दिनों वर्धामें मिले थे। अुस वक्त हम विधान-परिषदके निर्णयके बारेमें चिन्तित थे कि हमारे विधान-निर्माता राष्ट्रभाषा औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रलिपिके बारेमें क्या निर्णय देंगे हमने जनताकी सही अिच्छा और श्रद्धाको समझकर विधान-परिषदसे निवेदन किया था कि देशकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी हो हो सकती है। कहते हुअे प्रसन्नता होती है कि विधान-निर्माताओंने देशको राजभाषा हिन्दी और राजलिपि देवनागरीको सहर्ष स्वीकार किया है और राष्ट्रको आदेश दिया है कि वह राष्ट्रभाषाके प्रचार व विकासमें श्रद्धापूर्वक प्रयत्न करे। यह निर्णय हमारे अितिहासकी परमोज्ज्वल घटना है। हमारा अेक मंजिल अिसी निर्णयके साथ पूरी होती है।

हिन्दीकी क्षमता—"हिन्दी ही अेक अैसी भाषा है, जो भारतकी सभी भाषाओंकी विशिष्टताओंको अपनाकर आगे बढ़ी है और अब तो विशेष रूपसे आगे बढ़ेगी। हिन्दीने प्रांतीय भाषाओंकी खूबियोंको अपनानेमें कभी संकोच नहीं किया; बल्कि अुन्हें अपनानेमें अपना गौरव समझा है। अब हमारी दूसरी मंजिल शुरू होती है। हमें देशकी आत्माको व्यक्त करनेके लिये अेक सर्वमान्य माध्यमकी आवश्यकता थी। जिसका निर्णय अब हो चुका है। अब हम अिसी सर्वमान्य माध्यमके द्वारा भारतीय साहित्यको कोने कोनेमें पहुँचायें। आज भारतकी समृद्ध भाषाओंमें सुन्दर साहित्य भरा पड़ा है और हर वर्ष अुसमें वृद्धि होती जा रही है। अुसके श्रेष्ठ अंशको हिन्दीके माध्यम द्वारा समस्त भारतमें पहुँचाना हमारा कर्तव्य है।

विश्वविद्यालयोंमें हिन्दी—"अब हमारा प्रबल प्रयत्न होना चाहिये कि मातृभाषा पढ़ा-लिखा हर आदमी राष्ट्रभाषा हिन्दी अच्छी तरह पढ़-लिख सके और देशका अन्तरप्रान्तीय, राजकीय अेवं व्यापारिक कारोबार हिन्दीमें ही करनेकी क्षमता प्राप्त कर ले। हमारे विश्वविद्यालयोंके पाठ्यक्रममें हिन्दीका महत्वपूर्ण, अनिवार्य स्थान तथा अुसकी पढ़ाअीका सुव्यवस्थित प्रबन्ध हो। यह कार्य जितना जल्दी हो सके शुरू कर देना चाहिये; जिससे अंग्रेजीका अस्वाभाविक आधिपत्य दूर हो। आज गुजरातमें ५२५ राष्ट्रभाषा परीक्षा केन्द्र हैं और सैकड़ों प्रचारकोंके सत्प्रयत्नसे प्रति वर्ष ७०--८० हजार भाअी-बहन परीक्षाओंमें सम्मिलित होते हैं। गुजरातमें भाषासम्बन्धी कोअी प्रान्तीय संकीर्ण मनोवृत्ति नहीं है। गुजराती हिन्दीके प्रति आत्मीयताका अनुभव करती है।

अभूतपूर्व अवसर—श्री जोशीजीने अन्तमें कहा कि 'यह अेक अतीव महत्वपूर्ण बात है कि आप राष्ट्रभाषाके पुजारी प्रजातंत्रात्मक स्वाधीन भारतके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ अेक ही मासमें गुजरातके प्रधान नगर अहमदाबादमें मिल रहे हैं। आप सभी राष्ट्रभाषाके महत्वको ठीक-ठीक समझते हुअे हिन्दीकी शक्ति पहचाननेवाले श्रद्धालु कार्यकर्ता हैं। आप अपनी जिम्मेदारियोंको ठीक-ठीक समझते हैं। आप अपने निश्चयात्मक मार्गदर्शन द्वारा राष्ट्रको अेक नअी प्रेरणा देंगे जिससे जनता राष्ट्रभाषाके महत्वको समझकर राष्ट्रभाषा पढ़ने लिखनेमें गौरव अनुभव करे और हमारे विद्वान अपनी रचनाओं द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दीको समृद्ध करनेमें सम्पूर्ण सहयोग दें।"

अिसके बाद श्री जोशीजीने सम्मेलनमें अुपस्थित न हो सकनेवाले महानुभावों अेवं प्रतिष्ठित विद्वानोंके संदेश पढ़कर सुनाअे।

अध्यक्षका भाषण

तदुपरान्त आचार्य श्री मुनि जिन विजयजीने अध्यक्ष पदसे भाषण करते हुअे कहा — "पश्चिम भारतके जिस प्रमुख राजनगरमें आज हम अिस अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनके द्वितीय अधिवेशनके रूपमें अेकत्रित हो रहे हैं वह स्थान हमारी राष्ट्रभारतीके जीवन विकासके अितिहासमें अद्वितीय तीर्थभूत है। यहींके अिस जगद्विख्यात आश्रममें बैठकर अुस विराट राष्ट्रपुरुषने हमारी हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेका संकल्प किया था और अुसके लिअे अुन्होंने अपना अनुपम अुपाय-दर्शन और अखण्ड आन्दोलन अुपस्थित किया था। हिन्दीकी राष्ट्रभाषाके रूपमें जो अभूतपूर्व महती प्रतिष्ठा, आज हमारे अिस संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक भारत संघ रूपी महान् राष्ट्रने अुद्घोषित की है, अुसका सर्व श्रेय अुसी महामना महामानवके अुक्त शुभ संकल्पको है, जो अुनको अिसी स्थानके अुक्त तपोवनमें स्फुरित हुआ था, और फिर वह भारतके चतुर्दिक कर्मक्षेत्रमें अवतीर्ण हुआ था। अैसे परम पुनीत अिस नगरमें भारतके विभिन्न भाषाभाषी विविध प्रदेशोंके राष्ट्रभाषा प्रचारक और राष्ट्रभाषा प्रेमी हम सब बन्धुजन, जो आज यहाँ पर अुपस्थित हो रहे हैं, वह मुझे अेक किसी विशिष्ट संकेतका अवबोधक भासित हो रहा है।

सम्मेलनका महत्व — "गत वर्ष वर्धामें, जो अिस सम्मेलनका सर्वप्रथम अधिवेशन हुआ वह स्थानानुरूप ही था, क्योंकि पिछले २० वर्षोंसे वर्धा ही तो हमारी भावनाका और प्रेरणाका प्रमुख केन्द्रस्थान रहा है। वहीं पर पूज्य बापूके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतृत्वमें, अुनकी ही कुटीरमें, अिस कार्यको प्रारम्भ करनेवाली 'समिति' की प्रथम वैधानिक बैठक हुअी और फिर धीरे-धीरे अिसका कार्यालय वहीं पर स्थापित हुआ। आज चौदह वर्षोंसे यह कार्यालय अपनी दिन-प्रतिदिन प्रगति करता रहा है। वर्धाके बाद अिस सम्मेलनका यह दूसरा अधिवेशन जो आज गुजरात प्रान्तके अिस राजनगरमें हो रहा है, अुसका कारण भी आनुषंगिक ही है। प्रचारकी दृष्टिसे वर्धाके बाद गुजरातके केन्द्रको ही द्वितीय स्थान प्राप्त हो रहा है, क्योंकि राष्ट्रभाषाके परीक्षार्थी छात्रगणकी संख्या वर्तमानमें सबसे अधिक परिमाणमें अिसी प्रान्तमें अुपस्थित हो रही है।

महात्माजीका नया दृष्टिकोण—"महात्माजीने अपने देश-नेतृत्वके आरम्भ कालमें और फिर पीछे भी अनेक वर्षों तक, जिस देवनागरी लिपिमें लिखित हिन्दी भाषाको राष्ट्रभाषाके पदपर अभिषिक्त करनेका अुक्त प्रकारसे जो शुभ संकल्प किया था, अुसमें भारतकी भौगोलिक अखण्डता और राष्ट्रीय अेकताके पवित्रतम दृष्टिकोणको लेकर, अिसकी लिपि और शैलीके स्वरूपके विषयमें देशके समक्ष कुछ नूतन विचार अुपस्थित किये कि राष्ट्रभाषाका नूतन नाम 'हिन्दुस्तानी' रक्खा जाय और अुसकी शैली भी हिन्दू मुसलमानको समान रूपसे आदरणीय और स्वीकरणीय मालूम दे वैसी हिन्दी-अुर्दू मिश्रित अेक 'नयी बोली' के रूपमें प्रचलित की जाय। यह 'नयी बोली' समान रूपसे देवनागरी और फारसी दोनों लिपिमें लिखी जाय, और प्रत्येक भारतवासीको ये दोनों लिपियाँ अविकल्प रूपसे पढ़ाअी-सिखाअी जायँ। महात्माजीका वह दृष्टिकोण किसी अंशमें बहुत अुदात्त और आदरणीय था, परन्तु भारतके बहुजनमतको वह अरुचिकर अतअेव अव्यवहारणीय मालूम दिया।

टण्डनजीका नेतृत्व—"सम्मेलनके सन्निष्ठ सूत्रधार और हिदी-हिंदके परम हितैषी राजर्षि टंडनजीने महात्माजीके विचारका सविनय और सानुरोध पर बहुत स्पष्ट विरोध किया। परिणाममें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जिसकी वैधानिक स्थापना स्वयं महात्माजीने वर्धाके अपने ही कुटीरमें बैठ कर की थी अुसके स्थान पर अुन्होंने 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' नामक दूसरी नयी संस्थाकी स्थापना की। और अन्ततोगत्वा अुन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे भी अपना अुत्तरदायीसूचक सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। अिस प्रकार राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने स्वयं अपना कोअी अपराध न समझते हुअे भी अपने महान् जनकके आश्रयरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वात्सल्यभावसे वंचित रहनेका कठोर दण्ड प्राप्त किया। अिसके पक्षमें सुखदायक आश्वासन अितना ही रहा कि अिसने अपने पूजनीय पिताके प्रति किसी प्रकारका अविनयभाव कभी नहीं प्रकट किया। अिस समितिके समर्थ संचालक भदन्त आनन्द कौसल्यायनने बहुत कुछ धीरजके साथ अपना ध्येयकार्य चालू रक्खा। यद्यपि यह समिति अपने पूज्य पिताकी अेक अुपेक्षणीया सन्तान-सी हो गअी थी, परन्तु भारतीय जनताका बहु भाग, अिसका यथेष्ट पक्षपाती था। हिन्दुस्तानी प्रचार सभा अपने महान् पिताकी प्रियंकरा पुत्री होने पर भी, वह अुतनी जनप्रिय नहीं बन सकी, जितनी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बनी रही।

संघर्षकाल–"अिसी बीचमें देशके भाग्यने महान् पलटा खाया। 'हिन्दी' ने भी काफी अुथल-पुथलका सामना किया। आखिरमें संविधान सभामें जब राष्ट्रभाके निर्णयका प्रश्न अुपस्थित हुआ, तब कुछ दिन तक तो, हिन्दी-हिन्दुस्तानीके पक्ष-विपक्षके वाद-विवादका अेक तुमुल-युद्ध मचा रहा।

महत्वपूर्ण निर्णय–"परन्तु देशके करोड़ों निर्दोष और निष्पाप मानवोंके सद्भाग्यने अिस खतरेको आखिर खतम कर दिया। संविधान सभाके राष्ट्रहितैषी कुशल कर्णधारोंने बड़ी कुशलताके साथ, राष्ट्रभाषाकी परम आशास्पद जीवन-नौकाको अिस खतरेसे सर्वथा बचा लिया और देवनागरी लिपिमें लिखित हिन्दीनामधारिणी हमारी भारती भगवतीको भारतीय संघकी राजभाषा होनेका निश्चयात्मक निर्णय किया गया। हिन्दी भाषाके अितिहासमें यह दिन सबसे अधिक महत्वका और मंगलकारक है।" हम हिन्दी प्रेमियोंको–राष्ट्रभाषा हितैषियोंको–चाहिये कि अिस दिनको हम सदा और सर्वत्र राष्ट्रभारती महापर्वके रूपमें, बड़े आयोजनके साथ मानें-मनावें। जिस तरह १५ अगस्त और २६ जनवरी हमारे राष्ट्र-स्वातंत्र्यके पर्व दिन बने हैं, अुसी तरह १४ सितम्बर भी राष्ट्रभारतीका पर्व-अुत्सव-दिन बनना चाहिये। वास्तवमें यदि सोचा जाय तो हमारे राष्ट्रकी वास्तविक अेकता और अुन्नतिका सूचक तो सबसे बड़ा यही दिन है।"

हमारा प्रांतीय साहित्य– अंतमें, हिन्दी-साहित्यकी अभिवृद्धिके विषय में बोलते हुअे श्री मुनि जिनविजयजीने कहा कि "बङ्गला साहित्यकी समृद्धिसे तो हमारे हिन्दी भाषी साहित्यकार बहुत कुछ परिचित हैं ही, क्योंकि हमारा हिन्दी का औपन्यासिक ग्रंथालय प्रायः बङ्गला अुपन्यासोंके अनुवादों ही से भरपूर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु अुपन्यासोंके अतिरिक्त अन्यान्य प्रकारके अनेकानेक विषयोंके साथ सम्बन्ध रखनेवाले छोटे-बड़े ग्रंथ-निबन्धरूप सैकड़ों साहित्यिक रत्नोंसे बङ्गला जैसी समृद्ध है अुसका १० वाँ हिस्सा जितना भी हिन्दी पुस्तक-भंडार समृद्ध नहीं है। अिसी तरह मराठी भाषाके साहित्य-भंडारकी तरफ भी आप कुछ नजर डाल कर देखेंगे, तो आपको मालूम देगा कि चिपलूणकर, तिलक, केलकर, केतकर, आप्टे नाम, जोशी आदि धुरन्धर विद्वानोंने, अपनी मातृभाषाके पुस्तक भंडारको विविध प्रकारके विषयोंसे परिपूर्ण करनेके लिये कितना परिश्रम अुठाया है और कितना मूल्यवान् साहित्य सर्जन किया है।

अथक परिश्रम आवश्यक—"मैं जब अिस दृष्टिसे अपने हिन्दी साहित्यिकोंके वाङ्मय-सर्जनको देखता हूँ, तो मुझे अुसमें वैसे मूल्यवान रत्न बहुत कम दृष्टिगोचर होते हैं। श्री राहुलजी, जयचन्द्रजी, हजारीप्रसादजी, वासुदेव शरणजी, संपूर्णानन्दजी आदि हिन्दीके कतिपय प्रौढ़ और पीढ़ भक्तोंकी सारस्वत साधनाके फलस्वरूप, हमारे अिस स्वल्पनिधिवाले द्रव्य-पिटक (केश बॉक्स) में कुछ मूल्यवान् सौवर्ण द्रम्मों या कार्षापणोंका थोड़ा-सा विशिष्ट संग्रह अवश्य जमा हुआ है; लेकिन हिन्दीकी हुंडियाँ तो अब सारे भारतवर्षमें चलनी शुरू होंगी। वैसी स्थितिमें हमारा यह साहित्यिक खजाना सब प्रकारके रत्नोंके बड़े बड़े चरुओंसे और मूल्यवान धातुओंके मुद्रापुञ्जोंसे भरपूर बने और अिसकी साख सर्वत्र अुत्तरोत्तर बढ़ती रहे – अिसके लिअे हमें अथक अुद्योग, प्रचंड प्रयत्न, और प्रकृष्ट पुरुषार्थ करना आवश्यक है" ।*

पं. जयचन्द्र विद्यालंकारका भाषण

अध्यक्षके व्याख्यानके अुपरान्त अितिहासाचार्य पं. जयचन्द्र विद्यालंकार ने सम्मेलनमें भाषण देते हुअे कहा कि "आज भारत स्वतंत्र हो गया है, परिस्थिति बदल गअी है फिर भी हमारे विद्यालयोंकी पढ़ाअीमें कोअी परिवर्तन नहीं हुआ है। वही अप्रामाणिक अितिहास पढ़ाअे जाते हैं। भाषाका विवाद भी देश में अभी किसी न किसी रूपमें कायम है ही। बंगाल, अुड़ीसा, आसाम, आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदिमें आपसमें भाषा-सम्बन्धी मतभेद हैं। वास्तवमें हमारे

*. भाषणके कुछ प्रमुख अंश 'राष्ट्रभाषा'के अिसी अंकमें अन्यत्र भी प्रकाशित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश भाषाका सामंजस्य अितना अधिक है जितना कि दुनियाके अन्य किसी देशमें नहीं। अंग्रेजोंने गलतफहमी फैलानेका प्रचार किया और वह अब भी कायम है। अुन्होंने अिस देशमें ५७९ भाषाअें बताओीं थीं और हमने आँख मूंदकर अुनकी बातें मान लीं। यह किसीने खोज नहीं की कि अेक बोली १००-१५० वर्ग मीलमें बोली जाती है और असी तीन-चार बोलियोंको मिलाकर अेक भाषा बनती है। अिस ५७९ की संख्यामें भारतकी अैसी ही कअी बोलियाँ सम्मिलित हैं। १२५ तो हिमालयकी ही भाषाअें हैं जिनके बोलनेवाले सिर्फ १०--१२ लाख आदमी हैं। भारतकी दो प्रमुख भाषाओं आर्य और द्रविड़में ७६ प्रतिशत आर्य, २०·७ द्राविड़, १·७ किलात, १·३ मुण्ड संथाल हैं। अिन भाषाओंमें भी हिन्दीके ही बोलनेवाले सबसे अधिक हैं। अिस-तरह हिन्दीका ही प्राधान्य स्पष्ट नजर आता है।

विविधतामें अेकता—"भारतवर्षमें बाहरकी अेकता जितनी है अुतनी ही भीतरकी अेकता भी है, अितनी जितनी कि दुनियांके अन्य किसी देशमें नहीं। बङ्गाली, पंजाबी, गुजराती और मराठी—ये अेक दूसरेसे अितनी मिलती-जुलती हैं कि बोलनेवाले अेक दूसरेको आसानीसे समझ लेते हैं। भाषाके गठनके अितिहासकी दृष्टिसे हिन्दी सबसे अूपर है।"

हिंदीकी प्रमुख अुपभाषाअें—ब्रज भाषा, बुन्देलखंडी, कन्नौजी, अवधी, पूर्वी आदिका अुल्लेख करते हुअे पं. जयचन्द्र विद्यालंकारने हिन्दीके विकसित रूप--खड़ी बोली--की व्यापकतापर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। शब्दावली के सम्बन्धमें अपने विचार प्रगट करते हुअे आपने कहा कि "आर्य भाषाओंकी शब्दावली तो अेक दूसरेसे मिलती-जुलती है ही, दक्षिणकी तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालमका भी हिन्दीसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। गुजराती पंजाबी, बङ्गला और पर्वतिया लिपिमें थोड़ा भेद है, वर्णमाला अेक है। दक्षिणकी भाषाओंमें भी वर्णमाला वही है।

हिंदी वर्णमालाकी व्यापकता—"अिंडोनेशिया, मध्य अेशिया, चीन, सिंकियांग, अफगानिस्तानमें यही वर्णमाला परिवर्तित रूपमें प्रचलित है। तिब्बत, मंगोलिया और कोरियामें भी यह पहुँची लेकिन कुछ कारणोंसे वहाँ अिसका अधिक प्रचार न हो सका। यह वर्णमाला हमारी सभ्यताका प्रतीक है। वैज्ञानिक दृष्टिसे यह दुनियामें सर्वश्रेष्ठ है। अेक ध्वनिका अेक वर्ण—यह अिसकी विशेषता है, सीखने-बोलनेमें भी सुगम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिभाषिक शब्द—"भारतकी तमाम भाषाअें वे चाहे आर्य हों या द्राविड़ अपने पारिभाषिक शब्द संस्कृतसे लेती हैं बर्मी, पालीसे लेती है। मध्य अेशियाकी तुर्की भाषाका पुनरुद्धार करते समय भी संस्कृतका सहारा लिया गया था। अिस तरह वर्णमाला और पारिभाषिक शब्दोंकी दृष्टिसे हिन्दी सर्वश्रेष्ठ ठहरती है। शुरूमें तो सारे भारतमें अेक ही लिपि थी। यहाँ तक कि बृहत्तर भारत, सुमात्रा, जावा, बोर्नियो आदिमें भी वही प्रचलित थी। लेखन-सामग्रीकी सुविधा-असुविधासे लिपिमें विकास और परिवर्तन हुआ। समुद्र तटके निवासी ताड़-पत्रोंपर गोल अक्षर और पहाड़ोंके निवासी भोजपत्रपर लम्बे अक्षरोंमें लिखा करते थे।"

स्वार्थोंसे अूपर अुठें—राष्ट्रभाषा हिन्दीके संघर्षपर अैतिहासिक दृष्टिसे प्रकाश डालते हुअे पंडितजीने कहा कि "भारतकी भाषाओंमें पूर्ण सामंजस्य है। आज हिन्दी राज्यभाषा घोषित हो चुकी है और अपने स्वाभाविक विकाससे ही वह अिस पदपर प्रतिष्ठित हुअी है। फिर भी सच्चा स्वराज्य अभी आनेको है। अंग्रेजीवालोंके स्वार्थ, अुर्दूवालोंके स्वार्थ तथा अन्य व्यक्तिगत स्वार्थ अभी भी हिन्दीके मार्गमें रोड़े अटका रहे है। कुछ लोग अुर्दूको मुसलमानोंकी भाषा कहते हैं, लेकिन वास्तवमें वह सब मुसलमानोंकी भाषा नहीं है। अुत्तर भारतके कुछ शहराती मुसलमानोंकी ही भाषा है। कुछ लोग अुर्दू-मिश्रित हिन्दीका प्रचार चाहते हैं, जो अस्वाभाविक है, क्योंकि अुर्दूकी शब्दावली अरबी और फारसीपर आधारित है, जब कि हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओंकी शब्दावली संस्कृतपर। हम आशा करते हैं कि हमारे देशवासी अिन क्षुद्र स्वार्थोंसे अूपर अुठकर अंग्रेजी और अुर्दूका मोह छोड़ राष्ट्रभाषा हिन्दीको अधिकसे अधिक व्यापक और सम्पन्न बनानेका प्रयत्न करेंगे।"

पं. बेचरनाथका सुझाव

सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता पं. बेचरनाथजीने अपने संक्षिप्त व्याख्यानमें बताया कि अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषामें चिन्तन न करनेसे ये भाषाअें बहुत महत्वपूर्ण विचारोंसे वंचित रह जाती हैं और अिस प्रकार मानसिक दासताकी परम्परा कायम रहती है, अतः हमें अंग्रेजीमें सोचना छोड़कर अपनी मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषामें ही अपने विचार प्रकट करना चाहिअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसके बाद सम्मेलन अगले दिनके लिअे स्थगित किया गया। रात्रिमें विषय-विचारिणी-समितिकी बैठक हुअी। दोपहरमें सम्मेलनकी कार्यवाही प्रारंभ होनेके पूर्व सभी आगत राष्ट्रभाषा सेवियोंका परस्पर परिचय हो चुका था। दूसरे दिन प्रातःकाल ८॥ बजे से ११॥ और दोपहर २ से ६ तक प्रेमाभाअी हालमें खुला अधिवेशन हुआ जिसमें अुपस्थित प्रस्तावोंपर बहस हुअी। अिसी दिन अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य पं. चन्द्रबली पांडेयने राष्ट्रभाषा प्रचारकोंके कर्तव्योंपर प्रकाश डालते हुअे अिस क्षेत्रमें हमें अभी बहुत कुछ काम करना बाकी है, अिस ओर सभीका ध्यान आकर्षित किया हिन्दी साहित्यके प्रकांड पंडित श्री वियोगी हरिजीने अपने ओजस्वी भाषणमें सन्त-साहित्यका विस्तृत विवेचन करते हुअे कहा कि आजके हिन्दी साहित्यपर सन्तोंका अमिट प्रभाव है। आपने अिस बातपर विशेष जोर डाला कि हमें अुन अनुभूतियोंकी, जिनसे सम्पूर्ण मानवता लाभान्वित हुअी है, अुपेक्षा नहीं करनी चाहिअे।

सम्मेलनके प्रस्ताव

सम्मेलनके खुले अधिवेशनमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुअे—

(१) शोक प्रस्ताव – अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन अिस वर्ष राष्ट्रभाषाके निम्नलिखित निष्ठावान कार्यकर्ताओंके दुःखद अवसानपर हार्दिक शोक व्यक्त करता है और अुनके संबंधियोंके प्रति अपनी संवेदना प्रगट करता है—

१. श्री. रतनलालजी खांडवाला (सदस्य, गु. रा. भा. समिति)
२. श्री. गिरिजाशंकर जी. भट्ट (केन्द्र-व्यवस्थापक, डाकोर)

[प्रस्ताव अध्यक्ष द्वारा रखा गया गया और सभाने खड़े होकर मौनके साथ स्वीकृत किया]

(२) मुख्य प्रस्ताव—राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनका यह अधिवेशन भारतीय विधान परिषद द्वारा हिन्दीको राज्यभाषा और देवनागरीको राज्य लिपि स्वीकार किये जानेके निर्णयपर अपनी प्रसन्नता प्रगट करता है और जिन व्यक्तियों तथा संस्थाओंके प्रयत्न और सहयोगके परिणामस्वरूप भारतीय विधान परिषदका यह निर्णय हुआ अुन सभीको हार्दिक बधाअी देता है और अुनका अभिनंदन करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनके अिस अधिवेशनको अधिक सन्तोष होता यदि भारतीय विधान परिषदने १५ वर्षकी लम्बी अवधि तक अंग्रेजीको किसी न किसी रूपमें बनाये रखना स्वीकार न किया होता। किन्तु अिसे आशा है कि देश पन्द्रह वर्षसे बहुत पहले—संभव हो तो ५ वर्षमें ही— हिन्दीको अंग्रेजी भाषाके स्थानपर प्रतिष्ठित करनेमें समर्थ होगा।

अिस सम्मेलनको अिस बात पर विशेष संतोष है कि भारतीय संसदने भारतकी सब भाषाओंके लिये विधि और प्रशासनकी समान शब्दावली तैयार करनेके लिये अेक विज्ञ अनुवाद-समिति नियुक्त कर दी है जो, आशा है, दो या तीन वर्षमें ही अिस कार्यको पूरा कर सकेगी।

अिस सम्मेलनकी मान्यता है कि विधान परिषदके लिये देवनागरीको राज्य-लिपि स्वीकार करनेके साथ ही साथ अुसके अन्तर्गत प्रचलित देवनागरी अंकोंको ही स्वीकार करना अुचित और स्वाभाविक होता। अिस सम्मेलनको आशा है कि जब कभी विधान परिषदके भाषा-सम्बन्धी निर्णयके अिस अंकों-सम्बन्धी हिस्सेपर पुनर्विचार होगा तो देश अिस सम्बन्धमें अुचित निर्णय कर सकेगा।

यह सम्मेलन राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरीके प्रचारमें लगी हुअी सभी संस्थाओंसे आजकी अिस अनुकूल परिस्थितिमें हिन्दी और देवनागरी-के ही प्रचारके अुद्देश्यसे बननेवाली भारतीय हिन्दी परिषद् जैसी नअी संस्थाओं-से सहयोगकी आशा करता है और सभीको अपने सहयोगका विश्वास दिलाता है।

अिस सम्मेलनको विश्वास है कि देशमें अब अेक अैसा वायुमंडल तैयार होगा कि राष्ट्रभाषा प्रचार-क्षेत्रके सभी कार्यकर्ता तथा संस्थायें अेक दूसरेके सहयोगसे काम कर सकेंगी।

यह सम्मेलन मानता है कि पिछले १२ वर्षसे राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरीके ही प्रचारमें लगी हुअी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी जिम्मेदारी विधान परिषद द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दीकी स्वीकृतिके बाद विशेष रूपसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ गअी है। अिसलिये यह सम्मेलन अपनी सभी प्रान्तीय समितियों और अुनके अन्तर्गत काम करनेवाले सभी कार्यकर्ताओंसे विशेष आग्रह करता है कि राष्ट्रभाषा शिक्षणके सामान्य कार्यके साथ-साथ वे अब राष्ट्रसाहित्य-निर्माणके ठोस कार्यमें नवीन अुत्साहके साथ लग जायँ। साहित्य-निर्माणके अिस कार्यमें प्रान्तीय भाषाओंके साहित्यिकों तथा साहित्यिक संस्थाओंकी मदद विशेष रूपसे ली जाय।

प्रस्तावक-श्री. भदन्त आनन्द कौसल्यायन
समर्थक-श्री. जेठालाल जोषी
अनुमोदक-(१) श्री बाबा राघवदास
(२) श्री. बाबूलाल परमार

(३) "महात्मा गांधी पुरस्कार"—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन यह सहर्ष घोषणा करता है कि राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गांधीकी पुण्य-स्मृतमें १५०१) का "महात्मा गांधी पुरस्कार" प्रति वर्ष अहिन्दी भाषा-भाषी लेखक द्वारा लिखित हिन्दीकी सर्वश्रेष्ठ मौलिक रचनाके सत्कारमें प्रदान किया जायगा अिस सम्बन्धमें नियमावली बनाने तथा अिसकी व्यवस्था करनेके लिअे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिसे यह सम्मेलन अनुरोध करता है।

प्रस्तावक—श्री वियोगी हरि
समर्थक—श्री जेठालाल जोषी
अनुमोदक—(१) श्री बाबा राघवदास
(२) भदन्त आनन्द कौसल्यायन

(४) विश्वविद्यालयोंसे अनुरोध—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारकोंका यह सम्मेलन भारतवर्षके सभी विश्व-विद्यालयोंसे अनुरोध करता है कि वे अपने पाठ्य क्रममें राष्ट्रभाषा हिन्दीको अनिवार्य रूप देकर अुसके पठन-पाठनका समुचित प्रबन्ध करें; जिससे राष्ट्रीय अेकता सुदृढ़ हो। हमारा यह भी अनुरोध है कि भारतवर्षका तमाम प्रादेशिक भाषाओंके तथा हमारे पड़ोसी अेशियाअी राष्ट्रोंकी भाषाओंके भी पठन-पाठनकी यथासंभव सुव्यवस्था करें, जिससे पारस्परिक निकटता बढ़े और साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदानमें सरलता हो।

प्रस्तावक—श्री सीताराम चतुर्वेदी
समर्थक—श्री प्रेमसिंह 'दिव्यार्थ'
अनुमोदक श्री हरिराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) सिन्धी भाषाकी मान्यता—यह सम्मेलन भारत-विधान द्वारा सिन्धी भाषाको मान्यता न देनेपर दुख प्रगट करता है और भारत संघके (प्रमुख) राष्ट्रपति तथा अुनके साथियोंसे साग्रह अनुरोध करता है कि वह शीघ्रसे शीघ्र सिन्धी भाषाको मान्यता देनेकी कृपा करे। अिसके लिअे अेक प्रतिनिधि-मंडल निम्न व्यक्तियोंका बनाया जाय; जो अिस कामको राष्ट्रपतिके सामने अुपस्थित करके आवश्यक कार्यवाही करे। १. श्री डॉ० चोंअिथराम गिडवानी, २. श्री भाअी प्रताप (दयाल दास), ३ श्री सुचिता कृपलानी या आचार्य कृपलानी, ४. प्रो. असराणी (हिन्दी विश्वविद्यालय, ५ पं दौलतराम शर्मा।

प्रस्तावक—श्री बाबा राघवदास
समर्थक—,, जयचन्द्र विद्यालंकार
अनुमोदक—,, जेठालाल जोषी

(६) अन्तर्प्रांतीय साहित्यिक आदान-प्रदान—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन अिसकी आवश्यकता अनुभव करता है कि अब अैसा समय आ गया है कि राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यके साथ-साथ अन्तर्प्रांतीय साहित्यिक आदान प्रदानकी ओर हम ध्यान दें। अिसके लिये आवश्यक है कि साहित्यिक आदान-प्रदान-सम्बन्धी जो निश्चित योजना तैयार की गयी है अुसको शीघ्राति-शीघ्र कार्यान्वित किया जाय। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धासे अनुरोध किया जाता है कि वह अिस कार्य-भारको अपने अूपर ले।

प्रस्तावक—श्री पं. मु डांगरे
समर्थक—,, सीताराम शास्त्री
अनुमोदक—(१) श्री कांतिलाल धोलकिया
(२) ,, प्रेमसिंह 'दिव्यार्थ'

(७) विधान परिषदमें हिन्दीका प्रयोग—विधान परिषद द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित हो जानेके पश्चात् अंग्रेजीके स्थानपर हिन्दीकी प्रतिष्ठा करनेके लक्ष्यको सामने रखकर भारतीय संसद्के जो सदस्य संसदकी कार्यवाहीमें राष्ट्रभाषा हिंदीका ह। व्यवहार करते हैं, अुनका अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन हार्दिक अभिनन्दन करता है और जो सदस्य हिन्दी भाषाका व्यवहार अभी तक नहीं करते हैं अुनसे आशा करता है कि वे शीघ्र ही हिन्दी सीखकर अिसका व्यवहार करने लगें।

प्रस्तावक—श्री भा० ग० जोगलेकर
समर्थक—,, देवदत्त शर्मा
अनुमोदक—,, विपिन बिहारी चटपट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) अन्तर्प्रांतीय क्षेत्रमें हिन्दी—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनका यह वार्षिक अधिवेशन अुन सब रचनात्मक अेवं राजनीतिक संस्थाओंसे बलपूर्वक अनुरोध करता है कि वे भाषागत कठिनाअीका सारहीन तर्क न करें, अंग्रेजीका मोह छोड़ दें और अपना सारा अन्तर्प्रान्तीय कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही चलायें।

प्रस्तावक—श्री रामेश्वरदयाल दुबे
समर्थक—,, अिच्छाशंकर वैष्णव
अनुमोदक—,, तु० स० राणे

(९) रेडियो-द्वारा हिंदी प्रचार—अखिल भारतीय रेडियोकी ओरसे अहिन्दी भाषा-भाषी केन्द्रोंके लिये हिन्दीकी शिक्षाका जो प्रबन्ध किया गया है अुसपर अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता है और रेडियोके अधिकारियोंका अभिनन्दन करता है। सम्मेलनकी यह भी आशा है कि रेडियो-विभाग अिस कार्यको अधिक विकसित रूप देकर राष्ट्रभाषाके प्रचारमें हमारा हाथ बँटाये।

प्रस्तावक—श्री गोविन्दलाल शाह
समर्थक—,, जयेन्द्रभाअी
अनुमोदक—,, हरिकृष्णदास मेहता

(१०) समिति-प्रकाशनमें संशोधन—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन अनुभव करता है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रकाशित वर्तमान पुस्तकोंमें आवश्यक संशोधन और संवर्धन किया जाय; साथ ही माध्यमिक शालाओंके अुपयुक्त प्रारम्भसे लेकर छः कक्षाओंतकके लिये अुपयुक्त पुस्तकोंका निर्माण किया जाय। यह कार्य निम्नलिखित सात व्यक्तियोंके मार्गदर्शनसे किया जाय। अिन्हें अधिकार रहेगा कि ये आवश्यकतानुसार और भी व्यक्तियोंको अपनेमें सम्मिलित कर सकेंगे। १. श्री जेठालाल जोषी, २. श्री भा० ग० जोगलेकर, ३. श्री प्र० रा० भूपटकर, ४. श्री रामेश्वर दयाल दुबे। ५. श्री पं. मु. डांगरे, ६. श्री रामचंद्र पंड्या, ७. श्री मो. दी. पराड़कर।

प्रस्तावक—श्री नृसिंहराम अुपाध्याय
समर्थक—,, देवदत्त शर्मा
अनुमोदक—,, रामकृष्ण प्रभु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(११) हिन्दी योग्यताका सम्मान— अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन अिस बातपर बहुत असंतोष व्यक्त करता है कि आज हिन्दीके पठन-पाठनके लिये हिन्दीकी योग्यता रखनेवाले जो अध्यापक स्कूल पाठशालाओंमें कार्य कर रहे हैं: अुनका सामान्य ज्ञान अुच्च कोटिका होते हुअे भी अुनकी हिन्दी योग्यताका समुचित आदर नहीं किया जाता। हम प्रादेशिक सरकारों व शिक्षा विभागोंसे अनुरोध करते हैं कि वे राष्ट्रभाषा कोविदको मैट्रिक, राष्ट्रभाषा रत्न तथा साहित्य विशारदको बी० अे० तथा साहित्यरत्नको अेम० अे० के समकक्ष मानें और अुसके अनुरूप वेतनादिकी सुविधाअें दें।

प्रस्तावक—श्री भीखुभाअी जोषी
समर्थक— ,, कृ० पा० पाटील
अनुमोदक— ,, बा० मु० मोहरीर

(१२) प्रान्तीय सरकारोंसे अनुरोध—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन प्रादेशिक सरकारोंसे अनुरोध करता है कि हिन्दीके पठन-पाठनके लिअे जो पाठ्य-पुस्तकें मान्य हुअी हैं, अुनमें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी पुस्तकोंको भी मान्यता देकर स्थान दें।

[अध्यक्ष द्वारा रखा गया और स्वीकृत हुआ]

(१३) आगामी सम्मेलन—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनसे महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणेंकी प्रार्थना है कि सम्मेलनका अगला अधिवेशन महाराष्ट्रमें हो। महाराष्ट्रकी तरफसे हार्दिक निमंत्रण है।

प्रस्तावक—श्री पं. मु. डांगरे
संचालक,
(महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणें)
समर्थक—श्री पां. पु. पटवर्धन
अनुमोदक— ,, बा. मु. मोहरीर

अेक अन्य प्रस्ताव द्वारा जिसके प्रस्तावक भदन्त आनन्द कौसल्यायन, समर्थक—श्री कांतिलाल जोशी तथा अनुमोदक श्री दौलतराम शर्मा और श्री पं. मु. डांगरे थे, सम्मेलनमें समितिका नवविधान भी स्वीकृत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक कार्यक्रम

दिनकी गंभीर चर्चाओंके अुपरांत रातको ९॥ बजेसे मनोरंजक कार्यक्रमका आयोजन था, जिसमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके छोटे-बड़े विद्यार्थियोंने ही भाग लेकर अपने मोहक संगीत, भाव और कलापूर्ण नृत्य तथा भव्य अभिनय-द्वारा आगत अतिथियोंका मनोरंजन किया। अिस कार्यक्रममें दो अेकांकी नाटक (१. "जीवन और कला,' २. 'समुद्रगुप्त पराक्रमांक'), अेक रूपक (अभिसार-श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरका), तीन 'गरबा' नृत्य और अेक 'रास' (दांडिया) मुख्य थे।

अभिनय और नृत्य :—दोनों ही अेकांकियोंका अभिनय (कुछ नगण्य त्रुटियोंको छोड़कर, जिन्हें अधिक अभ्याससे दूर किया जा सकता था) पूर्ण सफल रहा और अुपस्थित जनतापर अुनका अच्छा असर पड़ा। रंगमंचकी सजावट अनुकूल और दिग्दर्शन योग्य था। रूपकके भाव-नृत्य तो गजबके थे। विभिन्न ऋतुअें मानो साक्षात् हो अुठी हों। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत और वसंत सभीके योग्य अुपमान-स्वरूप नन्हीं-बड़ी बालिकाओंके यूथ अपने अुपयुक्त परिधानमें वेश-विन्यास किअे अिस लय और तालसे भावाभिनय कर रहे थे कि दर्शकोंका मन अुसमें सराबोर हो अुठा। पपीहाकी कूक, बिजलीकी कड़क-चमक बादलोंकी गड़गड़ाहट, शारदी सुषमा, वासंती छटा सभीके प्रतीक अुपस्थित थे। फबती हुअी पोशाकोंपर विभिन्न छाया-आलोक (shades) बड़े मोहक लगते थे। पृष्ठ संगीत (बैक ग्राअुन्ड म्यूज़िक) आदिने रस-संचारके साथ-साथ अभिनयकी सफलतामें बड़ी सहायता पहुँचाअी।

गुजरातकी विशेष कला—गरबा तो गुजरातकी अपनी गर्व करनेकी चीज़ है। हम सबका सौभाग्य था कि अुसे देखनेका सुयोग हम पा सके। तीनों 'गरबों' में 'रुमझुम रुमझुम आवेके गरबो' वाला सर्वश्रेष्ठ था, जिसमें नृत्य करती हुअी बालाओंके सिरोंपर रखे हुअे दीपक-युक्त गरबे अुनके अेक अेक पद-निक्षेप, अेक अेक थिरकनके साथ-साथ झूम रहे थे। और गतिकी तीव्रताके साथ अंतमें लयकी जो अुठान ली गअी और झलमलाते हुअे वे दीप जिस द्रुत गतिसे घूमने लगे, अुसे देखकर अुपस्थित जन-समूह स्वयं हर्षोल्लाससे अभिनंदन किये बिना नहीं रह सका। 'दांडिया' भी गुजरातकी अपनी विशेषता थी।

चुटीले व्यंग—अिस कार्यक्रमके बीचमें दो और अुल्लेखनीय बातें हैं। अेक तो हमारे परीक्षा-मंत्री श्री रामेश्वर दयाल दुबेकी वे चुटकियाँ, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुन्होंने परीक्षार्थियोंकी अुत्तर-पुस्तकोंमें लिखित कुछ "मौलिक सूझों"को पे करते हुअे लीं, और जिन्हें सुनकर हँसते-- हँसते पेट फूल गया।

संगीत और कला--दूसरा, संगीत तथा अभिनयके विशेषज्ञ सीताराम चतुर्वेदी (जो अिस कार्यक्रमके अध्यक्ष थे) का विद्वत्तापूर्ण भाषण जिसमें अुन्होंने शास्त्रीय संगीतकी विशेषता अेवं कुशल अभिनयकी महत्ता समझाअी। आज कलके अधकचरे संगीतज्ञों, (जिन्हें न समयका खयाल है न रागका ज्ञान,) अेवं अपूर्ण कलाकारोंकी अज्ञानताकी चर्चा करते हुअे अुन्होंने अिस बात पर विशेष ज़ोर दिया कि हमारे शिक्षालयोंमें संगीत अेवं कलाकी अुचित शिक्षाकी अुचित व्यवस्था होनी चाहिये। "आज 'हिन्दी' का रंगमंच बहुत पिछड़ा हुआ है। अच्छा तो यह हो कि अैसे सम्मेलनोंमें हम प्रस्ताव आदि पास करनेका काम पहलेसे ही खतम करके आया करें और यहाँ बैठकर कुछ ठोस कार्य करें।" अुन्होंने खेले गये नाटक, नृत्य आदि की प्रशंसा करते हुअे अुनपर अपना हार्दिक संतोष व्यक्त किया।

सम्मेलनकी व्यवस्था

हमारे प्रांतीय संचालक श्री जेठालाल जोषी और अुनके वे सभी सहयोगी भाअी-बहन, जिन सबोंके नाम स्थानाभावसे हम यहाँ नहीं दे सकते विशेष धन्यवादके पात्र हैं, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम, लगन, तत्परता, अेवं अेक-निष्ठासे अितने बड़े आयोजनको सफल बनाया। हम देखते थे कि सात-आठ सौ की अुपस्थितिसे परिपूर्ण अुस प्रेमाभाअी हालमें सुव्यवस्था और शान्ति रखनेके लिये न तो किसी बाहरी अुपादानकी ज़रूरत पड़ी और न किसी सरकारी पुलिस आदि की। यहाँ तक कि मनोरंजन-कार्यक्रममें भी, जिसमें प्रायः सर्वत्र हुल्लड़ और अशान्ति दृष्टिगोचर हुआ करती है, प्रेमाभाअी हाल, गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके कार्यकर्ताओं-प्रामाणित प्रचारकों आदिकी कार्य-कुशलता, संगठन-शक्ति और शालीनताका प्रतीक बना हुआ था। क्या मजाल थी कि आदेशके विरुद्ध कोअी कुछ भी कर जाता। नियम बनानेवालोंको कड़ाअीके साथ स्वयं नियमका पालन करते गुजरातमें मैंने पहली बार देखा, जब अुस दिन रातमें बिना प्रवेश-पत्रके न तो किसीको अंदर प्रविष्ट होने दिया गया, और न जिन्हें प्रवेशकी मनाही थी, अुन्होंने स्वयं ही प्रवेश करनेकी कोशिश की। दिनके सम्मेलनके अधिवेशनमें और रातको भी मैंने देखा कि जिसकी जहाँ नियुक्ति थी, वह वहीं सन्नद्ध रहा, यहाँ तक कि कुछ भाअियोंको तो दोनों दिन बराबर ८-८ घंटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक लगातार खड़े हुअे या अिधर-अुधर दौड़-धूप करते हुये पाया। यह अनुशासन और कार्यतत्परता ही तो अिस सफलताके मूलमें निहित है।

अतिथियोंके ठहरनेकी प्रांतवार व्यवस्था चार स्थानोंपर थी—न्यू अेजुकेशन हाअीस्कूल, दोनों टयूटोरियल हाअीस्कूल और सिटी हाअीस्कूल। हरेक स्थानपर पानी, रोशनी आदि का प्रबन्ध था। मेहमानोंकी देख-भाल और पूछ-ताछके लिये हरेक निवास-स्थानपर कुछ भाअी-बहनोंकी टोलियाँ नियत थीं, जो अुनकी सुविधाका ख्याल रखती थीं। भोजनकी व्यवस्था शहरके तीन प्रमुख भोजनालयों—'लक्ष्मी-निवास', 'चन्द्र-विलास' और 'जवाहर-विलास'में की गअी थी। सब मिलाकर भोजन सुरुचिकर और संतोषप्रद रहा। यद्यपि होटलकी अपनी अपरिहार्य 'विशेषताअें', जो सभी जगह समान रूपसे पाअी जाती हैं, अिनमें भी कुछ थीं ही, फिर भी 'राशन'के अिस कठिन युगमें बाहरसे आये हुअे अितने लोगोंको समयपर भोजन देकर अिन 'विलासों'ने राष्ट्रभाषा प्रेमियोंका जो सहयोग दिया, अुसके लिये ये विशेष अभिनन्दनीय हैं।

व्यवस्थाकी कसौटी—किसी भी समारोहकी सुव्यवस्थाकी जाँच मुख्यतः दो बातोंसे हो जाती है—अेक तो अुत्सवके अंतमें अतिथियोंकी बिदाअीके समय और दूसरे किसी अतिथिके अस्वस्थ हो जानेपर! स्वाभाविक ही है कि लोग जिस अुत्साह, आदर-सत्कार अेवं आग्रह विशेषसे समारंभके आरंभमें मेहमानोंको ही नहीं अुनके सामानको भी वाहनोंपर लाद-लादकर लाते हैं, अुपयुक्त स्थानतक पहुँचाते हैं, अुन्हें वापिस भेजते समय प्रायः अुतनी ही अुपेक्षा, असावधानी अेवं अन्यमनस्कताका परिचय दिया जाता है—अैसी प्रायः लोगोंकी शिकायत रहती है। अहमदाबाद-सम्मेलन अिस दोषसे, जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, बरी रहा है। जिस तरह आदर-पूर्वक अभ्यागतोंको अुनके निवास-स्थानपर लाकर टिका दिया गया, अुसी तरह अुनके स्टेशनतक पहुँचाने आदिकी सारी व्यवस्था भी स्वागत-समितिने करा दी थी। अुसी प्रकार सम्मेलनमें आये हुअे अेक-दो भाअी जब कुछ अस्वस्थ हो गये, तो अुनकी सेवा-सुश्रूषामें नियुक्त भाअी-बहनोंने कार्यवाही-में दिलचस्पी रखनेपर भी, अुसका मोह छोड़कर, अुनको यथा शीघ्र स्वस्थ करनेमें कोअी कसर नहीं अुठा रखी। कुछ लोगोंकी दृष्टिमें अुपरि-लिखित बातें तुच्छ अेवं अुपेक्षणीय हो सकती हैं, लेकिन मानव-स्वभावकी ओर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो यही छोटी-छोटी बातें हमें मनुष्यताकी अुस तह तक पहुँचा देती हैं, जहाँ मानव-मानवके संबंध चिरकालके लिये जुड़ जाते हैं। सहृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवके अंतरको छूनेवाले ये संवेदनशील क्षण प्रायः शीघ्र विस्मृत नहीं होते और घड़ी-भरके ये मधुर संबन्ध, दुःख और अवसादकी यह क्षणिक सहानुभूति, जिसमें निस्वार्थ प्रेमकी सम्पूर्ण अेकाग्रता निहित रहती है, जीवनके अमर क्षणोंमें परिवर्तित हो जाती है।

सम्मेलनमें जितने लोगोंके आनेकी अुम्मीद थी अुतने नहीं आ सके। फिर भी कुल मिलाकर लगभग ५०० राष्ट्रभाषा-सेवी अुपस्थित हो गये थे। कार्यक्रम भी दो दिन पूर्ण व्यस्त रहा। तीसरे दिन ता. २७ फ की शामको ४॥ बजे आचार्य चन्द्रबली पांडेयजी द्वारा प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सव था, जिसमें अितिहासाचार्य पं. जयचन्द्र विद्यालंकारका दीक्षांत भाषण भी हुआ।

हमारी आशा—गुजरात प्रांतके सभी भाअी-बहनोंकी कार्य-निष्ठा अेवं सहृदयताके बावजूद अेक बात जो सबको खटकती रही, वह यह कि सभी लोगोंके ठहरनेकी, खाने-पीनेकी व्यवस्था अेक साथ, अेक ही स्थानपर न होनेसे, अैसे सम्मेलनोंमें पारस्परिक संपर्कसे जो घनिष्ठता बढ़ती है और लोग अेक–दूसरेको और अधिक निकटसे जानने–समझनेका जो मौका पाते हैं, अुससे हम वंचित रह गये। हो सकता है कि अिस विषयमें अहमदाबादकी अपनी कठिनाअियाँ विशेष हों, फिर भी अिसकी अुपेक्षा नहीं की जा सकती। दूसरी बात ध्यान देने योग्य यह है कि राष्ट्रभाषाके प्रचारकों अेवं केन्द्र-व्यवस्थापकोंका यह सम्मेलन अपनी दो दिनकी भर-पूर कारवाअीके बावजूद अितना समय नहीं निकाल सका जब वहाँ आये हुअे सभी भाअी-बहन अपने अपने कार्य-क्षेत्रकी व्यक्तिगत कठिनाअियोंको अेक-दूसरेके सामने रखकर समझते, अुनको तय करनेका मार्ग निकालते। सामूहिक रूपमें तो काफी सोचा-विचारा गया, भाषण भी खूब हुअे और प्रस्ताव भी बहुत से पास किये गये; लेकिन अपने प्रत्यक्ष सवाल, अपनी व्यक्तिगत शंकाअें, बहुत-से लोगोंकी शिकायत है, ज्यों-की-त्यों बनी रहीं, अुनके अूपर चर्चा करनेका, अुनका हल निकालनेका अुन्हें मौका नहीं मिल सका। हम आशा करते हैं कि भविष्यमें जो सम्मेलन होंगे अुनमें अिन त्रुटियोंको दूर करनेका भरसक प्रयत्न किया जायगा। बड़े समारोहकी धूम-धाममें यद्यपि अिन बातोंकी ओर हमारा ध्यान नहीं जाता, फिर भी अिनकी अुपेक्षासे सम्मेलनके मूल अुद्देश्यमें व्याघात ही पहुँचता है। अतः भविष्यमें अिस बातका विशेष ख्याल रखा जाय कि सम्मेलनमें अुपस्थित होनेवाले ये कर्मठ राष्ट्रभाषा-सेवी, जो ही वास्तवमें हमारे प्रचार-बलके सुदृढ़ स्तंभ हैं और सारे भारतमें फैले हुअे हैं, अेक–दूसरेके और अधिक निकट आकर अपनी समान कठिनाअियोंको सुगम बना सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनके लिये शुभ कामनाअें

श्री. पुरुषोत्तमदास टण्डन

"जी तो चाहता था कि आपके अिस समारोहमें शरीक हो सकूँ। किन्तु अिस समय आ नहीं सकता। यहाँसे अनुपस्थित होनेमें हर्ज हो जायगा। आपका यह राष्ट्रभाषा सम्मेलन अुपयोगी काम करेगा यह मेरी आशा है। सब प्रचारकोंको मेरा स्नेहमय नमस्कार।"

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

"हिन्दीकी विजय हो चुकी है। आप सबोंका श्रम सफल हुआ। किन्तु अब तो हिन्दीको 'भारती' बनानी है। अिसके लिये तो सतत कार्य करना पड़ेगा और जितनी शक्ति अभी तक लगाअी है अुससे ज्यादा लगानी है। 'भारती'के सिवाय 'भारत' गूँगा सा है। सम्मेलनके लिअे शुभ कामनाअें।"

माननीया अमृतकुँवर

"धन्यवाद। सम्मेलनकी सफलताके लिये अपनी शुभ कामना भेजती हूँ।"

माननीय श्री ग. वा. मावलंकर

"धन्यवाद। यहाँ पार्लियामैंटकी बैठक चालू होनेके कारण मैं सम्मेलनमें अुपस्थित न हो सकूँगा। मुझे क्षमा करें। सम्मेलनका कार्य यशस्वी हो यही मेरी शुभ कामना है।"

माननीय पं. रविशंकर शुक्ल

"गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति व अुसके कार्यकर्ताओंको अनेक धन्यवाद। सम्मेलनकी सफलता चाहता हूं।"

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

"मैं सम्मेलनकी पूरी सफलता चाहता हूँ। समितिके कार्यमें यथाशक्ति सहयोग देनेसे बाज नहीं रहूँगा। मुनिजीको नमस्ते कहें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

"आयोजनकी हृदयसे सफलता चाहता हूँ। हिन्दी राष्ट्रभाषाके रूपमें सबसे आशा रखती है। परन्तु किसी प्रान्तीय भाषाका अधिकार हरण करना नहीं चाहती। मेरी शुभ कामना स्वीकार कीजिये।"

सेठ गोविन्ददास

"विधान-परिषद द्वारा हिन्दी राज्यभाषा घोषित हो जानेके पश्चात राष्ट्रभाषाके प्रचारकोंका कार्य तथा दायित्व और अधिक बढ़ गया है। गुजरातके प्रचारकोंने अब तक जो कार्य किया है वह देशके अितिहासमें चिरस्थायी रहेगा। मैं आपके सम्मेलनकी हृदयसे सफलता चाहता हूँ।"

माननीय सम्पूर्णानंदजी

"धन्यवाद। सम्मेलन सफल हो।"

श्री गोकुलभाअी भट्ट

"सफलता चाहता हूँ। राष्ट्रभाषाका कलेवर कैसा होना चाहिये और अपनी भाषा किस तरह प्राणदायी हो सके अिसका विचार आप सब करेंगे।"

श्री गुलाम रसूल कुरैशी

(प्रमुख, अहमदाबाद शहर समिति)

"बहारगाम बीजा कामोमां रोकाअेलो होवाथी तमारे त्यां हाजरी आपी शकुं नथी, तेथी दिलीगर छुं। तमारा कार्यनी सफलता चाहुं छुं।"

("कार्यवश बाहरगाँवमें रुका होनेके कारण आपकी सेवामें अुपस्थित होनेमें असमर्थ हूँ। अिसका मुझे दुःख है। आपके कार्यकी सफलता चाहता हूँ।")

डॉ. बाबूराम सक्सेना

"अुत्सवकी सफलताकी हृदयसे कामना करता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री चीनुभाओी चीमनभाओी सेठ

(अध्यक्ष— अहमदाबाद म्युनिसिपालिटी)

"आमंत्रण मळ्युं। आभार थयो। बीजा कामोना रोकाणना कारण हाजरी आपी शक्यो नथी, अे बदल दिलगीर छुं। सम्मेलनने संपूर्ण फतेह अिच्छुं छुं।"

(निमंत्रण मिला। आभारी हूँ। दूसरे कामोंमें संलग्न होनेके कारण अुपस्थित न हो सका, अिसके लिअे दुखी हूँ। सम्मेलनकी सफलता चाहता हूँ!)

डॉ. अुदयनारायण तिवारी

"धन्यवाद। सफलता चाहता हूँ।"

श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी

"मुझे आशा है कि हिन्दी प्रचारकी भावनासे प्रेरित कर्मठजनोंका यह सम्मेलन राष्ट्रभाषाके प्रचार और अुसकी अुत्तरोत्तर वृद्धिके लिये अपनी परम्पराके अनुकूल और हिन्दीके हितमें परिवर्तित स्थितिके अनुरूप योजना बनाकर अुसे कार्यान्वित करेगा। मैं सम्मेलनकी सफलताको हार्दिक कामना करता हूँ।"

श्री सत्यनारायणजी

(अखिल भारतीय हिन्दी परिषद, दिल्ली)

"अब तो राष्ट्रभाषाके नाम और स्वरूपके बारेमें कोअी विवाद नहीं रहा। विधान परिषद्ने अिसका अन्तिम निर्णय कर दिया है। अिसमें कोअी शक नहीं कि अब सारा भारत अुसी निर्णयके अनुसार राष्ट्रभाषाके विकास और प्रचारको आगे बढ़ायेगा। मैं हृदयसे सम्मेलनकी सफलता चाहता हूँ।"

श्री. सिद्धराज ढढ्ढा

(राजस्थान)

"सम्मेलनकी सफलताके लिये हार्दिक शुभ कामनाअें।"

श्री. भंवरमल सिंघअी

(कलकत्ता)

"हमारे प्रजातंत्रके सामने आगामी पंद्रह वर्षोंमें राष्ट्रभाषाके प्रचारकी बड़ी जिम्मेदारी है। आशा है, देशके राष्ट्रभाषा प्रचारक अपने अनुभव और निरंतर लगन द्वारा अिस महान जिम्मेदारीको पूरा करनेमें सफल होंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. रामानंद शर्मा

(सम्पादक—'दक्खिनी हिन्द'-मद्रास)

"हिन्दी प्रचारकोंका भारतमें अेक महत्वपूर्ण स्थान है। वे राष्ट्र निर्माणके क्षेत्रमें अत्यन्त गौरवका काम करते आ रहे हैं। हम समस्त दक्षिण भारतके हिन्दी प्रेमी तथा हिन्दी प्रचारकोंकी सहानुभूतिकी सुमनांजलि अिस सम्मेलनको भेंट करते हैं और अिसकी संपूर्ण सफलता चाहते हैं। आशा करते हैं कि अपने निस्पृह नेताओंके नेतृत्वमें यह अैसा मार्गदर्शन करेगा जो प्रचारकोंको अुन्नत करेगा—अुनके व्यक्तित्वको बढ़ायेगा।"

पं. हृषीकेश शर्मा

(संचालक, नागपुर-विदर्भ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, नागपुर)

"सम्मेलनकी हृदयसे सफलता चाहता हूँ। हमेशा गुजरातके साथ हूँ।"

श्री. अनसूयाप्रसाद पाठक

(संचालक अुत्कल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, कटक)

"हृदयसे आपकी सफलता चाहता हूँ। धन्यवाद।"

श्री. छगनलाल जैन

(संचालक, आसाम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गोहाटी)

"मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि हमारा यह सम्मेलन सफल हो। राष्ट्रभाषा प्रचारकी भावना अधिकसे अधिक लोगोंमें जागृत हो।"

अिन शुभ कामनाओंके अतिरिक्त भारतके विभिन्न प्रांतोंसे अनेक राष्ट्रभाषा प्रेमियोंने सम्मेलनकी सफलताके लिअे संदेश भेजे जिनमेंसे कुछके नाम ये हैं—श्री पूर्णचन्द्र जैन (जयपुर), श्री हेमकान्त भट्टाचार्य (आसाम), श्री यशपालजी (दिल्ली), श्री राममूर्ति रेणु (गुन्टुर), श्री परमेष्ठीदासजी जैन (ललितपुर), श्री विजयराय वैद्य (भावनगर), श्री कमलेशजी (वृंदावन), श्री हनुमान प्रसादजी, (कोटा) श्री वल्लभदास अक्कड़, (बम्बअी) श्री जगन्नाथ प्रसादजी शुक्ल (प्रयाग) श्री अीश्वरभाअी देसाअी (सूरत), श्री भूरेलालजी बया (राजस्थान)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

विदर्भ नागपुर, राजस्थान, उत्कल तथा हैद्राबाद-के लिअे:—

परीक्षा-फल :—

फरवरी ५० की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षा-फल १५ अप्रैल ५० को प्रकाशित होगा।

आसाम, बंगाल, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बअी, कर्नाटक, आन्ध्र तथा आफ्रीकाके लिअे:—

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन: —

अपने यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थियों के लिअे अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंकी नियुक्ति आप कर लें। नियुक्त निरीक्षकोंकी नामावली परिपत्र नं. १३ पर भरकर कृपया वर्धा कार्यालयमें भेज दें।

पैंतीससे कम परीक्षार्थी वाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रत्येक बैठकके लिअे (तीन घंटे) के लिअे १) रु. पुरस्कार दिया जायगा।

परिचयकी मौखिक परीक्षा: —

परिचय मौखिक परीक्षाका व्यवस्थाकी सारा भार केन्द्र-व्यवस्थापकों पर रखा गया है। वे ही असके लिअे परीक्षककी नियुक्ति करें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारीख निश्चित करें । परीक्षकके लिअे किसी योग्य स्थानीय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा ।

परिचयकी अिस मौखिक परीक्षाकी सारी व्यवस्था आप शीघ्र करें । अिसके लिअे प्राप्तांक भरनेके पत्रक भेजे जा रहे हैं । वे परिचय की मौखिक परीक्षाके लिअे हैं । मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही आप प्राप्तांक सूची सील मुहर करके हमारे पास भेज दें ।

कृपया सोमवारको अवश्य भेजें :—

१. प्रत्येक समयकी परीक्षाओंका अुत्तर-पुस्तकोंका बंडल निरीक्षकके हस्ताक्षरके साथ अुसी समय सील हो जाना चाहिअे। अिस प्रकार शनिवार और रविवारके सील किअे हुअे बंडल कृपया सोमवार को अवश्य रजिस्ट्रीसे भेजें । शेष (कोविद अुर्दू प्राचीन पद्य) अुत्तर पुस्तकें बादमें भेज सकते हैं ।

२. मौखिक परीक्षकोंसे प्राप्त प्राप्तांक तथा लेखन-कार्य-प्राप्तांक और कोविद-लेखन-कार्यकी वहियाँ भी सोमवारको भेज दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

आगामी प्रचार परीक्षाअें ता. १५, १६ अप्रैलको होंगी ।

शनिवार १५।४।५० रविवार १६।४।५०

१०॥ से १॥	३॥ से ५॥	१०॥ से १॥	३॥ से ५॥
कोविद १	कोविद २	कोविद ३	कोविद ४
×	परिचय १	परिचय २	परिचय ३
×	×	प्रवेश १	प्रवेश २
×	×	प्रारम्भिक	×

बुधवार ता. १९।४।५० ७॥ से १०॥
कोविद अुर्दू
परिचय अुर्दू

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा तारीख १७।४।५० सोमवारको सुबह होगी । मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे ।

लेखन-कार्यः—

कोविदके परीक्षार्थियोंके लिअे ५० अंकका लेखन—कार्य अनिवार्य रूपसे रखा गया है । अिसमें १८ उत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य है । अब तक भी यदि किसी परीक्षार्थीने लेखन--कार्यके आठ निबन्ध न लिखे हों तो वे लिखकर अपने हिन्दी शिक्षकसे जँचवा लें । निबन्धोंकी सूची फरवरीके 'राष्ट्रभाषा' अंकमें देखें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाका कार्यक्रम :—

वार	शनिवार १५।४।५०		रविवार १६।४।५०		सोमवार १७।४।५०	
समय	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्र १ ला	प्रश्नपत्र २ रा	प्रश्नपत्र ३ रा	प्रश्नपत्र ४ था	प्रश्नपत्र ५ वाँ	प्रश्नपत्र ६ वाँ

मौखिक परीक्षा सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

अहिन्दी प्रान्तोंमें कार्य करने वाले राष्ट्रभाषा प्रचारकों, शिक्षकों और राष्ट्रभाषा प्रेमियोंका राष्ट्रभाषा सम्बन्धी ज्ञान बढ़ाने और अुसके अध्ययनको क्रमबद्ध तथा अुन्नतिशील बनानेकी दृष्टिसे ही 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षाकी व्यवस्था की गअी है। अिसलिअे मौखिक परीक्षामें राष्ट्रभाषा रत्नके परीक्षार्थियोंसे नीचे लिखी योग्यताकी अपेक्षा रखी जाती है :—

१. भाषाकी दृष्टिसे :—

(क) भाषा शुद्ध हो। व्याकरणकी दृष्टिसे वह निर्दोष हो।

(ख) अुच्चारण, ध्वनि और स्वराघात ठीक हो।

(ग) मुहावरेदार चलती भाषा हो, और अुसमें प्रवाह हो।

२. विषयकी दृष्टिसे :—

(च) हिन्दी साहित्यकी मुख्य-मुख्य बातों (वर्तमान प्रवृत्तियों) की जानकारी। हिन्दी साहित्यके प्रमुख ग्रन्थोंका ज्ञान तथा हिन्दीके पत्र-पत्रिकाओंका ज्ञान।

(छ) राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके सम्बन्धमें विशेष जानकारी

(ज) राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यका ज्ञान अुसकी कठिनाअियों तथा साधनोंका ज्ञान।

(त) प्रचार परीक्षाओं के पाठ्यक्रमका ज्ञान।

(थ) हिन्दुस्तानकी वर्तमान परिस्थिति तथा प्रचलित प्रश्नोंकी जानकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	प्र० क्रमांक	नाम	स्थान
उत्कल	१९६५	श्री बड़ेछा अबाल नरसिंह शर्मा	कोटवाड़
"	१९६६	" हलधर शतपथी	कटक
"	१९६७	" दंडपाणि जेना	पथरा
"	१९६८	" परीक्षित नायक	गुरांडी
"	१९६९	" गोलोक बिहारी मिश्र	चचिका
गुजरात	१९७५	" कान्ता चीमनलाल शाह	अहमदाबाद
"	१९७६	" सुशीला शाह	"
"	१९७७	" हिरालाल जे० दवे	बालासिनोर
"	१९७८	" वी० मा० पंचोली	बीजापूर
"	१९७९	" डाह्याभाई गि० पटेल	अहमदाबाद
"	१९८०	" अमेदभाई ल० पटेल	धर्मज
"	१९८१	" कान्तिलाल च० पटेल	कुरचण
"	१९८२	" दीनानाथ सो० व्यास	सरसवनी.
"	१९८३	" मृणालिनी म० ठक्कर	बड़ौदा
"	१९८४	" चन्दुलाल सो० पटेल	अहमदाबाद
"	१९८५	" तलजाभाई व्र० पटेल	सरसवनी
"	१९८६	" पुरुषोत्तम ना० भट्ट	अहमदाबाद
"	१९८७	" मूलशंकर रा० महेता	"
महाराष्ट्र	१९७१	" माधव बा० धर्माधिकारी	रावलगांव
"	१९७२	" पार्वतीबाई शं० देशपांड़े	कुर्डूवाड़ी
"	१९७३	" कु. विमल द. परांजपे	सातारा
"	१९८४	" सदाशिव त्र्यं. जोशी	अहमदनगर
बम्बई	१९७०	" कु. लक्ष्मी ना० मोटवाणी	खार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
महाराष्ट्र	मिरी	७०१
,,	आधार बु॥	७०२
,,	रांझोदें	४०
,,	दत्तवाड	७४१
,,	चापडगाँ	७४२
,,	चिपरी	७४३
गुजरात	रूनाड	११५
,,	जीताळी	४३३
वि.नागपूर	कटनी कॅम्प	५७३
,,	बोरगांवपेट	५७४
वि.नागपुर	मोहाळी	६५१
हैद्राबाद	वरंगल	७:७
,,	कमळापुर	७४८
,,	जानापुर	७४९
,,	कल्याण	७५०
,,	सोन्त	७५१
मध्यभारत	गांधीनगर	२८३
बंगाल	गोपीनाथपुर	२८७
आन्धु	अलूरु	२९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाऐं

फरवरी तथा अप्रैल '५०

की

परीक्षाओंके केन्द्र और परीक्षावार परीक्षार्थियोंकी संख्या

भिन्न-भिन्न प्रान्तोंके केन्द्रोंसे नीचे दिअे विवरणके अनुसार आवेदन पत्र आअे :—

प्रान्त	केन्द्र संख्या	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	कुल
उत्कल	६७	१९६८	६०६	१७०	३४	२७७८
राजस्थान (सिंघ)	२२	६०९	५१३	८४	४४	१२५०
विदर्भ-नागपुर	९७	२४७७	२१७४	७७७	२०९	५६३७
हैदराबाद (दक्षिण)	२६	११६	६६	६०४	११८	९०४
आसाम	१८	९५३	४९९	१७९	५८	१६८९
बंगाल	१२	३०८	१७८	७८	२०	५८४
मध्यभारत-मालवा	१३	२८०	३०४	१८६	६१	८३१
अफ्रीका	४	३१	६३	२५		११९
गुजरात	४२३	१८६६४	१७७३३	८६०५	१९२४	४६९२६
महाराष्ट्र	२१७	७६६४	७०६४	३४०६	१०००	१९१६८
बम्बअी	२४	२९३६	३६०८	१८३५	६७९	९०५८
आंध्र	७	२४	२६	७	१९	७६
कर्नाटक	८	१३२	१८७	६५	२१	४०५
फुटकर		६९	४२	११	९	१३१
जोड़	९३८	३६२६१	३३०३३	१६०६५	४१९६	८९५५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी ५० की परीक्षाकी

केन्द्रवार

परीक्षार्थी संख्या

अुत्कल

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
१	अनुगुल	११	२२	४		
४	आठगढ़	१३	१२			
५	आस्का	२१	१२	७		
६	अिटामाटी	१४	३			
७	अिन्दुपुर	४९	११	४		
९	कटक	१५९	७९	२१	१०	
११	कंटिलो	१७	११	२		
१२	कनेषी	४३	६	१		
१३	कलापथर	१४	५	१		
१५	कंटिगढ़िया	१६	५			
१७	कुंजंग	४२	१			
२०	केन्द्रापाढ़ा	१३	५	५		
२१	केन्दुझरगढ़	३२	३४			
२३क.	खंतापाडा	२२	७			
२४	खंडपड़ागढ़	३७	६	३		
२४क	खुर्दा	१९	३	४		
२६	गुरांडि	१२	९			
२७	गोंड़ीपड़ा	१६	२			
२८	घंटेश्वर	१८	११	४		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
२९	चम्पापुर	२६	१०	६		
३०	चम्पेश्वर	९	३			
३४	छत्रपुर	२६	१३	५		
३५	जगत्सिंहपुर	४५	१०	३		
३८	जटणी	१२	१०			
३९	जयपुर	३७	९	२		
४१	जरडागढ़	१२	४	३		
४२	जाजपुर	१२	६	२		
४३	जाजपुर रोड	३४	१			
४४	डुटा	३५	८	६		
४४ क	ढेकानल	९२	२१	१		
४५	ढांगी	१४	२	१		
४६	तिर्तोल	२८	६			
४९	दोलसाही	७५	११			
५०	धर्मशाला	३०				
५१	नयागढ़	२६	७	१		
५२	नरसिंहपुर	२१	१			
५३	नवरंगपुर	३९	६			
५४	नारिगाँव	१३				
५५	नुआपाड़ा	४१				
५७	पंचभूति	१२	९	१		
५९	पाटपुर	१५	४			
६०	पात्रपुर	११	७	८		
६१	पार्लाखिमेढ़ी	३१	२	२		
६३	पुरी	६५	२८	७	१०	
६४	पुरुषोत्तमपुर	९	५	१		

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
६५	पुलसरा	१५	१०			
६६	बडम्वा	१०	२			
६७	बरहमपुर	७९	३१	१६	१४	
६८	बलांगीर	६९	१२			
६९	बांकी	२४	७	१		
७२	बारिपदा	३४	२२	१०		
७४	बालिकुदा	११	७	१		
७५	बालेश्वर	६७	९	७		
७७	बुरकेल	३२	४	४		
७८	बेलगुंठा	२९	१६	२		
८०	बोओीराणी	१५	४	५		
८२	भटली	२४	३	१		
८३	भद्रक	१५	५	१		
८६	महाछाओी	१६	१			
८९	रसुलकोंडा	५१	३			
९४	शेरंगढ़	१४	५	६		
९५	सँअरा	१३	४	२		
९६	सम्बलपुर	३५	१२	२		
९८	सुन्दरग्राम	१८	२			
१००	सोरो	२७	८	२		
१००क	सिको	१५	९			
१०२	हिंजलीकाटु	१७	३	५		
६७	जोड़	१९६८	६०६	१७०	३४	२७७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

क्र. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१०५	अजमेर	१८३	१५४		१९	
१०६	अुदयपुर	३१	४२	१८	१२	
१०७	आमेर	२५				
१०९	कुचामन रोड	९				
११०	कुशलगढ़	२६	१५	८		
११२	कोटा पु. कैम्प	१५	२	२		
११३	चंडावल	११		४		
११४	चाँदारुण	६	७	५		
११५	चौंसला	७				
११६	जयपुर	१०३	८३	१४	७	
११७	जोधपुर	६५	५३	१६	६	
११८	डेह	१८				
११९	डुंगरपुर	७	१	१		
१२१	दुर्गापुर कैम्प	२६	१०	४		
१२३	नसीराबाद	२३	४०	५		
१२४	नाथद्वारा	१४	५	४		
१२७	परतापुर	१०	४१			
१३१	ब्यावर	१४	२१	२		
१३३	बिजोलिया	५	४	१		
१३४	भीलवाड़ा	७	११			
१३४क	राणावास	३	१०			
१३५	सांगानेर कैम्प	१०	१४			
२२	जोड़	६०९	५१३	८४	४४	१२५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदर्भ-नागपुर

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१६५	अकोला	१७०	११३	३८	१६	
१६८	अडगाँव	१२	५	१		
१६९	अंत्री	१०	१४	६		
१७०	अनसिंग	३६	२			
१७२	अमरावती पुरुष	९८	१४९	६४	२३	
१७३	अमरावती स्त्री	७६	७४	३७		
१७५	आंजी	२२	३			
१७७	आरमोरी	९	५	४		
१७८	आर्वी	१५	९	७		
१८०	आष्टी	१४	६	१		
१८१	अिच्छापुर	२२	३			
१८४	अेलिचपुर(शहर)	८८	४३	१८		
१८५	अुमरेड	२०	३	३		
१९०	काक्रड़ा	९	१६	१२		
१९१	काटोल	२८	४२	५		
१९४	कारंजा	१०	२०	१०	५	
१९८	कोकर्डा	२५	१०	१		
२०२	खापा	५	११	३		
२०४	खामगांव	१२५	१२८	४७	३१	
२०५	खेड़ी पान्हेरा	६	११	४		
२०७	खोलापुर	३४				
२०८	गढ़चिरोली	८	६	१		
२०९	गोंधनापुर	१५	११			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कं. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
२१३	चकरभाटा कैम्प	१७	१७			
२१५	चांदा	८५	४५	१०		
२१६	चांडोल	१३	१६	४		
२१८	चांदुर रेल्वे	५०	७२			
२२०	चांदुर बिस्वा	१०	६	२		
२२१	चिखली	१०	१७	६		
२२३	जरुड		२	३		
२२४	जलगांव जामोद	५	१८	७		
२२५	जवला बु.	७	८	३		
२३०	तलेगांव दाभाड़े	३३		१		
२३१	तुमसर	१८	३१	८		
२३२	तेल्हारा	२६	१			
२३३	ददिया	१६	१३			
२३४	दर्यापुर आ.	९	१७	१२	६	
२३५	दर्यापुर प्र.	४८	२१	४		
२३६	दारव्हा	५५	१५	९		
२३७	दाताला	२५	३	१		
२४२	देऊळगांव माली	९	४	३		
२४५	धन्तोली	१८१	३७७	१५१	६६	
२४७	धाड़	८	१०	२		
२५०	धामणगांव	१७	१०	२		
२५३	नरखेड	१६	११	३		
२५७	नांदागोमुख	४	६	६		
२५९	नांदुरा	३१	२७	१०		
२६१क	पढ्ढरजिरा	१२	४	२		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
२६४	पांढरी	७	१३	१३		
२६६	पातुर	११	१०	२		
२६६क	पातुर्डा	१५	९	२		
२७७	ब्रह्मपुरी	१९	१२	१४		
२७८	बालापुर	६०	२२	६		
२८०	बुरहानपुर	४२	२९	५		
२८१	बुलढाना	८८	७०	१६	२०	
२८४	बेनोडा	७	१४	५		
२८७	बोरीअरब	१३	८			
२८८	भंडारा	२९	७			
२९२	भिवापुर	१८				
२९३	मंगरुल (नवघरे)	१५	१			
२९४	मंगरुलपीर	४०	६४	१		
२९५	मेडशी	१४	७			
२९६	मलकापुर	६	६	४		
२९७	महाल (नागपुर)	७	८७	४५		
२९८	भाटरगांव	१६	२३	१०		
२९९	माधान	६	३	४		
३०४	मालेगांव (ज.)	३२	७			
३०८	मेहकर	११	३	१		
३१०	मोझाड	४	१२	३		
३१०क	मोला	१५				
३१२	यवतमाल	४९	३८	१९	८	
३१४	रामटेक	१४	११	४		
३१७	लखनी	३८	७			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
३१९	लोधीखेड़ा	८	५	४		
३२०	लोणार	२०	४	१		
३२२	वनोजा	४	३	३		
३२३	वणी	१	१६	१		
३२४	वर्धा	८	६३	४५	३४	
३२६	वरोरा	१९	३५	५		
३२७	वाडेगांव	१०	५	२		
३२८	वाशिम	३४	१९	२		
३२९	विठोली	६	६	३		
३३०	विश्वी	१०	८	१		
३३४	शिरखेड़	६	१३	७		
३३६	शेगांव	६	१०	४		
३३८	शेलगांव बाजार	५	१५	१		
३४०	शेम्बा बु.	३०	४	२		
३४२	साउुर	२०		३		
३४६	सावनेर	१५	६	१		
३४७	सावरा	८	७	१		
३५०	सिन्दी स्टे.	१६	६	४		
३५२	सिन्देवाही	४९	१२			
३५४	सिरसगांव बंड	२४	१०	२		
३५६	सुलतानपुर	१२	७	४		
३५७	सेवाग्राम	८	५	६		
३५९	हिंगणघाट	६	८	९		
३६०	हिंगणे कोरेगाँव	१४	९	१		
९७	जोड़	२४७७	२१७४	७७७	२०९	५६३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद दक्षिण

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
१३७	अम्बाजोगाअी			९		
	कमलापुर			१७		
	कल्याणी			८		
१३९	खम्ममेठ			१५		
१४१	गुलबर्गा	१०७	६६	३८	१९	
१४२	चितापुर			४		
१४३	जगत्याल			६		
	जानापुर			१६		
१४४	जालना			१०	१२	
१४५	तान्डूर			१०		
१४६	नान्देड़			२४	८	
१४७	नारायण खेड़			१२		
१४८	नेल्लीकूदूर			१५		
१४९	निजामाबाद			१५	१०	
	निर्मल			२०		
	भैंसा			६		
	राजेश्वर			५		
१५६	लातुर			९		
	वरंगल			१३		
१५७	वेमुलवाड़ा			२२		
	शहाबाद			८		
१६०	सूर्यापेठ			८		
	सौन्त			११		
१६२	हिंगोली			१०	६	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१६३	हैदराबाद			२७५	६३	
१६४	हनमकोंडा				२०	
	हलांखेड़				८	
२६	जोड़	११६	६६	६०४	११८	९०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल परीक्षाकी
केन्द्रवार
परीक्षार्थी संख्या

आसाम

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.	
१८०	अंफाल	३१४	२३६	१०१	४१		
१८१	अुचिया	२१	१७	४			
१८३	ककचिंग	२३	२९	८			
१८८	गौहाटी	६३	२०	९	५		
१९७	जोरहट	४९	४३	८			
२०२	थौबाल	३८	८				
२०५	नम्बोल	७१	३०	९			
२०७	नलवारी	१६	१	१			
२०९	नौगांव	२९	९	८	१२		
२१०	पलाशवाडी	३०					
२१३	पुबथरिया	३५	९	५			
२१४	पुरणिगोदाम	९७	१८	७			
२१७	बलभा	१९	६	१			
२२०	मालेम	४०	३१	११			
२२१	मोअिरांग	५६	१५	५			
२२३	रहा	८	१६				
२२६	शिलांग	३२	६				
२२९	सादिया	१२	५	२			
१८	कुलजोड़	९५३	४९९	१७९	५८		१६८[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.	
२३६	कलकत्ता द.	९१	६०	२२	७		
२३८	कलकत्ता ञु.	३९	२४	१६	९		
२३९	कलकत्ता बड़ा बा.	९	३४	१६			
२४०	काँथी	२३	९	६			
२४१	काटवा	१५					
२४६	क.गोपीनाथपुर	१६	६				
२५०	दार्जिलिंग	११	६	५	४		
२५३	नवद्वीप	३८	९	२			
२५४	नन्दीग्राम	२०	१०	८			
२५५	पूर्वस्थली	२८					
२६३	व्यवहार हाट	१३	५				
२६४	शांतिनिकेतन	५	१५	३			
१२	कुलजोड	३०८	१७८	७८	२०		५८४

राजस्थान मध्य भारत व अन्य प्रदेश

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१०४	अजमेर		९	१०		
१०५	अजमेर (सिंध)		३३	८०		
२७०	अिंदौर	१३	४	२	३	
२७०	क. गांधीनगर (वैरागढ़)	१४	११			
२७१	जावरा	१९	२४	१०	११	
२७२	नीमच शहर	७	११	१७	२७	
२७४	वैरागढ़	५९	३०	२५		
२७५	भोपाल	६५	५२	१५		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
२७६	मंदसौर	१३	११	६	२०	
२७७	रतलाम	३१	१६	१		
२८०	आगरा	२०	५२	६		
२८६	नअी दिल्ली	३३	४७	१३		
२८८	ओरच्छा (सिंध)	६	४	१		
१३	कुळ जोड़	२८०	३०४	१८६	६१	=८

आफ्रिका

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१६५	कम्पाला	३	११	१		
१६७	जोहान्सबर्ग	१३	१३			
१७४	म्वांझा	१५	१५	१		
	नैरोबी		२४	२३		
४	जोड़	३१	६३	२५		११

गुजरात

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
२८९	अंकलेश्वर	५१	७६	४९	८	
२९०	अंगाडी	२७	८			
२९१	अंचेली	२१	२३	४		
२९२	अंजार	३७	२१	२३	६	
२९३	अडादरा	१६	१२	६		
२९४	अड़ास	२२	१७			
२९५	अब्रामा	८५	४८	७		
२९६	अमोळ	१	१२	१०		
२९८	अंबासन	१५	१२	१९		
२९९	अमरेळी	६८	७५	२१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
३०१	अमलेश्वर	२१	१३	४		
३०५	अहमदाबाद	१९७८	२१३८	१३५३	४३०	
३०६	आंकलाव	४७	३१	९		
३०९	आद्योद	१६	१६	१		
३११	आजोल	२५	१८	५		
३१२	आंमोली	६२	१९	७		
३१३	आणंद (पा.)	६२	८१	३४	११	
३१४	आणंद (शा.)	८१	११२	५१	२२	
३१६	आबू रोड	२६	३०	६		
३१७	आभरण	३	४	१		
३१८	आमोद	५६	५७	२७	९	
३१९	आशी	३३	९	५		
३२२	अिलाव	३२	२१	८		
३२३	अिरवर	१०	२६	५		
३२४	अींड़र	७९	८६	४८		
३२५	अींसड	९	१७	१०		
३२६	अीलोल	१८	९	१		
३२८	अिसनपुर (मोटा)	१९	८	४		
३२९	अुगत	५	१५	२०		
३३०	अुनावा (आश्रम)	२२	२९	८		
३३२	अुत्तर संडा	४१	३२	११	१०	
३३३	अुतेलिया	१७	२			
३३४	अुदवाड़ा	६	८			
३३५	अुना	२८	२१	८		
३३६	अुपलेटा	१४	३१			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
३३७	अुपेरा	११	७			
३३८	अुबेर	२२	२९	१४		
३३९	अुमता	२२	२६	१०		
३४०	अुमरेड	११३	१३२	४३		
३४३	अुँझा	७८	३६	१०		
३४५	ओच्छण (दायभा)	७	१३	१०		
३४६	ओड	४८	४१	३०		
३४९	कच्छमांडवी	२२	२७	१६	१०	
३५३	कंजरी	३	१०	३		
३५४	कटलाळ	५७	५७	३६		
३५५	कठाणा	१३	९	५		
३५६	कडाणा	४२	२०	४		
३५७	कठोर	९	१९	१८		
३५८	कड़ी	११३	१२७	८७	५०	
३५९	कडोद	६६	४२	३६		
३६०	कंथरिया	६४	२३	१३		
३६१	कपडवणज	११९	८६	५८	८	
३६३	करचंलिया	१४	५	३		
३६४	करजन	३९	२६	१०		
३६५	करणंट	३८	११	४		
३६६	करमसद	४२	५२	३१	११	
३६८	कल्याणा	१०	११	१४		
३६९	कलोल	३	२१	१६	१०	
३७०	कलक	९	५	२		
३७१	कवाट	१०	३२	६		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
३७२	कावी	१७	४३	१३		
३७३	कविठा	३३	२६	१७		
३७७	कामली	८	८	५		
३७८	कारवण	१७	२९	२१		
३७९	कारेली	४	८	३		
३८०	कालावद	५०	२			
३८१	कालोल (पंच)	५१	६४	४०	७	
३८४	कास्वा	३१	२२			
३८५	कीम	५०	८	२		
३८६	किल्लेसोनगढ़	८८	३३	८		
३८७	किन्खलोड़	३३	२	३		
३८८	कुकुरवाड़ा	३३	१८	४		
३८९	कुतियाना	७४	८२	१९		
३९०	कुरचण	१५	२७	८		
३९२	केरवाड़ा	२	११	५		
३९४	केशोद	३४	२७			
३९८	कोडीवार	११	६	१		
४०१	कोसम	२४	४			
४०२	कोसंबा	२३	३६	११		
४०३	कोसिंद्रा	४७	४९	२६	१७	
४०८	खरोड	७	६	२		
४०९	खानपुर	४९	४२	२५		
४११	खेड़ा	८	२४	११	१२	
४१२	खेरवा	२६	२०	६		
४१३	गज़ेरा	२३	२१	३		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
४१४	गठड़ा	२९	१५	१३		
४१६	गढ़	२०	६	८		
४१८	गणदेवा	४६	१४	८		
४१९	गणदेवी	११५	८५	२४		
४२०	गत्राड़ा	६१	४६	२५		
४२२	गांगपुर	९	१२	११		
४२३	गुंजा	७	५	६		
४२४	गुरुकुल सूपा	६	१३	२		
४२५	गोझारिया	२०	२४	१८		
४२६	गोंडल	८६	७२	३०		
४२७	गोभी	१५	२	१		
४२८	गोधरा	९२	९८	३२	११	
४३०	गोरीयाद	६	११	३		
४३२	चकलासी	२०	२५	१७		
४३४	चराडा	२०	२१	२०	११	
४३५	चलथान	६	१७	६		
४३६	चलाली	१३	१२	३		
४३७	चांगा	३१	३५	१९		
४४०	चाणस्मा	१०	२२	१२		
४४१	चांदोद	४६	३६	१५		
४४२	चिखली	१०४	९०	३१		
४४३	चितल	१९	३	४		
४४४	चूडा	५२	२०	३		
४४५	चोरंदा	३०	२०	८		
४४६	छत्राल	११	१७	५		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
४४७	छाणी	११	६	११		
४४८	छिद्रा	७	१०	७		
४४९	छीपडी	२९	२७	८		
४५०	छोटा अुदयपुर	५१	५३	४९	३०	
४५१	जंत्राल	१८	१७	१०		
४५२	जनोर (गु.)	२८	२६	११		
४५३	जनोड	११	८			
४५४	जवुलगांव	२३				
४५५	जंबुसर	६९	४			
४५६	जरोद	२९	३	१		
४५७	जलसण	४३	८			
४५९	जवारज	१२	६	२		
४६१	जहाज	१६	४	४		
४६२	जादर	४९	१५	१०		
४६३	जाफराबाद	१५	४	२		
४६५	खंभालिया (सौ.)	१७	४५	२६	१२	
४६६	जामनगर	१९९	१८२	८५	४४	
४६७	जीताली	१७	१			
४६८	जीतांडिया	२	३	५		
४६९	जूनागढ़	५२	९७	५२	१८	
४७१	जेतपुर	४९	४२	८		
४७३	जैपुर	७	९	५		
४७४	जेतलपुर	४३	६२	२५		
४७५	जोटाना	८	१६			
४७५क	जोडिया	९	२२	८		
४७६	जोशीकुंवा	२	७	६		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
४७७	झगडिया	६५	८०	५७	१२	
४७८	झांझड	११	३५	११	२०	
४७९	झाडेश्वर	७४	१२	७		
४८०	झारोला	२८	१३	२		
४८१	झालोद	३८	२४	६		
४८२	झुलासन	११	८	१२		
४८४	टंकारिया	१२	३०	७		
४८५	टींटोदण	१४	७	७		
४८६	टुण्डज	१७	१८	१६	३०	
४८७	टुण्डाव	७	१३	५		
४८८	टुण्डाव (सयाजी)	६	१	४		
४९०	ठासरा	२१	२४	१०		
४९१	डभासी	३	५	२		
४९२	डभाली	४३	३२	१३		
४९३	डभोआी	७४	५५	३३	७	
४९४	डभोञू	३९	३६	३०		
४९५	डाकोर	१५४	९७	४८	११	
४९६	डभोडा	३२	३०	१५		
४९७	डांगरवां	१७	१०	३		
४९८	डुमराकच्छ	५	९			
५००	भालसा	३०	७			
५०२	तलोद	७६	८६	३०		
५०४	तेनतलाव	७	९	१०		
५०५	तोरणा	२८	८	६		
५०६	थराद	३	३	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रे. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
५०८	दयादरा	७	७	३		
५१०	दढालअिनाम	९	९			
५११	दहगांव	३९	५२	३१		
५१२	द्वारका	८१	३४	४		
५१४	दावड़	४९	१५			
५१५	दूधवाड़ा	३१	२०	१७		
५१६	देदरडा	१३	९	५		
५१७	देलोल	२१	१६	७		
५२०	दोरा	७	९	७		
५२१	दोहद	४७	२१	७		
५२२	धंधुका	८	१६	१		
५२३	धनसुरा	४०	२७	५		
५२४	धर्मज	८०	८८	३३	२१	
५२५	धर्मजरणोली	७	१०	६		
५२६	धमडाछा	२५	१५	१०		
५२७	धरमपुर	४३	३१	३०		
५२८	ध्रांगध्रा	५६	३८	२५		
५३०	धापट	२२	१४	११		
५३१	धीनोज	३५	४०	२६		
५३२	धोरणपारडी		३	१२		
५३३	धोराजी	१६१	१४५	३१	२०	
५३४	ध्रोल	८	२२	५		
५३५	धोलका	६६	६९	३४		
५३८	नडियाद	३०५	४५१	१९६	९२	
५३९	नरसंडा	२७	४९	१९		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
५४१	नवीपुर	१२	५			
५४२	नयाडीसा	१७	२७	१४		
५४३	नरोडा	२०	१७			
५४५	नवसारी (पु.)	१५४	३१२	१६९	३५	
५४६	नवसारी (स्त्री.)	१०	१३	३		
५४७	नांदोल	२९	४८	२९		
५४८	नार	३३	२२	२४		
५४९	नारदीपुर	७	१५	७		
५५०	नावली	४०	३१	२७		
५५१	निंबाहेडा		६९	१०		
५५२	पगुथन	२८	१५	७		
५५३	पणसोरा	१६	७			
५५४	पडवा	१५	१			
५५६	पलसाना	२४	३३	४०		
५५७	पूसुंज	१४९	७३	३०		
५५८	पांजरोली	१५	२६	१२		
५५९	पाटडी	१७	२३	८		
५६०	प्रभासपट्टन	२९	१३	१		
५६१	पाटण	२१४	१००	४३	११	
५६३	पादरा	५७	८७	४४	२५	
५६४	पादरिया (गु.)	१६	२१	९		
५६५	प्रान्तिज	३७	३७	१०	१४	
५६७	पानसर	२७	२७	१३		
५६८	पानोल	२७	३	४		
५६९	पारडी	४८	३६	[illegible]		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
५७०	पारखेत	३६	१४	७		
५७१	पालनपुर	५१	४७	२०	६	
५७३	पालीताना	१२	३५	१८		
५७४	पालेज	४	१४	२		
५७५	पिठाओी	३९	३१	६		
५७६	पीपलाव	४०	१७	७		
५७७	पीलवाओी	३१	३१	३६	१५	
५८०	पीपलाता	१६	२९	१४		
५८१	पुनियाद	८	३३	१४		
५८२	पुंधरा	२४	२१	१६		
५८३	पेटलाद	२३०	१६२	३८	९	
५८४	पोर	४८	२०	१५		
५८५	पोरबन्दर (पु.)	८९	११७	४५	३३	
५८६	पोरबन्दर (स्त्री.)	२३	१४	७		
५८८	फागडोल	१४	१	२		
५८९	बगवाड़ा	५९	५०	१०		
५९०	बगसरा	३९	१३	३		
५९१	बडौदा	९०५	१०८३	३५७	१७९	
५९२	बलसार	२३०	१७७	४६	७	
५९३	नरबाला	४९	३४	११		
५९४	बहुधान	२७	२३	११		
५९५	बेचराजी	१८	३२	११		
५९६	बहादरपुर		३५	१२		
५९७	बदलपुर	५७	१२	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
५९८	बहेरा	७	९	८		
५९९	बाँकरोल	६	११	९		
६००	बाँकानेर (सौ.)	४४	४३	४		
६०२	बाँच	४२	१९	५		
६०३	बागीदोरा	८	११			
६०५	बांटवा	४७	२२	१०		
६०७	बांधणी	११	१३	६		
६०८	बामणा	७७	७	३		
६११	बालासिनोर	११७	९१	६०	१३	
६१२	बालिसना	४३	२६	८		
६१३	बावला	३५	४९	२४		
६१४	बाबरा	२१	६	४		
६१५	बासंदा	५५	४५	२१	१६	
६१६	बांसवाडा	३१	३५	४		
६१९	बीलखा	२५	२४	१		
६२०	बीलोद्रा	७	६	५		
६२२	बुआ	६	१०	३		
६२३	बुहारी	४	४	२		
६२५	बांडेली	२७	१८	२०		
६२७	बोरसद	६३	६९	३५	१२	
६२९	बोरीआवी	७३	५१	१४		
६३०	भंडियाद	२३				
६३१	भरुच	१७७	२४६	१५२	४६	
६३२	भचाऊ	५	९	१		
६३५	भानवड	२७	२१	२		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
६३६	भादरण	१२	१८	१		
६३७	भादरवा	७	६	६		
६३९	भालेज	३१	५४	१७		
६४०	भालोद	६	१३	११		
६४१	भावनगर	१३८	१५७	७४	१६	
६४२	भिलोडिया	१०	१६	४		
६४३	भुज	२८	२७	३१	१७	
६४५	मंगरोडा	१६	४	३		
६४६	मढी	२१	२१	४		
६४७	मंडाला	९	२४	७		
६४८	मंजीपुरा	५८	४०	१८		
६५०	मारोली बाजार	३८	७१	१३		
६५१	महेमदाबाद	९८	१०२	४३		
६५२	महिज	४१	३५	१८		
६५३	महीसा	३७	१७	१०		
६५४	महुआ	८४	५३	११		
६५६	महुआ (सूरत)	५२	२१	१४	१०	
६५७	महेलोल	६	१५	१४		
६५८	महेसाणा	१०४	१४५	९३	२९	
६५९	महोलेल	४८	२६	६		
६६०	मांजलपुर	६	१९	१४		
६६१	माढी	१२	९	६		
६६२	मांडल	२२	१८	६		
६६३	मांडवी	२८	२४	७		
६६४	माणसा	४८	२४	७		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
६६५	मानावदर	३६	८	४		
६६६	मानेकपुर	३०	८	६		
६६७	मानेपुर (सूरत)	१७	११	१०		
६६८	मारत खेड (गु.)	३१	४९	८		
६६९	मालपु (जबूमर सूर.)	२४	१४	१४		
६७१	मालपुर (भड़ोंच)	२८	२३	८		
६७२	मालवण	३३	२२	११		
६७५	मासररोड	१२	१५	१		
६७६	मियासरभाण	२२	४५	१५	२२	
६७७	मियामातर	९	१७	५		
६८१	मूली	१२	३५	१३		
६८३	मेघरज	३९	३८	१७		
६८५	मोंधरोली	८	१९	७		
६८६	मोटादेवलिया	८	५	२		
६८७	मोटा कराला	२२	२६	१५		
६८८	मोटा खुंरवडा	१७	४			
६९०	मोडासा	६३	८५	३९	१४	
६९१	मोभारोड	१५	२४	८		
६९२	मोटीकारेल	३१	३७	१५		
६९३	मोटी फलोद	७	११	१०		
६९४	मोर्वी	११५	१११	३०	८	
६९५	मोथारा (कच्छ)	१०	१४			
६९६	मोरचंद्र	१४	१			
६९७	मोरज	५१	१०	९		
६९९	रणु	७	११	८		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
७००	रढ्ढ	२८	७	३		
७०१	रणुंज	३४	११	७		
७०६	रढीआद	१४	४			
७०७	राठोडपुरा	३२		९		
७०८	राधनपुर	७२	२२			
७०९	राजकोट	२१२	३२३	१५१	५२	
७१०	राजपारडी	१४	२२	१५		
७११	राजपीपला	८३	१०७	९१	२५	
७१२	रांधेजा	७०	३६	१९		
७१४	राजुवाडिया	२८	९	२		
७१५	राणपुर	१९	१७	७		
७१७	रामनगर	७६	४५	२५		
७१८	रामोल	३०	१४	८		
७२०	रोजला	४१				
७२३	रुनाड	१७	१०			
७२४	लखतर	२६	२५	१६		
७२६	लांघनज	१८	२५	१३		
७२७	लाठी	३५	२३	४		
७२८	लाडोल	४०	३३	२३		
७२९	लाभवेल	९	१४	९		
७३०	लींनडी	५९	५६	१९		
७३१	लींनाली	१८	२२	१६		
७३२	लींमेट	२५	१७	६		
७३३	लुनावडा	२३	२२	१९	६	
७३४	लोद्रा	२२	१३	१५		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के.क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
७३५	वघासी	२४	२१	१२		
७३७	वणसोल	२३	१४			
७३८	वडदला	१३	२			
७३९	वड़ाद	३२	३७	१९		
७४०	वांडिया	१५	६	५		
७४२	वडथल	६४	३४	१२		
७४३	वडनगर	१३८	६५	१२		
७४४	वंथलीसोरठ	३०	९	४		
७४४क	वडू	८	१८	१२		
७४५	वडताल	३३	३९	३		
७४७	वढवाण (श.)	१७५	१७२	६१	४२	
७४८	वतरा	२१	१०	२		
७४८क.	वणीसा	१६	२१	१४		
७५०	वनोडा	१६	१	१		
७५१	वरणामा	१४	९	६		
७५३	वरधरी	१२	१२	२		
७५४	वलणपरव	१३	१३	६		
७५७	वसाओ	७	११	१६		
७५८	वसावड	२६	५			
७५९	वसो	४८	५७	५२	२६	
७६१	वाभज	१३	११	८		
७६२	वाघोडिया	३२	४१	१३		
७६४	व्यारा	२७	७७	६६	१५	
७६५	वाघेथा	१९	२०	६		
७६६	वांक्रम	१७	३८	१२		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
७६७	वालोड	१३	११	७		
७६९	वासण	३५	३४	१५		
७७०	वासणा	१०	१६	१०		
७७२	बासद	२१	२३	१६		
७७३	विरोल	२३	२३	८		
७७४	विजापुर	५७	५३	११		
७७७	विसनपुर	१३६	१३८	८५	१७	
७७८	विरमगांव	५५	६२	२५	१२	
७७९	विहान	३	१४	१४	१६	
७८३	वीरसद	३९	३७	९		
७८५	वेजलपुर (पंच)	२६	२८	१५		
७८६	वेजलपुर (भरुंच)	७१	६३	४२		
७८७	वेड़ा	२१	१०	६		
७८८	वेरावल	७०	७			
७८९	वेस्मा	६५	२५	१५		
७९०	शहेरा	३२	२१	१२		
७९१	शामपुरा	२	१२	२		
७९२	शिवराजपुर	१४	६			
७९४	शुक्लतीर्थ	४९	६०	१४		
७९५	शेवणी	२	५	१०		
७९६	शिकेर	९९	३९	२		
७९७	संखडा	६१	८७	३४	१३	
७९८	सगडोल	२	८	५		
७९९	सजोद	४१	१४			
८०१	संतरामपुर	५१	३२	२०	१४	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
८०२	सरखेज	४५	३६	२०		
८०४	सरसवणी	१	१०	१५		
८०५	सरढव	१२	१३	८		
८०७	सरी स्टेशन	१८	१३	५		
८०८	समनी सत्राल	७३	२४	४		
८१०	सलाल	१४	१९	१०		
८११	सलुन	१८	१८	७		
८१२	सांडालाल	२८	१०	८		
८१३	साणंद	६७	४४	२३		
८१४	साघी	३	१०	२		
८१५	सांघली	५०	३८	२७		
८१६	सामरखा	४५	४४	८		
८१८	समौ	११	४	९		
८१९	सारसा	४७	३५	५		
८२१	सावली	५२	३८	९		
८२२	सिद्धपुर	३६	६७	१६		
८२३	सीली	८	११			
८२४	सीनोर	५६	७७	४०	१९	
८२५	सिंहोल	२५	१८	९		
८२६	सिंहुज	१९	२४	४		
८२७	सीगाम	११	२७	१४		
८२८	सुठीया	१९	८	९		
८३०	सुंदलपुरा	३१	२२	९		
८३१	सुदासना	१२	३	१		
८३२	सूरत	४४१	७४३	५३५	१२७	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति.

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
८३३	सुरासामल	३६	२०	५		
८३४	सुलतानपुर	५२				
८३५	सेजाकुआ	५	१८	९		
८३८	सोजित्रा	६७	११५	२५	११	
८३९	सोनगढ़	१६	१६	५		
८४०	सोनासन	१५	१२	४		
८४१	सीतपोल	४६	२८	५		
८४२	हलधरवाल	१२	९	३		
८४३	हालोल	६१	६६	२५	६	
८४४	हाँसोट	३६	५२	४०	१५	
८४५	हिम्मतनगर	५१	८६	४६		
८४६	हलवद	३८	४५	१४		

४२३ जोड़ १८६६४, १७७३३, ८६०५, १९२४, =४६९२६

महाराष्ट्र

८४७	अकलूज	७१	६९	२४
८४८	अक्कलकोट	४४	२६	१२
८४९	अंकली	३८	३२	६
८५२	अट्रावल	१९	१८	३
८५६	अमोना	१४	४	२
८५९	अमलनेर	२९	४१	३०
८६२	अष्टा	४३	५५	३३
८६३	असोलना	२३	२९	५
८६४	अहमदनगर	२३५	३६९	१९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
८६५	आगाशी	१८	१८	१०		
८६६	आचेगांव	७	१४	७		
८६७	आजरा	८	५	१		
८६८	आँजर्ले	३७	१९			
८६९	अटपाडी	४९	११	६		
८६९ क.	आधार बुद्रुक	२३	८	१		
८७०	आंबप	८	९			
८७१	आमोदे	२२	२५	१८		
८७६	इगतपुरी	२४	१३	१०		
८७७	इचलकरंजी	८६	२७	१८		
८७८	इंदापुर	१४	३	२		
८७९	इस्लामपुर	२३	१७	८		
८८९	उरण	१४	९	५		
८९३क	ओतूर		२१	८		
८९८	अर्जुन	१२८	७२	८		
९००	कठोरे	३०	२६	२		
९०२	कडूस	१५	५	२		
९०६	करगणी	१५	५			
९०७	करजई	१	२	५		
९०८	करमाळा	३९	१७	८		
९०९	करकंब	३४	६			
९११	कल्याण	६	४७	७		
९१२	कल्याण कैम्प	५००	२९६	८०	१३	
९१३	कलवण	१५	७	५		
९१५	कवलापुर	६१	१५			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति,
९१८	क. डिग्रज	७५	१९	७		
९२२	कागल	६९	३३	४		
९२५	कारकोण	२७				
९२७	कासारे	६	१३	३		
९२८	कासावली	१६	६			
९३३	कुकार्ने	२९				
९३५	कुडचर्डे	२७	१४	८		
९३६	कुर्डूवाडी	२३	४५	१३	१९	
९३७	कुंडल	११	८	२		
९३८	कुपवाड	२६	२८	६		
९३९	कुसूर	४५	२४	६		
९४०	कुरुंदवाड	१४	१२	४		
९४३	क. केलली	९	६			
९४५	कोपरगाव	३६	४२	१२		
९४६	कोरेगांव	११	२९	१०		
९४८	कोल्हापूर	१९९	३२७	१५३	५३	
९५३	खर्डा	१५	३०	९		
९५५	खर्शी बारामुरे	२५				
९५६	खखंडी	६	९	३		
९६०	खानोली	२०	१४	४		
९६१	खिर्डी	२७	१८	१		
९६७	खेडा	१५	७	२		
९६८	गडहिंगलज	२६	१०	९		
९७०	गांधली	१०	२			
९७४	गुहागर		९	६		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
९७५	गारगोटी	१२	१७			
९७७	गोंदवले	१३	६	३		
९७९	घोडनदी	१०	२१	१०		
९८५क	चांदवड	८	१५	१३		
९८५क	चांपडगाव	३४				
९८९	चांदरगोवा	१४	९			
९९१	चिकुड	७	१९			
९९७	चिंचोडी	१४	११	२		
१०००	चिनावल	३४	२२	४		
१००० क.	चिपरी	१०	१७			
१००१	चिपळुन	३५	४५	२०	५	
१००३	चोपडा	७९	१४	८		
१००४	जत	३४	३८	१४		
१००५	जमखंडी	६७	५७	२७	१४	
१००८	जवाहर कैम्प	७	३२	१६		
१००९	जयसिंहपुर	४२	४६	३३	१२	
१०१०	जलगांव	५१	९०	४२	३१	
१०१२	जामखेड	८१	३७	१०		
१०१७	जामनेर	१५	४	६		
१०१९	जुन्नर	४७	४२	२२	११	
१०२३	ठाना	१०४	३९	२६	७	
१९२४	डोंगरकिन्हीं	१८	१२	३		
१०३०	त्र्यम्बकेश्वर	५	१४	५		
१०३१	तरडगांव	३४	२५	८		
१०३५	तळोदा	१३	१३	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रे. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१०४५	घोरगव्हाण	८	२६	२०		
१०४५क	दत्तवाड	१८				
१०५०	दहिवेल	४	१३	१		
१०५१	दावोली	५२	३७	९		
१०५३	दूधगांव	४५	१८	९		
१०५९	देवला	३२	१६	६		
१०६०	देवलाली कैम्प	८	५२	९	१४	
१०६४	धुलिया	९७	११९	९६	३२	
१०६९	नंदुरवार	२०	३८	३१	१५	
१०७०	नरडाणे	४०				
१०७१	नवागोत्रा	५	१९	६	७	
१०७४	नसीराबाद	३०	५३	५२	३४	
१०७५	न्हावी	६१	४१	१६		
१०७७	नाडगांव	३	३	१		
१०७९	नांदनांव	१५	१८	१२	१०	
१०८०	नांद्रा	२७	३३	७		
१०८२	नांदणी	२९	३२			
१०८४	नामपुर	९	८	७		
१०८६	नारगोल	२६	३६			
१०८७	नारायणगांव		४६	२६		
१०८९	नासिक शहर	४९	९३	५७	१७	
१०९१	नासिक रोड	५०	९३	६२	२१	
१०९२	निजामपुर	२२	३			
११०२	नेवासे खुर्द	१४	४			
११०४	पंढरपुर	६९	८६	५९	१४	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
११०७	पन्हाळा	९	१५			
११०९	पांचगणी	८	१६			
१११०	पाचोरा	११	१४			
१११२	पाडलसा	६	४			
१११३	पाथर्डी	६	२१	११		
११२१	पाळेखुर्द	५	१२	३		
११२७	पिंपोडे	५	४	८		
११३१	पूना	४०३	८६०	४१३	२७७	
११३३	पेठ	१३	५	७		
११३९	फैजपुर	९	३१	२०	१०	
११४०	फोंडागोवा	१६	९	३		
११४२	बनपुरी	८	१२			
११४३	बहादुरवाडी	१०	१२			
११४७	बामणोद	१८	१०	३		
११४८	बाम्बोरी	२४	२०	२		
११४९	बार्शी	१०८	११९	६९	१९	
११५१	बारामती	१३३	१५५	८०	२२	
११५३	बालचंदनगर	१७	२७	१०		
११५८	बुर्ली	२८	४			
२१६२	बोदवड	२	२२	१०		
११६३	बोरगांव	२३	१३	६		
११६९	भादली बु.	८	१०	१०		
११७०	भानसहिवरे	१२	१९	५		
११७१	भालोद	३४	४४	४३	३६	
११७३	भिंगार	३१	२४	९		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
११७४	भुसावळ	१	१३	८		
११७५	भुईंज	२४	६			
११७९	मंगलवेढे	६	६	३		
११८१	मलणगांव	२६	८			
११८२	मडगांव (गो.)	१८२	७९	१५	२०	
११८४	मनमाड	१३	३३	१९		
११८८	मरी आईचिपाडी	२२	५			
११८९	मलकापुर	५०	१८	११		
११९१	म्हैसाळ	२७	१४			
११९५	म्हापसा	२२	८	१		
११९७	माखजन	२१	४	३		
१२०२	मांडवगण	११	५			
१२०३	माढा	१२	१२	६		
१२०७	माधवनगर	२७	२५	१५		
१२१३	माळशिरस	३२	२८	१		
१२१६	माळीनगर	१६	११	७		
१२१७	माळेगांव	२७	२२	११		
१२१८	मिरज	२४	५६	१०	९	
१२२१	मुधोळ	३२	१६	८		
१२२४	यावल	८	५१	५८	१९	
१२२५	येलावी	४१	२०	४		
१२२६	येल्लूर	६	४२	३०	१६	
१२२७	येरवडा	६	८	१२		
१२२८	येवलें	१९५	१८	२४		
१२३०	रत्नागिरी	१४	१२	३	५	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
१२३३	राजापुर	६	२२	१७	१४	
१२३६	रामानंदनगर	८	१९	११		
१२३७	रामदुर्ग	५०	५६	१२		
१२३९	रावलगांव	६३	२८	३०	११	
१२४२	रोझोदे	१०		२		
१२४३	रोहा	१०	२१	२२		
१२४४	रुकडी	५८	६२	२०		
१२४५	रिलीफपिंपरी कैम्प	३९	५			
१२४९	लासलगांव	७	१६	५		
१२५४	लोणावडा	५३	१४	१०		
१२५५	लोणीकालमोर	८	१६			
१२५७	लोह्योणेर	६	११	१		
१२६२	वाढे		३४	९		
१२६७	वरणगांव	६४	२६	७		
१२७०	वसई	४१	६२	३८	२५	
१२७१	वसंगडे	५४	८			
१२७२	वाई	३२	३७	१७		
१२७४	वाघोली	२१	९			
१२७८	विंचूर	३४	४	६		
१२७९	विचखेडे	२०				
१२८७	विवरे	१४	१७	५		
१२९२	वेंगुर्ला	१२	२७	६	२०	
१२९३	वैराग	३०	२९	६		
१२९७	शिरपुर	२५	२२	५		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
१२९९	शिरवल	४१	२८	१८		
१३०४	शिरुड़	७	११	९		
१३०५	शिरोल	२९	६	७		
१३०६	शेटफले	३७	३			
१३०८	शेडशाल	४५	१०			
१०३९	शेंदुर्णी	१२	२१	१४		
१३१४	संगमनेर	३५	७०	२८	७	
१३१६	सटाणा	५२	९३	७५	१०	
१३१७	सलावतपुर	२१	२	२		
१३१९	सा. देवलाली कैम्प	४	१४	१०		
१३२१	साकोरे	२६	७			
१३२२	साक्री	८	१७	३		
१३२५	सांगली	७९	९५	३२	२१	
१३२८	सातारा	२६	९२	७३	३३	
१३३०	सातारा कैम्प	२१	१७	२४		
१३३१	सातोदकोलवद	४२	१४	६		
१३३२	सायखेडे	३९	४१	११		
१३३३	सारंगखेडा	५५	१४	७		
१३३५	सालवें	१२	९			
१३३६	सालवा	४	६	१		
१३३९	सावदा	६४	६९	२४		
१३४०	सिंदखेडा	३६	३१	२७		
१३४१	सिन्नर	१७	५८	४३	१७	
१३४३	सुसरी	१	१०	६		
१३४४	सोलापुर	४५१	३९९	२०९	८०	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	केन्द्र संख्या	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	कुल
१३४५	सोमेश्वर	३२		२		
१३४७	हंबर्डी	५	४	१		
१३४८	हलकर्णी	२६	१४	१३		
१३५०	हिंगणे	३१	२५	१४		
१३५१	हिंगणा	२२	२७	१३		
५३५२	हुमगांव	५	९	१		
१३५४	होलनाथांव	३	१०	७		
२१७	जोड़	७६९४	७०६४	३४०९	१०००=	१९१६७

बम्बई

अंधेरी	१६	३१	१०		
अंधेरी (नव गु.)	५	१६	१२		
कांदिवली	१९	३१	७		
कालबादेवी	१६२	१६२	६२		
कुर्ला	५२	९४	१८		
कोट	१८४	१५४	५६		
खार	५४	४२	३९	२९	
गिरगांव	८१३	९७२	५१५	२२५	
घाटकोपर	१०२	१०९	४६	१५	
डोंगरी	२०	३८	२०		
दादर	४८७	६६९	२९७	१२६	
परेल	११७	१५३	९८	५६	
बांद्रा	८८	२०	६		
बोरिवली	४८	६२	५२	२९	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
	माहिम	८२	१३४	१११	६४	
	माटुंगा	४११	३१३	१८३	४७	
	मांडवी	१४	२९	२८		
	मालाड	६५	१४७	५२	२०	
	लालबाग	६९	४४	१४		
	वरसोवा	२३	३९	१६		
	विलेपार्ले	५५	२१९	१३९	६८	
	विरार	१८	३७	१०		
	शांताक्रुझ	१७	७२	३२		
	शिव	१५	२१	१२		
	२४ जोड़	२९३६	३६०८	१८३५	६७९	९०५८

आंध्र

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
११७०	अनकापल्ली	६	६	१	४	
११७५	कोमरिपालेम				५	
११७७	गुडिवाड़ा				६	
११७९	गंडेपुरी	५	१६	१		
११८३	तेनाली				१	
११८८	मद्लपालेम	१	१	५	३	
११९२	विजयानगरम	१२	३			
	७ जाड़	२४	२६	७	१९	७६

कर्नाटक

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
१३५६	अनगोळ	११	३२	११		
१३५७	कुकनूर	२१	२०	५		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
१३५८	गदग	२१	७	६		
१३६२	बेलगांव	१७	४०	१२	८	
१३६३	रबकवी	१९	९	६		
१३६४	विजापुर			२५		
१३६५	शहापुर	१८	३८	१९		
१३६६	हुबली	२५	११	११	१३	
८	जोड़	१३२	१५७	९५	२१	४०५

फुटकर

१६५	कम्पाला		३	१		
१७२	नैरोबी		१३	१		
	नासिक शहर				४	
	चैम्बूर कैम्प	६९	२४	८		
	माटुंगा		२	१		
	सोजित्रा				२	
	अहमदाबाद				३	
जोड़		६९	४२	११	९	१३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा विद्यालय, वर्धा

का

—:दूसरा सत्र:—

हिन्दी आज हमारी राष्ट्रभाषा घोषित हो चुकी है। अतः प्रत्येक
तका हिन्दी सीखना अनिवार्य हो गया है। अभी तक वर्धामें
की अुचित व्यवस्था नहीं थी। अिस कमीको दूर करनेके लिये
भाषा प्रचार समिति, वर्धाकी ओरसे अेक राष्ट्रभाषा विद्यालय
लंगपुरा, स. नं. ११ अेस. पी. गोळे वकीलके ऑफिसके अूपर]
पित किया गया और पहले सत्रके विद्यार्थियोंने फरवरीमें अपनी
क्षाअें दीं। अभी दूसरे सत्र की पढ़ाअी ता. ५-३-५० से फिर चालू
गयी है। जो भाअी-बहन राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखना चाहें, या हिंदीकी
क्षाओं [प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय, कोविद, राष्ट्रभाषा रत्न,
मा, विशारद और साहित्य-रत्न] में बैठनेके लिये अभ्यास करना
हें, वे निम्नलिखित पतेपर [संचालक, राष्ट्रभाषा विद्यालय, तेलंग-
रा, स. नं. ११ से] मिलें या पत्र-व्यवहार करें।

हर-अेक परीक्षाका शुल्क निम्न प्रकार है:—

विद्यालय प्रवेश शुल्क १) रु.

प्रारंभिक	— प्रति माह १)	प्रथमा	— प्रति माह ३)
प्रवेश	— ,, ,, १॥)	विशारद	— ,, ,, ४)
परिचय	— ,, ,, २)	राष्ट्रभाषा रत्न	— ,, ,, ६)
कोविद	— ,, ,, ३)	साहित्यरत्न	प्रति भाषण १)

[विद्यालयका समय सुबह ८ से ११ बजे तक और शामको २ से ५ बजे तक है। बाहरसे आनेवाले विद्यार्थियोंको अपनी भोजन आदिकी व्यवस्था स्वयं करनी होगी। विद्यालय सम्बन्धी विशेष जानकारीके लिये ≡) की टिकिट भेजें।]

—श्रीचरण आजाद 'विशारद'
संचालक,
राष्ट्रभाषा विद्यालय, वर्धा (सी. पी.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

गुरुकुल-पत्रिका
गुरुकुल काँगड़ी

पुराने प्रश्नपत्र प्राप्य

१. प्रारंभिक-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-४-०
२. प्रवेश-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-६-०
३. परिचय-प्रश्नपत्र	[सन् ४७ से ४९ तक]	०-८-०
४. कोविद-प्रश्नपत्र	[,, ,,]	०-१०-०

राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके पुराने प्रश्नपत्रोंकी माँग हमेशा अधिक रही है। पीछे हम अपने बहुतसे ग्राहकोंको अुनके मँगाअे हुअे संपूर्ण सेट नहीं भेज सके। कारण, खुले प्रश्न-पत्र होनेसे अुनके चुनने और भेजनेमें काफी परेशानी व विलंब होता था। अिस कमीको दूर करनेके लिये अब परीक्षा-क्रमके अनुसार पुराने प्रश्नपत्र अलग-अलग पुस्तकाकार छपाअे गअे हैं। परीक्षार्थी जिस परीक्षाके प्रश्न-पत्र चाहे, मँगा सकता है।

परीक्षामें बैठनेके पूर्व यह जान लेना अत्यंत जरूरी है कि अुसमें किस तरहके प्रश्न पूछे जाते हैं। अिसके लिये हरेक परीक्षार्थीको चाहिये कि वह पुराने प्रश्नपत्रोंको अेक बार अवश्य पढ़े,-पढ़े ही नहीं-अुन्हें अपनी बुद्धिसे, अपने अनुभवसे हल भी करे, ताकि अपनी परीक्षामें पूछे जानेवाले प्रश्नोंको वह ठीक ठीक समझ सके और अुनके सही अुत्तर लिख सके। परीक्षार्थियोंको यह सुविधा प्रदान करना ही अिन प्रश्न-पत्रोंको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेका अुद्देश्य है।

हरेक खुला प्रश्नपत्र दो पैसेके हिसाबसे बेचा जाता है। लेकिन अिन संगृहीत प्रश्नपत्रोंका मूल्य हमने अपेक्षाकृत कम रखा है। आशा है, परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

—प्रकाशन-विभाग

मुद्रक---सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

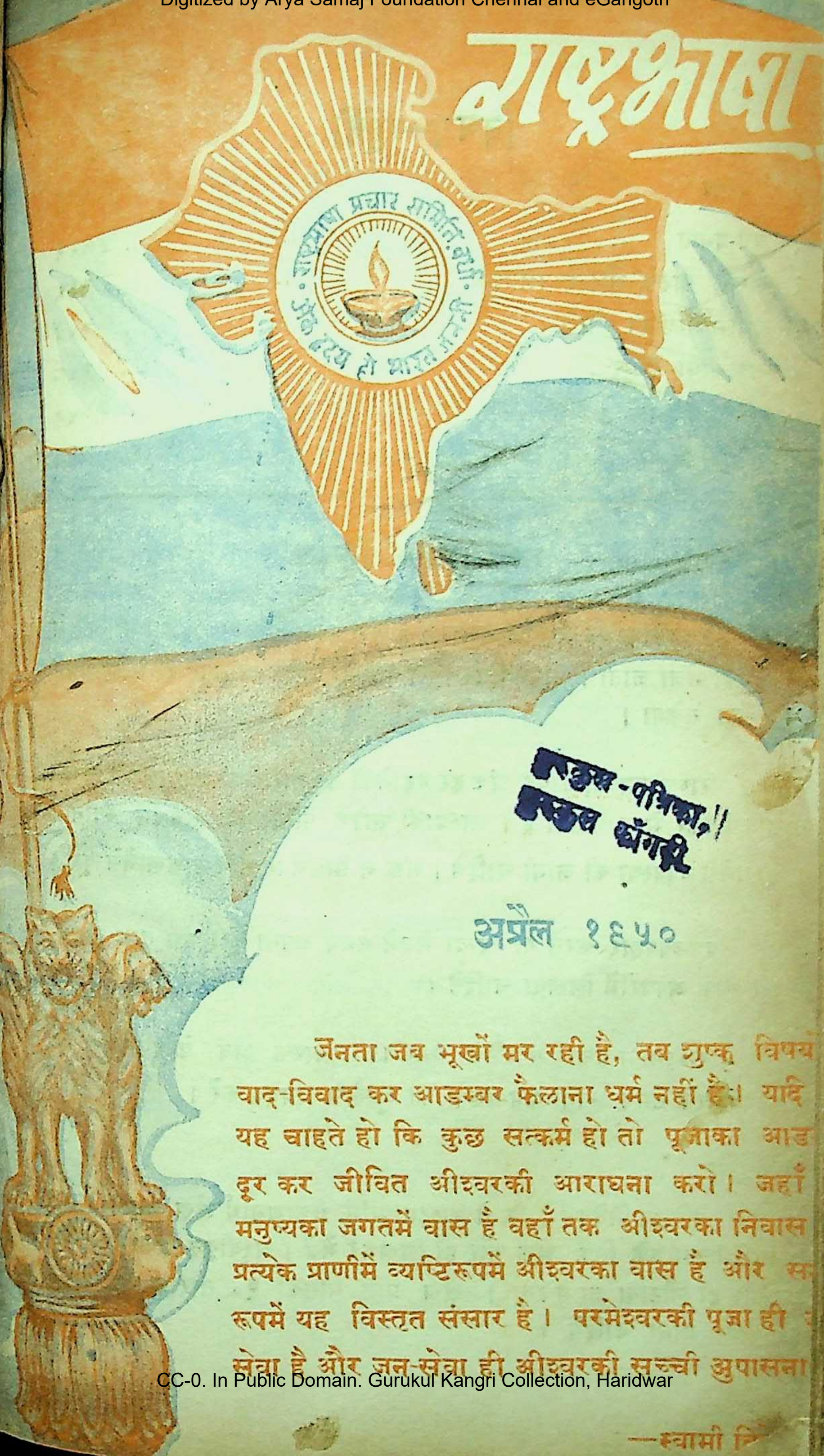

राष्ट्रभाषा

स्कूल-पत्रिका, स्कूल कांगड़ी

अप्रैल १९५०

जनता जब भूखों मर रही है, तब शुष्क विषयों पर वाद-विवाद कर आडम्बर फैलाना धर्म नहीं है। यदि यह चाहते हो कि कुछ सत्कर्म हो तो पूजाका आडम्बर दूर कर जीवित ईश्वरकी आराधना करो। जहाँ तक मनुष्यका जगतमें वास है वहाँ तक ईश्वरका निवास है। प्रत्येक प्राणीमें व्यष्टिरूपमें ईश्वरका वास है और समष्टि रूपमें यह विस्तृत संसार है। परमेश्वरकी पूजा ही जन-सेवा है और जन-सेवा ही ईश्वरकी सच्ची उपासना है।

—स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख पृष्ठ

लेख			पृष्ठ
१. युग-प्रभात	...	...	२३३
२. लेखक, पाठक और समालोचक	....	...	२३५
३. प्रधान मन्त्रीकी ओरसे	...	...	२४४
४. राष्ट्रभाषा--संसार	...	....	२४८
५. प्रांतीय हलचलें	...	...	२५१
६. परीक्षा-विभाग	...	....	२५६

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है । वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता । मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभाषा' भेजा जा सकेगा ।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक हर महीनेकी १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है । अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये । अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें ।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक-नम्बर साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये ।

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारक अेवं केन्द्र-व्यवस्थापक पत्र-व्यवहारके समय अपनी क्रम-संख्या का अुल्लेख अवश्य करें ।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि वे 'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें । अस्वीकृत लेखोंको टिकिट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा । लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी.

राष्ट्रभाषा

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी.

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, अप्रैल—१९५० [अंक ६

युग-प्रभात

: श्री तरुण :

युग-प्रभात- अरुणिमा !
आ रही अपार ज्योति जा रही है कालिमा।

अुठ रही लहर यहाँ—
न सिन्धु है, न धार है,
नाचती है कल्पना—
न रूप है, न प्यार है,
ज्वार है अपार, किन्तु चांदनी न पूर्णिमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत जागरण लिये—
गा रहा अनन्त है,
पुष्प आभरण लिये—
हँस रहा वसन्त है,

मन्द वायुके चरण—अमन्द ज्योति रक्तिमा ।

झनझना अुठी नहीं—
बेड़ियों की वेदना,
क्या तुम्हें हुअी नहीं—
बन्दिनी की कल्पना,

नये क्षितिजमें अुठ रही, नयी स्वतंत्र लालिमा ।

राष्ट्र अुठ खड़ा हुआ—
चेतना है जागती,
आरती अुतारती—
आ रही है भारती,

है बिखेरती चली, ज्ञान—राशि—मधुरिमा ।

युग-प्रभात-अरुणिमा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक, पाठक और समालोचक

: श्री. शीलभद्र साहित्यरत्न :

यद्यपि लेखक, पाठक अेवं समालोचक तीन विभिन्न धर्मावलंबियों की तरह कभी कभी आपस में झगड़ भी लिया करते हैं, तथापि ये तीनों समान धर्मावलंबी हैं। कवि या लेखकके निजी व्यक्तित्वसे पृथक अुसीमें अुसके आलोचकका व्यक्तित्व भी छिपा रहता है। आलोचक की अन्तर्दृष्टि कितनी ही निर्लिप्त क्यों न हो, अुसके अन्तर्मनमें भी कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकारकी कवि-सुलभ भावुकता अवश्य ही रहती है और यही भावुकता अुसे रसबोधमें सहायता पहुँचाती है।

पाठकका स्थान कवि और आलोचकके मध्यमें आता है। वह कविकी तरह न सत्यको सौन्दर्यसे मंडित कर अपूर्व रस-सृष्टि कर पाता, न अपने ज्ञान-गौरव का अुद्घोष करते हुअे जिस-तिस की खबर ही ले सकता और न प्रच्छन्न सत्य अेवं अस्पष्ट कला की, चतुर पारखी की तरह, व्याख्या ही कर पाता है, पर यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि लेखक और आलोचक दोनों की ही कलाका अुपभोक्ता है पाठक। अुसीको लक्ष्य कर कलाकार अेवं समीक्षक अपनी कृतियों की सृष्टि करते हैं; चाहे अुसे अुपदेश देनेके लिये अथवा अुसके मनोरंजनके लिये।

समीक्षक भी या तो कलाकारके काव्यगत सौन्दर्यको जनता तक पहुँचाना चाहता है या अुसके प्रलोभनसे जनता को दूर रखनेके लिये अुसकी कटु आलोचना करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य राजशेखर ने कवि और पाठक [क्षण भर के लिये पाठक आलोचक को अेक ही मान लीजिये] दोनोंमें ही कारयित्री अेवं भावयित्री प्रतिभाको आवश्यक माना है। जिस भाँति कारयित्री प्रतिभाके अभावमें लेखक रचयिता नहीं बन पाता असी प्रकार भावयित्री प्रतिभाके बिना आलोचक आलोचक। पाठक भी तब तक लेखक की सौन्दर्य-सृष्टिका मर्म अुपलब्ध नहीं कर पाता जब तक अुस मनः स्थिति की वह कल्पना न कर ले जिसके आघातसे लेखक की हृदय-वीणाका तार काँसेकी फूटी हुअी थालीकी तरह झनझना अुठा था। प्रत्येक कलाकारके व्यक्तित्वमें कवि, पाठक (साधारणसे अूपर सम्वेदनशील) और आलोचक का व्यक्तित्व भी सम्मिलित रहता है। कविके निजी (साधारण सम्वेदनशील) व्यक्तित्वसे अुसे अनुभूति, कवि या लेखकके व्यक्तित्वसे कल्पना और अभिव्यक्तिकी शक्ति अेवं आलोचकके व्यक्तित्वसे औचित्य-अनौचित्यकी निर्णयात्मिका बुद्धि प्राप्त होती है।

कविको अनुभूतिसे भाव, सामाजिक अेवं कालगत रीति-नीतिसे कला और सामाजिक स्थितिसे, जिसमें वह पलता है, संस्कार प्राप्त होते हैं। जिन संस्कारोंके कारण वह बहुत कुछ अंशोंमें सांसारिकोंसे अधिक समवेदनशील होनेपर भी सांसारिकोंके लिये अस्वा-भाविक न दीखकर अपनी कलामें स्वाभाविक लगता है।

सामान्य बुद्धिवादीकी ओरसे यहाँ अेक प्रश्न किया जा सकता है— क्या विज्ञान राजनीति अेवं दर्शनकी तरह ही साहित्य अेवं कला की भी कोअी अुपयोगिता है? अिसका अुत्तर भी 'हाँ' में ही दिया जा सकता है और कहा जा सकता है कि यदि रेल, तार, डाक और अन्न-जल अेवं हवाकी अुपयोगिताके समक्ष निर्झरका कल गान, पक्षि-शावकोंके कलरव, शिशुका कल हास्य, रमणी की अुन्मादक मुस्कान अनन्त गगनकी नीलिमा, हिमालयकी अुच्चता और सागरकी विशालताकी कोअी मानसिक अुपयोगिता हो सकती है तो काव्य कलाकी अुपयोगिता भी अवश्य है और अुसे सिद्ध किया जा सकता है।

मनुष्यको आकाशकी गहनताकी ओर देखनेसे भव्यता, हिमालयकी ओर देखनेसे अुच्चता, सागरसे गम्भीरता तथा विशालताका जैसे लाभ होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे ही कंटकोंके बीच खिले फूलसे भी अुसका हृदय अवश्य ही सुकुमारता, द्रवणशीलता और भावुकता का पाठ लेता है ।

कविता और कला भी अिसी प्रकार मनुष्यके अहम् को अिदम् से जोड़नेमें, शेष सृष्टिके साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करनेमें सहायक होती है । सिर्फ रागात्मक सम्बन्ध जोड़नेमें ही नहीं, वस्तु-गत सत्य, को भावगत सत्य बनाकर अुसे हृदय संवेद्य बनानेमें कला जिस अुपयोगिताका परिचय देती है अुसे साधारण विज्ञान सुलभ अुपयोगितासे कम महत्व नहीं दिया जा सकता । अुदाहरणके लिये यों समझें—हम राह चलते अनेकों भिखमंगों या मजदूरिनोंको देखते हैं, देखकर अपने कर्म-कोलाहलमय जगतके कार्यव्यस्त जीवनमें अुन्हें भूल जाते हैं; पर निरालाकी भिक्षुक कविताका—"दो टूक कलेजेके करता पछताता पथ पर जाता" या "वह तोड़ती पत्थर अिलाहाबादके पथ पर" तो हमें झकझोर जाती है, हमारे मानसमें अुथल-पुथल मचा डालती है ।

अितना ही नहीं अुस अुथल-पुथलका प्रभाव जीवन और जगतको मथ कर नअी-नअी क्रांतियोंकी सृष्टि करता है । रूसो, वाल्टेयर और मार्क्सकी रचनाओंके तत्वको जब कलाकार हृदयके निकट पहुँचा पाते हैं तभी तो क्रांतियाँ होतीं और समाज बदलता है ।

अस्तु, सिद्ध यह हुआ कि यह सब कुछ होता है पाठकोंके द्वारा और पाठक ही कवि आलोचकके विचारोंके पीछे हरावलका काम करते हैं । यह सत्य है कि विचार जब जनता द्वारा अपना लिये जाते हैं तभी वे अस्त्रोंका काम देते हैं; पर सिद्ध तो यही हुआ कि सैनिकोंके अभावमें शस्त्रोंका कोअी मूल्य नहीं ।

यही कारण है कि आजके प्रगतिवादी साहित्यक काव्यकी अुपजीव्य वस्तु [हृदयगत सौन्दर्य या शास्त्रीय मान्यताओंकीअपेक्षा] जनता [पाठक] को अधिक महत्व देते हैं । अधिक महत्व ही नहीं देते अुनका तो यहां तक कहना है कि जनता [पाठक] ही सब कुछ है । अुन्हीके हर्ष शोक, अभाव-अभियोग अेवं आकांक्षा-आकूतिको चित्रित करना [illegible] है, और यह [illegible] ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न यह है कि यह पाठक या जनता आखिर कवि या लेखकसे क्या चाहती है। सुप्रसिद्ध फ्रेंच कलाकार मोपांसाका कहना है कि जनता लेखकसे चाहती है :—कम्फर्ट मी हमें सुख दो आराम दो अेम्यूज मी [हमारा मनोरंजन करो] टच मी [हमें छुओ] मेक मी ड्रीम [हमें स्वप्नलोकमें ले चलो] मेक मी लाफ [हमें हंसा दो] मेक मी वीप [हमें रुला दो] [मेक मी थिंक] हमें बुद्धिवादी बना दो।

सारांश अेक वाक्य में यों कहा जा सकता है कि पाठक या जनता चाहती है कि अुसके हृदय में घुट-घुटकर मिटती हुअी तमन्नाओं या हसरतोंको मूर्त रूप देकर लेखक या कलाकार अुसे यह बता सके कि देखो यही तुम्हारी व्यथा—वेदना है न ! और यह रहा अिसका अुपचार।

तो डाक्टर जानसनके शब्दों में सिद्ध हुआ कि साहित्यकारका काम है आनन्द देना या विपत्तियों पर विजयी बनाना। अिस दृष्टिसे सच्ची कला वही कही जा सकती जिसमें अनुपयोगिता, अपर्याप्तता और जीवनकी विरूपताके प्रति विद्रोहकी भावना हो, केवल विद्रोहकी भावना ही नहीं, अुसके स्थान पर सत्य शिवं, सुन्दरम्‌की प्रतिष्ठा करनेकी भावना भी।

आजके साहित्यमें जो पाठक या जनता जनार्दनको ही सब कुछ समझनेकी प्रवृत्ति काम कर रही है वह अच्छी भी है और बुरी भी। जहां तक जनताके सुख-दुःखको ध्यानमें रख अुसके हर्ष-शोक, अभाव-अभियोग अेवं आशा-आकांक्षाके बीच प्रगतिशीलताका सहारा लेकर अुसे विरति—वैराग्य अेवं अकर्मण्यताकी ओरसे मोड़ कर कलाकार अुसे जीवन-संग्रामका कर्मरत योद्धा बनाना चाहता है वह श्रेय है। जितने अंशोंमें लोगोंकी निम्नतम प्रवृत्तियोंको गुदगुदा कर अुनसे पैसे बटोरनेकी कामनासे सस्ते-गंदे सिनेमा-गीत प्रेमी-प्रेमिकाओंके गीत कथानकों आदिकी सृष्टिकी जाती है वह घातक अेवं हेय है। स्मरण रहे कि प्रगतिशील कलाकार या प्रगतिशील विचारक जनता या पाठकके संकेतों पर ही चलना अपना आदर्श न बनाकर अपने सम्मुख अुसके अुद्धारका आदर्श ही रखते हैं और यही वाल्मीकि, व्यास तथा हमारे मध्ययुगके संत-कवियोंका भी आदर्श था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्भाग्यवश जो रीतिकालीन अेवं छायावादी कवियोंने जनताकी अुपेक्षा कर साहित्य शास्त्रके मानदंडों अेवं अपने हृदयकी मार्मिक अनुभूतियोंको ही सर्वस्व समझा अुसीकी यह प्रतिक्रिया है। प्रतिक्रिया अपने आपमें अुतनी ही भयावह होती है जितनी अुपेक्षा। पर अुपेक्षाकी अपेक्षा वह कुछ महत्व इसलिये रखती है कि अुपेक्षा या अुदासीनता मनुष्यको अकर्मण्यताकी और ढकेलती है और प्रतिक्रिया क्रियाशीलताकी तरफ।

जहाँ तक कलाकारका प्रश्न है लेखक भी कभी-कभी विचार करने या अपने विचारोंको किसी रूपमें प्रकट करनेके व्यापारकी सहायतासे अपने आपको वर्तमानकी चुभती हुअी धूपसे अलग रख भूत या भविष्यके मोहक क्षेत्रमें घूमता रहता है। कलाकारके लिये यह प्रवृत्ति सर्वथा खतरनाक है। और यहीं अुसके मित्र-आलोचकका गुरुतम कर्त्तव्य अुपस्थित होता है। यहाँ अुसका काम होता है कि वह अपने पाठकोंको अैसे कृत्रिम भावलोकमें विचरण करनेवाले कलाकारोंकी ओरसे सतर्क कर दे।

कभी-कभी लेखक या कलाकार अपनी कुंठाओं अेवं अतृप्त वासनाओंके वशीभूत हो संसारसे विरत हो अपने दुख-सुखमें ही निमग्न हो जाता है जैसे कोअी अबोध बालक या तो अपने ही अंगूठेको चूसनेकी क्रियामें [आत्म-रतिमें] विस्तृत संसारकी अुपेक्षा करना चाहता या टूटे हुअे खिलौनेकी व्यथासे प्रभावित हो धूलमें मचल-मचल कर रोने लगता है। भोग-विलासके पीछे जग-जीवन को भुला बैठनेवालोंके अुदाहरणसे तो साहित्य भरा ही पड़ा है। अेक अैसा अुदाहरण भी लीजिये जिसमें कवि मचल कर दुनियासे मुंह मोड़ना चाहता और कहता है कि :—

"है चिताकी धूल करमें
मांगती सिंदूर दुनिया
आज मुझसे दूर दुनिया"

या

'...युग बदलेगा किन्तु न, जीवन' [प्रसन्नताकी बात है कि अिस कविताका कवि [बच्चन] अब अिस स्थितिसे दूर है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ कलाकारके सम्मुख अुसके मित्र समीक्षकका निर्मम कर्त्तव्य अुपस्थित होता है और वह अुसे बाध्य करता है कि वह न केवल अपने कलाकार मित्रको ही रोके-टोके, अपितु पाठकको भी अुससे सचेत करते हुअे कह डाले कि देखो तुम्हारा कवि-मित्र अस्वस्थ है। अिसके प्रलापके मोहक शब्द-जालमें मत फँसो।

साहित्य यदि जीवनकी व्याख्या है तो समालोचनाको हम जीवनके व्याख्याता साहित्यकी व्याख्या भी कह सकते हैं।

कवि जब बिना कांटा चुभाये ही कांटेकी कसक या वृश्चिक दंशनकी पीड़ाकी अनुभूति पाठक तक पहुँचाना चाहता है तब अुसमें कुछ अस्पष्टता, अत्यधिक तीव्रताके कारण अतिशय प्रखरता अेवं दुरूहता भी रहा करती है। अिसे दूर कर कविके भाव और लेखकके विचारको पाठकों तक पहुँचा देना भी समीक्षकका ही कार्य है।

भारतीय जीवनके मध्यकालमें जो मंदता आ गअी थी अुसके परिणामस्वरूप हमारी साहित्यिक परम्परामें भी सड़ांध अुत्पन्न होने लगी थी और हमारे रीतिकालीन साहित्यिक भी पिटी-पिटाअी लकीरके अन्दर ही चक्कर काट रहे थे। अचानक जब प्रबुद्ध पाश्चात्योंके सम्पर्कसे हममें नवीन चेतनाका अुदय हुआ तब हमारे साहित्यिकोंने मांडूकोप्लुतिसे अुस चेतनाको चित्रित किया। जनता वहाँतक पहुँचनेमें नअी लाक्षणिकता अेवं नये प्रतीकोंको समझनेमें असमर्थ थी। अतः अुसने अिस काव्य-साहित्यको काव्य-साहित्य न मानकर अिसे छायावादकी संज्ञा दे दी। अैसे समयमें नन्ददुलारे वाजपेयी, शांतिप्रिय द्विवेदी, बाबू गुलाब राय, रामनाथ सुमन आदि आलोचकोंने ही दुभाषियेका काम कर जनताको छायावादकी रंगीनियों, अुसकी काव्यगत विशेषताओं अेवं लाक्षणिकताओंसे परिचित कराया, जो नवयुगकी देन थी।

और जब अिनमेंसे अधिकांश कवि तात्कालीन वातावरणसे अूबकर कल्पना विलासके लिये अपनी कल्पनानुभूतियों द्वारा रचे, सौन्दर्य, प्रेम अेवं करुणाके लोकमें झपकी लेने लगे तब श्री शिवदानसिंह चौहान, डा० रामविलास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा, श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त, श्री भगवतशरण अुपाध्याय, श्री नरोत्तमप्रसाद नागर अेवं श्री नागार्जुन जैसे प्रगतिशील आलोचकोंने अुन्हें रोका-टोका।

समीक्षक या पाठककी अपेक्षा लेखक अिस दृष्टिसे तो महान अवश्य है कि पाठक या समीक्षक नियतिके भौंहोमें पड़नेवाले जिस बल (बांकपन) को या वेगवती सरिताकी चंचलतामें रूपगर्विता नारीकी तरलताको और शशि-तारक-मंडित रजनीमें बादलोंकी नीलिमाके भीतर ओझल होते हुअे चाँदको देख कर मुग्धा किशोरीके मुख मंडलपर झीने रेशमी अवगुण्ठनकी कल्पना कर भाव-विभोर हो अुठता है अुस मात्रामें समालोचक और पाठकमें अिस भावुकताका अभाव अवश्य रहता है, पर अुससे भी यह आशा की जाती है कि वह भी अिसका अनुभव करे, अिसे सोचे-समझे। कम-से-कम किसी कवि द्वारा अेकाध बार सुझाये जाने पर भी तो महसूस करे।

समीक्षकोंपर कटाक्ष करते हुअे अेक बार स्वनामधन्य कलाकार प्रेमचन्दजीने कहा था कि 'असफल कलाकार सफल आलोचक बन जाता है।' और यह कहावत भी प्राचीन है कि "कवि करोति काव्यानाम् रस जानन्ति पंडित:", यह सत्य है कि यदि कवि किसी कलाकृति द्वारा मानव समाजको भाव-विभोर कर शेष सृष्टिके साथ अुसके रागात्मक सम्बन्धको जोड़कर अुसे लोक सामान्य भावभूमिपर अुतरनेको प्रेरित करता है तो समीक्षक अुसके द्वारा अुपलब्ध सत्य, सौन्दर्यकी व्याख्या कर अुसमें चार चाँद लगा देता है।

साथ ही यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी दुष्ट समीक्षक अपनी आँखोंमें छिद्रान्वेषणका अंजन लगा लेनेके कारण बिच्छूकी पूंछकी तरह विष-बुझी कलमसे लेखकोंके मर्म-स्थलको व्यर्थ हा क्षत-विक्षत कर डालते हैं। अिसे ही पाश्चात्य लेखकोंने आलोचकका विषडंक बताया है।

वार्तिककारकी तरह "अुक्तानुक्त दुरुक्त चिन्ता" ही जहाँ आलोचकका गुण होना चाहिअे वहीं अुसके लिये अिस बातकी भी आवश्यकता है कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक या कलाकारकी मूल प्रवृत्तियों और अुन भावनाओं अेवं भावोद्दीपक क्षणोंसे भी परिचित हो सके जिसने कलाकारको कलाकार बननेको प्रेरित किया है। वह यह भी देख सके कि कलाकारमें संकल्पात्मक अनुभूति अर्थात् अपर्याप्तता के प्रति विद्रोह करनेकी कितनी क्षमता है। अुसके लिअे काव्यके शरीर अर्थात् कला पक्षकी जानकारी भी अनिवार्य है। अलंकार, व्यंजना, वक्रोक्ति आदिके प्रयोगोंके साथ-साथ अुसे रीतियों (विशिष्ट पद रचना) का ज्ञान भी आवश्यक है। स्वर्गीय प्रसादजीके अनुसार—"प्रत्येक युगकी काव्यानुभूति युगके अनुसार अपना प्रतीक चुन लेती है" और स्वनामधन्य कलाकार दिनकर के अनुसार "हम कलामें नवीनता क्यों चाहते हैं? अैसा क्यों होता है कि वाल्मीकि और कालिदासकी कविताओंके रहते हुअे भी हम नअी कविताअें पढ़ना चाहते हैं? क्या अिसलिये कि नअी कविताअें पुरानी कविताओंसे अधिक सुन्दर होती हैं? नहीं यह बात नहीं है। असल कारण यह है कि ज्यों ज्यों समय बीतता जाता है मनुष्यकी भावनाओंपर नया रंग चढ़ता जाता है। अैसा भी होता है कि प्राचीन भावोंकी अनुभूतियाँ भी बदल जाती हैं और नवीनताके अिस वातावरणमें प्राचीन साहित्य कुछ बेमेल-सा मालूम पड़ने लगता है। अिसी मेलको बिठानेके प्रयाससे नवीन साहित्य अुत्पन्न होता है।"

अतः आलोचकको अपने युगके समस्त संस्कारों, अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं तथा अपने युगकी माँगके प्रति सजग रहना होगा। और वह यदि दो सामयिक कलाकारोंकी भाव धारासे भी पूर्णतः परिचित है तभी अुसकी आलोचना तुलनात्मक या वैज्ञानिक कही जा सकती है।

कविके सम्बन्धमें कुछ निर्दिष्ट करना अुसका अपमान तो नहीं है, पर प्रायः वह अिसे अपनी भावुकताके कारण अपना अपमान ही समझता है। अिस लिये आलोचकों ने अुसके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है अुसे दुहरानेका अपराध किये बिना अितना ही कहा जा सकता है कि वह चींटीकी तरह सिर्फ अपने आहार-विहार (जिसमें काव्यकी अुपजीव्य वस्तुका चयन भी सम्मिलित है) के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये ही विधि-निर्मित रक्षा-कवच नहीं तो स्वनिर्मित भावनाओंके वर्मके बाहर आकर जीवनकी कठोरता अेवं धरतीकी व्यवहारिकताका जितना ही अनुभव करेगा अुतना ही अुसका और अुसके समाजका कल्याण होगा।

रही बात पाठकोंकी सो "अुनके अज्ञानको ही अुनके लिये वरदान" न मानते हुअे भी मैं अिस कारणसे अुन्हें ही सर्वोत्तम समझता हूँ कि वे कवि, लेखक या आलोचक से कहीं अधिक स्वाभाविक मानव होते हैं। वे प्रकृतिके अधिक निकट होनेके कारण पहले मनुष्य हैं फिर कुछ और अतः भला अिस सन्तवाणीको क्या कौन कर सकता कि—"सबार अूपर मानब ताहार अूपर नाभि।"

साहित्यका आनंद

मनुष्य, जीवन पर्यंत आनन्द ही की खोजमें पड़ा रहता है। किसीको वह रत्न या द्रव्यमें मिलता है, किसीको भरे पूरे परिवार में, किसीको लम्बे चौड़े मकानमें, किसीको अैश्वर्यमें, लेकिन साहित्यका आनन्द अिस आनन्दसे अूँचा है, अिससे पवित्र है। अुसका आधार सुन्दर और सत्य है। वास्तवमें सच्चा आनन्द सुन्दर और सत्यसे मिलता है। अुसी आनन्दको दर्शाना, वही आनन्द अुत्पन्न करना साहित्यका अुद्देश्य है।

—प्रेमचन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी प्रकाशन योजना

अिस बारेमें सभी अेकमत हैं कि विधान-परिषद् द्वारा देशकी राष्ट्र-भाषा अथवा राज्य-भाषाका निर्णय हो चुकनेके बाद सभी समर्थ राष्ट्रभाषा-प्रेमियों को राष्ट्रभाषा-प्रचार तथा राष्ट्रभाषा-शिक्षण-कार्यके साथ-साथ राष्ट्रभाषा साहित्य-निर्माणके ठोस कार्यमें लग जाना चाहिअे।

पिछली सारी शताब्दीमें देशकी किसी अेक भी भाषामें जो अप देशका राजकीय कार-बार नहीं होता रहा अुससे देशकी भाषाओं और अुन साहित्यिक विकासमें अवरोध अुपस्थित हो जाना स्वाभाविक था। अब देश सभी भाषाओंके लिये, विशेष रूपसे राष्ट्रभाषा हिन्दीके साहित्यके लिये आ विकासका अनुकूल अवसर अुपस्थित हुआ है। हमारा कर्त्तव्य और समय मांग है कि हम कम-से-कम अिस अवसरपर प्रमादी न बने रहें।

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने पिछले कुछ दिनोंके विचार-विमर्शके ब महापंडित राहुल सांकृत्यायनके सुझावके अनुसार अपने लिये राष्ट्रोपयोगी सा निर्माणकी अेक विनम्र योजना स्वीकार की है। हमें आशा है कि हम हि संसारकी शुभ कामना और सहायता के भरोसे न केवल अुसे आरम्भ कर स किन्तु यथाशीघ्र समाप्त भी कर सकेंगे।

समितिने छः प्रकारके ग्रन्थ प्रकाशित करनेका विचार किया है (१) कोश-ग्रन्थ, (२) स्वयं-शिक्षक ग्रन्थ, (३) व्याकरण-ग्रन्थ, (४) सा अितिहास ग्रन्थ, (५) कविता-संग्रह, (६) पंचरत्न ग्रन्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) कोश-ग्रन्थ— यदि हम मराठी, गुजराती, बंगला आदि अपने देशकी तेरह प्रांतीय भाषाओंको लें और सिंहल, मलायु आदि अेशियाअी भाषाओं-को लें तथा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और रूसी चार विदेशी भाषाओंको लें तो हम अिन सभी भाषाओंमें कोअी अुन्नीस अैसे कोश--ग्रन्थ प्रकाशित करना चाहते हैं जिनमेंसे प्रत्येक शब्दकोशमें कम-से-कम साठ हजार शब्द हों और पृष्ठ-संख्या हो कोअी ६००। प्रत्येक कोशका अल्पतम संस्करण दो हजारका रहे।

ये अुन्नीस कोश--ग्रन्थ परस्पर अेकसे दूसरी भाषामें होंगे, तो अिनकी ग्रन्थ-संख्या सहजमें ही ३८ हो जायगी। अिस प्रकार हमारी योजनाके अन्तर्गत ३८ कोश-ग्रन्थ हैं।

(२) स्वयं-शिक्षक-ग्रन्थ— हमें अुक्त सभी भाषाओंमें हिन्दीके स्वयं शिक्षक ग्रन्थोंकी और हिन्दीमें अुक्त सभी भाषाओंके स्वयं-शिक्षक--ग्रन्थोंकी आवश्यकता है। ये स्वयं-शिक्षक ग्रन्थ भी ३८ हो सकेंगे।

(३) व्याकरण-ग्रन्थ—भाषा सीखनेमें कोश और व्याकरण दो ही मुख्य हैं। हम चाहते हैं कि हमारी हिन्दीमें अुक्त सभी भाषाओंके व्याकरण ग्रन्थ हों और अुक्त सभी भाषाओंमें हिन्दीके व्याकरण-ग्रन्थ हों।

भाषा ज्ञानके बाद ही साहित्यसे परिचय हो सकता है, और यदि साहित्यसे परिचय न हो तो हाथ आया भाषा-ज्ञान भी हाथसे निकल जाता है। अिसी अुद्देश्यकी पूर्तिके लिये हमने तीन तरहके साहित्य-ग्रन्थोंके प्रकाशनकी भी कल्पना की है—

(क) साहित्य--अितिहास ग्रन्थ—आज भारतीय भाषाओंके हिन्दी-प्रेमी हिन्दी-भाषा और अुसके साहित्यके प्रामाणिक अितिहासमें दिलचस्पी लेने लगे हैं। राष्ट्रकी ठोस अेकताके हितमें यह आवश्यक है कि सभी राष्ट्र-भाषा प्रेमी हिन्दीके साहित्य-अितिहासके साथ-साथ प्रांतीय भाषाओंके साहित्य-अितिहासकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी जानकारी प्राप्त करनेका प्रयत्न करें। अिस अुद्देश्यकी सिद्धिके लिये भी कम-से-कम अड़तीस प्रामाणिक ग्रन्थोंका निर्माण और प्रकाशन आवश्यक है।

(ख) कविता-संग्रह ग्रन्थ—अन्य विषयोंका महत्व बढ़नेपर भी आज भी काव्यका महत्व घटा नहीं है। काव्य-साहित्यमें ही किसी भी जातिका हृदय छिपा रहता है। अिसलिये हिन्दीके काव्यकी जानकारी अुन सभी भाषाओंके ज्ञाताओंको और अुक्त सभी भाषाओंके काव्यमेंसे चुने हुअे अंशोंकी जानकारी हिन्दीके ज्ञाताओंको करानेका प्रयत्न किया जाना ही चाहिअे। अिसी अुद्देश्यकी पूर्त्तिके लिये कम-से-कम ३८ कविता-संग्रह ग्रन्थोंको प्रकाशित करनेकी भी योजना बनाअी गअी है।

(ग) पंच-रत्न-ग्रन्थ—सोचा गया है कि आज भारतकी सभी प्रांतीय भाषाओं और देशके बाहरकी भी कुछ भाषाओंसे अेक निश्चित योजनाके अनुसार विशेष महत्वके ग्रन्थोंके हिन्दी अनुवाद कराकर प्रकाशित किये जायँ। साधनोंकी अल्पताके कारण अभी प्रत्येक भाषासे पाँच-पाँच प्रतिनिधि ग्रन्थोंकी कल्पना की गअी है। यदि १९ भाषाओंसे हम प्रत्येकके पाँच-पाँच प्रतिनिधि ग्रन्थ प्रकाशित कर सकें तो अुनकी संख्या १९×२×५=१९० ग्रन्थ हो सकती है।

अिस प्रकार कुल मिलाकर हमारी योजना अभी केवल ३८० ग्रन्थ प्रकाशित करनेकी है।

अिस योजनाको प्रकाशित करनेका मात्र अुद्देश्य अितना ही है कि यदि किन्हीं भाअीके पास कोअी अैसा ग्रन्थ हो जो हमारी अिस योजनाके अन्तर्गत आता हो और वह अुसे प्रकाशित कराना चाहते हों तो हम नयी पुस्तक लिखवाकर अुसे प्रकाशित करनेसे पूर्व अुस लिखे ग्रन्थको ही प्रकाशित करनेपर विचार करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे जो भी कोअी समर्थ साहित्यिक अिस प्रकारके साहित्य-निर्माणके कार्यमें सहयोग देनेकी अिच्छा रखते हों, सहयोग दे सकें, हम अुनके सहयोगका सहर्ष स्वागत करेंगे। यह योजना विशेष रूपसे अुनकी जानकारीके लिअे है।

तीसरे, यदि अिस योजनाके अंतर्गत आ सकनेवाली कोअी अच्छी पुस्तक पहलेसे प्रकाशित हो और हमें अुसकी जानकारी हो जाय तो हम अुसे पहले न प्रकाशित करें।

हमें भरोसा है कि हमारी अिस योजनाको हिन्दी संसारका समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा। समिति अिस कार्यको अपने सहयोगियों और हित-चिन्तकोंकी सहायतासे ही पूरा करनेकी आशा रखती है।

—आनन्द कौसल्यायन

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी

जिस व्यक्तिको पढ़नेका शौक हो और फुर्सत भी हो पर गप्पें मारकर जल्दी वक्त गुजारनेके लिअे कोअी संगी-साथी न हो और अिससे अुसका जी अूब रहा हो अुसे अूबने देनेमें कोअी हर्ज नहीं। कुछ देर अूबते रहनेके बाद फिर वह कोअी काम खोजकर अुसमें लग जायगा। पर केवल फुर्सतका वक्त काटनेके लिअे ही निकला हुआ पत्र, मासिक या किस्से कहानीकी किताब लेकर बैठेगा तो अुससे मनोरंजनका तो आभास मात्र होगा, अधिक समय परोक्ष रीतिसे गप्पें हांकने यानी आलसमें ही बीतेगा और अधिकतर वह अपने मनको हीन भावनाओंसे चलायमान कर लेगा अेवं कुसंस्कारको पोसेगा। पत्रों, मासिकों और अुपन्यासोंसे अनेक युवक-युवतियाँ विकारकी अवस्थामें पड़े और कुमार्गमें प्रवृत्त हुअे पाये गये हैं। अैसे प्रकाशन जला देने योग्य ही माने जाने चाहिअे।

—महात्मा गान्धी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा संसार

हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा बने

अुड़ीसाके राज्यपाल श्री आसफअलीने अुत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके वार्षिक-अधिवेशनके नाम अेक सन्देशमें कहा कि हिन्दीका द्वार अन्य भाषाओंके सांस्कृतिक प्रभावके लिअे अुन्मुक्त रहना चाहिये और अुदारताकी भावनासे अुसके शब्द-भंडारमें वृद्धि करनी चाहिये। हिन्दीको पूर्ण अभिव्यक्तिकी भाषा बनानेके लिये अुसके शब्द-भंडारका मान निर्धारण करनेकी दिशामें आज हमें बहुत कुछ करना है। आपने कहा कि सभी प्रगतिशील भाषाअें अन्य भाषाओं से कुछ लेकर ही समृद्ध हुअी हैं और अपने लिअे अधिकाधिक विस्तृत क्षेत्र बना सकी हैं। अुदाहरणार्थ अंग्रेजी स्वतंत्रतापूर्वक पूर्व और पश्चिमकी भाषाओंके शब्दोंको अपनाती है और अुसका सुपरिणाम यह हुआ है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन गअी है। आज हिन्दीको केवल भारतकी राष्ट्रभाषा ही नहीं बनना है, अपितु अुसे अेशिया तथा संयुक्त राष्ट्रकी अन्तर्राष्ट्रीय भाषाका स्थान लेना है।

राष्ट्र-साहित्यका प्रश्न

लखनअू विश्वविद्यालयकी हिन्दी-विद्यार्थी-परिषद्के तत्वावधानमें आयोजित अेक सभामें भाषण करते हुअे अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष श्री चन्द्रबली पांडेयने कहा हिन्दी भाषियोंके लिअे राष्ट्रभाषाका प्रश्न तो हल हो चुका, पर राष्ट्र-साहित्यका प्रश्न सामने है। आज विभिन्न क्षेत्रोंमें हमें अधिकाधिक साहित्य-निर्माण करना है। हिन्दीकी समस्याओंके सम्बन्धमें बोलते हुअे आपने कहा कि आज हिन्दीमें पारिभाषिक शब्दोंकी समस्या अुठी है। अिस सम्बन्धमें अितना ही कहना पर्याप्त है कि यदि अिग्लैंड और फ्रांसमें आज भी पारिभाषिक शब्द ग्रीक अेवं लैटिनसे लिअे जाते हैं तो फिर हिन्दीमें संस्कृतसे न लेना विवेकशून्यता है। अन्तमें आपने हिन्दीके अुज्ज्वल भविष्यके प्रति दृढ़ विश्वास प्रकट करते हुअे कहा कि हिन्दी पठन-पाठनसे निश्चय ही वह समय आयेगा जब हिन्दीकी प्रगतिमें अहिन्दी भाषी लोग भी दत्तचित्त होकर श्रम करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाग विश्वविद्यालयमें हिन्दी भवन

प्रयाग विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागको हिन्दीके प्रचारका केन्द्र बनाने और समस्त भारतीय विश्वविद्यालयों तथा डिग्री कालेजोंमें हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनानेके लिये विश्वविद्यालयके अधिकारी गण अिस विश्वविद्यालयमें अेक हिन्दी-भवन स्थापित करनेका आयोजन कर रहे हैं। यह भवन साढ़े तीन लाख रुपयेके खर्चसे स्थापित होगा। अिसके लिये चन्दा अेकत्र हो रहा है। डा० रामकुमार वर्मा (हिन्दी विभाग) अभी हालमें अिस सम्बन्धमें दिल्ली गये थे जहाँ अुन्हें १५००० रु० अिस कार्यके लिये मिले। आशा की जाती है कि शीघ्र ही कुल रकम अेकत्र हो जायगी।

शेख अब्दुल्ला द्वारा हिन्दीका समर्थन

कश्मीरके प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्लाने मद्रास हिन्दी-प्रचार-सभाकी ओर से अर्पित किअे गये मान-पत्रके अुत्तरमें भाषण करते हुअे मद्रासके लोगोंसे अपील की कि अब जब देशकी राष्ट्रभाषा हिन्दी स्वीकार कर ली गयी है, पूरी तत्परताके साथ हिन्दी सीखे। शेख अब्दुल्लाने अपने भाषणमें कहा कि कश्मीर और दक्षिण भारतका पारस्परिक सम्बन्ध बहुत प्राचीन है। कश्मीरी तथा दक्षिण भारतीय पंडितोंके बीच सम्पर्क होना श्री शंकराचार्यके समयसे माना जाता है। आपने दक्षिणकी जनतासे देशके हितके लिअे यह सम्पर्क बनाये रखनेकी अपील की।

प्रांतीय भाषाओंका अध्ययन आवश्यक

प्रयाग विश्वविद्यालयकी हिन्दी साहित्य समिति द्वारा आयोजित अेक बैठकमें भाषण करते हुअे भारत सरकारके सूचना अेवं ब्राडकास्टिंग मंत्री श्री आर आर. दिवाकरने कहा कि हिन्दीको सच्चे अर्थमें देशकी राष्ट्रभाषा बनानेके लिये यह आवश्यक है कि भारतकी विभिन्न प्रांतीय भाषाओंमें समान रूपसे प्रचलित शब्दोंको आत्मसात कर अुसके शब्दकोषको व्यापक बनाया जाय। आपने कहा कि हिन्दीमें अैसे साहित्यकी रचना की जानी चाहिये जिससे हमें कभी अन्य साहित्यका मुँह ताकनेकी आवश्यकता न पड़े। अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रोंमें हिन्दीको लोकप्रिय बनानेके लिये हिन्दी-भाषियोंको अन्य प्रांतीय भाषाओंका अध्ययन भी करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी शिक्षक सनद परीक्षा

राष्ट्रभाषा हिन्दी होनेके कारण बम्बअी प्रांतकी सरकारने अपने यहांकी हिन्दुस्तानी शिक्षक सनद परीक्षाका नाम बदलकर अब हिन्दी शिक्षक सनद कर दिया है। हिन्दी शिक्षक सनदकी पहली परीक्षा आगामी सितंबरमें होगी।

पुलिस विभागके कर्मचारी हिन्दी सीखें

बम्बअी शहरकी पुलिसको आदेश दिया गया है कि वह हिन्दी सीख ले जिससे जल्दी ही सब शिकायतें अंग्रेजीके स्थानमें हिन्दीमें लिखी जा सकें। सरकारने यह निश्चय किया है कि जब तक अंग्रेजीका स्थान हिन्दी नहीं ले लेती तब तक प्रादेशिक भाषायें भी शिकायतें लिखनेके काम आ सकेंगी।

हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय तारकी भाषा

गत मास भारतीय संसदमें श्री बलवन्तसिंह मेहताके प्रश्नका अुत्तर देते हुअे सम्वाद वहन मंत्रीने बताया कि आगामी कुछ ही मासमें हिंदीको अन्तर्राष्ट्रीय तारकी भाषाओंमें गिना जायगा। भारत सरकारने अन्तर्राष्ट्रीय तार संघको सूचित किया है कि भारत सरकार अुस संघको अधिकार देती है कि वह हिन्दीको अन्तर्राष्ट्रीय तारकी भाषाओंकी सूचीमें शामिल कर ले।

राजस्थान तथा मध्यभारतके हाअीकोर्टोंमें हिन्दी

राजस्थानके राजप्रमुखने भारतके राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृति दी जानेपर राजस्थान हाअीकोर्टके लिअे हिंदी भाषा घोषित कर दी है। राजस्थान हाअीकोर्ट का सभी काम अब हिन्दीमें होगा।

मध्यभारतकी धारासभामें प्रधान मंत्रीने घोषित किया कि श्रीमंत राजप्रमुखने राष्ट्रपतिकी अनुमतिके पश्चात मध्यभारत हाअीकोर्टको भारतीय संविधानके अंतर्गत जजमैन्ट, डिग्री और आर्डरके अतिरिक्त सब काम हिन्दीमें करनेका अधिकार दे दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

गुजरात

भावनगर—यहाँ सौराष्ट्र सरकारके शिक्षाधिकारी श्री चन्द्रशंकर अ. बुचके सभापतित्वमें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। गुजराती साहित्यके प्रसिद्ध आलोचक श्री विजयराय वैद्य तथा श्री हरिभाअी त्रिवेदीने व्याख्यान दिअे। श्री बुच साहबका भी अुत्साहवर्धक भाषण हुआ।

मोर्वी—स्थानीय डिप्टी कलक्टर श्री यशवंतरायजी भारूकी अध्यक्षतामें यहाँ प्रमाण-पत्र वितरण समारंभ हुआ। सभापति महोदयने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषाकी समस्यापर विद्वत्तापूर्ण ढंगसे प्रकाश डाला।

जोड़िया—स्थानीय हाअी स्कूलके हेडमास्टर श्री नौतमलालकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अिस अवसरपर अनेक प्रतिष्ठित कांग्रेस कार्यकर्ता भी अुपस्थित थे।

लाठी—गत २६ जनवरीको यहाँ महालकारी साहब श्री अुमियाशंकरजी भट्टकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरित किअे गअे। कुछ छात्रोंको पुरस्कृत भी किया गया।

पाटण—यहाँ राष्ट्रभाषाके परीक्षार्थियोंको शिक्षाधिकारी श्री दुर्गाशंकरजी दवेके सभापतित्वमें प्रमाण-पत्र प्रदान किअे गअे।

बड़नगर—म्युनिसिपल चीफ अफसर श्री दीनुभाअी देसाअीकी अध्यक्षतामें यहाँ प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। छात्रोंको पुरस्कार दिअे गअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाघोड़िया – यहाँका प्रमाण-पत्र वितरण-समारंभ मामलतदार साहब श्री. यशवंतरायजीकी अध्यक्षतामें हुआ।

लीमेट—श्री रमाकान्त शास्त्रीकी अध्यक्षतामें यहाँ भी विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किअे गअे।

मालपुर (अहमदाबाद) –श्री रावजीभाअी पटेलकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरण-समारोह मनाया गया। विद्यार्थियोंको पुरस्कार दिअे गअे।

राजस्थान

अजमेर—अजमेर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें गांधीभवनमें बड़ी धूमधामसे प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अुत्सवके सभापति स्थानीय म्यूनिसपैल्टीके प्रधान श्री कृष्णगोपाल गर्ग थे। अजमेर कांग्रेस कमेटीके मंत्री श्री ब्रह्मानंद त्रिपाठीने अपने करकमलोंसे विद्यार्थियोंको प्रमाण पत्र वितरित किअे। अुत्सवमें कुछ मनोरंजक कार्यक्रम भी हुअे। "रमजानके अब्बा" नामक डायलागको जनताने बहुत पसंद किया। श्रीमती कृष्णादेवीने श्री चेलाराम तथा श्री पद्मशर्माको को वद और परिचयमें राजस्थानमें सर्व प्रथम आनेके अुपलक्ष्यमें रजत-पात्र (कप) प्रदान किअे। प्रथम श्रेणीके छात्रोंको अुपहार-स्वरूप पुस्तकें भेंट की गअीं। मनोरंजक कार्यक्रममें भाग लेनेवाले विद्यार्थियोंको भी पुरस्कृत किया गया। श्री दौलतराम शर्मा अेवं श्री देवदत्त शर्माने अपने भाषणोंमें अुपस्थित लोगोंको अजमेर केन्द्रकी प्रगतिसे अवगत कराया।

गत १८ फरवरीको मोती कटला स्कूलमें विद्यार्थियोंका अेक अुत्सव हुआ जिसमें छोटे छोटे नाटक खेले गअे। अुत्सवमें प्रान्तीय समितिके संचालक श्री दौलतराम शर्मा तथा मंत्री श्री देवदत्त शर्माको राष्ट्रभाषाके क्षेत्रमें की गअी सेवाओंके अुपलक्ष्यमें मान-पत्र भेंट किअे गअे।

अखिल भारतीय केथोलिक संघमें राष्ट्रभाषाका प्रस्ताव—स्थानीय केथोलिक चर्चमें गत १२ मार्चको अखिल भारतीय केथोलिक संघका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक अधिवेशन हुआ। अधिवेशनमें कैथोलिक ओसाअियोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचारके सम्बन्धमें अेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। अिस अवसरपर प्रान्तीय समितिके संचालक श्री दौलतराम शर्माने अपने जोरदार भाषणमें ओसाअियोंसे हिन्दी सीखनेकी अपील की।

जोधपुर--स्थानीय महेश हाओीस्कूलमें गत १० मार्चको सितंबर १९४९ की राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव राजस्थान शिक्षा विभागके माननीय डायरेक्टर महोदय श्री मदनमोहनजी की अध्यक्षतामें मनाया गया। प्रार्थना और स्वागत-गानके पश्चात् जोधपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री कालूराम व्यासने कार्य-विवरण पढ़कर सुनाया। तदुपरांत राजस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक श्री दौलतराम शर्माने राजस्थान तथा अजमेर मेरवाड़ेमें होनेवाले राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यका अुल्लेख करते हुअे माननीय डायरेक्टर महोदयसे राष्ट्रभाषाकी परीक्षाओंको मान्यता प्रदान करने तथा समितिको आर्थिक सहायता देनेके संबंधमें निवेदन किया। श्री डायरेक्टर महोदयने अपने भाषणमें समितिके कार्यपर संतोष प्रकट करते हुअे कहा कि राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य आज बहुत आवश्यक है। हिन्दीके द्वारा ही राजस्थानी और सिंधीका भेद दूर हो सकता है। आपने समितिकी परीक्षाओंको मान्य करने तथा आर्थिक सहायताके सम्बंधमें आश्वासन दिया। अन्तमें स्थानीय समिति-के अध्यक्ष डा. सोमनाथ गुप्त अेम. अे. पी. अेच. डी. ने माननीय डायरेक्टर महोदय तथा समितिको सहयोग देनेवाले सभी महानुभावोंको धन्यवाद देते हुअे कहा कि समिति अेक महान् लक्ष्यको लेकर आगे बढ़ रही है। आशा है, अिस काममें हमें सभी नागरिकोंका सहयोग प्राप्त होगा।

मध्यभारत

अिन्दौर—अिसी वर्ष यहाँ राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र खुला है जिसके व्यवस्थापक श्रम कल्याण केन्द्रके संचालक श्री बी. सी. गंगराड़े हैं। परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थियों व राष्ट्रभाषा प्रेमियोंके लिये अेक शिक्षण वर्ग भी श्रम शिविर स्नेहलता गंजमें चलाया जाता है।

असम

गौहाटी—गत २८ फरवरीको गौहाटीमें श्री. अम्बिकाप्रसादजी त्रिपाठीके सभापतित्वमें असमके हिन्दी प्रेमियोंकी अेक सभा हुअी जिसमें प्रान्तीय समितिका पुनर्गठन आवश्यक समझकर निम्न सज्जनोंके सहयोगसे अेक अस्थाअी कार्य-समितिका निर्माण हुआ। श्री नीलमणी फुकन अेम. अेल. अे.- सभापति. श्री डा. बानीकान्त काकोती—गौहाटी. श्री कामाख्याराम बरुआ (अेडवोकेट)— गौहाटी, श्री. प्रो. महेशचन्द्र गोस्वामी— नौगाँव श्री छगनलाल जैन— प्रान्तीय संचालक, श्रीमती चन्द्रप्रभा सैकियानी- गौहाटी मंत्री, असम महिला समिति श्रीमती राजबाला दास अेम. अे. श्री रामाशीष प्रसादसिंह, हेडमास्टर अनूपचन्द हिन्दी हाअीस्कूल- शिलांग, प्रो. जितेन्द्रचन्द्र चौधरी— शिलांग, श्री. वैकुण्ठनाथ सिंह- अेरिया कमाण्डेण्ट, (होमगार्ड) श्री हरिहर प्रसाद पांडे— डिबरूगढ़ श्री अम्बिका प्रसाद त्रिपाठी— जोरहाट, श्री नीलकान्त शर्मा—नौगाँव श्री तरुणचन्द्र वैश्य— गौहाटी, श्री मंत्रीजी, असम अैडेड हाअीस्कूल टीचर्स कान्फ्रेन्स।

अेक प्रस्ताव द्वारा असम सरकारसे आर्थिक सहायताकी प्रार्थना की गअी तथा अनुरोध किया गया कि वह राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) की परीक्षाओंको मान्यता प्रदान करे। अिस सबंधमें सात व्यक्तियोंकी अेक उप- समिति भी बनाअी गअी।

बम्बअी

स्थानीय विलेपारले केन्द्रमें गत मास 'विकास' सम्पादक श्री करुणाशंकर पंड्या तथा प्रसिद्ध विद्वान श्री अवधनारायण द्विवेदी के हिन्दी साहित्य प्रगतिपर सारगर्भित भाषण हुअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा दादरके तत्वावधानमें यहाँ भारतकी विभिन्न प्रांतीय भाषाओंके साहित्यके अध्ययनके लिअे 'भाषा-भारती विभाग'की स्थापना हुअी। विभागके कार्य-संचालकके लिअे निम्न व्यक्तियोंकी अेक समिति बनाअी गअी है— श्री मिश्रीलालजी व्यास— प्रमुख, श्री अुमाकान्त नारिंगे, श्री शरदकुमार रांगणेकर, श्री महादेव शं. गोडबोले, श्री विजय पानसरे, श्री वी. टी. परमार (अध्यक्ष रा. प्र. सभा) कु. सुशीला कर्णिक (मंत्री. रा. प्र. सभा)— सदस्य। भाषा-भारतीके अंतर्गत बंगला अेवं गुजराती के वर्ग शुरू हो गअे हैं।

घाटकोपर (बम्बअी अुपनगर)—गत सितंबर १९४६ की राष्ट्रभाषा की विभिन्न परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरण समारोह यहाँ श्री दुर्लभजी केशवजी खेताणकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अध्यक्ष महोदयने राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर भली भाँति प्रकाश डाला। बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मंत्री श्री कांतिलाल जोशीने अपने भाषणमें विद्यार्थियोंसे प्रचार कार्यमें सहयोग देनेकी अपील की। समारोह को सफल बनानेका श्रेय श्री अवनीधर लालजीको है।

लंका

भिक्षु रतनसारजी का स्वागत—लंका निवासी हिन्दी प्रेमियोंकी ओरसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके स्नातक भिक्षु रतनसारजी का अॅपलपिटिय नामक स्थानमें जोरदार स्वागत हुआ। शामको अेक शानदार जुलूस निकाला गया और आश्रममें विराट सभा हुअी। विद्यालंकार परिवेणाधिपति सभाके अध्यक्ष थे। सभामें हिन्दीके प्रकाण्ड पंडित भदन्त सविलीजी तथा भदन्त प्रज्ञाकीर्तिजी के ओजस्वी व्याख्यान हुअे। भिक्षु रतनसारजीने अपने प्रभावशाली भाषणमें लंका निवासियोंसे हिन्दी सीखनेकी अपील की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

विदर्भ नागपुर, राजस्थान, अुत्कल तथा हैदराबाद रियासतके लिये—

परीक्षा-फलः—

परीक्षार्थी अपना परीक्षा-फल जाननेके लिये वर्धाको न लिखें वे अपना परीक्षा-फल केन्द्र-व्यवस्थापकके मार्फत ही प्राप्त करें।

अलग-अलग प्राप्तांकः—

जो अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने प्रश्नपत्रोंके अलग-अलग प्राप्तांक मँगाना चाहेंगे अुन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। शुल्कके साथ अुत्तीर्ण परीक्षाका नाम तथा क्रम-संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखकर भेजें। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे अलग-अलग प्राप्तांक मँगानेका शुल्क नहीं लिया जाता।

जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण कराना चाहेंगे वे २८ अप्रैलतक प्रत्येक अुत्तर पुस्तकके लिये आठ आना निरीक्षण शुल्क भेजते हुअे अपना पूरा नाम, परीक्षा क्रम-संख्या, तथा प्रश्नपत्र संख्या देकर प्रार्थना-पत्र भेजें।

निरीक्षणमें केवल अितना ही देखा जाता है कि प्रत्येक प्रश्नके अंक दिये गये हैं या नहीं और जोड़ आदि ठीक है या नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसाम, बंगाल, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र तथा आफ्रिकाके लिये:—

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन:—

परीक्षार्थियोंमें अुत्तर पुस्तकें बाँटते समय यदि कोअी गड़बड़ी हुअी हो तो कार्यालयको सूचना अवश्य दी जावे।

परीक्षा-फल:—

अप्रैल ५० की परीक्षाओंका परीक्षा-फल १५ जूनको प्रकाशित होगा।

कोविद अुपाधि शाल:—

कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको अुपाधि-शाल देनेकी व्यवस्था बहुत पहले थी। पर्याप्त खादी न मिल सकनेके कारण यह व्यवस्था विवश होकर रोकनी पड़ी थी। यह प्रकाशित करते हुअे हर्ष होता है कि कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको शाल प्रदान करनेकी व्यवस्थामें हम अब सफल हो रहे हैं।

फरवरी ५० से कोविद परीक्षा अुत्तीर्ण जो परीक्षार्थी शाल लेना चाहें वे ३) रु. केन्द्र-व्यवस्थापकके पास जमा कर दें। केन्द्रोंसे अिकट्ठी की हुअी रकम प्राप्त होनेपर अुपाधि-शालें परीक्षार्थियोंमें वितरणके लिये केन्द्र-व्यवस्थापकके पास भेज दी जावेंगी।

अनुचित लाभ:—

फरवरी ५० की परीक्षाओंमें अनुचित लाभ अुठानेवाले परीक्षार्थि-योंकी परीक्षावार क्रमसंख्याअें:—

रंभिकः— ५२१, २९०२, २९०३, २९०४, २९०५, ४४४१,
रा:— ३१४८, ३१५४
चय:— १५६३, १५६४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल-सुधार

'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा

गत सितम्बर १९४९ की परीक्षाके परीक्षा-फलमें भूलसे श्री बाबूलाल त्रिलोकचन्द्र परमारके नामपर दूसरी श्रेणी छप गअी है। वे प्रथम श्रेणीमें अुत्तीर्ण हुअे हैं।

परीक्षा-शुल्क अप्राप्त केन्द्र :—

अप्रैल ५० की परीक्षाओंका पूरा परीक्षा-शुल्क प्राप्त न होनेके कारण ८ केन्द्रोंके प्रश्नपत्र रोक लिये गये।

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
विदर्भ नागपुर	बाठोडा शुक्लेश्वर	६६४
”	रोहिण खेड	६८०
”	मोभरी	५३०
मध्यभारत	लश्कर	१
कर्नाटक	मत्तीगट्टि	६६१
मद्रास	मद्रास	७१
वि० नागपुर	कुहा	८०८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने प्रश्नपत्र प्राप्य*

नाम	समय	मूल्य	डाक-व्यय
प्रारंभिक-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-४-०	०-१-०
प्रवेश-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-६-०	०-१-०
परिचय-प्रश्नपत्र	[सन् ४७ से ४९ तक]	०-८-०	०-२-०
कोविद-प्रश्नपत्र	[,, ,,]	०-१०-०	०-२-०

राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके पुराने प्रश्नपत्रोंकी माँग हमेशा अधिक [रह]ती है। पीछे हम अपने बहुतसे ग्राहकोंको अुनके मँगाअे हुअे संपूर्ण सेट [न]हीं भेज सके। कारण, खुले प्रश्न-पत्र होनेसे अनके चुनने और भेजनेमें [का]फी परेशानी व विलंब होता था। अिस कमीको दूर करनेके लिये अब [परी]क्षा-क्रमके अनुसार पुराने प्रश्नपत्र अलग-अलग पुस्तकाकार छपाअे [गये] हैं। परीक्षार्थी जिस परीक्षाके प्रश्न-पत्र चाहे, मँगा सकता है।

परीक्षामें बैठनेके पूर्व यह जान लेना अत्यंत जरूरी है कि अुसमें [कि]स तरहके प्रश्न पूछे जाते हैं। अिसके लिये हरेक परीक्षार्थीको चाहिये [कि] वह पुराने प्रश्नपत्रोंको अेक बार अवश्य पढ़े,—पढ़े ही नहीं—अुन्हें अपनी [बुद्धि]से, अपने अनुभवसे हल भी करे, ताकि अपनी परीक्षामें पूछे [जाने वा]ले प्रश्नोंको वह ठीक ठीक समझ सके और अुनके सही अुत्तर-[दे] सके। परीक्षार्थियोंको यह सुविधा प्रदान करना ही अिन प्रश्न-[पत्रों]को पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेका अुद्देश्य है।

हरेक खुला प्रश्नपत्र दो पैसेके हिसाबसे बेचा जाता है। लेकिन [अि]न संगृहीत प्रश्नपत्रोंका मूल्य हमने अपेक्षाकृत कम रखा है। आशा [है]परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

* प्रश्नपत्र मँगाते समय कीमतके साथ डाक-व्यय अवश्य भेजें। रजिस्ट्रीसे [मँगा]नेके लिअे चार आने अधिक भेजें। पेशगी मनीऑर्डर द्वारा ही भेजें। वी.पी. [नहीं] भेजी जाती।

—प्रकाशन-विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८ स्वीकृतिका तारका
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

विशेष सूचना

अभी तक हम लोगोंको अुनके मँगाये हुअे कोष भेजनेमें असमर्थ कारण कि वे प्राप्य नहीं थे। अभी हमने निम्नलिखित अुपयोगी कोष मँगा रख लिअे हैं। जिनको आवश्यकता हो वे कोषकी पूरी कीमत (डाक-व्ययसहित) पेशगी भेजकर मँगा लें। वी. पी. से कोष नहीं भेजे जाते।

कोषका नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य	डाक-व्य
१. प्रामाणिक हिन्दी-कोष	१३००	१०–०–०	०-८
२. आदर्श हिन्दी शब्दकोष (संक्षिप्त)	७६३	६–०–०	०-६
३. आधुनिक कोष (हिन्दी-हिन्दी)	१२२८	४–८–०	०-८
४. भार्गव हिंदी-अंग्रेजी कोष (संक्षिप्त)	१०५०	४–०–०	०-[illegible]
५. भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी कोष	१२६२	८–०–०	०-[illegible]
६. अंग्रेजी हिन्दी स्कूल कोष	३७८	२–०–०	०-[illegible]
७. अुर्दू-हिन्दी कोष	४९४	४–८–०	०-[illegible]
८. हिन्दुस्तानी-गुजराती कोष	३७६	४–०–०	०-[illegible]
९. मराठीसे हिन्दी शब्दसंग्रह	५३०	६–०–०	०-[illegible]
१०. मराठी-हिन्दुस्तानी कोष	१९१	२–०–०	०-[illegible]
११. राष्ट्रभाषा-मराठी लघुकोष	२४३	२–०–०	०-[illegible]

—पुस्तक-विक्री विभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी.

राष्ट्रभाषा

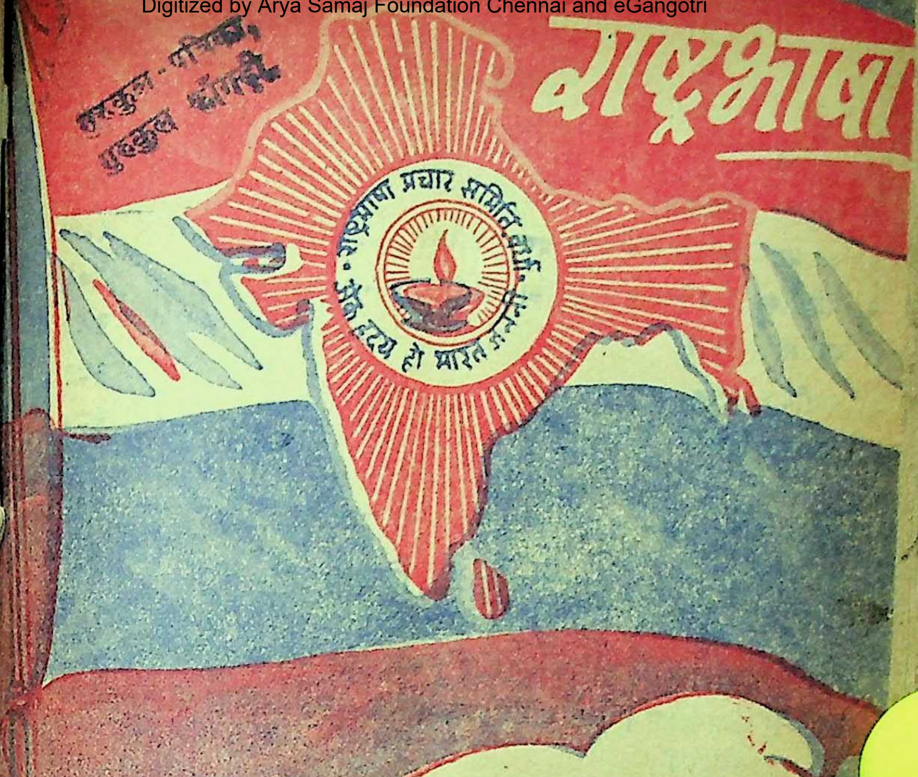

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी.

मअी १९५०

आज पृथ्वीका वक्ष राष्ट्रोंके कटु स्वार्थोंसे खण्डित हो रहा है। अर्थ-व्यवस्था सर्वथा छिन्न-भिन्न हो गयी है जीवनके मंदिरमें हंसती हुअी मानव-मूर्तिके स्थानपर यन्त्रकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। अिस प्रकार जनगणके रक्त-प्राणका शोषण हो रहा है। जब तक यह विषम स्थिति दूर नहीं होती, विश्वका कल्याण सम्भव नहीं। अतअेव हमें जीवन और जगतमें सामञ्जस्य स्थापित करना चाहिअे, आजके युगकी यही पुकार है।

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी.

— डा० नगेन्द्र

क्रोध को सद्व्यवहारसे जीतो, झूठ को सचाअीसे हराओ और पापीको भलाअीसे हरा दो।

—महात्मा बुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख			पृष्ठ
१. भारतका आगमन	...	...	२६३
२. अंडमन निकोबार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	...	...	२६५
३. रेडियोका "बहिष्कार" ज्योंका त्यों है	...	...	२७१
४. राष्ट्रभाषा-संसार	...	...	२७७
५. प्रांतीय हलचलें	...	...	२८१
६. परीक्षा-विभाग	...	...	२८४

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है। वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभाषा' भेजा जा सकेगा।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक हर महीनेकी १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है। अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक-नम्बर साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारक अेवं केन्द्र-व्यवस्थापक पत्र-व्यवहारके समय अपनी क्रम-संख्या का अुल्लेख अवश्य करें।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि वे 'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकिट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, मअी—१९५० [अंक ७

भारतका आगमन

: श्री दिनकर :

गुरुकुल-पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी

कुछ आये शर-चाप अुठाये,
राग प्रलयका गाते,
मानवतापर पड़े हुअे,
पर्वतकी धूल अुड़ाते।

कुछ आये आसीन अनलसे,
भरे हुअे झोंकोंपर,
गाँथे हुअे मुकुट-मुंडोंको,
बर्छोंकी नोकोंपर।

कुछ आये तोलते हुअे,
अपने तनको सोनेसे,
कुछ आये बाँधते,
जगतका मन जादू-टोनेसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानदक्ष अंजलिमें,
सबकेलिअे लिअे कल्याण,
सहज धीर गतिसे आये,
बस अेक तुम्हीं गुणवान।

तुम आये, जैसे आते
सावनके मेघ गगनमें,
तुम आये, जैसे आता हो
संन्यासी मधुवनमें।

तुम आये, जैसे जल-अूपर
आये फूल कमलका,
तुम आये, भूपर आये
ज्यों सौरभ विधुमंडलका।

निजसे विरत, सकल
मानवताके हितमें अनुरत-से,
भारत! राजभवनमें आओ,
सचमुच आज भरतसे।

हवनपूत करमें सुदंड नव,
जटाजूटपर ताज;
जगत देखनेको आयेगा
संन्यासीका राज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंडमन निकोबार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

—: पं. बलभद्र ठाकुर, साहित्याचार्य, सर्वदर्शन-शास्त्री :—

हमारे प्रधान मंत्री भदन्त आनंद कौसल्यायनने अपने नैसर्गिक हंसते चेहरेपर मुसकानका अेक हल्का चाप देते हुअे—"विचित्र खोपड़ी है आपकी भी! कलकत्ते में यह साम्प्रदायिक हंगामा और हजरत चले हैं काले पानीमें राष्ट्रभाषा-प्रचारका झंडा गाड़ने।" कहकर मुझे बिदा दी और मैं भी हंसता हुआ—"आपने सजा जो दी है काले पानीकी"—कहकर तांगेपर जा बैठा। तांगा स्टेशनकी ओर चल पड़ा।

कलकत्ते पहुँचकर मुझे किस प्रकार तार द्वारा अंडमन-निकोबारके चीफ कमिश्नरकी अनुमति प्राप्त करनी पड़ी और 'अेस. अेस. महाराजा' जहाजके टिकिट प्राप्त करनेमें किन-किन परेशानियोंका सामना करना पड़ा यह सब कुछ अुल्लेखनीय होता हुआ भी स्थानाभावसे अुसे न लिखकर हम मुख्य विषयको लेते हैं।

लगभग ८०० मील समुद्रको पारकर करीब ७९ घंटे बाद महाराजा जहाज २८।२।५० के तीन बजे दिनको पोर्टब्लेयर बंदरगाहमें पहुँचा। अिस बन्दरगाहका यह नाम कंप्तान आर्कीबाल्ड ब्लेयरके नामपर है जिन्होंने १७८९ अी. में सर्वप्रथम अिन द्वीपोंका आविष्कार किया था और आजकल पोर्टब्लेयर ही अंडमन-निकोबार द्वीप-समूहोंकी राजधानी है।

मैंने यहाँ पहुँचते ही प्रयत्न प्रारंभ कर दिया। नगरके प्रमुख नागरिकोंसे मिलना-जुलना आरम्भ किया। चूंकि भारतीय विधान-परिषदकी घोषणाके बाद हिन्दी सीखनेके प्रति अुत्साह और आकांक्षा तो सबमें अवश्य देखी लेकिन नैतिक साहसका अभाव देखा। कुछ पढ़े-लिखे लोगोंके मनमें कुछ अैसा भय भी देखा कि अिस हिन्दीके प्रचारमें सरकारका विरोध तो नहीं है। अभी-अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानियोंके क्रूर शासनसे ये लोग गुजर चुके हैं और सबके दिलोंमें अेक प्रकारका दहशत अब भी मौजूद देखा। स्वयं सामूहिक रूपसे किसी अच्छे कामको शुरू करने और अुसे बढ़ानेकी क्षमताका अिनमें अभाव देखा। सबने यही कहा कि यदि चीफ कमिश्नरकी मेम साहिबा अिस कामको लेकर आगे बढ़ें तो हम पीछे चलनेको तैयार हैं।

अिन द्वीपोंके वर्तमान चीफ कमिश्नर श्री. अजयकुमार घोषकी सहधर्मिणी श्रीमती मल्लिका घोष अेम. अे. सार्वजनिक कार्यमें अधिक रुचि रखती हैं और अुसी रुचिके फलस्वरूप यहाँ आते ही आपने नारियोंके अुत्थानके लिअे अेक नारी सभाकी स्थापना भी की है। जब मैंने अुनसे मिलकर यह अनुरोध किया कि अंडमन-निकोबारके लिअे राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति संगठित करनेमें सहयोग दें और अुसका अध्यक्ष पद स्वीकार करें, अुन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, क्योंकि वर्धा-समिति द्वारा कलकत्तेमें हो रहे राष्ट्रभाषा-प्रचार-कार्यको वे स्वयं देखकर अिसके गौरव और महत्वको पहिले ही समझ चुकी थीं। श्री चीफ कमिश्नरने भी काफी सहानुभूति जताअी और सबसे अधिक यहाँके डिप्टी कमिश्नर श्री. शिशिरकुमार गुप्तने अिस समितिके निर्माणके लिअे अेक सार्वजनिक सभा बुलाने और समितिको संगठित करनेमें जो कुछ सहयोग दिया, जैसा अुत्साह और जैसी तत्परता दिखाअी वह वस्तुतः प्रशंसनीय है, धन्यवादके योग्य है।

ता. १४-३-५० को पोर्ट ब्लेयर के 'नेताजी क्लब' में अेक सार्वजनिक सभा बुलाअी गअी। अिस क्लबका अैसा नाम अिसलिये पड़ा कि जब जापानियोंने अिन द्वीपोंको 'आजाद हिंद सरकार' को सौंपा था, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अिसी क्लबमें यहाँकी जनताके समक्ष अपना सर्वप्रथम सरकारी भाषण दिया था। अुसीकी स्मृतिमें अिसका नाम नेताजी क्लब रखा गया है। अिसका अुपयोग सार्वजनिक सभाओं और अुत्सवों आदिके अवसरपर किया जाता है।

हाँ, तो 'अंडमन-निकोबार राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति' का संगठन और अुद्घाटन भी अिसी क्लबमें किया गया। सभामें सर्वश्री चीफ कमिश्नर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिप्टी कमिश्नर, चीफ फॉरेस्ट आफिसर, चीफ मेडिकल आफिसर ट्रेजरी आफीसर, रेवेन्यू आफीसर, सप्लाअी आफीसर और गवर्नमेंट हाअीस्कूलके हेडमास्टर आदि अुच्च पदस्थ सरकारी कर्मचारियोंके अतिरिक्त लगभग सभी पढ़े लिखे सरकारी कर्मचारी, स्कूलके छात्र और यहाँकी प्रमुख साक्षर जनता अेवं कुछ-अेक सम्भ्रात महिलाओंकी संतोषजनक अुपस्थिति रही। सर्वप्रथम क्लबके मंत्री श्रीयुत रत्नमूने क्लब-सोसायटीकी ओरसे श्रीमती मल्लिका घोष अेम. अे. से सभापति-पदपर आसीन होनेका अनुरोध किया। करतल-ध्वनिके बीच श्रीमती घोषने आसन ग्रहण किया और अपने संक्षिप्त भाषणमें अुन द्वीपोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचारकी अुपयोगिता बतलाअी। अुसके बाद सभापतिके आदेशपर अिन पंक्तियोंके लेखकने संक्षेपमें राष्ट्रभाषा-प्रचार-आंदोलनका अितिहास बताकर अिस क्षेत्रमें राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धाकी सेवाओंका अुल्लेख किया और अिन द्वीपोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार 'क्यों और किसलिये' अिसे स्पष्ट करके समझाया। सभा समाप्त होते ही अुपस्थित लोगोंके चेहरेपर अेक अपूर्व अुत्साह और अुत्सुकता देखी गअी और अिसके फलस्वरूप राह चलते अनेक लोगोंने अनेक दिन अनेक बार मुझसे पूछा कि 'हिन्दीके वर्ग कबसे शुरू होंगे पंडितजी, काम जल्दी शुरू होना चाहिअे'। सभा समाप्त होते ही कअी सरकारी अफसरोंने मुझे अेकान्तमें समझानेकी कोशिश की कि निकोबारमें भी हिन्दी-प्रचारकी बड़ी आवश्यकता है, वहाँ मैं अवश्य जाअूँ।

अिधर ता. २१।३।५० को निकोबार द्वीपोंके लिअे चीफ कमिश्नरकी विशेष यात्रा आरंभ होनेवाली थी। यह यात्रा प्रतिवर्ष मार्च महीनेमें होती है जिसमें चीफ कमिश्नरके साथ अुनके सभी प्रमुख सहायक तथा अन्य सरकारी नौकर ही होते हैं। महाराजा जहाजपर करीब ९-१० दिन की यह यात्रा होती है। चीफ कमिश्नरकी कृपासे अिसी 'यात्रा' में मेरे निकोबार चलनेकी व्यवस्था हो गअी। नियत समयपर महाराजा' चला और निकोबार द्वीपोंकी राजधानी कारनिकोबारके किनारे २३।३।५० को १० बजे दिनको रुका। सभी लोग वहाँ अुतरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारनिकोबार—निकोबारद्वीप समूहका अेक छोटा द्वीप है किन्तु जन संख्याकी दृष्टिसे सबसे बड़ा। अिन द्वीपोंकी कुल बारह तेरह हजारकी आबादीमें अकेले कारनिकोबारकी आबादी दस हजारके करीब है। जहाज यहाँ कुल बारह तेरह घंटे रुका। अिस बीच यहाँ अनेक प्रकारकी खेल-प्रतियोगिताअें हुअीं। अेक पक्षमें पोर्टब्लेयर और दूसरे पक्षमें कारनिकोबार था। मुझे बड़ा अचरज लगा कि हर प्रमुख प्रतियोगितामें बाजी कारनिकोबारियोंके हाथ रही। दौड़ धूपमें अवश्य पोर्ट ब्लेयरियोंका हाथ अूपर रहा किन्तु फुटबाल मैचमें तो ये लोग बुरी तरह हारे। अिस खेलमें कारनिकोबारियोंका कौशल देखने ही योग्य था!

रातको हिन्दीमें अेक नाटक खेला गया। देखकर बड़ा विस्मय हुआ कि खेलनेवाले सभी निकोबारी थे। नाटक था महाभारतका अेक प्रसंग—'युधिष्ठिर यक्ष संवाद' जिसे यहाँके असिस्टैंट कमिश्नर श्री ब्रह्म नारायणजी शर्माने 'ज़हरीला तालाब' नाम देकर स्वयं ही निर्देशन किया था। श्री शर्माजीने पहिलेसे ही अिन सर्वथा भिन्न-भाषी अेवं भिन्न-रक्तीयोंमें हिन्दी-प्रचारका बीजारोपण कर यहाँ हिन्दी-प्रचार-कार्यको सरल और सुगम बना दिया है। अिस दृष्टिसे यह नाटक बड़ा सफल रहा।

यद्यपि कारनिकोबारी अब भी अर्ध-सभ्य अेवं अर्ध-नग्न स्थितिमें हैं किन्तु प्रकृतिके बिल्कुल निकट होनेके कारण अिनके शरीरके दृढ़ अेवं पुष्ट गठनको देखकर अीर्ष्या होती है। बिल्कुल भले आदमी और अीमानदार, आपसके अीर्ष्या-द्वेष और झगड़े-झंटेसे सर्वथा दूर! और यह द्वीप भी धरित्रीपर स्वर्गीय सौंदर्यको लिअे हुअे! चतुर्दिक सागरकी अुर्मिल लहरोंसे अविरत प्रक्षालित कटि-देश!

'महाराजा' आगे चला लेकिन मैं कार-निकोबारमें ही रुक गया। यहाँके असिस्टैंट कमिश्नर श्री शर्माजी भी सपरिवार अिस यात्रा-पार्टीमें शामिल हो गअे। चलते समय संक्षेपमें यहाँ हिन्दी प्रचारके लिअे अुन्होंने जो कुछ किया है अुसका अुल्लेख करते गअे और साथ ही अपने सहायकको मेरी सुख-सुविधाका ध्यान रखनेके लिअे ताकीद भी। श्री शर्माजीने मुझसे यह भी बतलाया कि यहाँ अेक अैसे हिंदी अध्यापककी आवश्यकता है जो अनुभवी, अुत्साही, संतोषी अेवं सेवाभावी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं २५ मार्च से २९ मार्च तक 'महाराजा'के वहाँ वापस आनेतक कार निकोबारमें रहा और रहकर यहाँके कुल १५ गाँवोंका निरीक्षण किया। विभिन्न गाँवोंके ५ प्रायमरी स्कूल भी देखे क्योंकि यहाँ पाँचवीं कक्षासे अधिककी शिक्षा देनेका प्रबन्ध नहीं हुआ है।

यहाँकी अधिकांश जनता ओसाओी है और शेष हैं अपने पूर्वजोंके धर्ममें, (भूतप्रेतकी पूजामें) विश्वास रखनेवाले। ओसाओी मिशनरी अिनमें वर्षोंसे काम करती आ रही है। अिन निकोबारियोंमेंसे ही कुछ लोग अिस कामके लिअे विशेष रूपसे शिक्षित किअे गअे हैं। यहाँके स्कूलके हेडमास्टर मि. रिचर्डसन् अब यहाँके 'बिशप' बना दिअे गअे हैं। यहाँके स्कूल शिक्षक अपनी मातृभाषा निकोबारीके अतिरिक्त अंग्रेजी भी बोल लेते हैं। निकोबारीके लिअे भी रोमन लिपिका ही व्यवहार होता है। कुछ लोग टूटी-फूटी हिन्दीमें अपने मनोभाव किसी तरह जता देते हैं। मुझे देखकर बड़ी प्रसन्नता हुअी कि श्री. शर्माजीसे हिन्दीकी आरंभिक पुस्तकें पढ़कर यहाँके कुछ शिक्षक स्कूलोंमें अुन्हें पढ़ा भी रहे हैं और मुझे बड़ा सन्तोष हुआ कि अिन छात्र-छात्राओंने बड़ी आसानीसे सुन्दर देवनागरीमें अपने तथा अपने माँ-बाँपके नाम ब्लेक-बोर्डपर लिख दिअे तथा हिन्दीमें १०० तक गिनकर सुना दिअे और यह भी देखा कि प्रयत्नपूर्वक रटा देनेपर कठिनसे-कठिन हिन्दी शब्दोंका वे ठीक अुच्चारण भी कर लेते हैं। हिन्दी सीखनेकी अिनमें बड़ी अुत्कंठा देखी।

यद्यपि १४ मार्चकी सभामें पोर्टब्लेयरमें ही अंडमन-निकोबार अुभय द्वीप समूहके लिअे समिति संगठितकी गअी जिसमें निकोबारसे बिशप रिचर्डसन और मिस्टर थामस ये दो सदस्य लिअे गअे हैं किन्तु मैं निकोबारके लिअे अेक स्थानीय समिति भी बनाना चाहता था, लेकिन यहाँके सभी प्रमुख व्यक्तियोंके यात्रा-पार्टीमें शामिल हो जानेके कारण यह नहीं हो सका। मैंने वापस आते समय जहाजपर श्री शर्माजी तथा बिशप रिचर्डसनसे अिस संबंधमें बातें करके अपना आशय जता दिया।

३० मार्चको चीफ कमिश्नरकी यात्रा-पार्टी पोर्टब्लेयर वापस आ गअी। ता. २-४-५० को 'अंडमन-निकोबार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की पहिली बैठक मेरी अुपस्थितिमें यहाँके 'गवर्नमैंट हाअुस' (चीफ कमिश्नर का बंगला) में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाअी गअी जिसमें समितिके सदस्योंके अतिरिक्त विशेष निमन्त्रणसे डिप्टी कमिश्नर श्री शिशिरकुमार गुप्त, असिस्टैंट पुलिस सुप्रिन्टेंडेंट श्री दुर्गाप्रसाद तिवारी, गवर्नमेंट हाअीस्कूलके हेडमास्टर, श्री मेहताजी, श्रीमती अुमा मुट्टु और अिन पंक्तियोंका लेखक अुपस्थित थे। अिस बैठकमें समितिके मंत्री श्री रत्नम्‌ने १४ मार्चकी सार्वजनिक सभामें हुअी कार्यवाहीको पढ़ सुनाया। अिसके बाद अिस नवनिर्मित समितिको वर्धा-समितिसे संबद्ध कराने, नगरके विभिन्न मुहल्लोंमें राष्ट्रभाषाके वर्ग चलाने, अेक अुप समिति संगठित करने तथा कोष-संग्रह करनेके संबंधमें विचार-विमर्ष हुआ। निश्चय हुआ कि संबद्धताके लिअे वर्धा-समितिके मन्त्रीको प्रार्थना-पत्र भेजा जाय तथा १२ अप्रैल गुरुवारसे राष्ट्रभाषा वर्गका श्रीगणश किया जाय। अिसी बैठकमें हाअीस्कूलके हेडमास्टर श्री मेहताजीको समितिका सदस्य चुना गया। चाय-पानीके बाद बैठक विसर्जित हुअी।

अंडमन-निकोबार राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सदस्य नीचे लिखे अनुसार हैं-

१. अध्यक्ष— श्रीयुक्ता मल्लिका घोष अेम. अे.
२. अुपाध्यक्ष— श्री. रामाकृष्णा
३. मन्त्री— श्री. रत्नम्
४. संयुक्त मन्त्री— श्री केशवदास
५. कोषाध्यक्ष — जनाब अकबर अली

सदस्यगण— सर्वश्री गुरुमूर्ति. दुर्गाप्रसाद, मेहताजी हेडमास्टर गवर्नमेंट हाअीस्कूल पोर्टब्लेयर, विनय भूषण चक्रवर्ती, पं. सभाजित मिश्र, मि. रिचर्डसन (निकोबार) मि. थॉमस (निकोबार)

यहाँ मेरे रहते ही स्थानीय सरकारी हाअीस्कूलके अध्यापकोंको सरकारकी ओरसे यह आज्ञा मिल चुकी है कि वे ६ महीनेके अन्दर हिन्दी सीखकर वर्धा समितिकी प्रवेश परीक्षा पास करलें। यहाँकी हिन्दी-प्रेमी जनताने वर्धा समितिके प्रति कृतज्ञता जताअी कि अुसके प्रयत्नसे अितनी जल्दी यहाँकी सरकारका ध्यान हिन्दी प्रचारकी ओर आकृष्ट हुआ है। समितिका प्रधान कार्यालय पोर्टब्लेयरमें रक्खा-गया है। आशा है, श्रीमती मल्लिका घोषके सुयोग्य नेतृत्वमें राष्ट्रभाषा हिन्दी अिन द्वीपोंमें जल्द अपनी जड़ जमाकर घर-घरमें समादृत अेवं व्यवहृत होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियोका "बहिष्कार" ज्योंका त्यों है

यह सचमुच देशका दुर्भाग्य ही है कि देशके स्वतन्त्र हो जानेपर और 'हिन्दी' देशकी राजभाषा स्वीकृत हो जानेपर भी रेडियोकी रीतिनीति जनताके लिये संतोषप्रद न बन सकी। रेडियोके पिछले "बहिष्कार" आन्दोलन और समझौतेकी कथा अभी बहुत पुरानी नहीं हुअी है। हम अुसे अपनी पराधीनताके दिनोंकी कहानी मानकर अुसी तरह भूल जाने को तैयार हैं जैसे किसी दुःस्वप्नको। किन्तु पिछले "बहिष्कार"के नाते अधिक समय बाद ही यह दूसरा "बहिष्कार" क्यों?

पिछला "बहिष्कार" जयपुर सम्मेलनके खुले अधिवेशनसे आरम्भ हुआ था। यह "बहिष्कार" स्वयं दिल्लीसे; दिल्ली रेडियो स्टेशनकी परामर्शदात्री समितिके सदस्योंके त्यागपत्रसे। अिन सदस्योंने जहाँ तक हमारी जानकारी है त्यागपत्र देनेसे पूर्व रेडियोके अन्य जिम्मेदार अधिकारियोंको ही नहीं स्वयं सूचना विभागके मन्त्री श्री० दिवाकरको रेडियोको रीति-नीति सम्बन्धी अपने विचारोंसे अवगत कर दिया था। मेरी धारणा है कि यदि रेडियो-विभाग अपनी परामर्शदात्री समितिके सदस्योंकी बातकी ओर ध्यान देता तो यह "बहिष्कार" आन्दोलन कमसे कम अुस समय दिल्लीसे आरम्भ न होता।

रेडियो विभागकी कमीटीके सदस्योंका त्याग-पत्र अुचित था या नहीं अिसमें दो मत हो सकते हैं। किन्तु अुसे देश भरसे जो स्वाभाविक समर्थन प्राप्त हुआ, वह अिस बातका द्योतक है कि दिल्लीकी कमीटीने अेक बड़ी हद तक जनताकी अिच्छाका प्रतिनिधित्व किया था। राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्तका अनुगमन करते हुअे "दिनकर" "बेनीपुरी" सदृश रेडियोसे दिन-रातकी रोटी-बोटी अेक रखनेवाले साहित्यिकोंने अपने-अपने "बहिष्कार" की सूचना दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर-प्रदेशके सभी हिन्दी-पत्रोंने रेडियोके कार्यक्रमों को छापना बन्द कर दिया। स्थिति अैसी आ गअी कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनको अिस सम्बन्धमें अपना विचार व्यक्त करनेके लिअे मजबूर होना पड़ा। हिन्दी साहित्य सम्मेलनने पर्याप्त धैर्यसे काम लिया। अुसने यकायक "बहिष्कार"का शंखनाद नहीं ही किया। अुसने रेडियोके अधिकारियोंका ध्यान स्थितिकी गम्भीरताकी ओर आकर्षित करनेके लिअे केवल अपनी स्थायी समितिके सदस्योंसे रेडियो कार्यक्रमोंसे विरत रहनेकी आशा की और अुनको भी यह छूट दे दी कि यदि वे चाहें, तो अपने पुराने प्रदत्त-वचनों—अंग्रेजी शब्द 'कान्ट्रैक्ट'का ठीक अनुवाद तो ठेके होगा—को पूरा कर सकते हैं। गान्धीजीने विदेशी वस्त्रोंका "बहिष्कार" किया था तो पुराने कपड़े जलवा दिये थे और यह सम्मेलनका "बहिष्कार" था कि पुराने वचनों तक का भी ख्याल!

सची बात है कि सम्मेलन रेडियोको अधिकाधिक हिन्दीमय देखना चाहता है न कि अुसका "बहिष्कार" करना। प्रश्न है कि रेडियो अधिकारियों की ओरसे सम्मेलनके अिस प्रस्तावपर भी क्या कार्रवाअी हुअी?

हैदराबादका वार्षिक अधिवेशन आया। हिन्दी साहित्य सम्मेलनने हिन्दी संसारकी ओरसे की जानेवाली मांगोंको अपने अेक लम्बे प्रस्ताव द्वारा अेक-दो-तीन करके निश्चित शब्दावलीमें व्यक्त किया। अुस प्रस्तावकी मांगें संक्षेपमें अिस प्रकार हैं—

(१) राष्ट्रभाषा हिन्दीके वर्तमान सार्वदेशिक महत्वको ध्यानमें रखते हुअे अखिल भारतीय रेडियोके कार्यक्रमोंमें आमूल परिवर्तन किया जाय।

(२) अखिल भारतीय रेडियो द्वारा प्रसारित हिन्दी सवादोंको अंग्रेजीसे अनूदित न कर मूलतः हिन्दीमें ही संकलित किया जाय और अुन्हें देशके सभी रेडियो स्टेशनोंसे प्रसारित किया जाय।

(३) संवादोंके अतिरिक्त अखिल भारतीय रेडियोके सभी स्टेशनोंसे कुछ कार्यक्रम हिन्दीमें अनिवार्यतः प्रसारित किये जांय।

(४ अखिल भारतीय रेडियोकी परामर्शदात्री समितियोंके सदस्य हिन्दी भाषा-साहित्यके प्रतिष्ठित विद्वान हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) अखिल भारतीय रेडियोके विभिन्न स्टेशनों द्वारा प्रयुक्त "हिन्दी" भाषाके स्वरूपकी मर्यादा निर्धारित करनेके लिये दिल्ली-स्टेशनमें तथा अन्य स्टेशनोंपर भी 'हिन्दी-अनुशीलन-विभाग' खोले जाँय।

(६) हिन्दी संगीतकी स्वर-कारिताके हितमें प्रत्येक स्टेशनपर ख्याति-प्राप्त संगीतज्ञोंकी नियुक्तिकी जाय।

(७) अखिल भारतीय रेडियो द्वारा प्रसारित 'संगीत'के कार्यक्रमोंमें "फिल्मी" गानोंका अनुपात कम किया जाय।

(८) अखिल भारतीय रेडियोके नयी दिल्ली स्थित केन्द्रीय कार्यालयके मुख्य अधिकारियोंके पदोंपर हिन्दीके सुयोग्य अेवं सुविख्यात विद्वानोंकी नियुक्तियाँ यथेष्ट अनुपातमें की जांय।

(९) अखिल भारतीय रेडियोके हिन्दी क्षेत्र वाले स्टेशनोंमें 'प्रोग्राम-असिस्टेंट' 'प्रोग्राम अेक्जिक्यूटिव' 'संगीत डाअिरेक्टर' तथा जन सम्पर्क आफीसरके पदोंपर केवल हिन्दी भाषा-साहित्यके ज्ञाता ही नियुक्त किये जां।

(१०, अखिल भारतीय रेडियोके विभिन्न स्टेशनोंके कायक्रममें भाग लेनेवाले सभी भाषाओंके साहित्यकारों अेवं कलाकारोंको समान रूपसे पारिश्रमिक देनेकी व्यवस्थाकी जाय।

(११) अखिल भारतीय रेडियोके विभिन्न स्टेशनोंकी ओरसे हिन्दीके साहित्यकारों अेवं कलाकारोंके साथ पत्र-व्यवहारमें राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरीका ही प्रयोग किया जाय।

हम हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी ओरसे नहीं हिन्दी संसारकी ओरसे जानना चाहते हैं कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनके हैदराबाद अधिवेशनमें स्वीकृत अिस प्रस्तावके बारेमें अखिल भारतवर्षीय रेडियोको — अिस विभागके लिये जिम्मेदार श्री० दिवाकर जी—क्या कहना है? हमें प्रस्तावकी अस्वीकृति समझमें आ सकती है, अर्ध-स्वीकृति समझमें आ सकती है, किन्तु अवहेलना समझमें नहीं आ सकती। हम यह जाननेके लिये व्यग्र हैं कि श्री० दिवाकरने अिस प्रस्तावके बारेमें क्या किया? अथवा वह क्या करने जा रहे हैं? हम नहीं जानते कि रेडियो-विभाग द्वारा अिस महत्वपूर्ण प्रस्तावकी "पहुँच" देनेकी "सौजन्यता" भ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाओी गओी अथवा नहीं ? विदेशी सरकारको अपनी सरकारसे अच्छा समझनेकी पाप-पूर्ण दृष्टिको मनमें कभी स्थान नहीं ही दिया जा सकता। लेकिन तो भी अितना कहना होगा कि जहाँ तक "सौजन्यता" की बात है कदाचित् सर सुलतान अहमदके दिनोंकी सरकार भी हिंदी साहित्य सम्मेलनके साथ अिससे अच्छा व्यवहार करती। श्री दिवाकर 'जनताकी सरकार'के प्रतिनिधि हैं। जनताकी कोओी भी शिकायत पहुँचते ही यह अुनका प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि वह जनताकी सुनें और अपनी सुनायें। हमें हार्दिक खेद है कि यह कार्य जहाँसे तुरन्त होना चाहिये था, वहाँसे आज तक न हो सका।

यदि हम हैदराबाद सम्मेलनके प्रस्तावको भी देखें तो वह भी मेरी सम्मतिमें "बहिष्कार"का वैसा प्रस्ताव नहीं ही है। अुसमें अुपर्युक्त मांगोंकी स्वीकृतिके सम्बन्धमें कार्रवाओी करनेके लिये अेक कमेटी नियुक्त की गओी है और अुसे रेडियो "बहिष्कार"को तीव्रतर बनानेका अधिकार अुसी अवस्थामें दिया गया है यदि अुसे यह निश्चित हो जाय कि रेडियो विभाग सम्मेलनकी अुन मांगोंको स्वीकार नहीं ही करने जा रहा है ?

जनता अब भी जानना चाहती है कि रेडियो विभागने हिन्दी संसारकी ओरसे भेजे गये अिस प्रस्तावके साथ क्या व्यवहार किया ? यदि अुसने अुसे रद्दीकी टोकरीमें फेंक दिया है तो अेक न अेक दिन अुसे वहांसे स्वयं अुठाना पड़ेगा।

हैदराबाद सम्मेलनके बाद अेक घटना घटी है—हम अुसे दुर्घटना भी कहना चाहते हैं। रेडियोने स्वनामधन्य पंडित सुमित्रानन्दन पन्तको रेडियोमें नियुक्त किया है। हम देख रहे हैं कि पंतजीकी नियुक्ति जहाँ अेक ओर हिन्दीवालोंकी अिच्छाकी पूर्ति कही, समझी और मानी जाती है, वहाँ दूसरी ओर वह रेडियो अधिकारियों द्वारा अपने आलोचकों अथवा विरोधियोंका मुँह बंद करनेका सफल-प्रयास भी कहा, समझा और माना जा रहा है। रेडियो अधिकारियोंने पंतजीकी नियुक्ति चाहे जिस भावनासे की हो किन्तु अुनका यह काम अेक अैसा कदम है जिसका 'फलितार्थ' हमें प्रिय ही है। हम चाहते हैं कि रेडियोमें पंतजी जैसी "विभूतियों" को न केवल स्थान ही मिले किन्तु अुनके ज्ञान और गौरवके अनुरूप अुन्हें समुचित अधिकार भी मिलें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सुमित्रानन्दन पंतकी नियुक्तिके बाद राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजीका जो 'हुक्के-पानी' वाला पत्र छपा है, कुछ क्षेत्रोंमें अुसका जान बूझकर गलत अर्थ प्रचारित किया जा रहा है। गुप्तजीने पंतजीकी नियुक्तिको रेडियो-विभाग द्वारा सही दिशामें अुठाया गया अेक कदम माना है। वह है ही। किन्तु मुझे लगता है कि अपने सहज सौहार्द्र और व्यक्तिगत स्नेहके कारण गुप्तजी अुसका अुचितसे कहीं अधिक मूल्यांकन कर बैठे हैं। यह सब होनेपर भी हमारा राष्ट्र-कवि पूरी तौरपर सचेत है। अुसने लिखा है "मेरी सम्मतिमें रेडियोका हुक्का-पानी खोला जा सकता है।" गुप्तजीके शब्द ध्यान देने योग्य हैं— खोला जा सकता है, न कि खोल दिया गया है। अिसका अर्थ अितना ही है कि "खोलने न खोलनेपर विचार किया जा सकता है।" आपने अपने अभिमतको आगे स्वयं स्पष्ट किया है— "यदि पंच लोग अितना यथेष्ट न समझें तो पन्तजीको अपवाद मानकर मैं अुन्हें अपनी चोजका प्रयोग करनेकी अनुमति देता हूँ।" आदरणीय गुप्तजी और पंतजीके तादात्म्य सम्बन्धमें किसीको भी दखल देनेका अधिकार नहीं। किन्तु अितना नम्र-निवेदन अपना भी अवश्य है कि हिन्दी संसारकी ओरसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा की गअी सभी मांगोंके अुत्तरमें यदि रेडियो विभागके पास पंतजीकी नियुक्ति ही अेक मात्र 'प्रसाद' है तो हमें यह कहनेके लिये क्षमा किया जाय कि अिस तौलमें अकेले पंतजी बहुत हलके अुतरते हैं। हम पंतजीकी नियुक्तिको अपनी सभी मांगोंकी पूर्तिका पर्यायवाची समझनेकी गलती कभी कर ही नहीं सकते।

हैदराबाद अधिवेशनके बाद भी कमीटीके सदस्योंने निजी तौरपर "बहिष्कार" के प्रयत्नोंकी ओर अधिक न झुककर सुलह-सफाअीके प्रयत्नोंका ही स्वागत किया है। अुनमें सहयोग दिया है। हम रायकृष्णदाससे अिस बातमें पूर्णतः सहमत हैं कि हमें अपनी सरकारके साथ अपनी सरकारकी तरह ही बरतना है। हिन्दी संसार हिन्दीका पक्षपाती है, वह किसीका द्वेषी नहीं। अुसे यदि रेडियोसे कभी अुग्रतर "बहिष्कार" भी करना पड़ा तो भी वह पंतजीसे किसी प्रकारके असहयोगकी बात कभी नहीं सोच सकता। पंतजी रेडियोके बाहर-भीतर कहीं भी हों हिन्दीके हैं, हिन्दीवाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी पिछले दिनों श्री दिवाकर प्रयाग पधारे थे। हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके प्रधान-मन्त्रीने सम्मेलन कार्यालयमें अुनका स्वागत किया। अपनी मूल-भूत सौहार्द्रकी भावनाका हिन्दी साहित्य सम्मेलन और क्या परिचय दे सकता था?

श्री दिवाकरसे हमारी प्रार्थना है कि वे वस्तु-स्थितिको समझें। सम्मेलन के दरवाजेकी चाबी अुनके हाथमें है। अुन्हें ही 'जनताकी सरकार' के अंग 'जन प्रिय' प्रतिनिधिकी हैसियतसे सम्मेलनका दरवाजा खटखटाना चाहिये।

सम्मेलन अुनकी हिन्दी समर्थक नीतिका ज्ञान प्राप्त कर अुनका स्वागत करने और अपना सहयोग देनेको सदा तत्पर है।

और जब तक यह नहीं होता तब तक अेक भी सच्चे हिन्दी-प्रेमीका असहयोग रेडियो-विभागको सहना ही पड़ेगा।

—आनंद कौसल्यायन

जो व्यक्ति दूसरेके दृष्टिकोण को समझनेमें असमर्थ है, वह असभ्य है। यदि हम दूसरेका दृष्टिकोण समझनेके लिअे अपने दिमागका फाटक बन्द कर देते हैं तो हम असभ्य हैं। अेक सभ्य दिमागमें ग्राह्यताकी और दूसरोंको समझनेकी विचित्र शक्ति होती है। असली संस्कृति कठमुल्लापन और पाखंडसे अूँची होती है। मेरा ख्याल है कि यदि विश्वकी समस्याओंको सुलझनेके लिअे सभ्य तरीकोंका अिस्तेमाल किया जाय तो अुनके सुलझानेमें देर न लगेगी। अुन्हें सुलझाते हुअे हमें जाति, नस्ल, धर्म और राष्ट्रीयता आदि संकीर्ण चीजोंका ख्याल छोड़ देना होगा।

—पं. जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

प्रांतीय भाषा-सरिताअें हिन्दीको महासागर बनाअें

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा आयोजित दिल्लीमें भारतीय साहित्य-संगम समारोहमें भाषण करते हुअे भारतीय संसदके अध्यक्ष माननीय श्री मावलंकरने राजभाषा हिन्दीके विषयमें महत्वपूर्ण विचार प्रगट किये। आपका भाषण अिस प्रकार है :—

अिस वर्ष २६ जनवरीसे सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य बना है, और संविधानमें जो अुद्देश्य रखे गये हैं अुनमें सुनिश्चित करनेवाली बन्धुता बढ़ानेका दृढ़ संकल्प संविधान सभाने प्रकट किया है। अेकता सुनिश्चित करनेके जो अनेक मार्ग हैं, अुनमें भाषाका स्थान बड़ा अूँचा है। जब हम अपने भाषा-भाषियोंसे दूर रहते हैं और जब अपनी मातृभाषा बोलनेवालोंके साथ मिलनेका प्रसंग आता है तब स्वाभाविक हर्ष और अेक प्रकारका हृदय मिलन होता है। भाषाका अैसा गहरा प्रभाव है। अतअेव भाषाका प्रश्न भारतकी अेकताके लिअे अेक अत्यन्त महत्वका प्रश्न है। यही समझकर सब प्रान्तीय भाषाओंकी नींवपर अधिष्ठित हुअी हिन्दी और लिपि देवनागरी को विधान सभाने भारतीय संघकी राजभाषा और लिपि निश्चित की है। अिस राजभाषाका समस्त भारतके अनुरूप होना अत्यन्त वांछनीय है। अिसलिअे प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी भाषाका परस्पर सम्पर्क आवश्यक है।

भाषाका स्वरूप

गुजरातीमें कहावत है कि भाषाका स्वरूप प्रति १२ मीलपर बदल जाया करता है। अेक ही प्रदेशमें अेक ही भाषाका भिन्न-भिन्न स्वरूप होता है। बोलनेका ढंग अलग होता है और कितने ही शब्द विशेष रूपसे बोले जाते हैं। परन्तु अुस भाषाका एक सामान्य स्वरूप अक्षुण्ण रहता है। अिसी प्रकार अनेक भाषाओंके साथ सम्पर्क होनेसे हिन्दीका अेक भारतीय स्वरूप हो जायगा जिससे अेक ओर प्रान्तीय भिन्नता घटेगी और दूसरी ओर भारतीय भावनामें भी वृद्धि होगी।

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तक हम अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओंके संकुचित अभिमानमें अितने लिपटे रहे हैं कि हमने कभी अिस बातकी खोज ही नहीं की कि भारतकी अन्य प्रादेशिक भाषाओंमें क्या-क्या साहित्य भरा पड़ा है, और अिस प्रकार हम घोर अज्ञानमें पड़े रहे हैं। परन्तु अब जब कि अेक दूसरेके साथ सम्पर्क बढ़ाकर हमें संगठन बनानेका समय अुपस्थित हुआ है, हमें अेक दूसरेके साथ, मिलजुल कर आगे कदम अुठाना चाहिअे और अेक दूसरेके साहित्यमें जो अच्छे तत्व हैं अुनको सीखना और ग्रहण करना चाहिअे। अुससे हमारा दृष्टिकोण और ज्ञान विशाल होगा और दूसरी भाषाओंके सौंदर्य और साहित्यका ज्ञान होनेसे आदर और प्रेम-भाव बढ़ेगा।

अिस अुद्देश्यको प्राप्त करनेके लिअे मैं कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूं। अेक तो यह है कि हर अेक भाषामें जो भी पत्र पत्रिकाअें प्रकाशित होती हैं अुनके हर अेक अंकमें भारतीय प्रान्तीय भाषाओंमें जो साहित्य है, व होता जाता है, अुसका परिचय देनेकी प्रथा प्रचलित करनी चाहिअे। अिससे अेक प्रान्तवासीको दूसरे प्रान्तोंके साहित्यका ठीक ठीक परिचय होगा।

राष्ट्रलिपिका प्रश्न

मेरा दूसरा सुझाव यह है कि भारतीय भाषाओंके सम्बन्धमें जो लिपिकी अेक बड़ी कठिनाअी आती है अुसे दूर करनेके लिअे यदि हम सब भाषाओंके वास्ते अेक लिपिको स्वीकार कर लें तो मैं समझता हूं कि भाषाओंमें संस्कृत शब्दोंकी बहुलता होनेके कारण अेक प्रान्तके निवासियोंको दूसरे प्रान्तोंकी भाषा पढ़नेकी सहूलियत मिल सकेगी। वे वह भाषा अधिकतर समझ सकेंगे तथा हर अेक भाषा दूसरी भाषाओंके शब्द लेकर समृद्ध होगी और वे सब मिलकर अिस समृद्ध और शक्तिशाली राजभाषा, जिसका रूप पूर्णतया भारतीय होगा, अैसी हिन्दीका निर्माण करनेमें अेक लिपि द्वारा सहायक होंगी।

अिस भारतीय साहित्य संगममें आनेवाली अनेक भाषा रूपी नदियां अेक साथ मिलकर हिन्दी भाषा रूपी अेक भारतीय महासागर बनायें, यही कामना है।

समारोहके अुद्देश्यपर प्रकाश डालते हुअे हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अुपाध्यक्ष सेठ गोविन्ददासने बताया कि भारतमें हिन्दीका प्रचार करनेके लिअे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनने क्या क्या किया है। समारोहमें श्री अनन्त शयनम आयंगरने तेलगु, श्री गोपाल मेननने मलयालम, श्री अेस. आर. अेस. राघवनने तमिल, श्री यशवन्त पण्ड्याने गुजराती, पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने हिन्दी, श्री देवेन्द्र सत्यार्थीने पंजाबी और श्री जी. बी. मावलंकरने मराठी साहित्यपर प्रकाश डाला। अिनके साथ साथ सभी भाषाओंके गीत भी अुपस्थित किये गये। अन्तमें सम्मेलनके नयी दिल्ली कार्यालयके संचालक भदन्त आनन्द कौसल्यायनने बताया कि हिन्दी साहित्य-सम्मेलन राजधानीमें हिन्दीका केन्द्र स्थापित करके समस्त भारतीय भाषाओंके साथ हिन्दीका सम्पर्क स्थापित करनेके लिअे प्रयत्नशील है।

भारतीय भाषाओंके माध्यमसे अुच्च शिक्षा

केन्द्रीय शिक्षा परामर्शदात्री समितिकी अेक बैठक शिक्षा मंत्री मौलाना आजादकी अध्यक्षतामें दिल्लीमें हुअी। बैठकमें विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की अधिकांश सिफारिशें स्वीकृत कर ली गअी हैं जिसका राष्ट्रभाषा सम्बन्धी अंश अिस प्रकार है— अंग्रेजी जितनी जल्दी हटाअी जा सके, हटा दी जानी चाहिये। अुच्च शिक्षाका माध्यम अंग्रेजीके बजाय कोअी भारतीय भाषा होनी चाहिअे। माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयोंके स्तरपर विद्यार्थियोंको प्रादेशिक भाषा, संघीय भाषा तथा अंग्रेजीका ज्ञान हो जाना चाहिये। अुच्च शिक्षा प्रादेशिक भाषाके द्वारा दी जाय और साथमें यह विकल्प भी रहे कि कुछ या सब विषयोंकी शिक्षाका माध्यम संघीय भाषाको बनाया जा सकता है। संघीय भाषाके लिअे अेक लिपि देवनागरी ग्रहण की जानी चाहिअे और अुसकी त्रुटियाँ दूर की जाँय।

अन्तमें मण्डलने हिन्दीको लोकप्रिय बनाने, विशेषकर अहिन्दी भाषी राज्योंमें अुसका प्रचार करनेके अुपायोंपर विचार किया। अिस सम्बन्धमें कअी सुझाव भी स्वीकृत किये गअे।

अध्यक्ष पदसे भाषण करते हुअे शिक्षा-मन्त्री मौलाना आजादने कहा चूंकि १५ वर्षोंमें अथवा अुससे पहिले भी केन्द्रमें राजकाज हिंदीमें प्रारंभ हो जायगा अतः विशेष रूपसे अहिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रोंमें हमें अभीसे हिन्दीका प्रचार करना चाहिअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्लीमें सम्मेलन-कार्यालय

गत बारह महीनोंसे राजधानीमें अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलनका जो कार्यालय चल रहा था अब अुसे ३, केनिंग लेन, नअी दिल्लीमें स्थापित कर दिया गया है। अिसका प्रबन्ध करनेके लिये प्रमुख व्यक्तियोंकी अेक समिति बनाअी गअी है जिसके सदस्य सेठ गोविंददास, श्री वियोगी हरि, श्री मौलिचन्द्र शर्मा, श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन,' श्री अिन्द्र विद्यावाचस्पति, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, श्री वासुदेव शरण अग्रवाल, श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, श्री राहुल सांकृत्यायन और श्री बलभद्र प्रसाद मिश्र हैं। भदन्त आनन्द कौसल्यायनको नअी दिल्ली कार्यालयके संचालनका भार सौंपा गया है। कार्यालयकी ओरसे राजधानीमें हिन्दीके अनुकूल वातावरण बनाने, संसद् और सरकारके सदस्योंको हिन्दी सम्बन्धी बातोंकी जानकारी कराने, विद्यार्थियों तथा नवयुवकोंमें हिंदी प्रेम अुत्पन्न करने और हिंदी पत्रोंको हिंदी सम्बन्धी समाचार देनेका प्रयत्न किया जायगा। यह कार्यालय हिंदीके सम्बन्धमें विविध प्रकारकी सूचनाओंका केन्द्र भी होगा जिससे हिंदी जिज्ञासुओंको हिंदी संबधी आवश्यक जानकारी मिल सके। कार्यालय हिंदी प्रेमियों और हिंदी-सेवियोंके लिये राजधानीमें केन्द्रका काम करेगा और अुसके साथ सामयिक पत्रोंका वाचनालय और सम्मेलन तथा अन्य प्रकाशकोंके प्रकाशनोंका अेक संग्रह भी रखेगा जिससे जनता तथा राजधानीमें आनेवाले विदेशी यात्री लाभ अुठा सकेंगे।

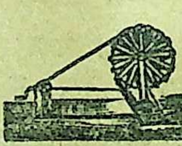

गुरुकुल-पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

महाराष्ट्र

पूना—स्थानीय रा. भा. सेवा मंदिरका स्नेह सम्मेलन गत ९ अप्रैलको प्रा. शं. दा. चितले अेम. अे. बी. टी. विशारद की अध्यक्षतामें मनाया गया। सम्मेलनमें लगभग १५० विद्यार्थी तथा पूनाकी विभिन्न संस्थाओंके प्रतिनिधि अुपस्थित थे। श्री. ह. कृ. कुलकर्णीने अध्यक्ष महोदयका परिचय कराया तथा श्री. सज्जनराम केणीने सेवा मंदिरकी प्रमुख प्रवृत्तियोंसे श्रोताओंको अवगत कराया। तदुपरांत सर्वश्री गंगाधर शास्त्री, खिंदुरकर, शं. के. गोखले, चिं. बा ओंकार, श्रीराम अट्रावलकर, दामोदर कुलकर्णी, रा. कृ. सप्रे, वेंयर हरि साठे तथा सौ. सुधा देशपांडे आदिके व्याख्यान हुअे। श्री. चितलेजीने अपने भाषणमें हिन्दी प्रचारके महत्वपर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। सम्मेलनमें कोविद वर्गकी ओरसे 'सेवा मंदिर'को टेबिल और कुर्सी भेंट की गअी। विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र प्रदान किअे गअे तथा सर्व प्रथम अुत्तीर्ण होनेवालोंको पुरस्कृत किया गया। श्री पं. ना. साठेके आभार-प्रदर्शनके अुपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पंढरपुर – पंढरपुर रा. भा. प्रचार समितिकी बैठक गत १६-३-५० को समितिके कार्यालयमें श्री. बिडकरकी अध्यक्षतामें हुअी। पदाधिकारियोंका चुनाव अिस प्रकार हुआ—सभापति श्री. मे. भगवानराव गणेश भादुले, बी अे. अेल् अेल् बी वकील, अध्यक्ष नगरपालिका पंढरपुर; अुपसभापति श्री. मे. कृ. ना. अुर्फ अप्पासाहब बिडकर अुपाध्यक्ष नगर पालिका पंढरपुर; सचालकः—श्री. अ. गा. कागदे; शिक्षा मंत्रीः—श्री दामोदर शास्त्री पाठक, अर्थ-मंत्रीः—श्री वा. द. वांगीकर; साधारण सदस्यः—सर्वश्री सौ. कमलाबाअी अबादास कागदे; वासुदेव रामचंद्र खिस्ते; अनंत धोंडो जोशी; गोविंद प्रह्लाद पाठक; शं. ब. [illegible]लकर; रामचंद्र परदेशी; केशव महादेव खिस्ते; अेकनाथ सदाशिव खिस्ते; माधवराव खिस्ते; वे. मू. प्रह्लादशास्त्री आवसेकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बओ

राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा दादरका छठा प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सव गत १० मार्चको श्री राजाबहादुर नारायणलालजी पित्तीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर अपने भाषणमें बम्बओ विश्वविद्यालयके अुपकुलपति न्यायमूर्ति अेन० अेच० भगवतीने देशकी अेकताके लिअे राष्ट्रभाषाके महत्त्व पर प्रकाश डालते हुअे विश्वविद्यालयोंमें हिन्दी माध्यमकी आवश्यकतापर जोर दिया। समारोहके अध्यक्ष श्री राजाबहादुर नारायणलालजी पित्तीने कहा कि आज अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें हिन्दीका अंग्रेजी जैसा स्थान नहीं है फिर भी कबीर, सूर अेवं तुलसीकी रचनाअें विश्व साहित्यकी तुलनामें रखी जा सकती हैं। आज हमें हिन्दीको समृद्ध बनानेका प्रयत्न करना चाहिअे।

मध्यभारत

भोपाल—स्थानीय आर्य कन्या विद्यालयमें गत २३ अप्रैलको सितम्बर ५९ की राष्ट्रभाषा तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको आर्य मित्र सभाके मन्त्री श्री रामदासजीकी अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरित किये गअे। स्वागत भाषणके पश्चात् श्री कृष्ण गोपालजीने समितिकी परीक्षाओंकी वार्षिक प्रगतिपर प्रकाश डाला तथा कार्य विवरण पढ़कर सुनाया। आपने राष्ट्रभाषा तथा अन्य हिन्दीकी परीक्षाओंके लिअे वर्ग खोलनेकी आवश्यकता बताते हुअे राष्ट्रभाषा प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविद अेवं सम्मेलनकी प्रथमा परीक्षाके लिअे वर्ग खोले जाने की घोषणा की।

अन्तमें प्रमाण-पत्र वितरणके पश्चात् केन्द्र-व्यवस्थापकजीने समितिको सहयोग देनेवाले सभी महानुभावों तथा आगन्तुकोंको धन्यवाद देते हुअे कहा कि समिति अेक महान लक्ष्यको लेकर आगे बढ़ रही है। आशा है अिस कार्यमें हमें सभी प्रचारकों अेवं नागरिकोंका सक्रिय सहयोग प्राप्त होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण आफ्रिका

डरबन— हिन्दी-शिक्षा-संघ, नातालकी ओरसे भारतवर्षके सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री. गंगाप्रसाद अुपाध्यायका भव्य स्वागत हुआ। संघके तत्वावधानमें आयोजित अेक सभामें अुपाध्यायजीने हिन्दीके अंतर्राष्ट्रीय महत्वपर विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया। सभाके अध्यक्ष पं. नरदेव वेदालंकारने अपने व्याख्यानमें प्रवासी भारतीयोंमें हिन्दी प्रचारकी समस्याओंपर प्रकाश डाला।

गत १६ फरवरीको आर्य प्रतिनिधि सभा, नातालकी रजत जयंतीके अवसरपर पं. नरदेव वेदालंकारकी अध्यक्षतामें, मातृभाषा सम्मेलन मनाया गया। सम्मेलनमें डा. अेन. पी. देसाअी अेवं पं. बी. जे महाराजने अुपस्थित महानुभावोंसे हिन्दी सीखनेकी अपील की। पं. नरदेव वेदालंकारका अध्यक्ष पदसे ओजस्वी भाषण हुआ।

गत ६ मार्चको प्रथम नाताल प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति श्री. बी. अेम. पटेलका स्वदेश जाते हुअे जहाजमें ही देहावसान हो गया। श्री. बी. अेम. पटेल हिन्दी प्रचारमें बड़ी दिलचस्पी लेते थे। आपने संघको २५ पौंडका दान भी दिया था। आपके निधनसे प्रवासी भारतीयोंको गहरी क्षति पहुँची है।

पीटर मेरित्सबर्गके राष्ट्रभाषा-प्रचारक पं. जगमोहनजी विद्यारत्नने हिन्दी प्रचारार्थ अुत्तरी नातालके लेडीस्मिथ, डनहाअुजर, डंडी, न्यूकासिल, ग्लेंको आदि शहरोंका दौरा किया। अिन स्थानोंमें अब हिन्दीका प्रचार तेजीसे होने लगा है।

[प्रमाणित प्रचारकों अेवं परीक्षा केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे अपने-अपने स्थानोंके समाचार प्रांतीय संचालकोंके ही द्वारा भेजा करें तभी अुन्हें 'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशित किया जायगा —संपादक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-फल:—

अप्रैल ५० की परीक्षाओंका परीक्षा-फल १५ जूनको प्रकाशित होगा।

परीक्षा-फल निश्चित तिथिके कुछ दिन पहले केन्द्र-व्यवस्थापकके पास भेजा जावेगा। परीक्षार्थी अपना परीक्षा-फल अपने केन्द्र-व्यवस्थापकसे ही प्राप्त करें। वर्धा कार्यालयसे परीक्षार्थियोंको परीक्षा-फल सम्बन्धी पत्रोंका अुत्तर न दिया जा सकेगा।

गत परीक्षा-समिति (६-१२-४९) के निर्णयके अनुसार परिचय परीक्षार्थीको अुत्तीर्ण होनेके लिये कम-से-कम ३५ अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

कोविद परीक्षामें श्रेणी केवल लिखित ४ प्रश्न-पत्रोंके आधार पर ही दी जावेगी।

अलग-अलग प्राप्तांक:—

जो अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने प्रश्न-पत्रोंके अलग-अलग प्राप्तांक मँगाना चाहेंगे, वे चार आना शुल्कके साथ अुत्तीर्ण परीक्षाका नाम तथा क्रम-संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखकर भेजें।

अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे अलग-अलग प्राप्तांक मँगानेका शुल्क नहीं लिया जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्निरीक्षण :—

अप्रैल ५० की परीक्षाओंमें अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर-पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण ५ जुलाओ तक करा सकते हैं। प्रत्येक अुत्तर-पुस्तकके लिये आठ आना निरीक्षण शुल्कके साथ अपना नाम, परीक्षा क्रम-संख्या, प्रश्नपत्र संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखकर ५ जुलाओ तक प्रार्थना-पत्र भेजें।

पुनर्निरीक्षणमें अुत्तर-पुस्तककी दुबारा जाँच नहीं होती। अिसमें केवल प्रत्येक अुत्तरके लिये अंक दिये गये या नहीं, सभी अुत्तरोंके अंकोंकी जोड़ ठीक है या नहीं—आदिका निरीक्षण होता है।

'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा-फल:—

राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाका परीक्षा-फल भी ता० १५ जूनको प्रकाशित होगा।

अलग-अलग प्राप्तांक :—

रत्न परीक्षा अुत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी १ रु. भेजनेपर अपने अलग-अलग प्राप्तांक मँगा सकेंगे।

दुबारा जाँच:—

जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर—पुस्तकोंकी दुबारा जाँच करवाना चाहेंगे, वे परीक्षा-फल प्रकाशन तारीखसे २५ दिनके अन्दर (१० जुलाओ तक) करा सकते हैं। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी प्रत्येक अुत्तर-पुस्तकके लिये २ रु. जाँच शुल्कके साथ नियत तिथि तक अपना प्रार्थना-पत्र भेजें।

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा—

आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा सितम्बर ५० में राष्ट्रभाषा प्रचार-परीक्षाओंके साथ की जावेगी। साधारण राष्ट्रभाषा-रत्न आवेदन-पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख १६ जुलाओी है। राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षामें कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थी सम्मिलित हो सकते हैं।

सीधे राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षामें सम्मिलित होनेके लिये परीक्षार्थी अपना प्रार्थना-पत्र अुत्तीर्ण परीक्षाकी प्रमाणपत्र-प्रतिलिपिके साथ केन्द्र-व्यवस्थापकके मार्फत २० जून तक वर्धा कार्यालय भेज दें।

कोविद अुपाधि शाल:—

कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको अुपाधि-शाल देनेकी व्यवस्था समितिकी ओरसे की गओी है।

फरवरी ५० से कोविद अुत्तीर्ण जो परीक्षार्थी शाल लेना चाहें, वे केन्द्र-व्यवस्थापकके पास ३ रु. जमा करा दें। केन्द्रोंसे अिकट्ठी की हुओी रकम प्राप्त होनेपर परीक्षार्थियोंमें वितरण करनेके लिये कोविद अुपाधि शाल केन्द्र-व्यवस्थापकके पास भेज दी जावेंगी।

कोविद अुपाधि शालके लिये अिकट्ठी की हुओी रकम केन्द्र-व्यवस्थापक परीक्षा-फल प्रकाशन तिथिके बाद १ माहके अन्दर वर्धा कार्यालय भेज दें।

अप्रैल ५० की परीक्षाओंमें अधीक्षण कार्य:—

गत परीक्षाओंके समय गुजरात, महाराष्ट्र तथा बम्बओी प्रान्तोंके विभिन्न केन्द्रोंमें अधीक्षण (आकस्मिक जाँच) कराया गया।

अबतक अधीक्षकोंसे जो विवरण प्राप्त हुआ है अुसके आधारसे निरीक्षण किये हुये महाराष्ट्रके २९ केन्द्रोंमेंसे २० केन्द्रोंमें परीक्षा-व्यवस्था सुचारु रूपसे रही हैं। ९ केन्द्रोंमें गड़बड़ी पाओी गयी है।

बम्बओी शहरके २० केन्द्रोंसे १६ केन्द्रोंमें परीक्षा-व्यवस्था अुत्तम रही है। ५ केन्द्रोंमें गड़बड़ी पायी गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात प्रान्तका पूरा विवरण प्राप्त होनेका है।

जिन केन्द्रोंमें गड़बड़ी पायी गयी है, अुनके विषयमें विशेष जानकारी प्राप्त की जा रही है। अव्यवस्थाके आधारपर परीक्षाअें अमान्य करने तथा केन्द्रोंको तोड़नेपर विचार हो रहा है। अैसे केन्द्रोंके सम्बन्धमें अन्तिम निर्णय राष्ट्रभाषाके आगामी अंकमें प्रकाशित होगा।

आगामी प्रचार परीक्षाअें:—

आगामी प्रचार परीक्षाअें ता १६, १७ सितम्बरको होंगी।

अिस परीक्षाके लिये केन्द्र-व्यवस्थापकके पास आवेदन-पत्र देनेकी अन्तिम तारीख १६ जुलाअी रहेगी।

सीधे प्रार्थना-पत्र:—

सीधे प्रार्थना-पत्र वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख २० जून है। अिससे पहले भी प्रार्थना-पत्र भेजकर कार्यालयका निर्णय प्राप्त किया जा सकता है। साधारणतया सीधे परिचय या कोविद परीक्षामें सम्मिलित होनेकी स्वीकृति नहीं दी जाती। योग्य व्यक्तियोंके प्रार्थना-पत्र पर ही विचार किया जाता है। परीक्षार्थियोंको अपना प्रार्थना-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके मार्फत अुत्तीर्ण परीक्षाकी प्रमाण-पत्र प्रतिलिपिके साथ (जिसपर केन्द्र-व्यवस्थापकके हस्ताक्षर आवश्यक है) २० जून तक वर्धा कार्यालय भेजना चाहिये। प्रार्थना-पत्रके साथ अुत्तीर्ण परीक्षाका प्रमाण-पत्र या अुसकी प्रतिलिपि प्राप्त न होनेपर, अथवा निश्चित अवधिके पश्चात मिलनेवाले प्रार्थना-पत्रोंपर विचार नहो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर ५० का परीक्षाओंके लिये नये केन्द्रः— समितिके स्वीकृत केन्द्रोंके अलावा परीक्षाओंका (सिर्फ प्रारंभिक तथा प्रवेशके लिये) नया केन्द्र कोअी खोलना चाहे तो वे ता. ३० जून तक नया केन्द्र खोल सकते हैं। अिसके लिये अपने प्रान्तीय संचालकसे केन्द्र-व्यवस्थापक आवेदन-पत्र मँगाकर प्रान्तीय संचालककी सिफारिशके साथ ३० जून तक वर्धा कार्यालय भेज दें।

३० जूनके बाद सितम्बर ५० की परीक्षाओंके लिये केन्द्र स्वीकृत न हो सकेगा।

परीक्षा-समिति द्वारा किये गये महत्वके निर्णयः—

सितम्बर ५० की परीक्षाओंके लिये :—

स्वीकृत राष्ट्रभाषा-रत्न केन्द्रः—

सितम्बर ५० से 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षाके लिये नीचे लिखे केन्द्र स्वीकृत हैं:—

अिंफाल	(मणिपुर स्टेट)	बम्बअी	
गौहाटी	(आसाम)	कोल्हापुर	(महाराष्ट्र)
कटक	(अुत्कल)	जलगांव	(")
बरहमपुर	(अुत्कल)	नासिक	(")
अजमेर	(राजस्थान)	पूना	(")
ग्वालियर	(मध्यभारत)	सोलापुर	(")
सूरत	(गुजरात)	सातारा	(")

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमदाबाद	(गुजरात)		
बड़ौदा	(,,)	तेनाली	(आंध्र)
राजकोट	(,,)	हैदराबाद	(हैदराबाद)
बेलगांव	(कर्नाटक)	धनतोली	(मध्यप्रदेश)
		वर्धा	(,,)

राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाके लिये दक्षिण भारतमें भी अस्थायी केन्द्र खोले जा सकेंगे। विशेष जानकारीके लिये पत्र-व्यवहार करें।

कोविद-केन्द्रः—

माटुंगा (बम्बअी) तथा नसिराबाद (महाराष्ट्र) सन् १९५० के लिये स्थाअी कोविद-केन्द्र स्वीकृत किये गये।

अतिरिक्त विषय (परिचय अुर्दू)

सितम्बर ५० की परीक्षाओंसे परिचय अुर्दू (ऐच्छिक विषय) हटा दिया गया है।

परिचय मौखिक परीक्षा—

सितम्बर ५० से परिचय मौखिक परीक्षा नहीं ली जावेगी। परिचय परीक्षा अुत्तीर्ण होनेके लिये अब सिर्फ लिखित परीक्षामें ही नियमानुसार ३५ /० अुत्तीर्णांक प्राप्त करना होगा।

सर्वप्रथम 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षार्थियोंको पुरस्कारः—

अप्रैल ५० की राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षासे सभी प्रान्तोंमें सर्व प्रथम आनेवाले परीक्षार्थीको २५ रु. तथा द्वितीय आनेवालेको १५ पुरस्कार समितिकी ओरसे दिया जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
आसाम	श्री रामाशीष प्रसाद सिंह	१६८८	शिलांग
,,	,, राजकुमार कोहिली	१६८६	,,
राजस्थान	,, विद्याशंकर आनन्दशंकर नागर	१६६०	साँभरलेक
मध्यभारत	,, मदनलालजी जोशी सा. रत्न	१६६१	मन्दसौर
गुजरात	,, मार्कंडराय त्र्यम्बकलाल बूच	१६६२	पेटलाद
,,	,, चुनीभाओी कल्याणभाओी पटेल	१६६३	,,
,,	,, जयकृष्ण आशाराम जोशी	१६६४	अजमेर
,,	,, दयालजी रणछोड़जी नायक	१६६५	मांगरोल
,,	,, रमणलाल सोमेश्वर दवे	१६६६	महेमदाबाद
,,	,, जीवनलाल गिरधरलाल देसाओी	१६६७	संखेड़ा
,,	,, अम्बालाल शिवलाल पटेल	१६६८	कड़ी
,,	,, केशवलाल गोकलदास पटेल	१६६६	,,
,,	,, गोपालभाओी करसनदास पटेल	२०००	,,
,,	,, गांडालाल न. पटेल	२००१	,,
,,	,, रतिलाल छगनलाल शाह	२००२	नवसारी
,,	,, नरेन्द्र चन्दुलाल दवे	२००३	अहमदाबाद
गुजरात	,, रतिलाल सांकलचंद नायक	२००४	कड़ी
,,	,, अिन्दुलाल मणिशंकर दवे	२००५	काविठा
महाराष्ट्र	,, सौ. द्वारकाबाई हेमचन्द्र पाटील	२००६	जलगाँव
,,	,, गोदावरी जनार्दन देव	२००७	पुणें २
,,	,, भाऊराव महारु पाटील	२००८	मनमाड़
,,	,, लक्ष्मण वासुदेव मांडवगणे	२००६	जलगाँव
,,	,, लक्ष्मण नारायण रासने	२०१०	अहमदनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

,,	,, सिधु ज्ञानेश्वर भिगारकर	२०११	पुणें २
हैद्रा. (दक्षिण)	,, रामेश्वर जैराम गुप्त	२०१२	हिंगोली
,,	,, तुकाराम शिवरामराव कुलकर्णी	२०१३	हैदराबाद(द.)
,,	,, भुजंगराव शंकरराव चिचोलकर	२०१४	हिंगोली (द.)
विदर्भ-नागपुर	,, नारायण विठुजी गावन्डे	२०१५	लोणार
,,	,, जनार्दन कृष्णाजी सुपे	१०१६	बुलढाना
,,	,, ठाकुर सूरजसिंह सिसौदिया	२०१७	वाशीम
,,	,, विठ्ठल नारायण खेड़कर	२०१८	पथ्रोट
,,	,, रघुनाथ विष्णु समर्थ	२०१६	बुलढाना

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
वि. नागपुर	पवनी	६६४
,,	रालेगाँव	६५५
,,	पहूर	६२१
मध्यभारत	बेरसिया	४६३
राजस्थान	चितौड़गढ़	६२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य पुस्तक सूची

[सितम्बर ५० के लिये]

१–राष्ट्रभाषा प्रारंभिक परीक्षा

×शुल्क :—१-८-० (प्रश्नपत्र १) अंक १०० समय ३ घंटे

(१) प्रारंभिक बोधिनी (परिवर्तित संस्करण, रा. भा. प्र,) ०-६-०
(२) राष्ट्रभाषाकी पहली पुस्तक (रा. भा. प्र. समिति) ०-६-०
(३) ,, दूसरी पुस्तक ,, ०-७-०
(४) उड़ते जुगनू ,, ०-८-०
(५) रा. भा. का सरल व्याकरण भाग १ ,, ०-१०-०

२–राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षा

शुल्क*:—२-८-० (प्रश्नपत्र २) प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पहला प्रश्नपत्रः—गद्य-पद्य पूर्णाङ्क १००

(१) राष्ट्रभाषा तीसरी पुस्तक (प्रचार समिति, वर्धा) ०-७-६
(२) गुलदस्ता भाग १ ,, ०-६-०

नीचे लिखी कवितायें छोड़करः—

१. धीर नर, २. बालककी कल्पना, ३. चाह, ४. अुठो जागो ५. तेरी छबि, ६. हमेशा प्रेमकी रट हो जबाँपर।

× अफ्रीकाके लिये शुल्क निम्नलिखित है—प्रारंभिक ४ शिलिंग, प्रवेश ८ शि., परिचय १२ शि., तथा कोविद १६ शिलिंग।

*जो परीक्षार्थी प्रारंभिक परीक्षा अुत्तीर्ण किये बिना सीधे प्रवेशमें सम्मिलित होंगे, अुन्हें ४) रु. शुल्क देना होगा। अिसी प्रकार सीधे परिचयका शुल्क ६) रु. और सीधे कोविदका ९।।) रु. है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा प्रश्नपत्रः—(कहानी, पत्र, निबन्ध व्याकरण, मुहावरे तथा अनुवाद) पूर्णाङ्क १००

(१) कहानी संग्रह भाग १ परिवर्तित संस्करण, १९४९

या कहानी संग्रह भाग १, पुराना संस्करण 0-६-0

(२) सरल रचना और पत्रलेखन ,, 0-६-0

(३) राष्ट्रभाषाका सरल व्याकरण भाग १ ,, 0-१0-0

(४) मुहावरे और कहावतें ,, 0-१२-0

३ राष्ट्रभाषा परिचय परीक्षा

(प्रश्नपत्र ३)

शुल्कः— ३-८-० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पहला प्रश्नपत्रः—पद्य— पूर्णाङ्क १००

(१) पंचवटी (श्री मैथिलीशरण गुप्त) 0-६-0

(२) गुलदस्ता भाग २ (प्रचार समिति, वर्धा) 0-८-0

नीचे लिखी कवितायें छोड़कर—

१. प्रार्थना, २. प्रियतम, ३. आप बचा लूँ अपने तईं, ४ परिचय, ५. सरसोंका सौजन्य ६. कुतुबमीनार ७. मेरा निश्चय, ८. जननी, ९. अभिलाषा

दूसरा प्रश्नपत्रः—गद्य, नाटक तथा कहानी पूर्णांक १००

(१) चलती हिन्दी (प्रचार समिति, वर्धा) 0-१२-0

(२) रक्षा बंधन (श्री हरिकृष्ण प्रेमी) १-१-0

(३) कहानी संग्रह भाग २ परिवर्तित संस्करण, १९४९ 0-१२-0

अथवा

,, ,, ,, पुराना संस्करण 0-९-0

तीसरा प्रश्नपत्रः—(निबंध, व्याकरण, मुहावरे, अनुवाद और पत्र-लेखन)

सहायक पुस्तकें

(१) मुहावरे और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा) 0-१२-0

(२) रा. भा. का सरल व्याकरण भाग २ 0-१२-0

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) निबंध प्रबोध २-८-०

विशेष सूचनाः—परिचय मौखिक परीक्षा सितम्बर ५० से हटा दी गयी है।

४—राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा

(प्रश्नपत्र ४ लेखन कार्य और मौखिक परीक्षा)

शुल्कः—६-०-० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पहला प्रश्नपत्रः—पद्य पूर्णांक १००

(१) जयद्रथ-वध (श्री मैथिलीशरण गुप्त) ०-१२-०

(२) गुलदस्ता भाग ३ (प्रचार समिति, वर्धा) ०-१२-०

नीचे लिखी कविताएँ छोड़कर—

१ कबीरदासजीका तीसरा पद, 'झीनी झीनी बीनी चदरिया', २. तुलसीदासजीका 'विजय-रथ', ३. 'जय जय प्यारा भारत देश', ४. विधवा, ५. जगत् अुबारो, ६. ग्राम, ७ अुर्दू पद्यमेंसे 'चुने फूल'

दूसरा प्रश्नपत्रः— (गद्य, नाटक और कहानी) पूर्णांक १००

(१) कहानी संग्रह भाग ३ परिवर्तित संस्करण ०-१२-०

अथवा

पुराना संस्करण (प्रचार समिति, वर्धा)

(२) शाहजहाँ (श्री द्विजेन्द्रलाल राय) १-८-०

(३) पाँच अेकांकी (प्रचार समिति, वर्धा) १-०-०

(४) आधुनिक गद्य संग्रह " " " १-८-०

तीसरा प्रश्नपत्रः— (शीघ्रवाचन, मुहावरे, व्याकरण, निबंध, अनुवाद) पूर्णांक १००

(१) निशागीत (अनन्त गोपाल शेवड़े) २-०-०

*(२) गोदान (श्री प्रेमचंद संक्षिप्त संस्करण) ४-०-०

अथवा

*(३) त्यागपत्र (जैनेन्द्रकुमार) १-४-०

---

* गोदान तथा त्यागपत्र विकल्प रूपमें केवल सितम्बर ५० के लिये ही रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) आत्मकथा (गांधीजी: संक्षिप्त संस्करण १-८-०

(५) मुहावरे और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा) ०-१२-०

(६) संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण १-८-०

चौथा प्रश्नपत्र:—(हिन्दीभाषा तथा साहित्यका अितिहास, समालोचना और सामान्यज्ञान) पूर्णांक १००

(१) हिन्दी भाषा और लिपि (श्री धीरेन्द्र वर्मा). १-०-०

(२) हिन्दी साहित्यका संक्षिप्त अितिहास (नन्ददुलारे वाजपेयी) १-०-०

अथवा

(३) हिन्दी साहित्यका अितिहास (व्रजरत्नदास) १-४-०

समालोचना ज्ञानके लियेः—

साहित्यका साथी (रा. भा. प्र. समिति) १-८-०

सामान्य-ज्ञानके लिये नीचे दिये साहित्यसे सहायता ली जा सकती है—

१–हिन्दुस्तानकी समस्यायें (जवाहरलाल नेहरू) ३-०-०

२–आजकी समस्यायें (राहुल सांकृत्यायन) ०-१२-०

३–हिन्दीके साप्ताहिक समाचारपत्र मासिक-पत्र-पत्रिकायें, समितिका मुखपत्र 'राष्ट्रभाषा'।

मौखिक परीक्षा १०० अंककी होगी।

(हस्तलिखित पठन वाचन ३० अंक, कंठस्थ गद्य-पद्य २० अंक और मौखिक बातें ५० अंक)

कोविद परीक्षाके लिये लेखन-कार्य स्वतंत्र रूपसे ५० अंकका रहेगा। अुसमें १८ अुत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य है। परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें कोविदके अुपयुक्त, आठ निबंध लिखेंगे। प्रत्येक निबंध कम-से-कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुसे अपने शिक्षकसे जँचवाना चाहिये। परीक्षार्थी अिन आठ लेखोंको अपनी क्रम-संख्याके साथ अपने मौखिक परीक्षकके पास देंगे। निम्न सूचीसे कोअी भी ८ निबंध लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबंध सूची

कोविदके विद्यार्थी निम्न १० निबन्धोंमें से कोअी भी ८ लिखें—

(१) आधुनिक नारीके आदर्श
(२) सिनेमा तथा रेडिओ द्वारा हिन्दी प्रचार
(३) यातायातके आधुनिक साधन तथा अुनका महत्त्व ।
(४) निर्वासित समस्या और अुसका हल
(५) हमारे राष्ट्रीय कवि
(६) राष्ट्रीय प्रगतिमें धर्मका स्थान
(७) आधुनिक शिक्षा प्रणाली
(८) शरत् पूर्णिमा
(९) समाज सेवा
(१०) मेरा प्रिय नेता

❀ पुस्तकें मंगाते समय अुनकी कुल कीमतका ¼ पेशगी भेजना आवश्यक है । पेशगी प्राप्त हुअे बिना पुस्तकें प्रायः नहीं भेजी जातीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने प्रश्नपत्र प्राप्य*

नाम	समय	मूल्य	डाक-व्यय
१. प्रारंभिक-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-४-०	०-१-०
२. प्रवेश-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-६-०	०-१-०
३. परिचय-प्रश्नपत्र	[सन् ४७ से ४९ तक]	०-८-०	०-२-०
४. कोविद-प्रश्नपत्र	[,, ,,]	०-१०-०	०-२-०

हरेक खुला प्रश्नपत्र दो पैसेके हिसाबसे बेचा जाता है। लेकिन अिन संग्रहीत प्रश्नपत्रोंका मूल्य हमने अपेक्षाकृत कम रखा है। आशा है, परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

* प्रश्नपत्र मँगाते समय कीमतके साथ डाक-व्यय अवश्य भेजें। रजिस्ट्रीसे मँगानेके लिअे चार आने अधिक भेजें। पेशगी मनीऑर्डर द्वारा ही भेजें। वी. पी. नहीं भेजी जाती।

भूल सुधार

'राष्ट्रभाषा' के गत अंक में निम्न कोषोंकी कीमत भूलसे कम छपी थी। कृपया अुनको सुधारकर अिस प्रकार पढ़ें:—

कोषका नाम	पृष्ठ संख्या	मूल्य	डाक-व्यय
प्रामाणिक हिन्दी कोष	१३००	१०-१०-०	०-८-०
भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी कोष	१२६२	९- ०-०	०-८-०
राष्ट्रभाषा-मराठी लघु कोष	२४३	२- ८-०	०-६ ०

—प्रकाशन-विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तरफ़
'राष्ट्रभाषा' ग्रं

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

विशेष सूचना

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

अभी तक हम हिन्दी-कोष प्रेमियोंको कोष भेजनेमें असमर्थ रहे प्राप्य नहीं थे। अभी हमने निम्नलिखित अुपयोगी कोष मँगा रख लिअे हैं। जिनको आवश्यकता हो वे कोषकी पूरी कीमत (डाक-व्ययसहित) पेशगी भेजकर मँगा लें। वी. पी. से कोष नहीं भेजे जाते।

कोषका नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य	डाक-व्यय
१. शासन शब्दकोष [Administrative Dictionary]	४३०	१५-०-०	सं
२. प्रामाणिक हिन्दी-कोष	१३००	१०-१०-०	०-८
३. आदर्श हिन्दी शब्दकोष (संक्षिप्त)	७६३	६-०-०	०-६
४. आधुनिक कोष (हिन्दी-हिन्दी)	१२२८	४-८-०	०-८
५. भार्गव हिंदी-अंग्रेजी कोष (संक्षिप्त)	१०५०	४-०-०	०-६
६. भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी कोष	१२६२	६-०-०	०-८
७. अंग्रेजी हिन्दी स्कूल कोष	३७८	२-०-०	०-४-
८. अुर्दू-हिन्दी कोष	४२४	४-८-०	०-६
९. हिन्दुस्तानी-गुजराती कोष	३७६	४-०-०	०-८
१०. मराठीसे हिन्दी शब्दसंग्रह	५३०	६-०-०	०-४
११. मराठी-हिन्दुस्तानी कोष	१९१	२-०-०	०-६
१२. राष्ट्रभाषा-मराठी लघुकोष	२४३	२-८-०	०-६

—पुस्तक-विक्री-विभाग

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी
गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी

जुलाअी १९५०

मान लो, तुम्हारी कोअी निन्दा करता है
अुसीका बिगड़ता है, तुम्हारा नहीं। अपनी वाणी
कार्यको निन्दाके योग्य मत बनाओ। कोअी तुम्ह
साथ शत्रुता भी करे, तब भी तुम्हारा व्यवहार श
जैसा नहीं होना चाहिअे। प्रेमसे अुसे समझा
समझाते समय अुसकी त्रुटियोंपर जोर न दो। अ
सहिष्णुताको भी बढ़ा-चढ़ाकर न दिखाओ। अ
हृदयकी सद्भावनाओंसे अुसके मनका परिवर्तन
नेका प्रयत्न करो।

—मार्क्स ऑरेलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख

लेख	पृष्ठ
१. आवाहन	३३७
२. आधुनिक भारतीय कलाका विकास	३३८
३. राष्ट्रभाषा-संसार	३४७
४. हमारी दृष्टिमें	३५२
५. सोवियत् संघमें डाकद्वारा पुस्तक-प्रसार	३५६
६. प्रान्तीय हलचलें	३५९
७. परीक्षा-विभाग	३६३

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अंक प्रतिका ।) है। वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभाषा' भेजा जा सकेगा।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक प्रति माह १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है। अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना नाम, पूरा पता तथा ग्राहक-संख्या साफ अक्षरोंमें लिखनी चाहिये।

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारक एवं केन्द्र-व्यवस्थापक पत्र-व्यवहारके समय अपनी क्रम-संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

लेखकोंसे

'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ एक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन.

वर्ष १] वर्धा, जुलाओी–१९५० ओी. [अंक १

आवाहन

·ः श्री सुमित्रानन्दन पंत ː·

नव जन भारतके आंगनमें
  राष्ट्र-चेतने ! अुतरो,
नव जीवनके ज्योति चरणधर
  जन-गण-मनमें विचरो ।

स्वतंत्रता ही नहीं ध्येयवर
  वह विकासके हित साधन भर,
मुक्तिमार्गसे मनुज अेकते
  लोक प्रीतिमें लहरो ।

हो प्रशस्त नव-संततिका पथ
  पूर्ण मनुजमें देव मनोरथ,
विश्व-अेकते ! जन-स्वातंत्रताके
  अंतरसे निखरो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक भारतीय कलाका विकास

: श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' :

(प्रस्तुत लेख हिन्दीके सुप्रसिद्ध लेखक और 'विश्ववाणी', 'जनवाणी' आदि पत्रोंके भूतपूर्व संपादक श्री बैजनाथसिंहजी 'विनोद' की कलमसे लिखा गया है। आप राष्ट्रभाषाके मँजे हुअे लेखक और प्रसिद्ध पत्रकार हैं। गत माससे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको अुनकी सेवाओंका सहयोग मिल रहा है। यह जानकर राष्ट्रभाषा प्रेमियोंको प्रसन्नता होगी।

—संपादक)

आधुनिक साहित्य और कलाके मूलमें भारतीय नवजागृति आन्दोलनका महत्वपूर्ण स्थान है। ओीस्टअिंडिया कम्पनीके कालसे भारतीय समाजमें मध्यम वर्गका आविर्भाव शुरू हुआ। अिस समय यूरोपमें औद्योगिक क्रान्ति हो चुकी थी। नवोत्पन्न मध्यम वर्गके अंग्रेजी शिक्षा सम्पन्न लोग यूरोप अथवा अिंग्लैंडके सम्पर्कमें आ चुके थे। प्रारम्भमें अंग्रेजोंके सम्पर्कमें जो भारतीय आये, वे अंग्रेजोंके प्रभावसे अितने अभिभूत हो गये थे कि अुन्हें अपनी स्थितिका ज्ञान ही नहीं रह गया था। वे अपने समाज और अपनी भाषाको भी भूलने लगे। अुन्होंने अंग्रेजोंका अन्धानुकरण करना शुरू कर दिया। कलाके क्षेत्रमें राजा रवि वर्माकी चित्रकला अैसी ही थी। अुनकी चित्रकलामें टेकनीक यूरोपीय और विषय भारतीय पौराणिक था। अुसमें कल्पना और प्रतिभाकी नहीं नकलकी खूबी थी। पर वह युग ही नकलका था और अुसमें यह सुलझा हुआ नकल और अजीब संकर कला थी। अिसका समसामयिक सामाजिक कारण यह था कि नवीन अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त मध्यम वर्गके निकट यही कला अपूर्व थी। प्रारम्भमें अंग्रेजों और बादमें मध्यम वर्ग द्वारा मुगल और राजपूत कलाकी भी अुपेक्षा होती थी। यही कारण है कि अुस समय पाश्चात्यका यह नकल ही महत्वपूर्ण हो अुठा। वास्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मूर्तिके नामपर ग्रीक खम्भे चलते थे; ब्रह्म समाजके अनेक मन्दिर घर्चनुमा बने थे और मूर्तिके नामपर यूरोपीय और खासकर अंग्रेजी पोट्रेट चल रहे थे। असी ही विरज्जनक परिस्थितिमें भारतीय नव-जागृतिका आन्दोलन चला।

भारतीय समाजमें नव-चेतनाका जन्म राजा राममोहन रायसे शुरू होता है। राजा राममोहन राय सर्वप्रथम भारतीय ज्ञान और परम्परासे सम्बद्ध थे तथा अुसके बाद यूरोपीय सभ्यता और संस्कृतिके मर्मको भी समझते थे। किसी भी देशके नवजागृति आन्दोलनमें अुस देशकी प्राचीन संस्कृति और परम्पराकी ओर खास रुझान रहा है। राजा राममोहन राय और अुनके साथियों तथा समकालीनोंमें यह प्रवृत्ति खूब थी। अिसीलिअे अुन्होंने नअी परिस्थितिके अनुसार अपने आन्दोलनको अुपनिषद्से सम्बद्ध किया। अुन्होंने भारतीय संस्कृतिके सर्वाधिक अुदार मर्म-सूत्र को पकड़ा, और अुसीके द्वारा जीवित अतीतसे समाजके वर्तमानको जोड़कर, समाजमें शक्ति और स्फूर्ति पैदा कर दी। राजा राममोहन रायके कालमें जिस नवजागृतिका आन्दोलन चला, अुसका प्रभाव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अवनीन्द्रनाथ ठाकुरपर भी पड़ा। कहना चाहिये कि साहित्य और कलाके क्षेत्रमें ये ही अुस आंदोलनके नेता अथवा सूत्र-संचालक थे। किन्तु दोनों ही प्राचीन पूर्व और आधुनिक पश्चिमके प्रति अंधभक्त नहीं थे। दोनोंकी सजग दृष्टि विश्वकी हर गतिविधिपर थी। अिस समय यूरोपके कलाके क्षेत्रमें कुछ नये प्रयोग भी हो रहे थे। अिस समय यूरोपमें अिम्प्रेशनिज्म और पोस्ट अिम्प्रेशनिज्मका आंदोलन चल रहा था। दोनोंने राममोहन रायके पूर्व और पश्चिमको और ही रूपमें देखा। अेकने जीवन और चिन्तनके सभी क्षेत्रोंमें नूतन जगतकी सृष्टि कर दी और दूसरेने भारतीय कलाको अेक नया रूप दे दिया। अवनीन्द्रनाथके निकट भारतीय संस्कृति और कला भग्नावशेषके रूपमें नहीं थी; अुसे अुन्होंने विकासमान रूपमें देखा। अिसीलिअे प्राचीनके प्रति अुनके मनमें श्रद्धा नहीं, प्रेम है। पर भारतीय नवजागृति आंदोलनका प्रभाव अुस कालकी चित्रकलापर पड़ना अनिवार्य था और वह पड़ा। अुसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुर था—'भारतीयता'। अिससे यूरोपीय नैचरलिज्मके विरुद्ध भारतीय भाव और चिन्ताधाराको ही विषय वस्तुके रूपमें ग्रहण किया गया था। कलाके क्षेत्रमें भारतीयताकी प्रवृत्ति जगानेवाले ओ० बी० हैवेल थे। पर विदेशी होनेके कारण अुनके रास्तेमें अनेक बाधाअें थीं। संयोगसे जिस कालमें अवनीन्द्रनाथ कलाके क्षेत्रमें नवीन प्रयोग कर रहे थे, अुसी कालमें ओ० बी० हैवेलका अुनको सहयोग भी मिला। राजनीतिक क्षेत्रमें कांग्रेसके जन्मदाता जैसे ह्यूम थे, वैसे ही, बल्कि अुससे कुछ अधिक ही स्थान भारतीय कलाके क्षेत्रमें ओ०बी० हैवेलका है। हैवेलने प्राचीन भारतीय कलाके अुद्धार तथा आधुनिक भारतीय कलामें प्राण-प्रतिष्ठाके लिये प्रेरकका काम किया! अुन्होंने जीवित भारतीय कारीगरी और कारीगरों की रक्षा की और कलाके क्षेत्रमें अुन्हें प्रतिष्ठित कराया। अिसीलिये अुन्हें समकालीन भारतीयोंका विरोध तक सहना पड़ा। अिसी कालमें भारतीय चित्रकलाने अवनीन्द्रनाथ ठाकुरकी तूलिकामें नवजन्म ग्रहण किया। यूरोपीय कलासे पूर्णतः परिचित अवनीन्द्रनाथका मन वर्तमानसे प्राचीनकी ओर चला। राजपूत, मुगल और जापानी चित्रकलाके योगसे अुन्होंने भारतीय चित्रकलाको जन्म दिया। अुन्होंने वर्णमय जगतको अपनी तूलिकासे रूप दिया।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुरके बाद ही भारतीय चित्रकलामें नन्दलाल बसुका स्थान आता है। अवनीन्द्रनाथको पूरब और पश्चिमका प्राचीन और नवीनका, राजनीति, समाजनीति, साहित्य और कलाका सुन्दर और संयमित संस्कार माँकी गोदमें ही मिल गया था। ठाकुर परिवारमें जन्मके साथ ही अुनको यह सम्पदा अुपलब्ध हो गयी थी। पर नन्दलाल बसुका जीवन अैसा नहीं था। नन्दलाल बसु (मास्टर मोशाय) के पिता मुंगेर जिलेमें दरभंगा राजके अेक तहसीलदार थे। वहीं देहातमें ही अिनका बचपन बीता। दुर्गापूजा, ताजिया और खेलौनों द्वारा अिनकी कला-रुचि जागृत हुअी। १९०५ में मास्टर मोशाय अवनीबाबूके सम्पर्कमें आये और अवनीबाबूने अिन्हें चित्रकलाकी शिक्षा दी। १९१२ तक विधिवत अिन्होंने कलाकी शिक्षा ली। अिसके बाद ही ये अजन्ताकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कापी करने गये। मास्टर सोशायकी कला-रुचि सहज धार्मिक थी। अजन्ताने अुसे और भी प्रौढ़ कर दिया। भारतीय मूर्ति कलाका भी अुन्होंने अध्ययन किया और अुसके विविध गुणोंको अपनी तूलिकामें स्वीकार किया। अिस तरह मास्टर सोशायने साँची, भरहुत, गुप्तकालीन मूर्ति कला, अजन्ता, बाघ और राजपूत चित्रकलाका विधिवत अध्ययन किया। अुनका मन प्राचीन परम्पराके प्रति सदैव आकृष्ट था। अिसलिअे अुनकी कलामें अिन सबके योगने अेक अभिनव रूप धारण किया। अिसीलिअे नन्दलाल बसु महाशयने पौराणिक विषयोंको चुना और पौराणिक विषयों-को अुन्होंने अैसी लाअिन, ड्राअिंग, टेक्नीक और रंगों द्वारा प्रस्तुत किया, जो चित्रकलाके अितिहासमें अप्रतिद्वन्द्वी होते हुअे भी प्राचीन परम्पराकी आधुनिक रूपमें चरम परिणति है।

चिन्तनके क्षेत्रमें रवीन्द्रनाथ मुक्त वातावरण के समर्थक, पक्ष-पाती और व्यवहारकर्ता थे। किसी वाद, पद्धति अथवा संस्कारको वह अपनी ओरसे नहीं थोपते थे, विरुद्ध, अिसके व्यापकतर मानवीय रस-सृष्टिके आदर्शको अुन्होंने सदैव महत्व दिया है। अब भी शांतिनिकेतनमें यह आदर्श किसी रूपमें जीवित है। ओ० बो० हैवेल, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर और नन्दलाल बसु भी चित्रकलाके क्षेत्रमें अिसी आदर्शको माननेवाले रहे हैं—यद्यपि अभी हालमें अिस आदर्शके व्यवहार पक्षमें कुछ कमी आगयी है। शान्तिनिकेतनके सांस्कृतिक वातावरणमें चित्र-कलाके अन्दर मुक्त और व्यापकतर मानवीय रस-सृष्टिकी प्रवृत्तिका विकास हुआ। फलतः वास्तुवादी अथवा 'रियलिस्टिक' प्रवृत्तिका विकास हुआ। भावजगतमें निवास करनेवाली चित्रकलाका वस्तुजगतमें प्रवेश हुआ। वस्तुजगतकी वास्तविकताने अनुभूतिका आश्रय पाकर चित्रकलाके विषयमें वैचित्र्यका रूप लिया। जीवनकी साधारण घटनाओंने ही नहीं, बल्कि साधारण व्यक्तिके जीवनने भी चित्रकलामें स्थान प्राप्त किया। चित्रकलामें रूपकी अपेक्षा गुणकी ओर चित्रकारोंका रुझान हुआ।

चाहे जैसे भी हो, पर दो सौ सालके अितिहासमें यह कटु सत्य है कि जो आन्दोलन यूरोपमें आज होता है, वही अेशियामें कुछ दिनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद होता है। असका सम्बन्ध शासक शासित राजनीतिमें न ढूँढ़ वस्तु और व्यक्ति-मनके विकास-क्रममें ढूंढ़ना ही विज्ञान सम्मत औद्योगिक क्रांतिके कारण वस्तुओंका वैज्ञानिक अुत्पादन और अुत्पादक मनका विकास यूरोपमें पहले होता है और अेशियामें बादको, यही कटु सत्यका मूल रहस्य है। जो भी हो, आधुनिक भारतके अितिहास १९३० का सत्याग्रह संग्राम अेक नये युगका जन्मदाता है। यहीं भारतीय जीवनमें नये तत्वोंका समावेश होता है। यहींसे भारतीय राष्ट्रीयतामें साधारण किसानोंका प्रवेश होता है, यहींसे भारतीय राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयताकी ओर अुन्मुख होती है और यहींसे भारतीय राष्ट्रीयतामें समाजवादी तत्वोंका प्रवेश होता हैं। साहित्यके क्षेत्रमें प्राचीन रूढ़ि-परम्पराको अस्वीकार करनेकी प्रवृत्ति अिसी कालसे शुरू होती है। प्रेमचंदके 'गोदान' की चिन्ताधारा अिसी कालकी देन है, जिसमें सम्पूर्ण प्राचीन व्यवस्था, मान्यता और नैतिकताकी मृत्यु-सूचना है। और भारतीय कलाके क्षेत्रमें भी अिसी कालमें पौराणिकता और प्राचीनताको अस्वीकार करनेकी प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। श्रीरामकिंकर बैज अिस नयी प्रवृत्तिके जन्मदाता हैं, जिनकी कला प्राचीन परम्परासे अलग हो जाती है। श्रीरामकिंकर बैजकी कलापर अिम्प्रेशनिस्ट आंदोलनका प्रभाव है। यह आन्दोलन यूरोपमें चला। अिस आंदोलनकी पृष्ठभूमिमें यूरोपका पूंजीवादी समाज है। सामन्ती समाजमें अनेक विकृतियोंके बावजूद व्यक्तिका व्यक्तिके साथ कुछ मानवीय संबंध कायम रहता है। पर पूंजीवादी समाजमें यह सम्बन्ध गायब हो जाता है, रह जाता है व्यक्तिके साथ व्यक्तिका पण्यगत सम्बन्ध। मानवीय सम्बन्धोंके अिसी ह्रासकी प्रतिक्रिया अिम्प्रेशनिस्ट आंदोलनमें होती है। अिसीलिअे रूपकलामें विकलांग, पिसा घिसा, विवश और ढाँचा मात्र सामने आता है। पूंजीवादी समाजमें मानवीय सम्बन्धोंके अभावमें यह भाव पक्ष निष्क्रिय होता है। और शक्तिके अभावमें—सामाजिक शक्तिके अभावमें—पूंजीवादी समाजकी दयापर ही निर्भर रहकर यह खतम हो जाता है। पर फिर भी समाजवादी रूप कलाके लिअे असके द्वारा नअी टेकनीकका आविष्कार हो जाता है। श्री रामकिंकर बैजकी रूपकला अैसी ही है। अुनकी अु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजें विकलांग भी हैं और ढाँचा मात्र भी हैं। पर सभी अैसी ही नहीं हैं। प्राचीन कलाकार पौराणिक आख्यानों, देवी देवताओं, राजा-रानियों, श्रमण-ब्राह्मणों और राग रागिनियोंका चित्रण करते थे। नये युगमें राष्ट्र-नेताओं, मोटी लाअिनमें ग्रामों, बारीक लाअिनमें भी साधारण दृश्यों, साधारण जीवन आदिका भी चित्रण करने लगे थे। ये सभी विषय या तो सामन्ती समाज-व्यवस्थाके हैं अथवा सामन्ती व्यवस्थाके टूटनेके समयके हैं। जिसमें पूंजीवादी समाजकी प्रतिक्रियाका भाव पक्ष भी नहीं है। श्रीरामकिंकर बैजने अिस सारी परम्पराको अस्वीकार कर दिया। अुनकी कला-रेखाओंमें अजन्ता, साँची और गुप्त युगकी कला रेखाकी शक्ति है; पर अुसके द्वारा बहुत कुछ अभिव्यक्ति मिली है, पूंजीवादी समाजकी भावपक्षी प्रतिक्रियाको अथवा ग्रामीण सर्वहारा जीवनको। अुनकी कलामें चमक, दमक, सजावट और आभिजात्य कोमलताका कहीं पता नहीं है। अुसके स्थानपर है आजके समाज जीवनका वास्तविक संघर्ष जन्य खुरदरा और अनघड़पन। साधारण जीवनकी रस-शुष्कता भी अुसमें अुसी रूपमें है; किन्तु अुस रस-शुष्कतामें भी अेक किस्मका रस है। अुन्होंने कुछ अजबसे अपने तैलीयरंग भी बनाये।

मुसलिम आक्रमणसे भारतीय मूर्तिकला मर चुकी थी। पर मुसलिम कालमें भी मुगलोंके समयमें स्थापत्य कलाको किसी प्रकार साँस लेनेका मौका मिला था। किन्तु अुसमें वह अुदाम शक्ति और व्यापकता नहीं थी। अंग्रेजी आधिपत्यमें भारतीय कलाको कुछ संरक्षण प्राप्त हुआ; पर वह भी पुरातत्वके लिअे। निर्माणके लिअे संरक्षण तो आज तक भी बहुत कम ही प्राप्त हुआ है। अंग्रेजी प्रभावसे ग्रीक खम्भों और सजावटके लिअे परियोंकी मूर्तियों तथा पोट्रेट (शबीह)का प्रचलन जरूर हुआ। पर प्रारम्भमें अंग्रेज अधिकारियोंकी स्मृति-रक्षाके लिअे अुनकी मूर्तियाँ अथवा पोट्रेट बनाअे जातेथे और वे प्रायः यूरोप अधिकतर अिंगलैण्डसे बन कर आते थे। बादमें भारतीय प्रख्यात व्यक्तियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बड़े आदमियोंकी स्मृति-रक्षाके लिअे भी अिस कलाका अुपयोग किया गया। अंग्रेजोंके सम्पर्कसे भारतमें भी स्टूडियो-स्कल्पचर नाम मूर्तिकलाका जन्म हुआ। अिसे घरके भीतर बनाया जाता था और अिसका प्रधान आकर्षण वस्तुका रूप होता था। देवीप्रसाद राय चौधरी आदिके प्रभावसे मूर्तिकलाके अिस क्षेत्रमें करण कौशल आदि परिवर्तन हुआ। किन्तु फिर भी अुसका आदर्श 'नैचरलिस्टिक' ही बना रहा। बुद्ध और हर-पार्वती आदि देवताओंका भी पोर्ट्रेट (शबीह) बनने लगा है। अिसमें प्रायः संगमरमर, पत्थर और ताँबा आदि धातुओंका अुपयोग किया जाता रहा है। पर अब जो देवताओंका पोर्ट्रेट बनने लगा है, अुसमें प्रायः मिट्टी और सिमेंट-कंकरीटका भी अुपयोग किया जाता है। प्रारम्भमें अिसकी टेकनीक यूरोपीय और प्रायः अिंगलिश रही है। पर अब कुछ भारतीय कला परम्पराकी छाप भी दी जाने लगी हैं। अिस कलाके प्रारम्भमें यूरोपीय कलाकार अपनी अिच्छासे विशिष्ठ व्यक्तियोंका पोर्ट्रेट बनाते थे। पर बादमें पोर्ट्रेट और खासकर अिंगलिश पोर्ट्रेटमें फरमाअिशीपन बढ़ गया। और पूंजिपतियोंने अपने मतलबसे अुसका अुपयोग करना शुरू कर दिया। अिस तरह अिस कलामें सामन्ती और पूंजीवादी समाज भावनाका मेल हो गया। किन्तु बादमें यूरोपके कुछ हिस्सोंमें और खासकर फ्रांसमें अिस कलाके रूप और विषयमें परिवर्तन हो गया। जैसे टेकनीकमें वस्तुवादी खुरदुरापन और विषयमें सर्वहारा जीवन।

श्री रामकिंकर बैज मूर्तिकार भी हैं। यही नहीं, मूर्तिकी कलामें वह वस्तुवादी हैं और विषयमें अुन्होंने सर्वहारा जीवन लिया है। अिम्प्रेशनिस्ट प्रभावके कारण कुछ मूर्तियाँ दुरूह हैं। कुछ अेबस्ट्रेक्ट मात्र हैं। पर अेक टेकनीक अुससे पैदा हो गअी। किन्तु जिन मूर्तियोंपर अिम्प्रेशनिस्ट प्रभाव नहीं है, वे समझमें भी आती हैं। और मनपर अेक असर भी डालती हैं। रामकिंकर बैजकी मूर्तिकलाका विषय पौराणिक और प्राचीन परम्परा तथा घुटनेके बल अुठते हुअे भारतीय पूंजीवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवृत्तिमें नहीं है। अुनकी मूर्तिका विषय प्रगतिशील सर्वहारा जीवन है। रामकिंकर बाबूकी जिन मूर्तियोंपर प्रभाववादी और प्रतीकवादी असर भी है, अुनके भी विषयको सर्वहारा जीवनसे लिया गया है, हाँ, अिस सर्वहारा जीवनमें सज्ञानता नहीं है। श्रम और शक्तिकी महत्ता अुन मूर्तियोंमें अवश्य ही प्रतिष्ठित है। पर श्रमिक और श्रमकी शक्तिको प्रतिष्ठित करनेवाले जीवन-दर्शनके अभावमें अुनके अन्दर क्रान्तिकारी रुख नहीं आया है। किन्तु रुझान अुसी ओर है। वस्तुनिष्ठ विषय और टेकनीक क्रान्तिकारी रुखकी ओर जानेके लिअे बाध्य है।

सर्वहारा जीवनको अपनी कलाका विषय बनानेके कारण रामकिंकर बाबूको अपनी कला रचनामें भी आर्थिक संकटोंका सामना करना पड़ता है। ताँबे और संगमरमरकी तो बात दूर, मूर्ति लायक मामूली पत्थर भी अुनके लिअे सुलभ नहीं है। अिसीलिअे अबतक वह सिमेंट, मामूली कंकड़ और मिट्टी द्वारा अपनी कला-कृतिको प्रस्तुत करत रहे हैं। अुन्होंने संथाल परिवारकी मूर्ति बनाअी है। यह संथाल परिवार सर्वहारा खेत मजदूर है। अुसके साथ अुसकी स्त्री, बच्चे, कुछ सामान और अुसका प्रिय साथी कुत्ता है, और यही है अुसकी सम्पत्ति। अुसके कन्धेपर बहँगी है, जिसकी अेक ओर अुसका अेक बच्चा बैठा है; दूसरी ओर कुछ जरूरी सामान है। अुसकी स्त्रीकी गोदमें अेक बालक है, और अुसके सिरपर कुछ आवश्यक सामान है। साथमें अुसका कुत्ता है। मूर्ति कुछ अैसी सजीव है कि गरीबी और भारके रहते हुअे भी अुसमें शक्तिका बोध प्रत्यक्ष हो जाता है। सर्वहारा जीवनकी यह असाधारण मूर्ति सिमेंट और मामूली कंकड़से प्रस्तुत की गअी है। श्रमकी महत्ता प्रकट करनेवाली साधारण सर्वहारा जीवनकी शक्तिशाली मूर्ति सम्भवतः भारतीय मूर्तिकलाके अितिहासमें यह सबसे पहली है।

संथाल परिवारकी यह मूर्ति स्टूडियो-शिल्पके बाहर ही नहीं है, अिसमें वास्तु-शिल्पका भाव भी है और यह खुले आसमानके नीचे शोभित भी है। यही नहीं, प्राच्य शिल्प कलाके साथ अिसका अद्भुत मेल भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अिसके अन्दर मूर्तिके गुणोंका प्रभावोत्पादक प्राधान्य है। और भारतीय मूर्ति कलाका वैशिष्ठ है। अतः अिसे अभारतीय कहकर टाला भी नहीं जा सकता। अिस तरह श्री रामकिंकर वैजने मूर्तिकलामें जिस टेकनीकका आविष्कार किया है, वह अवनीन्द्रनाथ और नन्दलालकी शिल्प परम्परामें होकर भी अुससे भिन्न और जनवादी है। किन्तु जनवादी यह सिर्फ अिसी अर्थमें है कि अिसमें साधारण सर्वहारा जीवनकी अभिव्यक्ति मिली है। पर अिसके बावजूद अिस कलाको क्रान्तिकारी नहीं कह सकते। श्रमकी महत्ताको पूंजीवाद भी अिसलिअे पसन्द करता है कि अिसमेंसे अुसे अधिकाधिक श्रमके अधिकाधिक फलको शोषण करनेका मौका मिलता है। सिर्फ श्रमकी महत्ताका चित्रण या अंकन अिसीलिअे अधूरा और अपूर्ण होता है कि अुसमें समाजकी अग्रगमनशील प्रवृत्तियों और गतियोंका परिपूर्ण रुख और रुझान नहीं होता और यह रुख और रुझान तब तक कलाकार नहीं आंक सकता जबतक वह समाजकी अग्रगमनशील शक्तियों द्वारा संघर्षकी गति-विधिको ठीकसे न समझ ले। अिसी जगह आजके कलाकारको नवीन और विस्तृत तथा संघर्षमय जीवन दर्शनकी जरूरत होगी;— बल्कि अनिवार्यता होगी; क्योंकि यहीं अुसे नये जीवन मानको प्रस्तुत करना होगा। हमारे देशके साहित्य और कलाके क्षेत्रमें अभी या तो यह आन्दोलन नहीं आया है, अथवा आकर भी वह बलवान नहीं हुआ है। किन्तु जब भी वह आंदोलन आअे; और जब भी समाजमें और जीवनमें सम्पत्तिकी जगह श्रमकी प्रतिष्ठा होगी, जब भी श्रममें ही शान्ति और सुखकी प्रतिष्ठा होगी, तभी कलाके क्षेत्रमें रामकिंकर बैज पद-चिह्नके रूपमें याद किअे जाअेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा संसार

हिन्दी भाषियोंका अुत्तरदायित्व

दिल्ली प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी ओरसे माननीय व्यापार मंत्री श्री० श्रीप्रकाशका स्वागत नयी दिल्लीमें किया गया।

अुक्त सम्मेलनके सभापति श्री मौलिचन्द्र शर्माने स्वागत करते हुअे कहा कि श्रीप्रकाशजीके लिअे हिन्दीका मंच नया नहीं है। वे हिन्दीमें पगे हुअे अेक प्रसिद्ध रत्न हैं। हिन्दीके अैसे प्रेमी दिल्लीमें आये हैं और समर्थ स्थानपर बैठे हैं जहांसे वे हिन्दीकी बहुत कुछ सेवा कर सकते हैं। हिन्दी हमारी राजभाषा स्वीकृत हो चुकी। देशने प्रायः अेक-मत होकर अिसे स्वीकार किया। अेक हजार-डेढ़ हजार वर्ष बाद देशमें यह अेक बहुत बड़ी घटना हुअी। यह राष्ट्रीयताको बढ़ाने व दृढ़ करने वाली अेक बहुत बड़ी बात है। आज हिन्दीको वही स्थान प्राप्त होने वाला हैं जो पुराकालमें सस्कृतका था। जहां-जहां भारतीय हों, हिन्दी भी होगी और जहां भारतका मान बढ़ेगा हिन्दीका भी बढ़ेगा। अिसे निश्चित ही विश्वव्यापी भाषा होना है। पर आज तो अभी दिल्लीमें ही हिन्दी नहीं दीख रही है। यहां तो जनताकी निर्वाचन-सूचियाँ भी अुर्दूमें ही तैयार हुअीं। अब कृपा यह हुअी है कि हिन्दीमें अुनकी अेक कापी छपेगी। यहां तो गणराज्यकी स्थापना पर भी जशनेजम्हूरियत मनाया गया। हिन्दीको अुर्दूसे चिढ़ नहीं। अुर्दूको लोग पढ़ें पर जब राजभाषा राजधानीमें ही नहीं चलेगी तो कहां चलेगी?

१५ वर्षमें हिन्दीको अंग्रेजीका स्थान ले लेना है। पर १५ वर्ष अधिक नहीं है यदि हमें सचमुच हिंदीको राजभाषा-पदपर बिठाना है। यह तभी हो सकता है जब अभीसे ही हिन्दी काममें लाअी जाय। आपसे हमारा यही निवेदन है कि जिस विभागका कार्यभार आपने लिया है अुसमें अर्थात् व्यापारमें, कमसे कम अुत्तर भारतमें, अधिकांश काम हिन्दीमें होता है। अतः आपका विभाग हिन्दी-प्रचलनमें सहायता दे तो बड़ी सुविधा होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्लीकी कठिनाअी यह है कि वहां प्रतिनिधि शासन नहीं है। अिसलिये अुत्तर भारतमें दिल्ली ही अैसा क्षेत्र है जहां हिन्दी राजभाषा अभीतक घोषित नहीं हुअी। जो अुत्तर प्रदेशमें १८०० अी० में हुआ था कि प्रार्थना पत्र हिन्दीमें लिये जा सकते हैं वह यहां १९४८ में होसका है। यहां अविलंब हिन्दी राजभाषा होनी चाहिये।

श्री० वियोगी हरिजीने श्री श्रीप्रकाशजीका परिचय देते हुअे कहा कि राजनीतिक व्यक्तियोंमें अपवाद स्वरूप साहित्यिक हैं। अिस देशमें राजनीति और साहित्यके अलग-अलग होनेसे बड़ी हानि हुअी है। आशा है वह अब दूर होगी।

हिन्दी राष्ट्रभाषा है, थी और बनेगी। हां अब वह जैसा कालेलकरजी कहते हैं, दफ्तरी भाषा हो गयी। राष्ट्रभाषाको कोअी संविधान सभा नहीं बनाती। राष्ट्र स्वयंभू है अुसी प्रकार अुसकी भाषाका प्रवाह स्वभाविक रूपसे चला आता है। जो लोग यह कहते हैं कि हिन्दी-भाषा-भाषी अपनी भाषा दूसरोंपर लादना चाहते हैं तो फिर हिंदी-भाषा-भाषी कौन हैं? हम सबकी अपनी बोलियां है। कुछ प्रांतोंने हिन्दी पहले सीख ली, कुछ अब सीख रहे हैं। जिन्होंने पहले सीख ली अुनका यह अभिमान नहीं कि अुनकी भाषा राजभाषा हो गयी। यह कहा जाता है कि विधान सभाने जिस रूपमें राष्ट्रभाषा स्वीकार की वैसा न करते तो हिन्दी १५ वर्ष तक राजभाषा न बनती। मुझे अिसमें कोअी सार नहीं दीखता। शब्दोंके लिअे हिन्दीका द्वार कभी बंद नहीं रहा। आज हमें विषय तथा परिस्थितियोंके अनुसार शब्द लेने हैं। कहा जाता है कि अैसी भाषा लिखी जाय जो गांवके लोग समझ सकें। कहांके गांवके, पंजाबके या महाराष्ट्रके? हमें भाषा नहीं, साहित्य तैयार करना है और कामका साहित्य तैयार करना है। अिसमें भारत सरकारको सम्मेलन तथा नागरी-प्रचारिणी-सभा सबके सहयोगसे काम करना है।

श्री श्रीप्रकाशजीने अुत्तर देते हुअे कहा कि आपके बीचमें अपनेको पाकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। जबसे देशमें स्वराज्य हुआ मेरा कुछ अैसा अभाग्य रहा कि मैं देशसे निकाल दिया गया और दूर दूर रहा।

आपके मनमें हिन्दीके लिअे बड़ी चिंता मालूम होती है। मुझे कभी चिंता नहीं रही। किसी भाषाका अितिहास आप क्यों न देखलें, राज्यकी सहायतासे कोअी भाषा नहीं बढ़ी। सप्तम-अेडवर्ड शुद्ध अंग्रेजी भी नहीं पढ़ पाते थे और बहुत समय तक अिंग्लैंडमें अंग्रेजी राजभाषा नहीं थी। अंग्रेजी भाषाको वहांके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों, कवियों, निबन्ध-लेखकोंने बनाया। जब हम हिन्दीको अपनावेंगे तो भय कैसा ? अंग्रेजीका शब्द-भंडार बढ़ता है, जिससे अंग्रेजी जीवित है। हम लोगोंको बिना कटुशब्दका प्रयोग किअे हिन्दीका प्रचार करना है। भाषाका आसानीसे प्रचार अैसे हो सकता है जैसे यूरोपमें पोशियोंमें रहनेवाले विद्यार्थी वहांके देशोंकी भाषा आसानीसे सीख जाते हैं। मैं डेढ़ महीनेमें जर्मन सीख गया। हमारे यहां भी अैसा प्रबन्ध हो। पोशियों वे घर हैं जहां विदेशी विद्यार्थी रहते, भोजन करते व मालिकोंसे भाषा सीखते हैं। वे अैसे ही सीखते हैं जैसे बालक जन्मसे सीखता है।

हिन्दी भाषा भाषियोंका अेक विशेष अुत्तर दायित्व है। हमें प्रेमसे दूसरोंको हिन्दी सिखानी चाहिये और अपनी सद्भावनाका परिचय देनेके लिअे अेकाध प्रांतीयभाषा सीखनी चाहिये। मैं अभी नया आया हूं। कुछ समय बाद आपसे सम्मति लूंगा कि मेरे विभागमें हिन्दीका कैसे प्रवेश हो सकता है।

देहाती क्षेत्रोंमें हिन्दी तार

देशके हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रोंके देहाती डाक व तारघरोंमें हिन्दीमें तार भोजनकी व्यवस्था कर दी जायगी। सरकार कोशिश कर रही है कि दो माहमें यह व्यवस्था पूर्ण हो जाय।

हिन्दीमें तार भेजनेकी व्यवस्था आजकल दिल्ली, अिलाहाबाद, लखनअू कानपुर, नागपुर और पटना आदि अेक दर्जनसे भी ज्यादा शहरोंमें चल रही है। लेकिन अिस योजनाका स्वागत बहुत कम हो रहा है। फिर भी सरकारी क्षेत्रोंके अनुसार यह नहीं कहा जा सकता कि यह योजना असफल रही है।

सरकार यह सोच रही है कि हिन्दी जाननेवाले अधिकतम कर्मचारियोंको 'मोर्स सिग्नैलिंग' सिखा दिया जाय ताकि देहाती क्षेत्रोंमें योजनाको अमलमें लानेमें दिक्कत पेश न हो। -

प्रादेशिकभाषाओंके लिये नागरी लिपि

बम्बअीमें पश्चिम-भारत-राष्ट्रभाषा सम्मेलनमें भागलेनेके लिअे आये हुअे प्रतिनिधियोंको अेक परिषदमें अध्यक्षपदसे भारतीय संसदके अध्यक्ष श्री मावलंकरने अपने भाषणमें लिपिकी अेकतापर जोर देते हुअे कहा कि देशकी सम्पूर्ण प्रादेशिक भाषाअें यदि नागरी लिपिको स्वीकार कर लें तो मातृभाषा और राष्ट्रभाषाका प्रश्न अेक सीमातक हल हो जायगा। साथ ही लोग भिन्न-भिन्न लिपियोंके सीखनेकी असुविधासे भी बच जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी.

संस्कृतमय हिन्दी वांछनीय

"आजसे नहीं, आरंभसे ही मेरी यह मान्यता रही है कि हिन्दी ही वह भाषा है जो भारतकी राष्ट्रभाषा और राजभाषा बन सकती है। हिंदी संकृतके जितने निकट होगी अुतनी ही वह देशमें अधिक प्रचलित हो सकेगी, क्योंकि संकृतमें ही भारतीय संकृतिका अितिहास अंकित है। यही कारण है कि मैं अिस बातपर बल देना चाहता हूं कि हमें देशके कोने-कोनेमें संस्कृतमय हिन्दीका प्रचार और प्रसार करना चाहिये।" ये शब्द लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार और भारत सरकारके खाद्य-मत्री श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शाने लोदी बस्ती, नअी दिल्लीमें हिन्दी सभाके वार्षिकोत्सवमें, जिसमें १० हजार नर-नारी अुपस्थित थे, भाषण करते हुअे कहे।

अुत्सवका सभापतित्व करते हुअे सुविख्यात विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायनने मुन्शीजीकी हिन्दी भाषाकी अुन अपार सेवाओंका अुल्लेख किया जो मुन्शीजी अपने जीवनके आरंभ कालसे ही करते आये हैं। कौशल्यायनजीने कहा कि मुन्शीजीके प्रगाढ़ हिंदीप्रेमका अेक जीता जागता अुदाहरण यह है कि वह खाद्य-मन्त्रालयमें हिन्दीका ही राजभाषाके रूपमें प्रयोग करा रहे हैं। अिस घोषणाका जनताने करतल-ध्वनिके साथ स्वागत किया।

अिसी अवसरपर हिन्दी सभाकी ओरसे मुन्शीजीका अभिनन्दन किया गया और अनेकानेक स्थानीय कवियों अेवं संगीतज्ञोंने अपनी कला द्वारा हिन्दी-प्रेमियोंका मनोरंजन और अुत्साहवर्ध्दन किया। विभिन्न प्रांतोंकी वेशभूषामें सुसज्जित बालिकाओंका प्रांतीय भाषाओंका रूपक अुपस्थित करते हुअे मातृ-स्वरूपा हिन्दीकी वन्दना करना अेक विशेष कार्यक्रम था, जो समस्त दर्शकोंको बड़ा रुचिकर तथा शिक्षाप्रद लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी दूतावासोंमें हिन्दी

नयी दिल्ली स्थित कअी दूतावासोंने भारतकी राजभाषा हिन्दीमें अपनी अभिरुचि प्रगट करनी आरम्भ कर दी है। कुछ दूतवासोंने अपने देशोंके संबंधमें जानकारी भी समाचारपत्रोंको हिन्दी भाषामें देनेका प्रबन्ध कर दिया है। अमरीका, ब्रिटेन और सोवियत रूसके दूतावासोंमें नियमित रूपसे हिन्दीकी शाखाअें स्थापित हो गअी हैं। सोवियट दूतवासने तो 'सोवियत भूमि'के नामसे अेक पाक्षिक पत्रिकाका प्रकाशन भी आरम्भ किया है और अपने मुख्य-द्वारपर हिन्दीमें ही दूतावासका नामपट लिखकर लगवाया है। अेक अन्य दूतावासके अेक अुच्च अधिकारीने हालमें ही अिस बातपर आश्चर्य प्रगट किया कि हिन्दी, जो कि भारतकी राजभाषा घोषित की जा चुकी है, अुसके दूतावासके साथ होनेवाले पत्र-व्यवहारमें भारतवासियों द्वारा क्यों नहीं प्रयुक्त की जाती।

राज्यशासनमें हिन्दी

ज्ञात हुआ है कि मध्यप्रदेश-सरकारने सरकारी विभागोंको सूचना दी है कि वे अपने-अपने विभागोंमें प्रयुक्त होनेवाले शब्दोंकी सूची बनाअें और हिन्दीमें तैयार रखें। मध्यप्रदेश-सरकार धारासभाके आगामी अधिवेशनमें राज्यशासन हिन्दी तथा मराठी भाषामें प्रयुक्त करनेके सम्बन्धमें अेक बिल अुपस्थित करने जा रही है।

श्रेयकी ओर

हे मनुष्य, तू दूषित क्रियाओंका नाशक है। तू शस्त्रोंका शस्त्र है। तू वज्रोंका वज्र है। अिसलिअे तू अपने बराबरके लोगोंसे आगे बढ़, श्रेयको प्राप्त कर।

मनुष्य, तू प्रगतिशील है, तू हमेशा आगे बढ़नेवाला है। तू दुष्टतापर हमला करनेवाला है। अिसलिअे तू बराबरके लोग से आगे बढ़—श्रेयको प्राप्त कर।

—वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दृष्टिमें

सरदार पटेलके भाषण—प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर पृष्ठ-संख्या ६२४, मूल्य ५)।

साहित्यकाक्षेत्र विस्तृत है किन्तु हिन्दी-साहित्यमें ललित साहित्यकी ही प्रधानता है और अुसके अन्य क्षेत्र अुपेक्षित पड़े हैं।

हिन्दीमें पत्र और व्याख्यान साहित्य न होनेके बराबर है। पत्र और व्याख्यान साहित्यका अपना महत्व है। अुनमें लेखक और वक्ताका स्वाभाविक रुप प्रकट हुआ करता है।

"सरदार पटेलके भाषण" नवजीवन प्रकाशन मन्दिर द्वारा प्रकाशित अेक सुन्दर ग्रंथ है। अिसमें सन १९१८ से लेकर १९४८ तक के विविध स्थानोंमें दिये हुअे सरदार बल्लभभाओी पटेलके छोटे बड़े १५८ व्याख्यान संग्रहीत किये गये हैं। सरदार पटेल— भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामके मंजे हुअे सिपाही और सैनिक रहे हैं। राजनीति-क्षेत्रमें अुनकी दृढ़ता प्रसिद्ध है। सन् १८ से लेकर ४८ तकका ३० वर्षका समय स्वतंत्र्य संग्रामकी महत्वपूर्ण अवधि है। अिस अवधिमें दिये गये सरदार पटेलके भाषणोंमें तीस वर्षका राजनीतिक अितिहास चित्रित हो गया है। किन्तु अिस पुस्तकको अितिहासकी संज्ञा नहीं दी जा सकती। भाषणोंमें स्थान स्थान पर सरदार पटेलका स्वभाव, ज्ञान, प्रतिभा, दृढ़ता, लगन, तथा अुनका प्रखर व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित हो अुठा है।

अिस तीस वर्षकी राजनीतिक गतिविधिसे परिचित होनेके लिअे जिस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी अुसी प्रकार सरदारके जीवनसे, अुनके जीवनकी अन्तरधाराओंसे परिचित होनेके लिअे भी यह पुस्तक पठनीय मानी जावेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुवाद सुन्दर है। भाषा शैली सरल और रोचक है। डेमी साअिजकी, ६२५ पृष्ठकी अिस पुस्तकका मूल्य ५) अधिक नहीं है। नवजीवन प्रेसकी छपाअी और अुसकी पुस्तकोंका गेटअप तो सुन्दर हुआ ही करता है।

—रामेश्वरदयाल दुबे

राष्ट्रभाषाका अितिहास— लेखक—श्री पं. किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री, प्रकाशक— जनवाणी प्रकाशन, १६१। १ हरिसनरोड, कलकत्ता ७। मूल्य २) मात्र।

राष्ट्रभाषा हिन्दीको राजभाषाके पदपर प्रतिष्ठित करनेमें नागरी-प्रचारिणी-सभा, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और भारतीय-विधान-परिषद्में आजतक जितने प्रकारके प्रयत्न हुअे हैं, अुनका लेखकने अिस पुस्तकमें सजीव चित्रण किया है। अिसके अतिरिक्त हिन्दी, अुर्दू और हिन्दुस्तानी आदि शब्दोंका विवेचन भी तात्विक दृष्टिसे अिस ग्रंथमें किया गया है। सबसे बढ़कर अिस ग्रंथकी विशेषता है लेखकका हिंन्दीके प्रति प्रगाढ़ प्रेम और हिन्दी-विरोधियोंके प्रबलसे प्रबल व्यक्तित्वसे लोहा लेनेकी क्षमता; जिसके चलते ग्रंथमें अप्रिय सत्य तो हो सकता है पर अिस ग्रंथमें सर्वत्र लेखकके प्रखर व्यक्तित्व और ओजस्वी शैलीकी छाप है। आशा है राष्ट्रभाषा-प्रेमी छात्रों, अध्यापकों और प्रचारकोंमें अिसका स्वागत होगा।

हर्षचरित्त, पूर्वार्ध— (अनुवाद), अनुवादक श्री सूर्यनारायण चौधरी, प्रकाशक—संस्कृत-भवन, कठौतिया, पो. काझा, जि. पूर्णिया (बिहार); पृष्ठ-संख्या २४८, मूल्य ३॥)।

प्रस्तुत पुस्तक संस्कृतके अमर कलाकार बाणभट्टके हर्षचरितका हिन्दी अनुवाद है। अनुवादक महोदयका संस्कृत तथा हिन्दी दोनों ही भाषाओंपर समान अधिकार है; जिससे अनुवाद सजीव बन पड़ा है। अिसे पढ़ते समय मूल ग्रंथका सा आनन्द मिलता है। आशा है अिस अनुवादका हिन्दीमें स्वागत होगा। और श्री सूर्यनारायणजी अिसके बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाणभट्टकी कादंबरीको भी हिन्दीमें रूपांतरित कर राष्ट्रभाषाका भंडार बाणभट्टकी अनुपम निधिसे भरनेका प्रयत्न करेंगे।

—शीलभद्र साहित्यरत्न

सुगम राष्ट्रभाषा— लेखक अेवं प्रकाशक—श्री काशिनाथ शंकर केळकर, बी. अे. विशारद, ४१४ सदाशिव पेठ पूना २। मूल्य—१२ आने पृष्ठ संख्या ७४।

मराठी भाषाके माध्यमद्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेवालोंके लिअे पुस्तक अुपयोगी है। हिन्दी-व्याकरणके नियमोंको मराठीमें समझा कर समानार्थी हिन्दी-वाक्य-रचनाके साथ साथ साधारण व्यवहारके मराठी-हिन्दी-शब्द भी दिये गये हैं। विषयको सुगम बनानेमें लेखकने भरसक प्रयत्न किया है, फिर भी जहाँ-तहाँ शब्द अेवं वाक्य-रचना अशुद्ध है [जैसे— तिरयानब्बे, निन्यानब्बे, (पृष्ठ ७४), अुंचा- (पृष्ठ ३४) और 'वह गायको छुआ'— (पृष्ठ ४२) आदि।] आशा है अगले संस्करणमें यह 'मराठीपन'का दोष न रहेगा। हम लेखकसे अिससे भी प्रौढ़ रचनाकी अपेक्षा रखते हैं।

—हरिदत्त मिश्र

जीवन द्वारा शिक्षण--लेखक— श्री शिवाभाअी गोकलभाअी पटेल, प्रकाशक-- मगनभाअी प्रभुदास देसाअी, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद। पृष्ठ संख्या १५४, मूल्य १॥); प्राप्ति स्थान-- नवजीवन-कार्यालय, अहमदाबाद।

अेकके अनुभव दूसरेके लिअे मार्गदर्शकका काम देसकते हैं। अिसी भावनासे प्रेरित होकर, वल्लभ-विद्यालयके आचार्य श्री शिवाभाअी गोकलभाअी पटेलने अपनी संस्थामें किये गये शिक्षा संबंधी अनुभवोंका चित्र 'जीवन द्वारा शिक्षण' के रूपमें, गुजराती भाषा और गुजराती लिपिमें, शिक्षाके क्षेत्रमें अुतरनेवाले प्रयोगकर्ताओंके समक्ष रखा है जो अुनके तथा अुनकी संस्थाओंके लिअे लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

आवरण तथा कागज साधारण, परंतु मुद्रण साफ और शुद्ध है। पुस्तक अुपयोगी है।

—आशाकान्त बी. आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी निरुक्तः—लेखक--श्री पं. किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री, प्रकाशक-- जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता ७, पृष्ठ संख्या- १२४, मूल्य २।)।

श्री वाजपेयीजी हिन्दीके सतर्क साहित्यकार हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें अुन्होंने भाषा विज्ञान जैसे गम्भीर विषयका पाण्डित्य पूर्ण विवेचन किया है, और सूत्ररूपमें हो हिन्दी शब्दोंके अुच्चारण तथा अर्थमें देश, काल, तथा पात्रके भेदसे आनेवाले अन्तरपर युक्ति-संगत विचार प्रकट किया है।

आशा है, भाषा-विज्ञानपर हिन्दीमें लिखी गयी यह मौलिक कृति विद्वानोंके लिअे अुपयोगी सिद्ध होगी।

—कृपाल द्विवेदी

मौखिक मार्गदर्शिका—लेखक-- चिं. बा. ओंकार, बी. अेससी., बी. टी., हिन्दी-साहित्य-रत्न और व. अ. गद्रे, बी. अेससी., बी. टी., हिन्दी साहित्य-रत्न। प्रकाशक— चिं. बा. ओंकार, १६३ शनिवार पेठ, पूना २। पृष्ठ सं. ४४; मूल्य १२ आने।

प्रस्तुत पुस्तक 'राष्ट्रभाषा परिचय' और कोविद' की मौखिक परीक्षाकी तैयारी करनेके लिअे मार्गदर्शिकाके रूपमें है। अिसमें मौखिक-परीक्षा संबंधी महत्वपूर्ण ज्ञातव्य बातें, प्रायः पूछे जानेवाले प्रश्न और अुनके अुत्तर, अुच्चारण संबंधी मार्गदर्शन, राष्ट्रभाषा प्रचार संस्थाओंकी जानकारी आदि बातें हैं। अिसका अध्ययन करनेपर परीक्षार्थी तो लाभान्वित होंगे ही, प्रस्तुत पुस्तक मौखिक परीक्षकोंके भी कामकी वस्तु है।

—श्रीराम अट्टावलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत् संघमें डाकद्वारा पुस्तक-प्रसार

: श्री मिखेल दोल्गो पोलोव :

सोवियत् संघमें संसारके किसी भी देशकी अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं।

हर साल हजारों नयी पुस्तकें सोवियत संघमें प्रकाशित होती हैं जिससे सोवियत्का पुस्तक-भंडार अुत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। क्रांतिके समयसे लेकर अबतक पुस्तकों और पुस्तिकाओंके ९००,००० से अुपर टाअिटल सोवियत् संघमें प्रकाशित हो चुके हैं जिनकी कुल मिलाकर ११,३००,०००,००० प्रतियाँ निकल चुकी हैं।

सोवियत् संघमें पुस्तकोंके अितने संस्करण प्रकाशित होना तथा अुनकी अुत्तरोत्तर बढ़ती हुअी माँगे अिस बातकी सूचक हैं कि प्रगतिशील सोवियत साहित्य सच्चे अर्थमें लोकहित साधन करता है। अिसका अुद्देश्य अधिकाधिक रूपमें श्रमिक वर्गको सुशिक्षित बनाना, अुनकी विविध बौद्धिक आवश्यकताओंकी पूर्णरूपसे पूर्ति करना, अुन्हें साम्यवादी विचारधारासे अवगत कराना तथा अुन्हें मानव जातिके संचित ज्ञानसे परिचित कराना है।

सोवियत् संघके लाखों नर-नारियोंमें अुत्कट पुस्तक-प्रेम पाया जाता है। बहुजातीय सोवियत् संघके हर जनतंत्र तथा हर जनपदमें आप हर श्रमिक तथा किसानके घरमें पुस्तकोंका संग्रह देखेंगे।

सोवियत् संघमें किताबोंकी दुकानोंका अैसा जाल-सा बिछा है कि देशके कोने-कोनेमें पाठकोंके पास बड़ी सुगमतासे पुस्तकें पहुँचाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती हैं। दूर-दूरकी सामूहिक कृषि-शालाओंमें मोटरके बुक-स्टाल तथा वॅडरों द्वारा किताबें पहुंचायी जाती हैं। कल-कारखानों, प्लांट तथा खानों, स्कूल और क्लबों, सामूहिक कृषिशालाओं अेवं मशीन और ट्रैक्टर स्टेशनोंमें हजारों पुस्तकालय बने हुअे हैं। अिसके सिवाय सरकारकी तरफसे अनेक सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित हैं जहाँ सोवियत् संघके लोग अपनी ज्ञान पिपासा शांत करते हैं। फिर भी सोवियत् संघके लोगोंकी सांस्कृतिक आवश्यकताअें अिस तेजीसे बढ़ रही हैं कि अुन्हें पुस्तक वितरण करनेका अेक और तरीका अीजाद करना पड़ा है जिसे "बुक मेल आर्डर सर्विस" कहते हैं।

अिस प्रकार कुछ काल पूर्व मास्कोमें डाक द्वारा पुस्तकें भेजनेकी अखिल संघीय संस्था स्थापित की गयी है। अिस संस्थाके पास विविध विषयोंकी पुस्तकोंकी मांग देशके कोने-कोनेसे आती है।

यूक्रेनियन जनतंत्रके विन्नित्सा प्रदेशके त्रिताबका नामक गांवका अ. अन्द्रियाश नामक सामूहिक कृषक अुक्त संस्थाके प्रधान कार्यालयके पास अिस प्रकार लिखता है :—

"मैं गांवका रहनेवाला अेक मामूली किसान हूँ। यद्यपि मेरी अुम्र पच्चास सालकी हो चुकी है, फिर भी, मैं निरंतर अपने सांस्कृतिक दृष्टिकोणको परिष्कृत बनानेमें लगा रहता हूँ। आप कृपया मेरे पास 'प्रकृतिके अध्ययनके अूपर' अ. हेरत्सेनके निबन्ध, अि. तुर्गनेव लिखित रुदिन तथा 'विदेशी शब्दोंका अेक कोश' भेज दीजिअे।"

पत्रके अंतमें सामूहिक कृषक अ. अन्द्रियाश लिखता है : "आप कृपया मुझे सूचित करें कि कृषिकार्य, संगीत तथा चित्रकारीके संबन्धमें आपके पास कैसा साहित्य है।"

डाक द्वारा पुस्तकें भेजनेकी संस्था लेनिन और स्तालिनके लिखे ग्रंथ, दर्शन विज्ञान, राजनीतिक अर्थशास्त्र, अितिहास, टेकनौलोजी तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और मृत्तिका-विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें भेजती हैं। अिसके साथ-साथ संदर्भ-ग्रंथ, हिसाब और बहीखाता रखनेकी पुस्तकें तथा दुकानदारीके सम्बन्धकी पुस्तकें भेजी जाती हैं। सोवियत् संघके जो लोग अपने देशकी राजधानीसे हजारों कीलोमीटरकी दूरी पर रहते हैं, वे बड़ी अुत्सुकतासे सोवियत् तथा विदेशी लेखकोंकी कृतियोंकी प्रतीक्षा करते हैं। सोवियत् जनताके लिअे पुस्तकें ज्ञानका स्रोत, अुनके मित्र तथा पथ-प्रदर्शक हैं। पुस्तकें, हमें रहना, काम करना, संघर्ष करना तथा विजय प्राप्त करना सिखाती हैं।

डाक द्वारा पुस्तकें भेजनेकी संस्थाका अुत्तरोत्तर विकास होता जा रहा है। अिस प्रकार १९४७ में अिस संस्थाके पास, ८१,००० मांग आयी अेवं तदनुकूल सोवियत् पाठक और पाठिकाओंके पास ७२२,००० पुस्तकें और पुस्तिकाअें भेजी गयीं। १९४८ में अिस संस्थाके पास पुस्तकोंके १५१,०००; १९४९ में ३०५,००० मांग आयी जिसके अनुसार १,०८४,००० पुस्तकें भेजी गयीं। मौजूदा सालके पहिले तीन महीनोंमें ४४४,००० पुस्तकें सोवियत् संघके सुदूरवर्ती कोनोंमें भेजी जा चुकी हैं।

सोवियत संघमें पुस्तकोंकी अुत्तरोत्तर बढ़ती हुअी मांगें यह बताती हैं कि वहाँ कितनी बड़ी सांस्कृतिक क्रांति हुअी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

महाराष्ट्र —

पूना—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पूना की कार्यकारिणीकी बैठक ता. ४-६-५० को श्री पंडित का. र. वैशंम्पायनजीकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुअी। निम्नाशयके प्रस्ताव स्वीकृत हुअे—

(१) बंबअी सरकार द्वारा हालमें ही श्री द. वा. पोतदारकी अध्यक्षतामें स्थापित हिन्दी-पाठ्यक्रम-समितिमें बहुतेरे सभासद हिन्दुस्तानीके ही हिमायती हैं। अिस समितिमें लगातार तेरह वर्षोंसे नागरी-हिन्दीका प्रचार करनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके कार्यकर्ताओंको बिल्कुल स्थान नहीं दिया गया। अिस पर यह सभा खेद प्रकट करती है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे अेक प्रतिनिधि-मंडल शीघ्र ही बम्बअी सरकारके पास भेजनेका निश्चय किया गया।

(२) अहमदाबाद-अधिवेशनमें महाराष्ट्रकी निमंत्रण-स्वीकृतिके अनुसार अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनका आगामी तीसरा अधिवेशन-पूनेमें करनेका निश्चय हुआ।

अिस सभामें—श्री पटवर्धन (रत्नागिरी), श्री घोटणे (कोल्हापुर), श्री धुमाल (सतारा), फड़के (अहमदनगर), श्री पंडित का. र. वैशम्पायन (येवला), श्री मोहरीर (नसीराबाद), श्री श्रीराम अट्रावलकर (वर्धा), श्री शं. दा. चितले, श्री पं. मु. डांगरे, श्री शांतिभाअी जोबनपुत्रा (पूना) आदि कार्यकर्ता अुपस्थित थे।

पूना शहर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने स्थानीय प्रचारक संस्थाओं तथा प्रचारकोंकी सहायतासे अिस वर्ष कोविद परीक्षार्थियोंके लिअे गत २५ मार्चसे ८ अप्रैल तक स्थानीय नू. म. विद्यालयके सभाभवनमें निःशुल्क व्याख्यान-मालाका आयोजन किया। हरअेक व्याख्यानके लिअे सौ से अधिक परीक्षार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुपस्थित रहते थे। सर्वश्री ग. र. वैशंपायन, मूंधड़ाजी, गद्रेजी, साठे, रहालकरजी, पाटीलजी, अुमराणीकरजी, ओंकारजी, नगरकरजी, शं. दा. चितले तथा गोडबोलेजी आदि व्याख्याताओंने व्याख्यान देकर समितिको अुपकृत किया।

पूनाके प्रमाणित प्रचारकोंका सम्मेलन पूना शहर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे गत २८ मअीको श्री प्रा. शं. दा. चितलेकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ।

पश्चिम बंगाल—

कर्सियांग—स्थानीय राजराजेश्वरी भवनमें गत १६ मअीको पश्चिमी-बंग प्रांतपाल महामान्य कैलासनाथ काटजूके सभापतित्वमें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। श्री काटजूने अपने भाषणमें कहा कि कर्सियांग राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रयत्नसे वर्धा परीक्षाओंके अुत्तीर्ण छात्र छात्राओंको (जिसमें नेपाली, बङ्गाली, गुरखाली, राजस्थानी, पंजाबी, लेप्चा और भूटिया आदि हैं) प्रमाणपत्र तथा पारितोषिक प्रदान करते हुअे मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रभाषा हिन्दी अंग्रेजीका स्थान अवश्य प्राप्त करेगी, अतः प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि वह हिन्दी अवश्य सीखे। यहांकी प्रायः सभी संस्थाओंके प्रतिनिधि अेवं समितिके प्रमाणित प्रचारक तथा पदाधिकारी अिस समारोहमें अुपस्थित थे। अंत में समितिकी कार्यकारिणीके सदस्योंका चित्र लिया गया।

दक्षिण-अफ्रीका —

जोहन्सबर्ग— अप्रैल मासकी परीक्षामें जोहन्सबर्ग-केन्द्रसे अनेक गुजराती छात्र-छात्राअें राष्ट्रभाषा प्रारंभिक और प्रवेश परीक्षामें सम्मिलित हुअे हैं। यहां हिन्दी प्रचारक श्री हरिश्चन्द्रजी बड़ी लगनसे कार्य कर रहे हैं।

डर्बन—यहांके भारतीयोंमें हिन्दी प्रचारके अुद्देश्यसे गत १६ मअीको श्री पं. नरदेव वेदालंकार तथा केन्द्र-व्यवस्थापक डॉ. नगीनदास देसाअीके प्रयत्न से डर्बन-केन्द्र हिन्दी प्रचार समिति' की स्थापना हुअी। श्री गोवनभाअी मणिभाअी सभापति तथा श्री कपिलराय जे. देसाअी अेवं श्री शशिकांत ह. धूपेलिया संयुक्त-मन्त्री निर्वाचित हुअे। यह संस्था हिन्दी-शिक्षा संघ नेटालसे संबद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरबनके प्रतिष्ठित कार्यकर्ता श्री अेस. अेल. सिंह द्वारा गत ३१ मअी को हिन्दू-अेज्यूकेशनल सोसायटीके गुजराती-पाठशाला-भवनमें आरंभ होनेवाली रात्रि-हिन्दी-पाठशालाका अुद्‌घाटन हुआ। अिस अवसरपर डॉ. नगीनदास देसाअीने राष्ट्रभाषाके महत्वपर तथा पं. नरदेव वेदालंकारने राष्ट्रभाषाके विकासपर भाषण किया। समाजके अनेक प्रमुख कार्यकर्ता भी अिस हिन्दी श्रेणीमें प्रविष्ट हुअे हैं। अुपर्युक्त हिन्दी प्रचार समितिके पदाधिकारी भी यहाँसे राष्ट्रभाषाकी परीक्षाओंमें बैठ रहे हैं।

अुड़ीसा—

गत २५–२६ मार्चको अुत्कलप्रान्तीय-राष्ट्रभाषा-प्रचार सभाका १७ व वार्षिक अधिवेशन गांधी–राष्ट्रभाषा–भवनके मण्डपमें प्रधान–विचारपति मान्यवर श्री वीरकिशोरराय के सभापतित्वमें आरम्भ हुआ। अिस अनुष्ठानमें शिक्षामन्त्री सर्वश्री मा० प० लिङ्गराज मिश्र, प्रधान-मन्त्री मा० महेताब, मा० राजकृष्ण बोस, विचारपति वी० जगन्नाथदास, सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, श्रीराधानाथ रथ, स्वामी विचित्रानन्ददास, बालिका महाविद्यालयकी प्रिन्सीपॉल, हरेकृष्णजी बाजोरिया, सी० मी० आचार्य, श्रीमती लतिकादेवी आदि प्रमुख विशिष्ट व्यक्ति तथा अन्यान्येक भद्र महिलाअें अुपस्थित थीं। स्वामी विचित्रानन्ददासने स्वागत भाषण किया। सभाके मन्त्री मा० राजकृष्ण बोसने वार्षिक-कार्य-विवरण पढ़ा।

मान्यवर श्री० हरेकृष्ण महतावने भाषण करते हुअे कहा कि "हिन्दी सिर्फ स्कूलोंमें ही नहीं महाविद्यालयोंमें भी पढ़ाअी जानी चाहिये। ओड़ियाके साथ-साथ हिन्दीकी शिक्षा देनेका क्योरिकूलम सोचा जा रहा है। हिन्दी किस प्रकार देशके चारों तरफ़ फैल जाय हम अिसके लिये सोचते हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार-सभाकी कोशिशसे लोग काफ़ी संख्यामें हिन्दी सीख रहे हैं। श्रीयुत प्रफुल्ल पटनायक जैसे हिन्दीके कअी प्रसिद्ध विद्वान अध्यापक हैं। वैसे ही विद्वान व्यक्तियोंको यहाँके कालेजमें अध्यापक बनाकर लानेकी व्यवस्था हो रही है। मेरा ख़याल है कि केवल भाषा सीख लेने भरसे काम नहीं चलेगा। हिन्दी-साहित्यकी पूरी-पूरी चर्चा भी की जानी चाहिये। अिसलिये हिन्दीके बड़े बड़े विद्वानोंको बुलाकर अुनके भाषणोंसे लाभ अुठाना चाहिये। हमारे साहित्यिक आजतक बङ्गला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यके पीछे लगे हुअे हैं। वे सोचते हैं कि बँगलासे बढ़कर दुनियामें साहित्य है ही नहीं। मैं तो अुन साहित्यिकोंसे कहूँगा कि वे हिन्दीके साहित्यकी ओर भी नजर डालें। आज हिन्दीका साहित्य बंगला साहित्यसे आगे बढ़ गया है। पहले बङ्गला साहित्यका हिन्दीमें अनुवाद किया जा रहा था। अब हिन्दी-साहित्यका बंगलामें अनुवाद होने लगा है। मैं राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभासे अनुरोध करता हूँ कि वह भाषाके प्रचारके साथ साथ हिन्दी साहित्यका भी प्रचार करे।"

सम्मेलनमें कअी महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुअे।

श्री० राधानाथ रथने अपने भाषणमें कहा कि हिन्दी शिक्षाके प्रचारके लिअे १५ सालकी अपेक्षा न रख ५ सालके भीतर व्यापक कार्य किया जाना चाहिये। अुन्होंने यह कहा कि अिङ्गलैण्ड, अमेरिका और रूसमें राष्ट्रभाषा की कैसी अुन्नति हुअी है तथा रूस और जर्मनीमें किस प्रकार तुलसी रामायणकी आलोचनाकी जा रही है। पश्चात सभापति मान्यवर श्री वीरकिशोर रायने राष्ट्रभाषाकी अुपादेयता समझाकर कहा कि महिलाओं द्वारा राष्ट्रभाषाका प्रचार भलीभाँति हो सकेगा।

श्रीमती लतिकादेवीने अुत्तीर्ण छात्र-छात्राओंको पुरस्कार दिया। श्री० शान्तनुकुमार राय तथा प्रचारकोंकी ओरसे श्री नरसिंहनन्द शर्माने सभापति तथा अुपस्थित सभ्योंको धन्यवाद दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाऐं:—

आगामी प्रचार परीक्षाऐं ता. १६, १७ सितम्बर को होंगी।

कोविद लेखन कार्य:—

कोविद लेखन-कार्यके लिये स्वतंत्र रूपसे ५० अंक रखे गये हैं। लेखन-कार्यमें १८ अुत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिबार्य है। परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें कोविदके अुपयुक्त आठ निबन्ध लिखेंगे। प्रत्येक निबन्ध कम-से-कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुसे अपने शिक्षकसे जँचवाना चाहिये। निम्न सूचीसे कोअी भी आठ निबन्ध लिखना चाहिये:—

निबन्ध-सूची:—

(१) आधुनिक नारीके आदर्श (२) सिनेमा तथा रेडियो द्वारा हिन्दी प्रचार (३) यातायातके आधुनिक साधन तथा अुनका महत्व (४) निर्वासित समस्या और अुसका हल (५) हमारे राष्ट्रीय कवि (६) राष्ट्रीय प्रगतिमें धर्मका स्थान (७) आधुनिक शिक्षा प्रणाली (८) शरद् पूर्णिमा (९) समाज-सेवा (१०) मेरा प्रिय नेता।

परीक्षा-व्यवस्था-खर्च:—

जिन केन्द्रोंसे अप्रैल ५० परीक्षाका परीक्षा-व्यवस्था-खर्च ब्यौरा प्राप्त हुआ था, अुनके व्यवस्था-खर्चके मनीआर्डर हम भेज चुके हैं।

जिन केन्द्र-व्यवस्थापकोंने अबतक यह खर्च-ब्यौरा नहीं भेजा है, वे कृपया ता. २५ जुलाअी तक अुसे भेज दें। अिस सम्बन्धमें अैसे केन्द्रोंको कअी स्मरण-पत्र भेजे जा चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ जुलाअीको अिस मदका हिसाब बन्द किया जा रहा है।

जाँच-पारिश्रमिकः—

अप्रैल परीक्षाओंके जिन परीक्षकोंके जाँच-पारिश्रमिक-ब्यौरे हमें प्राप्त हो चुके थे, अुनके जाँच-—पारिश्रमिकके मनीआर्डर हम भेज चुके हैं।

जिन परीक्षकोंने जाँच-पारिश्रमिक-ब्यौरा अबतक नहीं भेजा है, कृपया ता. २५ जुलाअीतक अुसे अवश्य भेज दें।

परिचय-मौखिक-सुविधाः—

सितम्बर ५० की परीक्षासे परिचय मौखिक परीक्षा हटा दी गयी है। अप्रैल ५० की या अुसके पहलेकी परीक्षामें जिन परिचय परीक्षार्थियोंको मौखिक सुविधा प्राप्त है, वे फरवरी—अप्रैल ५१ की परीक्षातक नियमानुसार सशुल्क आवेदन-पत्र भेजकर मौखिक परीक्षा अुत्तीर्ण कर लें।

अिसके बाद परिचय मौखिक सुविधा प्राप्त परीक्षार्थियोंकी परीक्षाकी कोअी व्यवस्था न हो सकेगी और वे अनुत्तीर्ण ही समझे जावेंगे।

भूल-सुधारः—

'पाठ्य-सूची' प्रकाशित करते समय कोविद प्रश्न-पत्र तीसरेमें 'निशागीत तथा गोदान' के बीचमें 'अथवा' शब्द छूट गया है।

निशागीत तथा गोदान विकल्प रूपमेंही रहेंगे। दोनोंका अध्ययन आवश्यक नहीं। तीनों अुपन्यासोंमेंसे किसी अेकका अध्ययन अपेक्षित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविद अुपाधि शाल:—

अप्रैल तथा मअीकी राष्ट्रभाषामें प्रकाशित सूचनाके अनुसार फरवरी तथा अप्रैल ५० की कोविद परीक्षामें अुत्तीर्ण परीक्षार्थी शाल प्राप्त करनेकी अवधि, जो कि १५ जुलाअी थी, समाप्त हो चुकी है।

१५ जुलाअीके बाद जो कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थी शाल मँगाना चाहें वे ४) वर्धा कार्यालयमें भेजकर शाल प्राप्त कर सकते हैं। मनीऑर्डर कूपनपर नाम, क्रम-संख्या, परीक्षा-माह—— आदि जानकारी देना आवश्यक है।

शालके खो जाने या फट जानेकी दशामें ४) रुपये भेजकर पुनः शाल प्राप्त की जा सकती है।

सन् ५० के पहलेकी कोविद परीक्षामें अुत्तीर्ण परीक्षार्थी यदि शाल मँगाना चाहें तो वे अपना नाम केन्द्र-व्यवस्थापकके पास दर्ज करा दें। केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे अैसे परीक्षार्थियोंकी सूची प्राप्त होनेपर समिति शालें देनेकी व्यवस्था करनेका प्रयत्न करेगी। सन् ५० के पहले कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थीको शालके लिये ३) रु. (शालकी कीमत)+१) रु. (डाक-व्यय) अिस तरह कुल ४) रुपये देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
राजस्थान	श्री गोपी रतनलाल ठाकुर	२०२०	अजमेर
गुजरात	,, मोहनलाल ल० पुरोहित	२०२१	डाकोर
	,, रविशंकर धी जोशी	२०२२	डाकोर
	,, विजया गौरी गि० भट्ट	२०२३	डाकोर
	,, चन्द्रकान्ता गि० पन्ड्या	२०२४	डाकोर
	,, लालशंकर ह० काका	२०२५	पेटलाद
	,, छोटालाल म० सत्यपन्थी	२०२६	,,
	,, शान्तिलाल प्रा० शाह	२०२७	कारेली
	,, गोवर्धन भाऊी ल० पटेल	२०२८	नावली
	,, लाभशंकर के० दवे	२०२९	अजार
	,, मिरा रास्ते	२०३०	नवसारी
	,, गजरा बहन ब० झवेरी	२०३१	नवसारी
	,, नटवरलाल म० शाह	२०३२	अहमदाबाद
	,, शिवलाल मो० पटेल	२०३३	डभोड़ा
	,, ठाकोरभाऊी दा० बारोट	२०३४	मुगलकोट
गुजरात	,, जयाबहिन परिख	२०३५	बड़ौदा
	,, मधुमालती चौकसी	२०३६	बड़ौदा
	,, कोकिला मेहता	२०३७	अहमदाबाद
	,, मोतीभाऊी गो० पटेल	२०३९	दुधवाड़ा
महाराष्ट्र	,, शंकरराव दौ० पाटील	२०४०	कोल्हापुर
,,	,, लक्ष्मणराव द० शिरगांवकर	२०४१	,,
,,	,, शंकर रा० चौगुले	२०४२	,,
,,	,, पिताम्बर चि० सरोदे	२०४३	फैजपुर
,,	,, केशव चिं० भगांले	२०४४	सावदा
,,	,, प्रद्युम्न भ० पारेख	२०४५	जलगांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	नाम	क्रमांक	स्थान
राष्ट्र	,, देवीदास श्री० पातुरकर	२०४६	धुलिया
सी	,, कृष्णा घों० कुन्टे	२०३८	मालाड
	,, मदन दे० मांजरेकर	२०४७	बम्बअी
	,, श्रीकृष्ण स० पालकर	२०४८	,,
	,, अरुन्धति वि० कामत	२०४९	दादर
	,, मिश्रीलाल ग० व्यास	२०५०	,,
	,, रामचन्द्र वा० केलकर	२०५१	,,
	,, धनिशंकर अुपाध्याय	२०५२	बम्बअी
	,, शिवनाथ मिश्र	२०५३	मालाड
	,, चुनीलाल मो० कोठारी	२०५४	घाटकोपर
	,, आचार्य चतुर्भुज गो० व्यास	२०५५	बम्बअी
	,, के० अेस० साल्यन	२०५६	बम्बअी
	,, गुरूमुखदास गोविन्दराम	२०५७	कल्याण
	,, काशीप्रसाद रणछोड़ द्विवेदी	२०५८	माटुंगा
	,, शुभलक्ष्मी चि० राव	२०५९	मालाड
	,, गंगाराम स० शिरसाट	२०६०	कुर्ला
	,, सौ० अुषा गं० ,,	२०६१	,,
	,, भावसिंह अ० मोरी	२०६२	घाटकोपर
	,, पारसनाथ भि० मिश्र	२०६३	बम्बअी
	,, रतिलाल प्र० मिस्त्री	२०६४	माझगांव
नागपुर	,, वा० सी० काले	२०६५	अमरावती
	,, पांडुरंग अे० घोड़के	२०६६	खामगांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	नाम	क्रमांक
गुजरात	आगिपोल	७३६
,,	सेरथा	३३७
,,	काणोदर	७१०
महाराष्ट्र	मोरगाँव	७१२
वि. नागपुर	माणिकवाड़	१६३०
,,	पिपलगाँव-राजा	१६३१
,,	हिवरखेड़ रुपराव	१६३२
राजस्थान	मेडता रोड	१६२२
बंगाल	आलादरपुर	१६२३
आसाम	गोलाघाट	२
कर्नाटक	हावेरी	१६२१
अुत्काम	खओरा	१६२४
,,	धामनगर	१६२५
,,	तिहिरि	१६२६
,,	गोपालपुर	१६२७
,,	बहाड़ाझोला	१६२८
,,	गुनुपुर	१६२९
,,	मत्तो	१६३५
हैदराबाद	नारायण पेठ	६८१
,,	वनपर्ति	१६३३
,,	महबूबनगर	१६३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी तथा अप्रैल ५० की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंके सर्वप्रथम तथा पुरस्कार-विजेता परीक्षार्थी

परीक्षा	सब प्रान्तोंमें सर्व-प्रथम	असाम	बंगाल	अुत्कल	राजस्थान (सिन्ध-समिति)	गुजरात	महाराष्ट्र	बम्बअी	विदर्भ नागपुर	हैदराबाद
कोविद	क्रमांक ७६४ पुरस्कार २०) श्री रमणलाल हिरालाल गांधी अहमदाबाद अंक २६० १०) सर्वप्रथम पुरस्कार १०) मथुरादास पुरस्कार	१५२४ × श्री शामराअीलाप्रम गो. शर्मा अिम्फाल १८४	१५७६ ८) श्री प्रद्योतकुमार सरकार अु. कलकत्ता २५३	१३ × श्रीमती शकुंतलादेवी बरहमपुर १७३	६३ × श्री कनैयालाल जेटानंद भाटिया जोधपुर १९४	७६४ + श्री रमणलाल हिरालाल गांधी अहमदाबाद २६०	३३२४ ८) श्री श्रीगोपाल दत्तात्रय मुजुमदार कोल्हापुर २५२	१०६५ ८) श्री हरिहर सोमनाथ शुक्ल गिरगांव २४०	२२४ × श्री ओंकार शंकर पाटील बुलडाणा २१९	३४१ × श्री प्रेमकुमार बन्सीलाल सहगल हैद्राबाद २१९
परिचय	क्रमांक १३१३४ पुरस्कार ८) श्री मधुकर श्रीधर दिवाकर कुर्डूवाडी अंक २२८	४९९४ × श्री लोहितचंद्र चौधरी नलबारी १६२	५११० ५) श्री मलिना राय शांतिनिकेतन १९८	१३३ ५) श्री अुपेन्द्रनाथ पट्टनायक बालेश्वर २०५	१७२ २॥) कु मोहिनी मोतीराम अुदयपुर १८५ २४६ २॥) श्री सुन्दर माधवदास खुराणा, ब्यावर १८५	१०७८५ २॥) श्री विष्णुप्रसाद कलिपराय पंड्या लाठी २१७ १२५९३ २॥) श्री कांतिलाल नर्मदाशंकर जोशी हलवद २१७	१३१३४ + श्री मधुकर श्रीधर दिवाकर कुर्डूवाडी २२८	४४४१ ५) श्री. के. आर पयनमन माटुंगा २२५	४०३ २॥ श्री पद्माकर गणेश आठवले, आर्वी २०९ १०२१ २॥) सौ बन्धमुक्ता निलकंठराव घटवाअी हिंगणघाट २०९	१५२० ५) श्री राजेश्वरी देवी हनमकोंडा २१७
प्रवेश	क्रमांक १३५७४ पुरस्कार ५) श्री बालकृष्ण आपाभाअी अमीन जलसण अंक १७८	९६३५ ३) श्री कन्हैयालाल अग्रवाल सदिया १३१	९७०० ३) श्री विजयकमार सरकार अु कलकत्ता १०४	११६ ३) श्री जयकुमारी चावडा, कटक १९०	९४६ ३) श्री गोप दलूमल गोलाणी नसीराबाद १४४	१३५७४ + श्री बालकृष्ण आपाभाअी अमीन जलसण १७८	३१३४७ ३) श्री बाबू विट्ठल पाटील येल्लूर १६८	८१६२ ३) श्री वासुदेव कृष्णा कुलकर्णी माहिम १६४	१८६६ १॥) श्री कुमुद गणेश चौधरी चांदुर रेल्वे १५३ १९०९ १॥) श्री अिंदिरा विनायकराव ठाकरे चांदुर रेल्वे १५३	३२८१ ३) श्री सावित्रीदेवी जीवरत्न मुदलियार गुलबर्गा १४२
प्रारंभिक	क्रमांक १८२५९ ३) श्री अमृतलाल प्रल्हादजी कोठारी नयाडीसा अंक ९३	१०४२३ २) श्री मणि शर्मा अुचीवा ७५	११२२३ २) श्रीत्मनतकुमार साहा कटवा ८०	१७७८ ॥=॥ २ श्री अलक कुमार नियोगी, संबलपुर ७१ १३६६ ॥=॥ २ श्री राजकुमारी गुप्ता बलांगीर ७१ ४२१ ॥=॥ २ श्री व्रजबंधू साहू केंदूझरगढ़ ७१	२३४६ २) श्री पृथ्विराज गोपालजी पंड्या डेह ७५	१८२५९ + श्री अमृतलाल प्रल्हादजी कोठारी नयाडीसा ९३	३०६३५ २) श्री वासुदेव विनायक आठले कोल्हापुर ८३	९४२७ २) सौ प्रभावती गोविंद अमृते माटुंगा ८९	२६११ २) श्री वसन्त नारायण दवले अकोला ७९	५०५५ २) श्री किशन गुरुनाथराव कुलकर्णी गुलबर्गा ८०

विशेष :—(१) प्रारंभमें नामके नीचे केन्द्रका नाम और अूपर परीक्षार्थी क्रमांक अुसी प्रकार अुसीके सामने नामके नीचे प्राप्तांक और नामके अूपर पुरस्कारकी रकम दी गयी है।

(२) + अिन्हें सब प्रान्तोंमें सर्वप्रथम होनेका पुरस्कार मिला है। अतः प्रान्तीय सर्वप्रथम पुरस्कार अिन्हें दिया गया है :— (क) कोविद क्रमांक २९९१ श्री अिंदिरा रंगीलदास पारेख, सूरत-केन्द्र, प्राप्तांक २५१ को ८) (ख) परिचय क्रमांक १२८९५ श्री दत्तात्रय यशवत गंभीर, अहमदनगर-केन्द्र, प्राप्तांक २२० को ५) (ग) प्रवेश क्रमांक २०९१८ श्री रमणलाल मोहनलाल जानी, माणेकपुर-केन्द्र, प्राप्तांक १६८ को ३) (घ) प्रारंभिक क्रमांक १८३०६ श्री करसनलाल अमृतलाल चौहान, नवसारी-केन्द्र, प्राप्तांक ९१ को २)।

(३) × ये अपने प्रान्तमें सर्वप्रथम हैं; लेकिन प्रथम श्रेणीमें न होनेके कारण अिन्हें पुरस्कार नहीं मिला।

परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने प्रश्नपत्र प्राप्य*

नाम	समय	मूल्य	डाक-व्यय
प्रारंभिक-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-४-०	०-१-०
प्रवेश-प्रश्नपत्र	[सन् ४५ से ४९ तक]	०-६-०	०-१-०
परिचय--प्रश्नपत्र	[सन् ४७ से ४९ तक]	०-८-०	०-२-०
कोविद--प्रश्नपत्र	[,, ,,]	०-१०-०	०-२-०

हरेक खुला प्रश्नपत्र दो पैसेके हिसाबसे बेचा जाता है। लेकिन इन संग्रहीत प्रश्नपत्रोंका मूल्य हमने अपेक्षाकृत कम रखा है। आशा है, परीक्षार्थी अिससे अवश्य लाभ अुठाअेंगे।

* प्रश्नपत्र मँगाते समय कीमतके साथ डाक-व्यय अवश्य भेजें रजिस्ट्रीसे मँगानेके लिअे चार आने अधिक भेजें। पेशगी मनीऑर्डर द्वारा ही भेजें। वी. पी. नहीं भेजी जाती।

आवश्यक सूचनाअें

१. समितिका कार्य बहुत बढ़ गया है अतअेव पत्र-व्यवहार करनेवाले भाअियोंको चाहिये कि वे बचतका ख्याल न कर अलग-अलग विभागोंसे सम्बन्ध रखनेवाले पत्रोंको अलग-अलग विभागोंके नाम ही भेजा करें। अेक ही कार्ड या लिफाफेमें दो चार विभागोंकी बातें लिखनेसे विलम्ब हो जाता है और कभी-कभी बात भी घपलेमें पड़ जाती है।

२. समितिसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी भी विभागके पत्रके पतेपर व्यक्ति का नाम न होना चाहिअे। जैसे परीक्षा-विभाग, पुस्तक-विभाग या राष्ट्रभाषा विभागको कोअी पत्र लिखना हो तो पतेमें केवल विभागीय-व्यवस्थापक (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा) ही लिखा जाय।

—मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

विशेष सूचना

अभी तक हम हिन्दी-कोष प्रेमियोंको कोष भेजनेमें असमर्थ थे। वे प्राप्य नहीं थे। अभी हमने निम्नलिखित अुपयोगी कोष मँगाकर रख लिअे हैं। जिनको आवश्यकता हो वे कोषकी पूरी कीमत (डाक-व्ययसहित) पेशगी भेजकर मँगा लें। वी. पी. से कोष नहीं भेजे जाते।

कोषका नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य	डाक-व्यय
१. शासन शब्दकोष [Administrative Dictionary]	४३०	१५-०-०	नहीं
२. प्रामाणिक हिन्दी-कोष	१३००	१०-१०-०	०-८-०
३. आदर्श हिन्दी शब्दकोष (संक्षिप्त)	७६३	६-०-०	०-६-०
४. हिन्दी रत्न कोष (हिन्दी-हिन्दी)	५८८	४-८-०	०-६-०
५. भार्गव हिंदी-अंग्रेजी कोष (संक्षिप्त)	१०५०	४-०-०	०-६-०
६. भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी कोष	१२६२	६-०-०	०-८-०
७. अंग्रेजी हिन्दी स्कूल कोष	३७८	२-०-०	०-४-०
८. अुर्दू-हिन्दी कोष	४९४	४-८-०	०-६-०
९. हिन्दुस्तानी-गुजराती कोष	३७६	४-०-०	०-८-०
१०. मराठीसे हिन्दी शब्दसंग्रह	५३०	६-०-०	०-४-०
११. मराठी-हिन्दुस्तानी कोष	१९१	२-०-०	०-६-०
१२. राष्ट्रभाषा-मराठी लघुकोष	२४३	२-८-०	०-६-०

पुस्तक-विक्री-विभाग

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-गीत

: श्री आत्माराम शर्मा, साहित्यरत्न :

गा भारतके गीत साथी ! गा भारतके गीत ।

भारतमें नित चरखा गाता
भारतका है हलसे नाता:
भारत माता सबकी माता धरती की है प्रीत ।
धरतीकी है प्रीत साथी । गा भारतके गीत ॥

भारतमें प्रिय राम हुआ है
भारतमें घनश्याम हुआ है;
गांधीका चिर नाम हुआ है मानवताका मीत ।
मानवताका मीत साथी । गा भारतके गीत ॥

भारत है नवयुगका तारा
भारत जग-जीवनकी धारा;
भारत सत्य-अहिंसा द्वारा स्वतंत्रताकी रीत ।
स्वतंत्रताकी रीत साथी । गा भारतके गीत ॥

भारत आगे बढ़ता जाये
बाधाओंसे लड़ता जाये;
ऊंचा-ऊंचा चढ़ता जाये । ऊंचे नभको जीत ।
ऊंचे नभको जीत साथी । गा भारतके गीत ॥
गा भारतके गीत साथी ! गा भारतके गीत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख

१. अभागोंका गीत ... ... [illegible]
२. राष्ट्रभाषाका स्वरूप ... ... [illegible]
३. तामिलनादमें हिंदी ... ... [illegible]
४. पं. माखनलाल चतुर्वेदी ... ... [illegible]
५. राष्ट्रभाषा-संसार ... ... [illegible]
६. हमारी दृष्टिमें ... ... [illegible]
७. प्रांतीय हलचलें ... ... [illegible]
८. श्रीलंकामें हिन्दी प्रचार ... ... [illegible]
९. परीक्षा-विभाग ... ... [illegible]

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है। वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभाषा' भेजी जा सकेगी।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक प्रति माह १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है। अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना नाम, पूरा पता तथा ग्राहक-संख्या साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारक अेवं केन्द्र-व्यवस्थापक पत्र-व्यवहारके समय अपनी क्रम-संख्या का अुल्लेख अवश्य करें।

लेखकोंसे

'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, अगस्त–१९५० [अंक १०

अभागोंका गीत

: श्री. भवानीप्रसाद मिश्र :

चलो गीत गाओ, चलो गीत गाओ।
कि गा-गाके दुनियाको सरपर उठाओ ॥ चलो गीत०

चलो गीत गाओ, सबेरा हुआ है,
कि अपना भी दुनियामें डेरा हुआ है।
अभागोंकी टोली अगर गा उठेगी
सुभागों पे दहशत बड़ी छा उठेगी।
सुरा-बेसुरा कुछ न सोचेंगे आओ,
कि जैसा भी सुर पासमें है चढ़ाओ।
चलो गीत गाओ ... चलो गीत गाओ
कि गा-गाके .... उठाओ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभागोंकी टोलीका सुर जब चढ़ेगा
तो दुनियाका मालिक नया कुछ गढ़ेगा
भले वह न चेते, हमें चेत होगा,
हमारा नया घट, नया खेत होगा।
छिनाये गयेको चलो छीन लाओ–
कि गा-गाके .... अुठाओ ॥ चलो०

अगर गा न पाअें तो हल्ला करेंगे,
अिस हल्लेमें मौत आ गअी तो मरेंगे।
कअी बार मरनेसे जीना बुरा है,
कि गुस्सेको हर बार पीना बुरा है।
बुरी जिन्दगीको न अपनी बचाओ,
कि अिज्जतके पैरों पे अिसको चढ़ाओ।
चलो गीत गाओ—चलो गीत गाओ–
कि गा-गाके .... अुठाओ ॥ चलो०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाका स्वरूप

: श्री. बैजनाथसिंह 'विनोद' :

हिन्दीको राजभाषा स्वीकार कर लिया गया है। अर्थात् हिन्दुस्तानके अंदर सभी प्रान्त राजकीय कामकाजमें हिन्दी भाषाका प्रयोग करेंगे, और स्वयं राज्य अपनी अभिव्यक्ति हिन्दी भाषाके माध्यमसे करेगा। यद्यपि अिसे आज ही कार्य रूपमें परिणत नहीं कर दिया जायगा, पर निश्चय ही अुस ओर कदम बढ़ाया जायगा। अैसा निर्णय करते समय निर्णायकोंके मनमें यह नहीं रहा होगा—कमसे-कम अैसा नहीं होना चाहिअे कि जीवित और समृद्ध प्रान्तीय भाषाओंको विनष्ट करके हिन्दी अुसके स्थानपर आसीन होगी। राजकीय भाषाका यह काम भी नहीं होना चाहिअे। किन्तु फिर भी कुछ लोगोंके मनमें अैसी धारणा है। अैसी धारणा होनेका अेक कारण यह है कि कह दिया जाता रहा है कि हिन्दी अंग्रेजीकी जगह लेगी। अिसी सूत्रसे लोग यह भी अर्थ लगा लेते रहे हैं कि अंग्रेजी जिस तरह सभी विश्व-विद्यालयोंमें शिक्षाका माध्यम है, अुसी प्रकार हिन्दी भी होगी। पर अैसा अर्थ लगाना और अैसा प्रचार करना दोनों गलत हैं। गुजरात, महाराष्ट्र और बंगालके समृद्ध साहित्यको अपने प्रान्तके विश्वविद्यालयोंसे भी हटाकर अथवा जो स्थान न्यायतः अुसे प्राप्त होना चाहिअे, अुस स्थानसे अुसे वंचित करके हिन्दीको अुस स्थानपर बैठाना, प्रान्तीय भाषाओंके साथ अन्याय है। अंग्रेजोंने प्रांतीय भाषाओंके अूपर अंग्रेजीको जो महत्व दिया था, अुसका और कारण था। अुसका अेक कारण यह था कि लोग अपने साहित्यसे, फलतः अपनी जीवित परंपरासे विछिन्न हो जायें। वह अंग्रेजी परंपराकी ओर आशापूर्ण दृष्टिसे देखें अपनेको वैसा ही बनावें। अर्थात् अपनेको हीन दृष्टिसे देखने लग जाँय। यही कारण था कि अंग्रेजोंने अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी साहित्यकी ओर ही देशको झुकाया, विज्ञानकी ओर नहीं। क्योंकि विज्ञानकी ओर हिन्दुस्तानके झुकनेपर अंग्रेजोंकी शोषण अभिलाषा नहीं पूरी होती। अतः अंग्रेजोंने जिस प्रकार प्रांतीय भाषाओंको महत्व न देकर अंग्रेजीको महत्व दिया, अुसी प्रकार प्रान्तीय भाषाओंपर हिन्दीको अत्यधिक महत्व देना भ्रमपूर्ण हो सकता है।

हिन्दीके द्वारा ही अन्य भाषा-भाषी प्रान्तोंको किसी नयी सामाजिक परंपराका संस्कार नहीं दिया जा सकता क्योंकि भारतवर्षकी, श्रुति-स्मृति परंपरा तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमण परंपरा सभी प्रान्तोंमें अेक-सी है अतः अिस दृष्टिसे हिन्दीमें कोअी खास विशेषता नहीं है। और अिसकी अभिव्यक्ति प्रान्तीय भाषाओंमें भी हो चुकी है हो रही है। हिन्दीके प्राप्त साहित्य द्वारा कोअी अैसी विशिष्ट साहित्यिक शैली और कला भी नहीं दी जा सकती, जो अन्य प्रान्तोंके पास न हो तथा जिसके प्रति अन्य प्रान्तोंमें अुत्सुकता हो। अिसलिअे भी हिन्दीको अन्य प्रान्तीय भाषाओंके अूपर महत्व देनेकी बात सोचना व्यर्थ है।

साहित्यकारकी अपनी भाषा द्वारा साहित्य सृष्टिमें जो प्रेरणा और निखार होता है, वह अन्य भाषामें नहीं। अिसलिअे अन्य भाषा-भाषी प्रान्तोंके साहित्यकारों को केवल हिन्दीमें ही साहित्य सृष्टि करनेका परामर्श देना अुचित नहीं। अैसा करनेसे साहित्यका प्राकृत-सौंदर्य नष्ट हो जायगा। अतः सामान्य रूपसे प्रान्तीय साहित्यके लिअे अैसी कल्पना हानिकर भी है। हिन्दी माध्यम द्वारा अन्य प्रान्तोंमें शिक्षासे वहाँकी भाषा और अुस भाषाकी मानस सम्पदाकी अुपेक्षा भी होगी। अिस चिन्ता-राशिकी अुपेक्षाका अर्थ होगा अहिन्दी भाषा-भाषी, किन्तु साहित्य सौष्ठव सम्पन्न, अन्य प्रान्तोंके विराट जन समुदायकी अुपेक्षा। और अिस अुपेक्षासे विवाद पैदा होगा, जिससे राष्ट्रीय अेकतामें व्याघात होगा और राष्ट्र कमजोर हो जायगा। अिसलिअे प्रान्तीय भाषाओंके समृद्ध साहित्यकी अुपेक्षा करके अुनके स्थानपर हिन्दीको बैठाना अथवा अुस ढंगसे सोचना सर्वथा गलत है। हिन्दी भाषा द्वारा प्रांतीय भाषाओंको क्षति पहुंचेगी और अुनका विकास अवरुद्ध हो जायगा, यह कल्पना नितान्त भ्रामक है। जो लोग आज अहिन्दी भाषा-भाषियोंकी ओरसे अिस प्रकारके तर्क-वितर्क अुपस्थित किया करते हैं, अुन्हें यह जानना चाहिअे कि अंग्रेजीके राजभाषा बने रहनेसे जिस प्रकारकी क्षति हुअी ठीक अुसी प्रकारका कोअी घातक परिणाम हिन्दीके राजभाषा पदपर अधिष्ठित होनेसे नहीं निकलेगा क्योंकि वह तो अपने देशकी ही अेक भाषा है। अन्य भाषा-भाषी भी हिन्दीके द्वारा अपने विचारों और भावोंकी अुसी प्रकार अभिव्यक्ति कर सकेंगे जिस भांति विभिन्न प्रान्तोंकी विभिन्न प्राकृत भाषाओंके रहते हुअे भी पुराकालमें लोग संस्कृत द्वारा किया करते थे और अुन्हें सार्वदेशिक महत्ता प्राप्त हुआ करती थी। स्मरण रहे कि दो चार अत्यधिक अुत्साही व्यक्ति यदि हिन्दीमें अिस प्रकारकी मनोवृत्तिको प्रश्रय देना चाहते हों तो अुनका यह दृष्टिकोण भी 'हिन्दीवालों' का विचार नहीं कहा जा सकता क्योंकि अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने बारंबार अपने प्रस्तावोंमें अिसे प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है कि हमारा अुद्देश्य हिन्दीको केवल राजकाज और अन्तर्प्रान्तीय व्यवहारोंकी भाषा बनाना है। अिसके द्वारा हम अहिन्दी भाषियोंके साहित्यमें सहयोग ही देना चाहते हैं। अिसे अुनपर अुस तरह नहीं थोपना चाहते जैसे अंग्रेजोंने अुनकी भाषाओंकी अुपेक्षा कर शिक्षाके माध्यमके रूपमें अुनपर अंग्रेजी लाद दी थी।

हिन्दीके राजकीय भाषा होनेका अर्थ यह होगा अथवा होना चाहिअे कि विभिन्न भाषा भाषी प्रान्तोंका आपसमें विचार विनिमयका माध्यम हिन्दी हो। भारत सरकार द्वारा विभिन्न सरकारी कागजातोंका प्रकाशन हिन्दीमें हो। और विभिन्न प्रान्तीय राज्याधिकारियोंके लिअे हिन्दीका जानना आवश्यक हो। अिसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि आवश्यक जानकारीका सम्पूर्ण साहित्य हिन्दीमें होगा। क्योंकि अन्तर्प्रान्तीय सम्बन्धोंके लिये हिन्दी ही माध्यम होगी। किन्तु अिसका अर्थ यह नहीं होगा कि प्रांतीय भाषाअें चाहनेपर भी अुक्त साहित्य न प्रकाशित कर सकेंगी। प्रांतीय भाषाओंको प्रान्तके अन्दर विकासका पूर्ण अधिकार होगा, किन्तु अुसके अन्तर्प्रान्तीय-सम्बन्धोंकी भाषा हिन्दी होगी।

अन्तर्प्रान्तीय सम्बंधोंकी भाषा हिन्दीके होते ही अुसका रूप-परिवर्तन हो जायगा। जिस हिन्दी द्वारा अुत्तर दक्षिण और पूर्व पश्चिमके भारतीय अपने विचारों और भावोंका आदान प्रदान करेंगे, अुसपर केवल अुत्तर भारत और अुत्तर प्रदेशवालोंका ही अधिकार न होकर सारे देशका अधिकार रहेगा। अुस हिन्दीमें बंगालीपन, मराठीपन, गुजरातीपन और तामिल-मलयालमपन भी होगा ही। जब हिन्दी राष्ट्रके लिये अभिव्यक्तिकी भाषा बनेगी, तो अुसमें राष्ट्रके विभिन्न समूहोंकी छाप होगी ही। जिस हिन्दी द्वारा राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति करेगा अुस हिन्दीमें राष्ट्रके समूहोंका स्वर रहेगा ही। अिसीलिये राष्ट्रभाषा हिन्दीमें अेकरूपता लानेका प्रश्न ही गलत है। राष्ट्रभाषा हिन्दीका वही रूप होगा जिसे राष्ट्रके अधिकतम लोग समझ लेंगे। अिसीलिये राष्ट्रभाषामें अेकरूपता लानेका प्रश्न गलत ही न होगा, बल्कि झगड़े और स्वार्थ संघर्षका होगा। अिसके अन्तर हिन्दीवालोंका स्वार्थ ही रहेगा।

हिन्दीके राष्ट्रभाषा, अन्तर्प्रान्तीय सम्बन्धोंकी भाषा होनेसे अुसकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। अिसलिये अब हिन्दीमें कम से कम अैसा साहित्य आ जाना चाहिये जिससे हिन्दी द्वारा राष्ट्रकी समूची अभिव्यक्तिको समझा जा सके हर्षकी बात है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने अिस ओर ध्यान दिया है। अुसने अैसे कोश ग्रंथोंकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना बनाओी है, जिससे हिन्दी माध्यम द्वारा प्रान्तीय भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अुसने अैसे स्वयं शिक्षक ग्रंथोंकी योजना और व्याकरण ग्रंथोंकी योजना बनाओी है, जिसके द्वारा हिन्दी माध्यमसे प्रान्तीय भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अुसी प्रकार साहित्य, अितिहास, कविता संग्रह और पंच रत्न ग्रंथोंकी योजना तैयारकी गयी है, जिससे हिन्दी माध्यम द्वारा प्रान्तीय भाषाओंके सुर-तालसे भी परिचय प्राप्त किया जा सकता है। यह योजना हिन्दीके राष्ट्रीय स्वरूपको सम्पूर्ण भावसे पुष्ट करनेवाली है। अिसमें कल्पना और भावुकता नहीं व्यवहारिकता यथेष्ट है। अिस योजनाके अनुसार ग्रंथोंके प्रकाशित होते ही हिन्दीका अन्तर्प्रान्तीय पक्ष पुष्ट होने लग जायगा। और अुस अन्तर्प्रान्तीय पक्षके पुष्ट होते ही अहिंदी भाषा भाषी खासकर मद्रासके चार प्रांत और महाराष्ट्रके लोग बहुत सम्भव है अुत्तर भारतके हिन्दी अभिमानी साहित्यकारोंको सैकड़ों मील पीछे छोड़ जायेंगे। क्योंकि मैं देख रहा हूं कि अुनके अन्दर सीखनेकी जबरदस्त शक्ति, लगन और श्रद्धा है अिसीलिये वह बहुत आसानीसे हिन्दीको सीख लेंगे और जिस दिन वह हिन्दीको सीखकर प्रांतीय नहीं बल्कि भारतीय दृष्टिसे हिन्दीमें लिखने लग जांयगे अुस दिन अुन्हींका साहित्य हिन्दीमें सर्व श्रेष्ठ हो जायगा। और कौन कह सकता है कि जिन मद्रासियोंने विदेशी भाषा अंग्रेजीको सीखकर संपूर्ण भारतपर अपना सिक्का सा जमा लिया वही हिन्दीको सीखकर संपूर्ण भारतपर न छा जायेंगे ?

जिस दिन ये योजनायें पूर्ण हो जांयगी अुस दिन हिन्दी भाषाका संबंध प्रान्तीय भाषाओंसे हो जायगा। प्रान्तीय भाषाओंके जीवित और प्रचलित शब्द अुनके कोशोंमें रहेंगे। अुनके साहित्यका जीवित और शक्तिपूर्ण तत्व हिन्दीमें प्रस्तुत प्रांतीय साहित्यमें आयेगा, जिसका भी प्रभाव हिन्दीपर पड़ेगा। जिससे हिन्दी अधिकाधिक जीवित जन चित्तके निकट पहुंचेगी। विशेषज्ञोंके माया फांससे अुसे मुक्ति मिलेगी और जब अैसा होगा तब आजके विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत शब्द कोष रद्दीके भाव ही जायेंगे और अुस समय हिन्दी संस्कृतनिष्ठ न होकर लोकनिष्ठ हो जायगी हिन्दीके अिस गौरवमय भविष्यको कोअी रोक नहीं सकता क्योंकि आज जाग्रत अेशियासे भी अैसी प्रेरणा मिल रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामिलनादमें हिंदी

: श्री राघवन पिल्ले :

तामिलनादकी जनता हिन्दीके विरुद्ध नहीं है। मद्रासमें यदाकदा हिन्दीका जो विरोध दिखाऔ देता है वह केवल अेक विशेष वर्गकी ओरसे ही किया जाता है। यह वर्ग समस्त तामिल जनताका प्रतिनिधित्व नहीं करता। हिन्दीके विरोधमें राजनीतिक विक्षोभ निहित है। जब हिन्दी राजभाषाके रूपमें प्रयुक्त होने लगेगी तो यही वर्ग बड़ी खुशीसे हिन्दी सीखनेमें लग जायगा। अिस वर्गका यह कहना है कि हिन्दीका प्रचार करनेसे तामिल साहित्यको धक्का लगेगा। मैं अिसे अेक लचर दलील मानता हूँ। यदि अितने दिनों तक विदेशी भाषा अंग्रेजीकी प्रधानता रहनेपर भी तामिल साहित्यको हानि नहीं पहुँची तो अंग्रेजीको छोड़कर अपने देशकी ही भाषा हिन्दीको अपना लेनेसे निश्चय ही तामिल साहित्यको कोअी हानि नहीं होगी। अिसके विपरीत हिन्दीका ज्ञान प्राप्त करनेसे तामिल भाषा-भाषियोंको देशके अधिकांश भागसे होनेवाली साहित्यिक प्रगतिके साथ सामंजस्य स्थापित करनेमें सुविधा हो जायगी।

हिन्दीका विरोध करते समय यह भी कहा जाता है कि अुसमें आवश्यक शब्दोंका अभाव है। हो सकता है कि किसी अन्य भाषाके शब्द विशेषके लिये हिन्दीमें ठीक वही भाव प्रगट करनेवाला शब्द न हो परन्तु यह कहना अुचित नहीं होगा कि हिन्दीमें पर्याप्त शब्द नहीं हैं। मैं तामिल भाषा भाषी होते हुअे भी जब कभी अुत्तर भारतमें आता हूँ तो टूटी-फूटी हिन्दीसे ही अपना काम बखूबी चला लिया करता हूँ। मुझे हिंदीमें शब्दोंकी कभी कमी नहीं मालूम पड़ी। किसी भी भाषाका साहित्य और शब्द-भंडार अपने आप नहीं बढ़ जाता। अुस भाषाको बोलनेवाली जाति संसारमें जितनी ही अधिक क्रियाशील होती है अुतना ही अधिक अुसका साहित्य और शब्द-भंडार भी बढ़ता जाता है। पराधीनताके पाशमें जकड़े हुअे भारतीयोंको क्रियाशील होनेका अब तक अवसर ही नहीं मिलता था, अतः यदि अधिकांश भारतीयोंकी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी अविकसित रूपमें रह गअी तो कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है। अब स्वतंत्र हो जानेपर भारतीयोंको संसारमें क्रियाशील होनेका अवसर मिलेगा तो अुनकी भाषा और अुनका साहित्य भी नित्य प्रति बढ़ता चला जायगा परन्तु अिसके लिये आवश्यकता यह है कि भारतीयों द्वारा हिंदीका प्रयोग गम्भीरतापूर्वक आरम्भ हो जाना चाहिअे। यदि हम स्वतंत्र हो जानेपर भी हिन्दीमें शब्दोंका अभाव बताकर अंग्रेजीकी ओर ही भागते रहे तो मेरे विचारसे १५ तो क्या १५० वर्षमें भी हिंदीके साहित्य और शब्द-भंडारकी वृद्धि नहीं होगी। आवश्यकता आविष्कारकी जननी है। हम यदि हिंदीको अपने लिये आजसे ही आवश्यक मानने लगें तो निश्चय ही अुन सभी शब्दोंका आविष्कार कर लेंगे जिनका हिंदीमें अभाव बताया जाता है।

मद्रासमें कुछ व्यक्तियोंका यह भी कहना है कि तामिल भाषा-भाषियोंको तामिलके अतिरिक्त अंग्रेजी तो पढ़नी ही पड़ती है, हिंदी भी अनिवार्य कर देनेसे तामिल बच्चोंको तीन-तीन भाषाअें सीखनी पड़ेंगी। तीन भाषाओंका सीखना निश्चय ही अेक भारसिद्ध हो सकता है परन्तु यह तर्क त्रुटिपूर्ण है। देशकी राजभाषा हिंदी घोषित हो जानेके बाद अब बच्चोंको अंग्रेजी पढ़ाना आवश्यक नहीं कहा जा सकता। केवल तामिल और हिंदी पढ़नेसे ही साधारण तामिल जनताका काम चल सकता है। यही बात देशकी अन्य भाषाओंके क्षेत्रपर भी लागू होती है। मेरा अभिप्राय अंग्रेजीका विरोध करना नहीं है। जो व्यक्ति किसी विशेष विषयका विशेष अध्ययन मौलिक रूपमें करना चाहे वह केवल अंग्रेजीका ही नहीं वरन अपने विषयानुसार जर्मन, फ्रेंच, रशियन आदि अन्य भाषाओंका अध्ययन भी कर सकता है। परन्तु देशके जन-साधारणके लिये अंग्रेजीका अध्ययन अनिवार्य कर देना किसी भी रूपमें आवश्यक नहीं प्रतीत होता, अतः साधारणतः तामिल अथवा अन्य अहिंदी भाषी क्षेत्रों में बच्चोंको केवल दो भाषाअें पढ़नी पड़ेंगी।

ब्रिटिश राज्यके दिनोंमें भारतके विभिन्न भागोंमें पारस्परिक अेकता न होने देनेके अुद्देश्यसे अिस आशयका प्रचार किया गया था कि दक्षिण भारत अुत्तर भारतसे भिन्न है। तामिल क्षेत्रको अिस राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूटको अुत्पन्न करनेमें सबसे आगे रखा गया और निरन्तर यह प्रचार किया गया कि तामिल भाषा संस्कृति और साहित्य सब कुछ अुत्तर भारतकी भाषाओं, संस्कृति और साहित्यसे सर्वथा भिन्न है। यह प्रचार बहुत बड़ी सीमातक भ्रमपूर्ण है। तामिल भाषाका प्रारम्भिक आधार भले ही अुत्तर भारतकी भाषाओंसे भिन्न हो परन्तु वर्तमान अवस्थामें तामिल भाषा और संस्कृति भारतीय भाषाओं और संस्कृतिका अेक अंग ही है। यह अंग यदि काटकर अलग किया जाय जो न तो अलग जीवित रह सकेगा और न अुसका अलग बना रहना शेष भारतके लिये ही हितकर होगा। तामिल भाषाकी वर्णमाला ८० प्रतिशत या शब्द-भंडार और अन्तर-भावना शत प्रतिशत भारतकी अन्य भाषाओंके समान ही है। स्वतंत्र भारतमें अब अिस भ्रामक प्रचारका निराकरण हो जाना चाहिये कि तामिल क्षेत्र अन्य भारतीय क्षेत्रोंसे भिन्न है। तामिल जनता अपने आपको भारतका अविभाज्य अंग मानती है। हिंदीके प्रति अुसे बहुत प्रेम है। अुत्तर भारतमें लोगोंको यह पता नहीं है कि आजकल हिंदी सीखनेके लिये तामिल क्षेत्रमें कितना प्रयत्न हो रहा है तामिलके साप्ताहिक और मासिक पत्रोंके प्रत्येक अंकमें हिंदी सीखनेके लिये पाठ प्रकाशित किये जा रहे हैं। 'कल्कि', 'आनन्द बिकटन', 'कदिर' आदि प्रमुख तामिल साप्ताहिक पत्रोंमें हिंदी पाठ प्रकाशित करनेकी विशेष व्यवस्थाकी गयी है।

तामिल भाषामें जो सुन्दर साहित्य है अुसे यथाशीघ्र ही हिंदीमें प्रकाशित होनेकी बड़ी आवश्यकता है। अिस प्रकार हिंदी भाषा भाषियोंको भी तामिल साहित्यकी प्रगतिका परिचय प्राप्त होता रहेगा। हिंदीमें अपना साहित्य देखकर तामिल जनताका हिंदीके प्रति आकर्षण और अपनत्व बढ़ेगा जो कालान्तरमें देशमें अखंडता और अेकताकी भावना अुत्पन्न करेगा।

(हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नअी दिल्ली कार्यालयके सौजन्यसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं. माखनलाल चतुर्वेदी

साहित्य वाचस्पति पं. माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी संसारके तेजस्वी कलाकार हैं। कल्पना, भावना, साधना और चिंतनके योगसे आपने जो साहित्य रचा है, अुसका हिन्दीमें विशेष स्थान है। ओजस्वी वक्ता, निर्भीक पत्रकार और अुत्कृष्ट गद्य लेखकके रूपमें आपकी काफी ख्याति हो चुकी है।

पं. माखनलाल चतुर्वेदीका जन्म मध्यप्रदेशके होशंगाबाद जिलेके बाबअी नामक स्थानमें सन् १८८९ में हुआ था। प्रायमरी स्कूलकी शिक्षा समाप्त कर आप अपने गाँवके पास ही अेक स्कूलमें ८) मासिक वेतनपर शिक्षक नियुक्त हुअे। मराठी, गुजराती, संस्कृत, बंगाली, अंग्रेजी आदि भाषाओंका गम्भीर अध्ययन भी यहींसे प्रारंभ हुआ। ब्रज भाषामें आपकी सर्व प्रथम रचना 'रसिक मित्र' नामक पत्रमें प्रकाशित हुअी। अिसी समय भारतीय राजनीतिमें लोकमान्य तिलकका अुदय हुआ और माखनलालजी शिक्षक-कार्यसे त्याग पत्र दे राजनीतिकी ओर झुके। अुन्हीं दिनों श्री. गणेशशंकर विद्यार्थीकी प्रेरणासे 'प्रताप' और 'प्रभा' का जन्म हुआ। माखनलालजी 'प्रताप' के सम्पादकीय विभागमें काम करने लगे और गणेशजीके जेल जानेके अुपरान्त 'प्रताप'का सम्पादन-भार आपके ही जिम्मे पड़ा। सन् १९१९ में पं. विष्णुदत्त शुक्ल और श्री माधवराव सप्रेके अुद्योगसे जबलपुरसे 'कर्मवीर' नामक अेक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ। माखनलालजी अुसके प्रधान सम्पादक बनाये गअे। अुस जमानेमें 'कर्मवीर'की बड़ी धाक थी। 'कर्मवीर' का जन्म राष्ट्रीय जागरणके अग्रदूतके रूपमें हुआ और घर-घर देशप्रेमका शंखनाद होने लगा। सन् १९२३ में माखनलालजीने नागपुर झंडा सत्याग्रहका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल नेतृत्व किया। नागपुर झंडा सत्याग्रहके अुपरान्त आपने अपना जीवन देशसेवाके लिये अर्पित कर दिया। कांग्रेसके आदेशपर अनेक बार जेल गअे और बन्दीगृहमें नाना तरहके कष्टोंको झेला। मध्यप्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष पदको आप दो बार सुशोभित कर चुके हैं। सन् १९४३ में हिन्दी जगतने अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका सभापति चुनकर आपका सम्मान किया। 'हिम किरीटिनी' पर 'देवपुरस्कार' प्राप्त हो चुका है और आप साहित्य वाचस्पति की अुपाधिसे भी विभूषित किअे जा चुके हैं। 'साहित्य देवता' तथा 'हिम-तरंगिनी' नामक पुस्तकोंका प्रकाशन हाल ही में हुआ है। आपका अधिकांश साहित्य अभी भी प्रकाशनकी राह देख रहा है।

छोटा क़द, श्वेत केश, घनी मूँछें, गम्भीर चेहरा, निखरा हुआ गहुँआ रंग, हृदयमें विद्रोहकी आग, मस्तिष्कमें सूझोंका भंडार, शरीरपर धोती, कुर्ता, टोपी, मीठे वचन, ओजस्वी बोल—बस यही है साहित्य-देवता पं. माखनलाल चतुर्वेदीका स्वरूप।

माखनलालजी विद्रोह और यौवनके कवि हैं। अुनके काव्यमें संघर्ष पथपर अग्रसर देशप्रेमकी बलिवेदीपर हँस-हँस शीश चढ़ानेवाले युवकोंकी भावनाओं तथा आकांक्षाओंका सजीव चित्रण हुआ है। राष्ट्रीयता और अनुशासनकी ज्वलन्त भावना ओजपूर्ण और कलात्मक रूपमें सर्वत्र विद्यमान है। अुनका काव्य त्याग और बलिदानका काव्य है।

बिगुल बज गया, चल पड़ी सैन्य, धरा भी होने लगी अधीर
खाअियाँ खोदीं रिपुने हाथ! पार हों कैसे सैनिक वीर
पूर दे अिनको मेरे शूर शरीरोंसे—दे दिअे शरीर
अिधर यों सेनापतिने कहा अुधर बिछ गअे सहस्त्रों वीर
समयपर किया शत्रुका नाश देशने आहा! पाया त्राण
शेष वीरोंने छेड़ी तान धन्य, बलिदान! धन्य बलिदान!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम सत्याग्रह आन्दोलनके समयसे माखनलालजीने जो पथ अपनाया वह अभी तक कायम है--वही लगन, वही अुत्साह, वही आग। साहित्य क्षेत्रमें अुनकी सफलताका रहस्य है--अनवरत अध्यवसाय और संकल्पकी दृढ़ता। अुनके जीवनमें अनेक मोड़ आये। आंधी और तूफानका सामना करना पड़ा। विदेशी नौकरशाही अुनके पीछे हाथ धोकर पड़ी रही। कारावास, यंत्रणाओं और तलाशियोंका जोर रहा। किन्तु अिन सबके बावजूद अुनकी प्रतिभाके विकासमें किसी किस्मकी रुकावट नहीं आअी। लक्ष्य तक पहुँचनेका हौसला बराबर बना ही रहा-

सिरपर प्रलय नेत्रमें मस्ती,
मुट्ठीमें मन चाही।
लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है,
मैं हूँ अेक सिपाही॥

विद्रोहके लिअे आपने देशके युवकोंका सदैव आह्वान किया है। 'ओ पूरबके प्रलयी पंथी' की कुछ पंक्तियाँ हैं—

अुठ तू अिस युद्धोत्तर जगकी
प्रवंचनामें आग लगा दे;
ये गुलाम, ये भले आदमी
ले गंगामें डाल बहा दे।

× × ×

दिनको रात बना क्यों अगणित,
सपनोंका भर स्वांग रहा है,
अेक स्वप्न, बस अेक स्वप्न
ही तो तेरा युग माँग रहा है।

× × ×

श्यामल रंगोंकी नदियोंमें
लाल रंग बह जाअे तो क्या?
कुछ करोड़ कायर गणना का,
पावन गढ़ ढह जाअे तो क्या?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरके अूपर पेट चढ़ाकर
अपना सत्यानाश न कर तू
'जन गण मन अधिनायक' तेरा
अुसे विश्वका दास न कर तू।

× × ×

बूढ़े युगके बूढ़े सपने
नन्हें हाथोंसे दफना दे
ओ ! पूरबके प्रलयी पंथी
अुठ-चल अेक भैरवी गा दे।

निरंतर अस्वस्थ अेवं शरीरसे शिथिल ६८ बावजूद भी माखनलालजीके काव्यमें तरुणाअीकी अग्नि बराबर विद्यमान रही है।

राजनीतिके क्षेत्रमें माखनलालजी प्रारंभसे ही अुग्र रहे हैं। देशको पराधीनताकी श्रृंखलामें जकड़नेवालोंके प्रति अुनके अन्दर अपार घृणा रही है और वे अपनी सारी शक्ति लगाकर भी देशको विदेशियोंके चंगुलसे मुक्त करानेके लिअे प्रयत्नशील रहे हैं। समझौतावादियों अेवं घुटनेटेकुओंका आपने दृढ़तापूर्वक विरोध किया—

अमर राष्ट्र, अुदण्ड राष्ट्र,
अुन्मुक्त राष्ट्र यह मेरी बोली
यह सुधार—समझौतोंवाली
नहीं चाहिअे मुझे ठठौली

× × ×

सूलीका पथ ही सीखा है
सुविधा सदा बचाता आया

× × ×

जाने दे सिर लेकर मुझको
ले सम्हाल यह लोटा डोरी

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल फेंकेंगे, कभी फूल भी
फेंकेंगे हम भूपर
विद्रोहीपर अपना मस्तक
किअे रहेंगे अूपर

× × ×

अुत्कट देशप्रेम अेवं राष्ट्रको पूर्ण स्वाधीन देखनेकी दुर्दान्त आकांक्षाने माखनलालजीको क्रांतिकारी आन्दोलनके समीप ला दिया और वर्षों आपने आतंकवादी क्रान्तिकारियोंकी अनेक प्रकारसे सहायता की। भारतीय क्रांतिके अग्नियुगके नेताओंसे आपका घनिष्ठ संबंध था और स्व. रासबिहारी घोष जैसे विश्वविख्यात आंतकवादी नेताको आपने अपने यहाँ आश्रय दिया था। माखनलालजीने राजनीतिमें सक्रिय भाग लिया। किन्तु त्रिपुरी कांग्रेसके अुपरान्त आप राजनीतिसे अलग हो गये और शुद्ध साहित्यिक जीवन व्यतीत करने लगे। राजनीतिमें भाग लेनेका अर्थ जब तक विशुद्ध देशप्रेम था तब तक तो वे अुसमें अुत्साहपूर्वक योग देते रहे पर जब राजनीति व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और पदलोलुपताका पर्यायवाची बन गया तो अुससे दूर हट गअे। राजनीतिकी तरह साहित्य क्षेत्रमें भी अुन्होंने विज्ञापनबाजी तथा आत्म प्रचारके साधन नहीं अपनाअे। जो कुछ अुन्होंने लिखा अपने हृदयके रक्तसे लिखा और जिसमें नाम कमानेका अुद्देश्य कभी भी नहीं रहा। यही कारण है कि जहाँ अन्य छोटे-मोटे लेखकोंकी अनेक रचनाअें प्रकाशमें आ चुकी हैं वहाँ माखनलालजीका काफी साहित्य अभी भी हमारे सामने नहीं आ पाया है। अेक लम्बी प्रतीक्षाके बाद अुनका 'साहित्य देवता' प्रकाशित हुआ है। 'साहित्य-देवता' भारतीय वाङ्मयकी अमूल्य निधि है। 'हिन्दी गद्यके अुत्कर्षका चरम बिन्दु' अुसमें हमें दिखाअी पड़ता है। देशके सभी अुच्च कोटिके साहित्यिकोंने अुसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। गुजरातीके प्रख्यात औपन्यासिक श्री. कन्हैयालाल मा. मुन्शीके शब्दोंमें संसारकी सर्वश्रेष्ठ सात कृतियोंमें 'साहित्य देवता'का भी नम्बर है।

माखनलालजी हिन्दीके प्रखर प्रतिभाशाली कवि हैं। अुनकी रचनाओंमें निराशा और पराजयवादके विरुद्ध प्रचण्ड हुँकार है। निराशा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण परिस्थितियोंमें भी अुनकी लेखनीसे आशा, अुत्साह और यौवनके तराने निकले हैं। समाजमें विद्रोह-कलामें विद्रोह-बस यही अुनका संदेश रहा है। दरभंगा ओरिअेंटल कान्फ्रेंसमें कवि सम्मेलनके अध्यक्ष पदसे भाषण करते हुअे आपने कहा- "जिसे हम वर्तमान कहते हैं, वह हमारी सांसोंमेंसे अिस तरह फिसल रहा है, मानो वह अभी अभी है और अभी ही हाथसे निकल जायगा।......आजके तरुणको युगने विद्रोहके लिअे आमंत्रित किया है।......संघर्ष, शोध, खतरे, परिवर्तन, क्रियाशीलता और पुरुषार्थ अिन सबके बीच हमारी प्राणवान कलाका स्वर प्रतिबिंबित होना चाहिअे। हमारी कला देशकी अुबासियों जैसा अल्पप्राण न हो। वह श्वासों जैसी महाप्राण होनी चाहिअे।"

चतुर्वेदीजी अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता हैं। अुनकी वाणीमें अद्भुत आकर्षण है और श्रोताओंको घण्टों मंत्र-मुग्ध किअे रखना अुनके लिअे साधारणसी बात है। अुनकी गणना हिंदुस्तानके चोटीके वक्ताओंमें की जा सकती है। अुनके भाषणोंमें वाणीका ओज, विचारोंकी स्पष्टता और शब्दोंका चमत्कार सभी कुछ होता है। भाषापर अपने असाधारण अधिकारसे आप श्रोताओंको बहुत शीघ्र प्रभावित कर लेते हैं।

माखनलालजीको 'आग पानीकी जवानीवाले' विद्रोही कवि कहा गया है। जवानी, तरुणाअी, बलिदान, त्याग आदि शब्दोंका अुनके साहित्यमें प्रचुर मात्रामें प्रयोग हुआ है। अुनकी रचनाओंमें कहीं कहीं छायावाद का भी प्रभाव है। यहीं काव्यमें अस्पष्टता आ गअी है और अिसीसे अुनकी कुछ कविताअें साधारण हिंदी पाठकके जल्द समझमें नहीं आ सकतीं। अपनी राष्ट्रीय कविताओंमें भी माखनलालजी कहीं कहीं बहुत अधिक अस्पष्ट हो गअे हैं। अिसे अुनके साहित्यकी कमजोरी भी कहा जा सकता है। स्वदेशप्रेम, तारुण्य, विद्रोह और त्यागकी भावनाओंसे अुनका काव्य ओतप्रोत तो है किन्तु अुसमें लक्ष्य और आदर्शकी स्पष्टता नहीं है। और जब तक लक्ष्य तथा आदर्श स्पष्ट नहीं हो जाते तब तक त्याग और बलिदानका क्या मूल्य? अस्पष्ट आदर्शोंके लिअे केवल भावनाके सहारे ही तो अधिक समय तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहा जा सकता। माखनलालजी युवकोंका बलिदानके लिअे आह्वान तो करते हैं पर किस सामाजिक अेवं राजनैतिक अुद्देश्यके लिअे? अुन्होंने वृद्धावस्थामें भी जवानीकी अुमंगोंको अपने अंदर कायम रखा है किंतु अपने विचारोंको वे युगकी नवीन भावनाओंके अनुरूप ठोस शकल नहीं दे पाअे हैं। अुनका काव्य अुग्र राष्ट्रवादका काव्य है। आज अेशियामें जो नवीन लोकजागरणकी लहर दौड़ रही है, अुसका प्रतिबिंब अुनके काव्यमें नहीं दीखता। सन् १९३० के सत्याग्रह आंदोलनके अनंतर देशके किसान मजदूर वर्गमें जिस व्यापक चेतनाका संचार हुआ था, अुसका प्रभाव चतुर्वेदीजीके साहित्यमें कहाँ है? श्री. सुमित्रानंदन पंत तो 'युगवाणी' और 'ग्राम्या'में नवीन जीवन-दर्शनकी ओर काफी मात्रामें झुके थे किन्तु चतुर्वेदीजीपर अिसका कोअी प्रभाव नहीं पड़ सका। केवल अमूर्त आदर्शोंके लिअे ही तरुणोंकी भावनाओंको कब तक अुभारा जा सकेगा? किन्तु अिन सबके बावजूद भी युग विशेषकी पृष्ठभूमिमें अुनके काव्यका अेक महत्व है जिसकी अनिवायता और अुपयोगिताका मूल्य कम नहीं किया जा सकता। किसी भी वस्तुको पाठकोंके समक्ष अुपस्थित करनेकी चतुर्वेदीजीकी विशिष्ट शैली अलग ही दीखती है और यही हिन्दी साहित्यको अुनकी देन है। अेक अुत्तम गद्य लेखक और प्रथम श्रेणीके कविके रूपमें अुन्होंने साहित्यमें अपना स्थान बना लिया है।

माखनलालजी हिन्दीके कर्मठ साहित्यकार हैं। अभी हाल ही में हिन्दी संसारने अिस साहित्य-सेनानीकी हीरक जयंती मनाअी है। आप बहुत काल तक हमारे बीच रहकर साहित्य-साधना करते रहें, यही कामना है।

—प्रशान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा संसार

कृषि शब्दावलीके लिअे हिन्दी अनुवाद समिति

कृषि मंत्रालयने अेक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसमें बताया गया है कि कृषिकी विभिन्न शाखाओंमें प्रयुक्त किये जानेवाले अंग्रेजी शब्दोंका हिन्दी अनुवाद करने और अुनके लिअे हिन्दीके अुपयुक्त अेवं सरल पर्यायवाची निश्चित करनेके लिअे अुक्त मंत्रालयने माननीय श्री कन्हैयालाल माणिक मुन्शीके सभापतित्वमें अेक समिति नियुक्त की है। यह समिति भारतीय संविधानके ३५१ वें अनुच्छेदके अनुसार नियुक्त की गयी है, जिसमें हिन्दी भाषाके प्रचार अेवं अुन्नतिके निमित्त प्रोत्साहन प्रदान करनेका आदेश है, ताकि वह (हिन्दी भाषा) सभी क्षत्रोंमें विचारोंकी अभिव्यक्तिके लिअे अेक समुचित अेवं प्रभावशाली माध्यमका रूप ग्रहण कर सके।

हिन्दीमें सरकारी पत्र-व्यवहार

मध्यप्रदेशके मन्त्रिमण्डलकी बैठकमें यह निश्चित किया गया है कि मध्यप्रदेश तथा मध्यभारत सरकारके बीच देवनागरी लिपिमें लिखित हिन्दी माध्यम द्वारा पत्र-व्यवहार होगा। यह प्रस्ताव संविधानकी ३४६ वीं धाराको लक्ष्यमें रखते हुअे मध्यभारत सरकारने किया था।

ताता कम्पनी और हिन्दी

ताता कम्पनीने ४००) या अिससे अधिक मासिक वेतन पानेवाले अपने सभी कर्मचारियोंको आदेश दिया है कि वे १ जुलाअी, १९५२ से पहले ही पहले हिन्दी सीख लें।

हिन्दीके अध्ययनके लिअे सुविधाअें प्रदान करनेके निमित्त जमशेदपुरके स्कूलोंमें हिन्दीकी विशेष कक्षाअें खोली जायंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसाम और मद्रासमें हिन्दी अनिवार्य

मद्रास मन्त्रिमडलने अपनी बैठकमें आज यह निश्चय किया कि आगामी वर्षसे समस्त माध्यमिक स्कूलोंमें दूसरीसे चौथी श्रेणियों तक हिन्दीकी शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय।

आसाम सरकारकी शिक्षा परिषद्ने अेक प्रस्ताव द्वारा सातवीं तथा आठवीं कक्षामें हिन्दीको जल्दीसे जल्दी अनिवार्य विषय बनानेकी सिफारिश की है। साथ ही यह भी स्वीकार किया है कि माध्यमिक वर्नाक्यूलर शालाओं में भी हिन्दीको अनिवार्य किया जाय। हिन्दीकी शिक्षाके लिअे आवश्यक शिक्षकों आदिकी पूर्तिके संबंधमें परिषदने सुझाव रखा है कि राज्य भरमें शिक्षा-केन्द्र खोले जांय।

'विश्ववाणी' का स्वरूप परिवर्तन

हिन्दीकी सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक मासिक-पत्रिका 'विश्ववाणी' (प्रयाग) का प्रकाशन आजकल मासिक पुस्तिकाके रूपमें हो रहा है, जिसके प्रत्येक अंकमें संसारकी अेक न अेक संस्कृतिपर अेक विस्तृत लेख रहेगा।

डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी बनारस विश्वविद्यालयमें

विश्वभारती शांतिनिकेतनके हिन्दीभवनके अध्यक्ष, 'हिन्दी साहित्यकी भूमिका,' 'कबीर,' 'नाथ सम्प्रदाय' आदि महत्वपूर्ण ग्रंथोंके लेखक और हिन्दीके सर्वश्रेष्ठ समालोचक डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारसमें हिन्दी विभागके अध्यक्ष होकर आ गअे। अुनके आनेके साथ ही विश्वविद्यालयमें अुनके लिअे विभागका सर्वोच्च विशेष पद खोला गया। अिसके लिअे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके कुलपति श्री गोविन्द मालवीयको बधाअी है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

आजकल श्री राहुल सांकृत्यायन मसूरीमें हैं और अब वे वहीं रहेंगे। अुनका पता है— हर्न क्लिफ, हेपीवेली मसूरी (अुत्तर प्रदेश)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. दिनकर

ज्ञात हुआ है कि 'कुरुक्षेत्र'के कवि श्री. दिनकरजी बिहार सरकारके प्रकाशन-विभागको छोड़कर मुजफ्फरपुर कालेजमें हिन्दीके प्राध्यापक नियुक्त हो गअे हैं।

श्री. शिवपूजन सहाय

बिहार सरकारने हिन्दी परिषद्के मन्त्री पदपर सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री. शिवपूजन सहायकी नियुक्ति की है।

★हमारी दृष्टिमें★

साकेतके नवम सर्गका काव्यवैभव– लेखक — श्री. कन्हैयालाल सहल, प्रकाशक-साहित्य-सदन (चिरगाँव झाँसी, पृष्ठ संख्या १७४, मूल्य २॥)।

कविवर मैथिलीशरण गुप्तके महाकाव्य साकेतका नवम सर्ग हिन्दीके काव्य साहित्यमें अपनी अेक विशेषता रखता है। अुसके समर्थकोंका कहना है कि साकेत का मर्म अुसके नवम सर्गमें ही छिपा है। पर अैसे लोगोंकी भी कमी नहीं, जो समझते हैं कि साकेतका नवम सर्ग कथावस्तु, वर्ण्य-विषय और महाकाव्यके लिये प्रयुक्त होनेवाली शैलीकी दृष्टिसे भी महाकाव्योचित गरिमाके उपयुक्त नहीं। कविने अुर्मिलाकी विरह विक्षिप्तावस्थाका मनोवैज्ञानिक चित्र उपस्थित करनेका प्रयत्न तो किया है, पर न तो वह पूर्णतः मनोवैज्ञानिक ही बन पाया है और न रूढ़िगत आदर्शवादके अनुकूल ही।

प्रस्तुत पुस्तकमें अुसी नवम सर्गकी व्याख्या की गअी है तथा कठिन स्थलोंका अर्थ भी समझाकर लिखा गया है। अुक्त पुस्तक छात्रोंके लिये तो उपयोगी होगी ही। अिसके अतिरिक्त गुप्तजीके पाठकोंको भी अिससे लाभ पहुँचेगा। हिन्दीके अन्य कवियोंपर भी अिस प्रकारकी व्याख्यामूलक समीक्षाकी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धार्चन—लेखक अेवं प्रकाशक—डा. प्रेमसिंह चौहान 'दिव्यार्थ' त्योंदा विदिशा, मध्यभारत, मूल्य चार आना।

प्रस्तुत कविता-पुस्तक भक्त हृदयसे लिखी गअी है। कविने तथागतके प्रति अपनी भक्तिपूर्ण श्रद्धाको कवितामें अभिव्यंजित किया है। भगवान बुद्धके भक्तोंके लिये यह पुस्तक अुपयोगी सिद्ध होगी।

—शीलभद्र साहित्यरत्न

भारती— मासिक पत्र— संपादक— पं. हृषीकेश शर्मा, प्रकाशक— आल अिंडिया रिपोर्टर नागपुर, वार्षिक मूल्य १५), अेक प्रतिका १।)।

हिन्दीके आजके मासिक पत्रोंमें 'भारती'का महत्वपूर्ण स्थान है। अंतर्प्रान्तीय साहित्य, कला और संस्कृतिके अग्रदूतके रूपमें 'भारती'के अभी तक जितने अंक निकले हैं, अुनसे मालूम होता है कि पत्रके पीछे अेक मिशन है जिसकी पूर्तिके लिअे वह प्राणपणसे सचेष्ट है।

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'भारती' जैसे मासिक पत्रोंकी नितांत आवश्यकता है। पत्रके पिछले अंकोंमें मराठी, गुजराती, पंजाबी, तैलगू, बंगला आदि प्रमुख भाषाओंके साहित्यको आकर्षक ढंगसे पाठकोंके समक्ष अुपस्थित किया गया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, वि. स. खांडेकर, कन्हैयालाल मा. मुन्शी आदि प्रख्यात अहिन्दी साहित्यिकोंकी चुनी हुअी कृतियोंके प्रामाणिक अनुवादोंसे पत्रकी महत्ता और भी बढ़ गअी है। सम्पादन कौशल, छपाअी-सफाअी आदिकी दृष्टिसे 'भारती' विशेष रूपसे अुल्लेखनीय है। देशमें बढ़ते हुअे प्रांतीयताके विषाक्त वातावरणको दूर करनेके अुद्देश्यसे विभिन्न प्रान्तीय भाषाओंमें भी अिसी ढंगके सांस्कृतिक पत्र निकलना चाहिअे।

—प्रशान्त

सोवियत भूमि—(भारतमें तास प्रतिनिधि द्वारा प्रकाशित सचित्र मासिक पत्र) ६ कैनिंगरोड, नअी दिल्ली। वार्षिक मूल्य— २-८-०, छमाही १-८-०।

सोवियत रूसके संबन्धमें अुसके जन्मकालसे ही तरह तरहकी गलतफहमियाँ फैलाअी गयीं हैं। अुस देशके सम्बन्धमें कि जिसने मानव जीवनकी प्रारंभिक समस्याओंको हल कर दिया है, हम या तो कुछ नहीं जानते अथवा गलत जानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह हर्षकी बात है कि सोवियत्त सरकारके 'तास' प्रतिनिधिने यह पाक्षिक-पत्रिका प्रकाशित की है। अिसके द्वारा हमको सोवियत रूसके सामाजिक जीवनकी सही और प्रामाणिक झाँकी मिल सकती है। सोवियतके सम्बन्धमें किन्हीं और सूत्रोंपर आधारित न होकर सीधे सोवियत भूमिके द्वारा सोवियतकी जानकारी करना ही प्रामाणिक है। सोवियत हमारा पड़ोसी राष्ट्र है; हमें अुससे बहुत कुछ सीखना है; जिसे हम 'सोवियत भूमि' से सीख सकते हैं।

—'विनोद'

महादेव भाअीकी डायरी [द्वितीय भाग] प्रकाशक— नवजीवन— प्रकाशन-मन्दिर अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या— ४७६, मूल्य ५)।

अिस डायरीका प्रथम भाग पहिले ही प्रकाशित हो चुका है। बापूजीके निकट सम्पर्कमें स्वर्गीय महादेव भाअीने यरवदा जेलमें यह डायरी लिखी थी। अुपवासपर बापूजीके विचार अिस डायरीकी प्रधान विशेषता है। समाज सुधार, मन्दिर प्रवेश आदिपर बापूजीके विचार तथा सर सेम्युअल होल, मेकडानाल्ड आदिके साथ बापूजीका पत्र-व्यवहार विशेष रूपसे पठनीय है।

—कृ. पा. पाटील

विनोबा दर्शन— सम्पादक— श्री जमालुद्दीन तुरक, भूमिका लेखक— श्री काका कालेलकर, प्रकाशक—लोकोदय प्रकाशन वर्धा, मूल्य १)।

प्रस्तुत पुस्तकमें विनोबाजीके सम्बन्धमें विस्तृत जानकारी है। सम्पादनमें काफी परिश्रम हुआ है। विनोबा-साहित्यके प्रेमियोंके लिये पुस्तक अुपयोगी है।

—अुद्धवराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

गुजरात

लिम्बडी:—गत अप्रैल १९५० की राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण पत्र वितरणोत्सव स्थानीय तालुका समितिके मन्त्री अेवं म्युनिसिपल समितिके शिक्षा सदस्य श्री. धरमशीभाओ पटेलके सभापतित्व में मनाया गया। अिस अवसरपर अनेक निष्ठावान कार्यकर्ताओंके राष्ट्रभाषा विषयक भाषण हुअे।

रामनगर (साबरमती):—यहांके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत ३० जुलाओको मनाया गया। अिस अवसरपर श्री रामअवधेश त्रिपाठीने हिन्दीके प्रश्नपर भाषण दिया।

प्रांतिज:—अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत २३ जूनको मनाया गया। स्थानीय अनेक प्रतिष्ठित सज्जनोंने अुपस्थित होकर परीक्षार्थियों का अुत्साह बढ़ाया।

नागपुर-विदर्भ

वाशिम:— राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री. सूरजसिंह सिसौदिया 'विशारद' के प्रयत्नसे वाशिममें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी अेक शाखा स्थापित हुअी है। प्रचारकने स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रेमियोंकी अेक सभा बुलाअी। अिस तहसीलमें राष्ट्रभाषा प्रचारार्थ सर्व निश्चयसे वाशिम तालुका रा. भा. समिति स्थापित हुअी और अुसके निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये:— सर्वश्री भगवानदासजी सोमाणी (अध्यक्ष), नंदलालजी वियाणी मन्त्री और श्री सिसौदिया संचालक।

सितम्बर ५० की परीक्षाओंमें बैठनेवाले परीक्षार्थी अुत्साहसे तैयारी कर रहे हैं। प्रमाणिक प्रचारक सिसौदियाजी अिन विद्यार्थियोंको निःशुल्क पढ़ाते हैं। अिस केन्द्रसे १०० परीक्षार्थी अगली परीक्षामें बैठ रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

दुर्गापुर केन्द्रसे फरवरी ५० के अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव जयपुर म्युनिसिपल कमिटीके सदस्य श्री गुरुदासमलजीकी अध्यक्षतामें ता. ११. ६. ५०. को मनाया गया। जयपुरसे श्री सेवारामजी प्र. प्रचारक श्री पधारे थे। केन्द्र व्यवस्थापक श्री हेमनदासजीने केन्द्रकी प्रगतिसे श्रोताओंको अवगत कराया। तदुपरांत विद्यार्थियोंको प्रमाण पत्र बाँटे गये।

सांगानेर कैंप केन्द्रके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव श्री भगतरामजी कैंप कमॉडेन्टकी अध्यक्षतामें ता. २१-६-५० को सांगानेर कैंप स्कूलमें मनाया गया। अिस अवसरपर जयपुरसे श्री सेवारामजी तथा सांगानेर शहरसे श्री लाधूरामजी पधारे थे।

अुत्सवके प्रारंभमें केन्द्र व्यवस्थापक महोदयने आये हुअे अतिथियोंका स्वागत किया। तत्पश्चात् श्री सेवारामजीने अुन भाअियोंको धन्यवाद दिया, जिन्होंने कैंपकी खराब हालतसे हतोत्साह न होकर भी परीक्षाअें दीं।

अन्तमें सभापति महोदयने अपने कर कमलोंसे अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र बाँटे। 'जन गण मन' के पश्चात अुत्सव समाप्त हुआ।

मध्यभारत

अिंदौरः—गत १६ जुलाअीको महाराष्ट्र साहित्य सभा-भवनमें मध्यभारतके प्रमुख नेता श्री. वी. वा. द्रविड़ की अध्यक्षतामें अिन्दौर केन्द्रके अप्रैल १९५० की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाणपत्र वितरण समारोह मनाया गया। केन्द्र-व्यवस्थापक श्री बी. सी. गंगराडेने अिन्दौर केन्द्रकी प्रगतिके सम्बन्धमें श्रोताओंको जानकारी दी और अुसके बाद अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको श्री द्रविड़ द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। केन्द्रसे प्रथम अुत्तीर्ण होनेके अुपलक्ष्यमें श्री. देवीलाल श्रीवास्तव (परिचय) श्री गणपति प्रसादजी बोहरे (प्रवेश) और श्री नानाभाअी (प्रारंभिक) को श्री गंगराडेजीकी ओरसे पारितोषिक प्रदान किअे गअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीलंकामें हिन्दी प्रचार

आज तक श्रीलंकामें हिन्दी भाषाका प्रचार कार्य राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, वर्धाकी तरफसे यहांके हिन्दी प्रेमियोंकी सहायतासे बिना किसी संगठनके चल रहा था। अिस अर्सेमें अिस देशके लोगोंने हिन्दी भाषाका अितना ज्ञान प्राप्त कर लिया कि आज वे स्वयं अपने बलबूतेपर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी अधीनतामें हिन्दी प्रचारके लिअे अेक संस्थाका निर्माण करनेका साहस कर चुके हैं।

यद्यपि यह देश भाषा, सभ्यता, संस्कृतिके लिहाजसे भारतका अेक खंडमात्र है तथापि कुछ बाह्य कारणोंसे कुछ अैसे विचार आभ्यतरिक रूपसे कार्य करते रहे हैं कि कालान्तरमें पैदा हुअी बीचकी खाअी पट नहीं पा रही है। यह भेद अतीतका अवशेष मात्र है। अिधर जबसे श्रीलंकाने स्वतन्त्रता प्राप्त की है, हवाका रुख बदल गया है। अिस विषयमें अितना ही कहा जा सकता है कि अब दोनों देश अपने-अपनोंको पहचानने लगे हैं। भारतीय सभ्यता, संस्कृतिकी ओर अिनका झुकाव बढ़ने लगा है। अिस बातके बहुतसे प्रमाणोंमेंसे अेक तो यह है कि अिस साल पिछले दोनों सालोंसे अधिक विद्यार्थी हिन्दी लेकर यहांकी सरकारी परीक्षाओंमें बैठे हैं। १९४८ से सात गुना विद्यार्थी १९५० की परीक्षाओंमें बैठे हैं। आगे भी विद्यार्थियोंकी संख्यामें वृद्धिकी पूरी संभावना है।

तमिल भाषा अिस देशकी दूसरी प्रधान भाषा है। अिसको लेकर विद्यार्थी परीक्षाओंमें बैठ सकते हैं। यहीं अुसे सीखनेकी सारी सुविधाअें हैं किन्तु यह सब होते हुअे भी विद्यार्थी गण हिन्दी भाषाको दुगने अुत्साहसे सीखनेमें लगे हैं। अिसके कअी कारण हैं—पहला—सिंहली और हिन्दी भाषाओंकी समानता—संस्कृत, पाली शब्दोंकी प्रधानता। दूसरा—नया विषय होनेसे जाननेकी अुत्सुकता—दो वर्षोंकी सफलतासे औरोंका भी अुत्साहित होना। तीसरा—हिन्दी भाषाके भारतकी राज्यभाषा हो जानेसे अिसकी ओर विशेष आकर्षण-भविष्यमें व्यापारकी सुविधाअें, प्रतिनिधियों तथा पूरे सरकारी कामोंमें स्थान पानेकी संभावना। चौथा—भारतमें बौद्ध-धर्म प्रचारकी आकांक्षाअें, भारत-भ्रमणमें सुविधा—अधिकांश सिंहली बौद्ध हैं अतः अुनका तीर्थ-स्थान नाना धर्मों तथा दर्शनोंकी जन्मभूमि भारत ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ और थोड़ेसे कारणोंके साथ ये वे प्रधान कारण हैं जो भविष्यमें श्रीलंकामें हिन्दी भाषाका मार्ग प्रशस्त करेंगे। अभी तो यह शुरुआत ही है। गत मअी (१९५०) मासमें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाके प्रधान मन्त्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन "समस्त लोक बौद्ध-सम्मेलन" में भाग लेनेके लिअे श्रीलंका पधारे। हिन्दीके प्रेमी अिस अवसरपर आपसे मिले और अेक प्रचार-समितिके निर्माणमें आपकी सहायताकी याचना की। सम्मेलन तथा अन्य कार्योंमें व्यस्त होते हुअे भी भदन्तजीने अिसके लिअे बड़ी दौड़-धूप कर दूर-दूरके लोगोंका परिचय कराके हिन्दी प्रचार कार्यको आसान बनाया। आपके भारत प्रस्थानके बाद २४ जून (१९५०) को कोलम्बोमें अेक सभा की गअी और अिसमें समितिकी स्थापना हुअी तथा अधिकारियोंका चुनाव हुआ। अिस सभामें सम्मिलित होनेके लिअे श्रीलंकाके कोने-कोनेसे हिन्दी-प्रेमी आअे थे। भदन्त श्री सीवली आदि महानुभाओंके भाषण हुअे। कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किये गये तथा स्थाअी समितिका निर्माण हुआ। समितिके पदाधिकारी अिस प्रकार चुने गअे--सभापति—भिक्षु श्री बी. सीवली, अुपसभापति—भिक्षु रद्दैल्ले प्रज्ञालोक मन्त्री— अे. रत्नसार, सहायक मन्त्री— श्री गिरीश कुमार, कोषाध्यक्ष— श्री अेम. के. कपाडिया, संचालक – श्री सुशील कुमार, कार्यकारिणीके सदस्य— भिक्षु नारावि्ल धम्मरतन, भिक्षु कोटहेने प्रज्ञाकीर्ति, भिक्षु बद्देगम विमलवंश, भिक्षु नात्तण्डिये प्रज्ञाकर भिक्षु जी. बिमलबुद्धि, भिक्षु अेम. सुमंगल, भिक्षु दरमिटिपल रतनसार, भिक्षु डी. बोधिसीह, भिक्षु कलुतर गुणानन्द, श्रीमान विलियम अल्विस, भिक्षु मातर मेधानन्द, भिक्षु किरिन्दे धम्मानन्द, भिक्षु बटदूवे सिद्धार्थ, भिक्षु बटद्दर मेधानन्द, श्रीमान डी. बी. तेवरप्पेरुम, श्रीमान के. अेम. डब्ल्यु कुरुप्पु, श्रीमान न्यायाचार्य अमरसिंह।

निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ— यह सभा श्रीलंका सरकारके शिक्षा-विभागसे अनुरोध करती है कि वह श्रीलंका सरकार द्वारा संचालित तीनों परीक्षाओं (अँगरेजी, तमिल और सिंहली अेस. अेस. सी) में हिन्दी भाषाको भी अवश्य स्थान दे। (१)

(१) यह रिपोर्ट तैयार करनेके बाद समाचार मिला है कि श्रीलंकाकी सरकारने अपनी तीनों परीक्षाओं (अेस. अेस. सी. सिंहल, अँगरेजी और तमिल) में हिन्दीको भी अेक वैकल्पिक विषयके रूपमें स्वीकार कर लिया है।

(शेष पृष्ठ ४०२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-तिथिमें परिवर्तन :—

आगामी परीक्षायें ता. १६, १७ सितम्बर ५० को न होकर अब तारीख ३० सितम्बर, १ अक्तूबर ५० को होंगी।

कार्यक्रम—

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

शनिवार ३० सितम्बर		रविवार १ अक्तूबर	
१०॥ से १॥	२॥ से ५॥	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
कोविद १	कोविद २	कोविद ३	कोविद ४
×	परिचय १	परिचय २	परिचय ३
×	×	प्रवेश १	प्रवेश २
×	×	प्रारम्भिक	×

मंगलवार ता. ३ अक्तूबर ७॥ से १०॥
कोविद अुर्दू

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा जिस तारीख और जिस समय होगी परीक्षार्थियोंको अुसकी सूचना केन्द्र-व्यवस्थापक यथा समय देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन

आगामी परीक्षाके लिये आपके केन्द्रसे आये हुअे आवेदन पत्र प्राप्त हुओ हैं जिनकी पहुँच दी गयी है। सहयोगके लिये हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करें।

कृपया नीचे लिखी सूचनाओंपर ध्यान दें :—

अपने यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थियोंके लिये अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंकी नियुक्ति आप कर लें। नियुक्त निरीक्षकोंकी नामावली परिपत्र नं. १३ पर भर कर वर्धा कार्यालय भेजें।

पैंतीससे कम परीक्षार्थियोंवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रति परीक्षा समय (३ घंटे) के लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा।

कोविदकी मौखिक परीक्षा :

कोविदकी मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना तथा मौखिक परीक्षाके प्राप्तांक विवरण पत्रक समयपर अलगसे भेजा जायगी।

कृपया सोमवारको अवश्य भेजें —

(१) प्रत्येक समयकी परीक्षाओंकी अुत्तर पुस्तकोंका बंडल निरीक्षकके हस्ताक्षरके साथ अुसी समय सील हो जाना चाहिये। अिस प्रकार शनिवार और रविवारके सील किये हुये अुत्तर पुस्तकोंके चारों बंडल कृपया **सोमवारको अवश्य रजिस्ट्रीसे भेज दें।** शेष (कोविद अुर्दू) अुत्तर-पुस्तकें बादमें भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) मौखिक परीक्षकोंसे प्राप्त मौखिक प्राप्तांक तथा लेखनकार्य प्राप्तांक और कोविद लेखन कार्यकी बहियाँ (अेक्सरसाअिज़ कापीज) भी सोमवारको ही रवाना कर दें ।

परिचयकी मौखिक परीक्षा :—

परिचयकी मौखिक परीक्षा सितम्बर १९५० से अुठा दी गयी है।

लेखन कार्य :—

कोविद लेखन-कार्यके लिये ५० अंक रखे गये हैं। अिसमें १८ अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। परीक्षार्थी अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ निबन्ध लिखकर अपने हिन्दी शिक्षकसे जँचवा लें। निबन्ध-विषय-सूची राष्ट्रभाषाके गत (जुलाअी माहके) अंकमें दी जा चुकी है। अिनमेंसे कोअी भी आठ निबन्ध लिखें।

फरवरी तथा अप्रैल १९५१ की परीक्षाओंके लिये निबन्ध विषयः--

१. प्रकृति सौंदर्य
२. विद्यार्थियोंका अपने देशके प्रति कर्तव्य
३. पुरातन तथा आधुनिक सभ्यता
४. निबन्धकला
५. हिन्दी साहित्यकी प्रगतिमें संतोंका सहयोग
६. हिन्दीकी पत्र पत्रिकाओंका विहंगावलोकन
७. हमारा स्त्री समाज
८. राष्ट्रभाषा प्रचारके कुछ ठोस सुझाव
९. पर्यटन
१०. भारतकी वर्तमान समस्यायें
११. सच्चारित्रता
१२. शिक्षा और आचरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाका कार्यक्रम

दिन	शुक्रवार ता. २९ सितंबर	शनिवार ता. ३० सितंबर	रविवार ता. १ अक्तूबर
सूचना :—	प्रश्नपत्र १ ला	प्रश्न-पत्र ३ रा	प्रश्न पत्र ५वाँ
मौखिक परीक्षा किस दिन और किस समय होगी अिस सम्बन्धमें निश्चित सूचना केन्द्र व्यवस्थापक द्वारा प्राप्त होगी । परीक्षा-मंत्री	१०॥ से १॥	१०॥ से १॥	१०॥ से १॥
	प्रश्न-पत्र २ रा	प्रश्न-पत्र ४ था	प्रश्न-पत्र ६ ठा
	२॥ से ५	२॥ से ५	२॥ से ५

'रत्न'—परीक्षाका स्थगित परीक्षा—फल

दूसरी श्रेणी

केन्द्र	क्रमसंख्या	नाम
बडौदा	५४	श्री सुबोधचन्द्र स्नातक

× × ×

रत्नके अुपाधि-पत्र केन्द्रोंको भेज दिये गये हैं। अतः परीक्षार्थी अुस संबंधमें कार्यालयसे पत्र-व्यवहार न करें।

सुलेखन सम्बन्धी सूचना--

अच्छी लिपि परीक्षामें अुत्तीर्ण होनेकी सुलभ कुंजी है । विषयका ठीक ढंगसे प्रतिपादन करनेपर भी अधिकांश परीक्षार्थी केवल अिसी कारण अनुत्तीर्ण हो जाते हैं कि अुनकी लिपि सुवाच्य नहीं होती और परीक्षक पढ़ न पानेके कारण खीझ अुठते हैं और स्वभावतः ही कम अंक देते हैं। अतः सभी परीक्षार्थियोंको सुंदर अेवं सुवाच्य अक्षर लिखनेका प्रयत्न करना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषत: गुजरातके परीक्षार्थी अिस ओर अधिक ध्यान दें।

अक्षरोंपर शिरोरेखा अवश्य दी जावे। शिरोरेखा देनेसे अक्षरोंका सौंदर्य बढ़ता है। साथ ही अलग-अलग शब्दोंका भी अिससे सहजमें पता लगता है। गुजरातके अधिकांश परीक्षार्थी बिना शिरोरेखाके अक्षर लिखते हैं। परिणाम यह होता है कि अुनकी लिपि देवनागरी होनेके स्थानपर कहीं-कहीं तो गुजराती ही हो जाती है। अत: गुजरातके परीक्षार्थियोंको अिस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

गलत और अधूरे आवेदन-पत्र :—

अनेक बार सूचित किया जा चुका है कि गलत और अधूरे आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जा सकते। आवेदन-पत्र प्राप्त होनेके बाद आगेकी कार्यवाही शीघ्र प्रारंभ की जाती है। अिसलिये गलत या अधूरे आवेदन-पत्रोंको ठीक करने या पूरा करनेका काम यहाँ वर्धामें नहीं ही किया जा सकता।

गलत और अधूरे आवेदन-पत्र अस्वीकृत ही समझे जाँयगे। अिनके सम्बन्धमें आये हुअे पत्रोंका अुत्तर देना भी सम्भव नहीं होता है। पत्र भेजनेवाले भाअियोंको यदि कार्यालयकी ओरसे अुत्तर न मिले तो आशा है वे कार्यालयको अुसकी अिस असमर्थताके लिये क्षमा करेंगे।

(पृष्ठ ३९७ का शेषांश)

श्रीलंका राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका कार्यालय ३५, अलिबयन रोड, देमटगोड. कोलम्बोमें रखा गया है। अपना अेक पुस्तकालय तथा पुस्तक विक्री-विभाग स्थापित करनेके लिअे समिति प्रयत्नशील है। यहाँ की सभी शिक्षा-संस्थाओंमें हिन्दी अध्यापकोंकी नियुक्तिके सम्बन्धमें समिति प्रयत्न कर रही है।

—अे. रत्नसार
मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रांत	नाम	नम्बर	गांव
उत्कल	श्री० गिरिधारी मिश्र	२०६७	केन्दु झरगढ
बंगाल	" प्रद्योत कुमार सरकार	२०६८	कलकत्ता २६
गुजरात	" नारणभाओ ही. पटेल	२०६९	लीम्बडी
"	" छगनलाल न. शिरोहिया	२०७०	वडोद
"	" कुसुमबहन व. रेशमदलाल	२०७१	सूरत
"	" वसंत हरिलाल शेठ	२०७२	"
"	" गुल दारबशा नीमचवाला	२०७३	"
"	" चन्द्रा रव. नाणावटी	२०७४	"
"	" वीरमति छ. बंगाली	२०७५	"
"	" अुर्मिला म. महेता	२०७६	"
"	" अुर्मिला अिन्द्रदत्त मिश्र	२०७७	"
"	" अिस्माअिल फिदा. वहोरा	२०७८	आणंद
"	" जयेन्द्र गि. त्रिवेदी	२०७९	भावनगर
"	" विष्णुप्रसाद मां. त्रिवेदी	२०८०	लांघणज
"	" डाह्याभाओ खु. लिंबचिया	२०८१	कमालकोड़
"	" कृष्णकान्त र. महेता	२०८२	भडोच
"	" ओश्वरलाल भो. पटेल	२०८३	अहमदाबाद
"	" रणछोड़भाओ प. परमार	२०८४	चलाली
"	" शांतिलाल ल पुजारा	२०८५	धांगधा
"	" आनन्दा नत्थु पाटील	२०८६	नवसारी
"	" भूलाभाओ जो. भक्त	२०८७	धलुडा
गुजरात	" मनुभाओ त्रि. पटेल	२०८८	साधली
"	" त्र्यम्बकलाल ह. सेवक	२०८९	सूरत
"	" त्र्यम्बकराव दा. ठाकरे	२०९०	वड़ौदा
"	" वासुदेव श्री. बीलगी	२०९१	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त		नाम	नम्बर	गांव
गुजरात	श्री	गुणवंतलाल मो. जोशी	२०९२	बडौदा
,,	,,	रमुजीलाल वाड़ीलाल मोदी	२०९३	नडियाद
,,	,,	प्रभाशंकर हरगोविंददास सुथार	२०९४	बाळासिनोर
,,	,,	मेलजीभाओी ग. पटेल	२०९५	बडौदा
,,	,,	पुरुषोत्तम जे. शाह	२११९	आणंद
,,	,,	भोगीलाल चुनीलाल पटेल	२१२०	अहमदाबाद
,,	,,	अम्बाप्रसाद दु. भट्ट	२१२१	भूज
महाराष्ट्र	,,	रघुनाथ गो. पाटणेकर	२०९६	बेळगांव
,,	,,	पं. सु. रामचन्द्र शर्मा अय्यर	२०९७	पुणें. २
,,	,,	रामू लहानू कोळी	२०९८	आचेगांव
,,	,,	परमानन्द दौ. पंजाबी	२०९९	कल्याण कैम्प
,,	,,	गोपाल लक्ष्मण पाटील	२१००	गडहिंग्लज
,,	,,	आनन्द रामचन्द्र बावड़ेकर	२१०१	सिखल
,,	,,	जयराम गंगाधर फगरे	२१०२	पुणें. २
,,	,,	रामदास केन्दू येवला	२१०३	सटाना
महाराष्ट्र	,,	सौ. सुशिला गोविंद लिमये	२१०४	पुणें. ५
,,	,,	शान्तिभाओी का. जोबनपुत्रा	२१०५	,, २
,,	,,	सौ. अिंदिराबाओी भागवत	२१०६	,, ५
,,	,,	देवेन्द्र कुमार जैन	२१२२	पाथर्डी
,,	,,	यादव अुघडू महाजन	२१२३	यावल
बम्बओी	,,	केशव सुब्बरायन	२१०७	अन्धेरी
,,	,,	विजय द्वा. पानसरे	२१०८	दादर
,,	,,	पै. अनंद वेंकट्राव	२१०९	माहिम
,,	,,	मनुभाओी शं. जोशी.	२११०	बंबओी २
,,	,,	भानुमति के. वकील	२१११	,,
,,	,,	ललन सिंह	२११२	मालाड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई	श्री	शिवशंकर प्रसाद गुप्त	२११३	बंबई ४
,,	,,	चन्द्रनारायण झा.	२११४	बंबई १
वि. नागपुर	,,	भगवान गो. अत्तरकर	२११५	नांदुरा
,,	,,	देवजी कासिराम सिरिया	२११६	नागपुर
,,	,,	नारायण सिंह अ. बयस	२११७	पिंपलगांव राजा
,,	,,	सौ. शालिनीबाई रा, अलोणी	२११८	नागपुर
,,	,,	शालिग्राम दै. वनमाली	२१२४	वर्धा
,,	,,	रामचन्द्र ना, असोलकर	२१२५	नागपुर
,,	,,	दुर्गाप्रसाद ज. शास्त्री	२१२६	अकोला

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक	प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
गुजरात	वल्लभ विद्यानगर	१६३६	वि. नागपुर	धापेवाड़ा	१६४५
,,	त्रापज	१६६१	,,	साकोली	१६४६
,,	शाहपुर (सोरठ)	१६६२	,,	मोमिनाबाद	१६४७
,,	बोटाद	१६६३	,,	पुसद	१६४८
,,	कपाया (कच्छ)	१६६४	,,	हिरडव	५३९
,,	मीठापुर	७१६	,,	डफलापुर	७२७
,,	कुबेरनगर	१६७१	,,	राजूरवाडी	५५८
,,	अंगोराला	१६७३	,,	रायपुर	५४६
,,	राणा कंडोरणा	१६७४	,,	कलंब	६२६
उत्कल	सुन्दरगढ़	१६६६	राजस्थान	बाड़मेर	५६९
,,	पाललहय	१६६७	,,	टोंक	६६३
,,	कामाक्षानगर	१६७०			
			आफ्रिका	अेल्डोरेट	१६४९
			,,	टांगा	१६६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र	कुर्घे	१६३७	महाराष्ट्र	बावधन	१६५४
,,	कोंडवे	१६३८	,,	रायबाग	१६५५
,,	अुचगाँव	१६३९	,,	न्हावा	१६५६
,,	हेदवी	१६४०	,,	सामोडे	१६५७
,,	टेह्रे	१६४१	,,	निंबळक	१६५८
,,	कामशेत	१६४२	,,	लोणंद	१६५९
,,	मुल्हेर	१६४३	,,	कडगाँव	६२८
,,	लवेळ	१६४४	,,	सोनज	७२३
,,	खटाव	१६५०	,,	कुमारनगर	१६६८
,,	बेळवडे बुद्रुक	१६५१	,,	कानळदा	१६६९
,,	भोलाणें	१६५२	,,	दौंड	१६७२
,,	कासोदें	१६५३	बंबअी	गोरेगाँव	९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीके कुछ अुत्कृष्ट शब्दकोष

कोषका नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य	डाक-व्यय
१. शासन शब्दकोष [Administrative Dictionary]	४१०	१५-०-०	--
२. प्रामाणिक हिन्दी-कोष	११००	१०-१०-०	०-८-०
३. आदर्श हिन्दी शब्दकोष (संक्षिप्त)	७६३	६-०-०	०-६-०
४. हिन्दी रत्न कोष (हिन्दी-हिन्दी)	५८८	५-०-०	०-६-०
५. भार्गव हिंदी-अंग्रेजी कोष (संक्षिप्त)	१०५०	४-०-०	०-६-०
६. भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी कोष	१२६२	९-०-०	०-८-०
७. अंग्रेजी हिन्दी स्कूल कोष	३०८	२-०-०	०-४-०
८. अुर्दू-हिन्दी कोष	४९४	४-८-०	०-६-०
९. हिन्दुस्तानी-गुजराती कोष	३७६	४-०-०	०-८-०
१०. मराठीसे हिन्दी शब्दसंग्रह	५३०	६-०-०	०-४-०
११. मराठी-हिन्दुस्तानी कोष	६९१	२-०-०	०-६-०
१२. राष्ट्रभाषा-मराठी लघुकोष	२४३	२-८-०	०-६-०

अभी तक हम हिन्दी-कोष प्रेमियोंको कोष भेजनेमें असमर्थ थे। वे प्राप्य नहीं थे। अब हमने अुपरोक्त अुपयोगी कोष मँगाकर रख लिये हैं। जिनको आवश्यकता हो वे कोषकी पूरी कीमत (डाक-व्ययसहित) पेशगी भेजकर मँगा लें। वी. पी. से कोष नहीं भेजे जाते।

—पुस्तक-बिक्री-विभाग

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

साहित्यका साथी

(नवीन परिवर्तित संस्करण)

लेखक— आचार्य पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी डी. लिट्.

साहित्यका साथी साहित्यके विद्यार्थियों और साहित्यकारोंका ग्रंथ है। जिसके द्वारा साहित्यके विभिन्न अंगों-अुपांगोंकी (ध्वनि, रस, रीति, अलंकार, काव्यके भेद, नाटक, अुपन्यासके तत्वोंकी विवेचना और समीक्षा शास्त्र) समीक्षाको छात्रोपयोगी बनानेका प्रयत्न किया गया है। आचार्य द्विवेदीका हृदय अेक मानवतावादी मनीषीका हृदय है। वे जहाँ काव्यकी अुपयोगिता, अुसका हृदयसे संवेद्य होना मानते हैं, वहाँ समस्त प्राचीन काव्य शास्त्रोंके वस्तुविन्यास और रीति परंपराओंसे परिचित होनेके कारण अुसकी शैलीको भी अेक साहित्योचित कसौटीपर कसकर अुसमें अुलटफेर करते हैं। आचार्यजीके पास अपना अेक निश्चित मत है, जिसके पीछे है अतीतका अुज्ज्वल काव्यादर्श और भविष्यका सामाजिक जीवन। वे किसी भी रचनाको आजकलके प्रभाववादी आलोचकोंकी तरह सिर्फ अूपर-अूपरसे ही न देखकर अुसे वस्तुनिष्ठ और शास्त्रीय दृष्टिसे देखते हैं तथा तह तक पहुँच जाते हैं।

मूल्य केवल— १।।)

मिलनेका पता— पुस्तक बिक्री विभाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।

मुद्रक—मुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

...नालय,
गुरुकुल कांगड़ी.

कांग्रेसके अध्यक्ष

राष्ट्र और राष्ट्रभाषाकी सेवाके लिअे किअे गअे प्रण,
प्रयत्न और पुरुषार्थका सम्मिलित नाम ही
पुरुषोत्तमदास टण्डन है।

—भारतीय आत...

...भाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख	पृष्ठ
१. मिट्टीकी महिमा	४११
२. साहित्यमें रेजिमेण्टेशन	४१३
३. चीनमें भारतीय साहित्य	४१६
४. आलूचना	४२७
५. विदेशोंमें हिन्दीकी पत्र-पत्रिकाअें	४३२
६. शांतिनिकेतनमें राष्ट्रभाषा हिन्दी	४३५
७. सोवियत रूसमें सांस्कृतिक प्रगति	४३६
८. प्रांतीय हलचलें	४४३
९ परीक्षा-विभाग	४५०

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा'का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका।) है। वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही 'राष्ट्रभाषा' भेजी जा सकेगी।

२ 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक प्रति माह १६ तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है। अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना नाम, पूरा पता तथा ग्राहक-संख्या साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रमाणित प्रचारक अेवं केन्द्र-व्यवस्थापक पत्र-व्यवहारके समय अपनी क्रम-संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

लेखकोंसे

'राष्ट्रभाषा'में प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]
सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, सितम्बर—१९५० [अंक ११

मिट्टीकी महिमा

श्री शिवमंगलसिंह 'सुमन'

—१—

निर्मम कुम्हारकी थापीसे
कितने रूपोंमें कुटी-पिटी;
हर बार बिखेरी गअी
किन्तु मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी!

आशामें निश्चल पल जाअे, छलनामें पड़कर छल जाअे;
सूरज दमके तो तप जाअे, रजनी ठुमके तो ढल जाअे!
यों तो बच्चोंकी गुड़िया-सी भोली मिट्टीकी हस्ती क्या?
आँधी आअे तो अुड़ जाअे, पानी बरसे तो गल जाअे!

फसलें अुगतीं, फसलें कटतीं, लेकिन धरती चिर-अुर्वर है;
सौ बरस बने, सौ बार मिटे, लेकिन मिट्टी अविनश्वर है!
मिट्टी गल जाती पर अुसका विश्वास अमर हो जाता है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—२—

विरचे शिव, विष्णु, विरंचि विपुल
अगणित ब्रह्माण्ड हिलाअे हैं;
पलनेमें प्रलय झुलाया है,
गोदीमें कल्प खिलाअे हैं !

रो दे तो पतझड़ आ जाअे, हँस दे तो मधुऋतु छा जाअे;
झूमे तो नन्दन झूम अुठे, थिरके तो ताण्डव शरमाअे !
यों मदिरालयके प्याले-सी मोहक मिट्टीकी मस्ती क्या ?
अधरोंको छूकर सकुचाअे, ठोकर लग जाअे छहराअे !

अुश्वास मेघ, अुश्वास पवन, अम्बर-अवनी कर देते सम;
वर्षा थमती, आँधी थकती, मिट्टी हँसती रहती हरदम !
कोयल अुड़ जाती पर अुसका निःश्वास अमर हो जाता है !

—३—

मिट्टीकी महिमा मिटनेमें,
मिट-मिट हर बार सँवरती है;
मिट्टी मिट्टीपर मिटती है,
मिट्टी मिट्टीको रचती है !

मिट्टीमें स्वर है, संयम है, होनी-अनहोनी कह जाअे;
हँसकर हालाहल पी जाअे, छातीपर सब कुछ सह जाअे !
यों तो ताशोंके महलों-सी मिट्टीकी वैभव-वस्ती क्या ?
बूड़ा आ जाअे बह जाअे, भूकम्प अुठे तो ढह जाअे !

लेकिन मानवका फूल खिला जबसे वाणीका वर पाकर,
विधिका विधान लुट गया, स्वर्ग-अपवर्ग हो गअे न्यौछावर !
कवि मिट जाता, लेकिन अुसका अुच्छ्वास अमर हो जाता है !

'नया समाज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यमें रेजिमेण्टेशन

श्री भगवतशरण अुपाध्याय

आधुनिक हिन्दी साहित्यमें मुख्य रूपसे दो धाराअें चल रही हैं। अेक तो १९३६ से है जिसे लोग प्रगतिशील धाराके रूपमें जानते हैं। दूसरी अेकदम नअी है। कहीं कहीं लोग अिसे 'नअी धारा' कहते हैं और कहीं कहीं 'नअी संस्कृति'। अिस नअी धाराके कुछ लोगोंने हाल ही में प्रगतिशील धारापर यह आक्षेप किया है कि अुसमें रेजिमेण्टेशन अथवा सैन्यानुशासन रहता है जिसका अर्थ यह है कि अुसमें विचार स्वातंत्र्य नहीं रहता। नअी धाराके अिस आक्षेपका अितिहास सम्मत खण्डन श्री. भगवतशरण अुपाध्यायने अगस्त १९५० के 'नया समाज' में किया है। यह लेख न केवल हिन्दीवालोंके लिये वरन् सभी भारतीय भाषाओंके साहित्यकारोंके लिये विचारणीय है। हम अिसे साभार 'नया समाज' से अुद्धृत करते हैं। —सं

अिधर कुछ दिनोंसे कुछ साहित्यिकोंने साहित्यके क्षेत्रमें 'रेजिमेण्टेशन' (सैन्यानुशासन)का नाम लेकर प्रगतिवादी धाराओं और प्रवृत्तियोंका विरोध करना शुरू किया है। 'रेजिमेण्टेशन'से तात्पर्य साहित्यिक कृतियोंको अेक विशेष विनयन द्वारा श्रृंखलित कर देना है। नहीं कहा जा सकता कि यह रूढ़िके प्रति पूर्वाग्रहका परिचायक है अथवा वर्त्तमानके प्रति अुदासीनता या अनुभूति-सामर्थ्यकी कमी। जो भी हो, अिस लेखका मन्तव्य अुन्हें यही बताना है कि आजका 'रेजिमेण्टेशन' अुनकी प्राचीन पद्धतिके रेजिमेण्टेशनसे कहीं कमजोर है। यदि रेजिमेण्टेशनसे अुनका तात्पर्य साहित्यकारको अुसके वर्ण्य विषयादिके सम्बन्धमें सीमित कर देना या बाँध देना है, तो निश्चय ही वर्तमान साहित्यिक प्राचीनोंकी अपेक्षा अधिक खुली हवामें साँस लेता है—वस्तुतथ्य, रचनाके रूपायन, छंदादि के स्वरूप सभीमें। प्राचीनोंने न केवल सीमाबद्ध सरणियोंका निर्माण किया, वरन् काव्यादिके रूप, वस्तु, रस, अलंकार सभीको बाँध दिया। अितना ही नहीं, अुन्होंने नायकों और नायिकाओंके अभिजात-तत्व तक निश्चित कर दिये। यहाँ तक लिख डाला कि नाट्यकार किन-किन स्थितियोंको रंगमंचपर लाये, महाकाव्योंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

किन-किन रसों, किन-किन विषयों, ऋतुओं, पहाड़ों, समुद्रों, सरित-सरोवरों, सैन्य-यात्राओं, युद्ध आदिका वर्णन करे। अिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ प्राचीन महाकवियोंको छोड़कर अन्योंकी मौलिकता सर्वथा सन्दिग्ध हो गअी। प्रकृतिका वर्णन करते हुअे अुन्होंने जिस कृत्रिमताका परिचय दिया है, वह अुनके अुच्चकोटिके कृतित्वमें परम बाधक होता है। अनेक बार तो महाकाव्योंके समान 'रेजिमेण्टेड' परिस्थितियोंके वर्णनमें अितना साम्य रहा है कि पाठक विविध कृतियोंको पढ़ता हुआ भी समान वर्णनोंकी अरुचिसे थक जाता है।

लक्षण-ग्रन्थोंकी तालिकाओंसे प्राचीन साहित्यिक अिस कदर बँधे हैं कि अेक ही विचारधारा, अेक ही वस्तु, अेक ही प्रकृतिवर्णन, अेक ही पद्धति सबमें बहती है, और चूँकि अुनके वर्ण्यविषयके रूप, गुण, अलंकार समान आधारसे लिये गये हैं, अनेक बार तो स्थल-के-स्थल, सर्ग-के-सर्ग—विशेषतः युद्ध, जलक्रीड़ा, वन-विहार, अभिनय प्रणय-विरहादि—सर्वथा समान हो गये हैं। अनेक बार तो शब्द और अर्थको जैसा-का-तैसा धर दिया गया है। और अिस सम्बन्धमें माघ, भारवि, श्रीहर्ष तो क्या, महाकवि कालिदास तकने समान परिस्थितिके वर्णनमें शब्द, अर्थ और श्लोक तक अन्यत्रसे 'अुड़ा' लेनेमें संकोच नहीं किया है। अिस सम्बन्धमें केवल अुस स्थलकी ओर संकेत कर देना-मात्र पर्याप्त होगा, जिसे प्रायः सभी संस्कृत-काव्यके प्रेमी और अन्वेषक जानते हैं—अश्वघोषके 'बुद्ध-चरित'के अुस स्थलकी ओर, जिसे कालिदासने पूरा-का-पूरा अपने 'रघुवंश'के सातवें सर्गमें ले लिया है और अुस प्रसंगको प्रसंग-साम्यवश 'कुमारसम्भव'के सातवें सर्गमें फिर शब्दशः दुहरा दिया है। क्षेमेन्द्रकी 'औचित्य-चर्चा'ने, खेद है, अिस नीतिपर प्रकाश नहीं डाला। यह प्राचीन रेजिमेण्टेशनका ही परिणाम था। जब काव्योंमें समान विषयों, समान परिस्थितियों और समान रसोंका वर्णन प्रतिपाद्य होगा, तो पूर्वगतको अपने शब्दोंमें अनूदित करनेका लोभ पश्चादागत नहीं कर सकेगा, और यदि वह पश्चादागत काव्य शक्तिमें असाधारण समर्थ हुआ, तब भी अुसकी मुखरित भारतीमें पूर्वगतकी प्रतिध्वनि अुठनी बाकी न रहेगी। छन्दों, विषयों, अलंकारों, नायक-नायिकाओंके कुल-गुण, परिस्थिति आदिका प्राचीन साहित्यिक विधायकोंने अिस प्रकार नियन्त्रण किया है कि सारा साहित्य अेक ही साँचेमें ढल पड़ा है। भरत और भामह, दण्डी और वामन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुद्भट और रुद्रट, मम्मट और रुय्यट, आनन्दवर्धन और अभिनवगुप्त, कुन्तक और महिमभट्ट, धनिक और धनंजय, प्रतापरुद्र और भोजराज, क्षेमेन्द्र और हेमचन्द्र, विश्वनाथ और राजशेखर, मुकुलभट्ट और वाग्भट्ट, रामचन्द्र और गुणचन्द्र, शारदातनय और जयदेव, विद्याधर और विद्यानाथ, कविकर्णपूर और पण्डितराज, अप्पय और बालकृष्ण सबने रेजिमेण्टेशनकी शृंखलाअें गढ़ी हैं।

नतीजा यह हुआ कि 'बुद्ध-चरित' और 'सौन्दरनन्द', 'रघुवंश' और 'कुमारसंभव', 'किरातार्जुनीय' और 'शिशुपालवध', 'नैषध-चरित' और 'कुमारपाल-चरित' का—कवि-विशेषके अुपेक्ष्य वैचित्र्यके अतिरिक्त अेक ही विषय है—प्रायः अेक ही प्रभाव और परिणाम है। अिसी प्रकार 'मध्यमव्यायोग' और 'वेणीसंहार' में, 'अुत्तररामचरित' और 'हनुमन्नाटक' में, 'शाकुन्तल' और 'विक्रमोर्वशी' में, 'मालविकाग्निमित्र' और 'कौमुदी-महोत्सव' में अेक ही साँचेकी परिस्थितियाँ, अेक ही सारभूत भावतत्त्व अेक ही कोटिके नायक-नायिकाअें दृष्टिगोचर होते हैं। 'चारुदत्त' और 'मृच्छकटिक', 'मेघदूत' और 'मालती-माधव' अुस परम्परामें गिने-गिने हैं। जनता-जनार्दनको अुस पद्धतिने नहीं माना। असाधारण अलौकिक अभिजातको अुसने आदर दिया। नारी और शूद्रको, सामान्य और वर्त्तमानको अुसने त्याग दिया। अिसीसे अुसके क्षेत्रमें यथार्थके स्थानपर कल्पित और परिणामतः मिथ्याकी अुपासना हुअी। अनुभूतिजन्य परिस्थितियोंके स्थानपर अघट्य वैचित्र्यका सर्जन हुआ। सिद्धान्ततः निरूपित औचित्यका प्रतीकतः भी निर्वाह न हो सका। प्राकृत सत्यका स्थान वागाडम्बरने लिया। अिसीसे चारुदत्त अेक बार अुठकर भी मिट गया। अुसकी छाया-मात्र 'मृच्छकटिक' पर पड़कर रह गअी। अिसीसे मालती-माधव फिर भारतीय रंगमंचपर न अुतरे। अिसीसे किसी समर्थ साहित्यकारने अपने वातावरणको अपनी कृतिमें प्रतिबिम्बित करनेका साहस नहीं किया। 'कादम्बरी' और 'दशकुमार चरित' की परम्परा तक मिट गअी, जिनके आधारभूत वस्तूपचारमें पूर्वानुकूल होकर भी अुनके स्रष्टाओंने वर्त्तमानका प्रतीकतः प्रतिबिम्ब चित्र खींच दिया था।

अिस रेजिमेण्टेशनका रूप क्या था? महाकाव्यके कितने सर्ग हों? अुसके नायक नायिका कौन हों? अुनके गुण (केवल गुण, दोष नहीं) क्या हों? वर्णित वस्तु क्या हो? अुसकी परिस्थितियाँ क्या हों, अवयव क्या हों? वर्णित विषयकी रीति क्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ? छन्द कौन-से हों ? वृत्तियाँ कौन-सी हों ? अिन और अनन्त (यहाँ) अकथित परिस्थितियोंके वर्णन निर्दिष्ट लक्षणोंके अनुकूल किअे जायँ, वरन् कृतियोंको दूषित समझा जायगा।

अिन सीमाओंको आजका पूर्वाग्रही साहित्यकार 'मर्यादा' कहता है, अुनके बीच यदि अुसे साँस लेनी पड़े, तो स्वयं अुसका दम घुट जायगा—यह संभवतः अुससे छिपा नहीं। वह यह भी जानता है कि अिसी कारण पन्त, निराला, प्रसाद और महादेवी आदिने प्राचीन छन्दों और रूप-रेखाओंके प्रतिपाद्य विषयों तकके अनुबन्ध तोड़ दिअे। वे पन्त, निराला, प्रसाद और महादेवी जिन्हें वह पूर्वाग्रही रेजिमेण्टशनके विरुद्ध अपनी कमजोर, दयनीय और कृत्रिम आवाज अुठाता हुआ भी अपना मानता है, प्रतिपाद्य विषयके चुनावमें, वर्णन-शैलीमें, रीति और वृत्तियोंके निर्वाहमें, छन्दोंके चयनमें सर्वथा स्वयं 'अनरेजिमेंटेड' अशृंखलित हो अुठे हैं। फिर अिन मृगसभीतोंका कतिपय अग्रणी प्रगतिशील प्रवृत्तियोंके जनाह्वानको रेजिमेण्टेशन कहना कहाँ तक अुचित है ?

अब जरा हमारे चिरस्मरणीय प्राचीन साहित्यिकोंके सर्जनका रेजिमेण्टेशन सुनिअे। कहा जाता है कि आजके प्रगतिशील लेखक-आलोचक चाहते हैं कि साहित्यकार अनिवार्यतः अपने वातावरणको अपनी कृतियोंमें अुतारें, राजनीतिक मनोभावों और घटनाओंका चित्रण करें—यह अुनका रेजिमेंटेशन है। परन्तु शायद प्रकृतितः यह पूछा जा सकता है कि 'अुदात्त' के नामपर जो अभिजात-कुलीय व्यवस्थाका प्राचीनोंने अनिवार्यतः प्रतिपादन किया, वह क्या रेजिमेंटेशन नहीं था ? नव रसोंके नाम लेकर भी प्रमुखतः शृंगारकी आराधना क्या सामन्तों, राजाओं और श्रीमानोंके मनोरंजन और कालक्षेपके लिअे नहीं की गअी ? क्या अुन्हींके प्रणयविरहका वर्णन अुनमें नहीं हुआ ? क्या अुनके अवकाश (अुनके पास अनन्त अवकाश था) की शुष्कता मिटानेके लिअे काव्योंका निर्माण नहीं हुआ। 'काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्' का आधार क्या है ? यह क्या विश्लेषण द्वारा प्रमाणतः बताना होगा ? यह विनोद अितना आवश्यक हो गया था कि अवकाश-सेवनके अर्थ साहित्यका निर्माण ही शृंगारके आधारपर होने लगा। अिसी विनोद और अवकाश-पूर्तिके निमित्त विक्रमादित्य और भोजराजकी राज-सभाअें कामुक कवियोंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरीं, और लक्ष्मणसेनके अन्तरंग अुद्दीपक रागोंसे गूँजे, शाहजहाँ और जयसिंहके प्रासाद सम्मोहक कवि-कृतियोंकी अनुकारिणी प्रहत्त वाद्य-ध्वनियोंसे मुखरित हुअे।

कालिदास और विशाखदत्त, हरिषेण और वसभट्टी, बाण और दण्डी, भवभूति और राजशेखर, पद्मगुप्त और क्षेमेन्द्र, हेमचन्द्र और सुबन्धु, दामोदरगुप्त और कैयट, रुद्रट और मम्मट, धनिक और धनंजय धोयिक जयदेव, श्रीहर्ष और पंडितराज, चन्द और जगनिक, विद्यापति और बिहारी, और पहले पाणिनि और पंतजालि, याज्ञवल्क्य और जाबालि, व्यास और वाल्मीकि तक राज-सभाओंसे किसी-न-किसी रूपमें बँधे रहे? यह प्रश्न कुछ अजब नहीं। और जब हम अिस विषयपर विचार करते हैं कि अिस प्राचीन रेजिमेंटेशनका एक-मात्र आश्रय राजभवन रहे हैं, तब हमारी प्राचीनोंके प्रति श्रद्धा निश्चय शंकित हो अुठती है। प्राचीनोंमें मेधाकी कमी नहीं, सामर्थ्यकी कमी नहीं; परन्तु अुनका संरक्षक राजा ही क्यों है, वे राजाकी अवकाशकी पूर्ति और मनो-रंजनके लिये ही रचना क्यों करते हैं, अुनकी गोष्ठियाँ जनतामें क्यों नहीं होतीं? विशेषकर नाटकोंका आरंभ राज-सभाओंमें ही क्यों होता है? अधिकतर ये नाटक अुन दरबारोंमें वसन्तोत्सवोंपर ही पहले पहल क्यों खेले जाते हैं? अिन सब प्रश्नोंका अुत्तर सोचता हुआ आलोचक कुछ समझने लगता है। वह समझने लगता है अुस रेजिमेंटेशनकी बात, जिसमें गद्य-पद्य-चम्पूका त्रिविध साहित्य या काव्य-नाटक प्रशस्तिका सर्जन राजाकी संरक्षासे ही क्यों होता है? क्यों 'मुद्राराक्षस' के नान्दी श्लोकमें नाट्यकार समसामयिक चन्द्रगुप्तकी विष्णुवत आराधना कर बैठता है? क्यों 'कौमुदी-महोत्सव' में चन्द्र बोलने लगता है और 'विक्रमोर्वशी' में कुमार? क्यों रातों-रात स्मृतियां लिख दी जाती हैं और ध्रुवदेवीके विधवा-विवाहकी छाया नारदके धर्मशास्त्रपर पड़ जाती है? क्यों पंडित-कवि और चतुर चारण वैतालिकोंकी भांति प्रशस्ति-वचन कहते हैं? ग्रन्थबद्ध काव्यके अतिरिक्त भारतका प्राचीन साहित्य प्रशस्तिप्राय है, सो क्यों? सैकड़ों हजारों प्रशस्तियां राजाओंसे वृत्ति पानेवाले समर्थ साहित्यकारों द्वारा क्यों प्रस्तुत होती हैं? क्यों अिस परम्पराकी घृणित भावनासे क्षुब्ध हो जयसेन महाराज हर्ष द्वारा दिअे अुड़ीसाके अस्सी नगरोंकी आय जब अुपेक्षापूर्वक ठुकरा देता है, तब अुसका आचरण व्यंग-सा लगता है? स्वयं व्यास और वाल्मीकि, च्यवन और स्यावाश्व कुरुकुल और रघुकुल तथा राम और रथवीतिके प्रशस्ति-गान क्यों करते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिन प्रश्नोंका अेकमात्र अुत्तर यह है कि 'स्वान्तःसुखाय' का मूल्य 'स्वसुखाय' था और स्वसुखायका आधार राजवृत्ति थी। और कविका आचरण तब 'अनुयायिवर्ग'का, वृत्तिसेवीका था, जिसे चाहे 'पोयट-लारियट' के ही रूपमें सही 'स्वामी'का प्रशस्ति वाचन किसी-न-किसी रूपमें करना ही पड़ता था। यही अुत्तर अुस प्रश्नका भी समाधान कर देता है, जिसे किसी आलोचकने कभी नहीं अुठाया —'काव्येंअुपेक्षिता' के समर्थ लेखक रवि ठाकुरने भी नहीं —– कि रामायण और महाभारत तो रचे गअे, परन्तु परशुरामायण क्यों नहीं रचा गया ?

क्या अिसका अुत्तर रेजिमेण्टेशनकी आवाज अुठानेवाला यह कहकर देगा कि परशुराममें अुदात्त गुणों या असामान्य क्रियाशक्तिकी कमी थी ? अुस दुर्द्धर्ष सामरिककी सक्षम सक्रियतापर, जिसने अुन राजकुलोंका परम्परया '२१ बार' अन्त किया, जिसने भीष्मके अनौचित्यका युद्ध द्वारा प्रतिकार किया और कर्णका शाप द्वारा नाशकर अपनी विद्रोहकी कड़ी बीचमें डाल वशिष्ट और पुष्यमित्रकी शृंखला प्रस्तुत की, कोअी काव्याधारकी कमीका क्यों आरोप लगा सकता है ? पर हां, अिस प्रश्नका अुत्तर अुसके शक्ति-परिचायक आचरणमें ही निहित है--मदमत्त क्षत्रियोंके २१ बारके संहारमें ही, जिसका वर्णन राजाओंकी वृत्तिसे शरीर पुष्ट करनेवाले और अुनके अनुवृत्तसे यश संचय करनेवाले साहित्यकार अपना धनाधार खतरेमें डाले बगैर न कर सकते थे। अिसका अेकमात्र कारण यह था कि धनके रूपमें परशु और लँगोट मात्र रखनेवाले परशुरामके प्रति 'रेजिमेण्टेड' साहित्यिकोंकी लेखनी न अुठ सकी, अुसके समक्ष अनाचार विरुद्ध आचरणके स्तवन द्वारा कवि और नाट्यकारकी लेखनी पूत न हो सकी।

जब रेजिमेण्टेशनके गढ़ प्राचीन साहित्यकी ओर पीठकर ध्वनि, स्फोट, रीति, वृत्यादिके बन्धनोंको भूल वह आधुनिक सजग साहित्यिककी ओर रेजिमेण्टे-शनके नामपर अुँगली अुठाता है, तब निश्चय ग्लानि होती है--विशेषतः अिसलिअे नहीं कि स्वयं वह अुस जनहिताय यज्ञमें योग देनेमें समर्थ नहीं बल्कि अिसलिअे अधिक कि वह यथातथ्यको स्पष्टतः, आभासतः भी, देख तक नहीं पाता। शायद वह अिसे भूल जाता है कि तबका साहित्य राजप्रासादोंके प्राचीरोंसे परिवेष्ठित था, आजका खुले आसमानके नीचे है, दिशाओंकी अनन्त सीमाओंसे भी अपरिमित और अिसीसे किसके सम्बन्धमें रेजिमेण्टेशनकी बात कहनी नितान्त अयुक्त होगी। हां, आलोचक यह अवश्य कहेंगे कि प्राचीनका प्रतिबद्ध, प्रतिहत, अवगुण्ठित जीवन अब अप्रतिबद्ध, अप्रतिहत, अनवगुण्ठित, हो गया है। सामन्तके स्थानपर जनसंकुल संसार खड़ा है। अुसकी महिमा देखो, अुसकी स्तुति गानसे दिशा-ओंको गुँजा दो, अुसकी अूर्जस्वित शिराओंको निहारो, 'समानोमन्त्रः समितिः समानी', 'संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्!' के अुद्घोष करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनमें भारतीय साहित्य

: श्री सुमन वात्स्यायन :

अनेक शताब्दियों तक, विशेष रूपसे सम्राट् अशोकके समयसे, भारतीय धर्म-प्रचारक दुर्गम पहाड़, रेगिस्तान और अज्ञात समुद्रोंको पार कर अनजाने देशोंमें भारतीय सभ्यता, कला, ज्ञानविज्ञान और साहित्यके प्रसारके लिये जाते रहे। अुनका साहस, अुनकी लगन और अुनकी आत्मनिष्ठा आज भी अिस मूर्च्छित देशको चेतना प्रदान कर सकती है। अिन भारतीय धर्म-प्रचारकोंकी संख्या दस-बीस या सौ-दो सौ नहीं, बल्कि सदियों तक हजारोंकी तादादमें प्रथम श्रेणीके दिमाग रखनेवाले भारतीय तरुण समस्त ज्ञात जगत्में घूमते रहे। यही कारण है कि अनगिनत लुप्त भारतीय ग्रंथ अपने मूल और अनुवाद रूपमें विदेशोंमें पड़े हैं। चीन अैसे देशोंमें अेक है जिसने भारतीय साहित्यका सबसे अधिक स्वागत किया।

भारत और चीनका सम्बन्ध बहुत प्राचीन कालसे चला आ रहा है। प्राचीन साहित्यके अध्ययनसे ज्ञात होता है कि अी. सन् के सैकड़ों वर्ष पूर्वसे भारतका चीनके साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है। पेरिप्लसके मतानुसार चीनसे कच्चा रेशम और रेशमी कपड़े वैक्ट्रिया होकर बारायगाजा आता था और फिर जलमार्गसे दोमिरिका (तमिलकम-द्राविड़ या तमिल देश) पहुँचता था। चीनके साथ भूमि और जल दोनों ही रास्तेसे व्यापार होता था। तटवर्ती व्यापार काफी अुन्नत था। भिन्न-भिन्न आकार-प्रकारके जहाज किनारे किनारे चीन तक पहुँच जाते थे। समुद्र पारका व्यापार ताम्रलिप्ति, सुप्पारक आदि बन्दरगाहोंसे लंका होकर जावाके रास्ते होता था [१]। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान भूमिमार्गसे भारत आया था और लंका होते हुये जावाके रास्ते अेक

[१] बुरूआ Ceylon lectures

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जहाजसे, जिसपर दो सौ भारतीय व्यापारी भी थे, कैंटनके लिये रवाना हुआ। हिन्द अेशियामें बौद्ध धर्मके प्रचारक और कश्मीरका राजा गुणवर्मन भिक्षु बन भारतसे लंका गये और वहाँसे जावा आये। कुछ समय बाद नन्दी नामके अेक भारतीय व्यापारीके जहाजसे वे चीन चले गये। भूमिमार्गसे भी व्यापार अच्छा होता था। अपदानके अनुसार सुदूर चीनसे व्यापारी अूपरी पंजाबमें व्यापारके लिये आते थे।

भारतीय साहित्य तो चीनके अुल्लेखोंसे भरा पड़ा है। महाभारतमें चीनका कअी जगह अुल्लेख हुआ है। महाकवि कालिदासको चीनांशुक बहुत प्रिय था अिसीलिये तो अुन्होंने कअी जगह अिसका जिक्र भी किया है। कौटिल्य भी चीनसे अपरिचित नहीं थे। चरक और वराहमिहिरने भी भारतसे अुत्तर-पश्चिममें चीन-वासियोंका रहना बताया है। पालि साहित्यमें भी जगह-जगह चीनका अुल्लेख हुआ है। जातकके निदान कथामें, "बुद्धके पास जा, धर्मोपदेश सुना, और बुद्ध सहित भिक्षु संघको निमन्त्रित कर, प्रतूर्ण, चीनवस्त्र, रेशम...प्रदानकर शास्ताके पास जा प्रव्रज्या ग्रहण की"[1]। "मिलिन्द-पञ्हो" के अनुसार, "चीन देशमें चीनी लोगोंका अेक राजा रहता है। वह समुद्रको बाँध देनेकी अिच्छासे......अेक सत्यव्रतका पालन करता है।"

अिस तरह हम देखते हैं कि भारत और चीनका पारस्परिक सम्बन्ध अनन्त कालसे चला आ रहा है। पर निश्चित अैतिहासिक दृष्टिसे हान राजवंशके सम्राट् हियाओ—वू (१४०-८० अी.पू.)के समयसे है। सम्राट् हो (८९-१०५ अी. स.) के समय मध्य अेशिया होकर भारतीय राजदूत चीन पहुँचे थे। व्यापारिक और राजनैतिक संबंध दृढ़ रहनेपर भी साहित्यिक कार्य बौद्ध मिशनरियोंके साथ-साथ ही शुरू होता है। बौद्ध धर्मके चीनमें प्रवेशके लिये वेअि-लियो नामक ग्रंथके अनुसार २ अी. पू. सम्राट् अअीने यू येह-चीके दरबारमें अेक दूत भेजा। अुसे मौखिक रूपसे

[1] जातक हिन्दी, अनुवादक— भदन्त आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ बौद्ध सूत्र पढ़ाये गये। भारतीय बौद्ध मिशनरी सर्वप्रथम ६४ अी. स. में चीन पहुँचे। अिस मिशनके नेता थे काश्यप मातंग और धर्मरत्न। ये सफेद खच्चरोंपर लादकर बौद्ध साहित्य चीन ले गये थे। अिसलिये जिस मठमें ये ठहराये गये अुसका नाम भी श्वेताश्व मठ (पे-मा-से) ही पड़ा।

यदि हम काश्यप मातंग और धर्मरत्नको ही प्रथम बौद्ध मिशनरी मान लें तो यह भी मानना ही होगा कि भारतीय साहित्यको सर्वप्रथम चीन ले जानेका श्रेय भी अिन्हींको है। अिन दोनों विद्वानोंने संस्कृत ग्रंथोंका सम्पूर्णतः अनुवाद नहीं किया, बल्कि विभिन्न ग्रंथोंसे बौद्ध धर्मके मूल सिद्धांतोंका संक्षेप रूप प्रस्तुत किया। अिस तरह भारतीय साहित्यका जो प्रथम ग्रंथ चीनी भाषामें तैयार हुआ अुसे "बयालीस अध्यायका सूत्र" नाम दिया गया। कुछ समय बाद अेक और भारतीय पंडित हमें चीनमें मिलते हैं। अिनका नाम था चू-फा-चो। चू भारतीय नामके पहले चीनी लोग लगाते हैं और फो-चो का चीनी अर्थ है बोधिसत्व। अितनी बड़ी अुपाधि पानेवाले ये भारतीय निश्चय ही कोअी महान् विद्वान् रहे होंगे। अिन्होंने अनेक संस्कृत ग्रंथोंका अनुवाद किया। पर आज अुनमेंसे अेक भी प्राप्य नहीं है। हान राजवंशके समयमें महाबल और धर्मफल नामके दो भारतीय विद्वान् चीन गये। अिन्होंने भी अनेक संस्कृत ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। प्रारंभिक कालमें जिन संस्कृत ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद हुआ अुनमें अधिकांश संग्रहमात्र थे। यह आवश्यक भी था।

चीनमें भारतीय साहित्यको पहुँचाने और प्रचार करनेका सारा श्रेय भारतीय पंडितोंको ही नहीं है, बल्कि प्रारंभिक कालके साहित्यिक कार्योंका अधिकांश श्रेय अुन विदेशी विद्वानोंको है जो सैकड़ों वर्ष पूर्व ही भारतीय कला, धर्म, साहित्य और जीवनसे प्रभावित हो चुके थे। मध्य अेशियाके अनेक देश भारतीय रंगमें रंगे हुये थे। चौथी-पाँचवीं सदी-तक पर्सिया पच्छिमी अेशियाका राजनैतिक केन्द्र था। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारके क्षेत्रमें यह अेशियामें प्रमुख स्थान रखता था। पर्सिया होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही चीनी रेशम रोमके बाजारमें पहुँचता था। चीन और पर्सियाका यह पारस्परिक सम्बन्ध सिर्फ व्यापार तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि वह सांस्कृतिक रूपमें ज्यादा मजबूत रहा। अनेक पार्थियन बौद्ध भिक्षु चीन गये। अिनमें लोकोत्तम नामके अेक भिक्षु अुल्लेखनीय हैं। ये अेक राज्यके अुत्तराधिकारी थे। किन्तु बुद्ध-धर्मके प्रति अगाध श्रद्धा होनेके कारण अिन्होंने अपने चाचाको राज्य सौंप भिक्षु बन १४८ अी. में चीन पहुँचे और काश्यप मातंग द्वारा स्थापित श्वेताश्व मठमें रहने लगे। अिनका चीनी नाम शि-काओ था। ये बाअीस वर्षतक वहाँ रहे और कुल १७९ संस्कृत सूत्रोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। आज अिनमेंसे सिर्फ ५४ पुस्तकें सुरक्षित हैं। अिन्होंने अनुवाद कार्यका संगठन किया। सैकड़ों अनुवादक तैयार किये गये। शि-काओके साथ काम करनेवाले लोकक्षेम (ची-लू-किया-चान) नामके अेक शक विद्वान् भी थे। अिन्होंने २३ संस्कृत ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। अिन्होंने ही सर्वप्रथम प्रज्ञापारमिताका चीनी अनुवाद प्रस्तुत किया था। अिसी तरह ह्विेन नामका अेक पार्थियन व्यापारी १८१ अी. में चीन पहुँचा। यह कोअी भिक्षु नहीं था बल्कि अेक अुत्साही, अध्ययनशील सद्गृहस्थ था। अपनी कुशलतासे वह सम्राट् लिङ्के घुड़सवारका प्रधान अफसर बन गया। अिसने अेक चीनी विद्वान्की सहायतासे अुग्रपरिपृच्छा नामक संस्कृत ग्रंथका चीनीमें रूपान्तर किया। यह अेक प्रसिद्ध ग्रंथ है। आचार्य शांतिदेवने अपने शिक्षा-समुच्चयमें अिसका बीस बार अुल्लेख किया है। ह्विेनने ही चीनमें प्रतित्य-समुत्पादका प्रचार किया। हान राजवंशके समय कुल ४३४ ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद हुआ।[1]

२२० अी. में हान वंशके अंत होने पर और चीन तीन राज्योंमें विभक्त हो गया। छठी शताब्दी तक अुपद्रव, घबड़ाहट और प्रतिस्पर्द्धा जारी रही। बौद्ध मिशनरियोंका भाग्य सदा शासक वंशोंके अुलट-फेरसे प्रभावित होता रहा। अिस युगमें चीन जानेवाले भारतीय विद्वानोंमें

[1] प्रभात मुखर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मकालका नाम अुल्लेखनीय है। मालूम होता है ये मध्यभारतके रहने-वाले थे और अेक धनी परिवारमें पैदा हुअे थे। अिन्होंने वेद-वेदांगोंका अच्छा अध्ययन किया था। २२२ ओी. में ये चीन पहुँचे। अभी तक चीनमें मठीय जीवनका अच्छा विकास नहीं हुआ था। अिन्होंने महासांघिक निकायके प्रातिमोक्षका चीनी भाषामें अनुवाद किया।

चीनमें जो मिशनरी काम करते थे, साहित्यिक दृष्टिसे, अुनमें अेक शक अुपासक चीयेन बहुत प्रसिद्ध हैं। ये लोकक्षेमके शागिर्द थे। हान वंशके पतनके बाद वे दक्षिण चीन चले गये। सम्राट यहाँ अुनकी विद्वत्तासे बहुत प्रभावित हुआ। अुसने ची-चियेनको 'महापंडित'की अुपाधिसे विभूषित किया। वास्तवमें यह अेक बहुश्रुत और विद्वान थे। ये मध्य अेशियाके रहनेवाले थे जो अुन दिनों संस्कृतियोंका संगम था। वे अनेक लिपि और भाषायें जानते थे। सम्राट्ने अिन्हें युवराजका शिक्षक नियुक्त किया था। मालूम होता है, ये संस्कृतके भी असाधारण पंडित थे। साहित्यिक क्षेत्रमें अिन्होंने आश्चर्यजनक कार्य किया। संस्कृतके १२९ ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। दुर्भाग्यवश अिनकी अधिकांश पुस्तकें नष्ट हो चुकी हैं और प्राप्य पुस्तकोंकी संख्या सिर्फ ४९ रह गओी है। अिनके द्वारा अनूदित पुस्तकोंमेंसे कुछके नाम ये हैं — मातंगीसूत्र, अवदानशतक, दशसाहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता, सुखावती व्यूह, विमलकीर्ति-निर्देश, वत्ससूत्र, ब्रह्मजालसूत्र आदि।

यहाँ अेक दुस्साहसी भारतीय तरुणकी चर्चा अप्रासंगिक नहीं होगी। अिनका नाम था विघ्न। ये अुत्तर भारतके अेक याज्ञिक ब्राह्मण परिवारमें पैदा हुये थे। अिनका शिक्षण भी ब्राह्मण ग्रंथोंके आधारपर ही हुआ था। संस्कृतके ये प्रकांड पंडित थे। मालूम होता है अिन्हें पर्य-टनका बड़ा शौक था। बौद्ध भिक्षु बन ये लंका पहुँचे और वहाँसे समुद्रके रास्ते शायद जावा होते हुये चीन गये। लंकासे ये धम्मपदका पालि-संस्करण ले गये थे। पालिधम्मपदमें कुल २६ वर्ग (अध्याय) हैं पर विघ्न द्वारा अनूदित चीनी संस्करणमें ३९ वर्ग हैं। संभव है कि धम्मपदका दूसरा भी कोओी संस्करण हो जिसमें १३ वर्ग ज्यादा हों, पर गाथाकी दृष्टिसे बहुत फर्क नहीं पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वू खानदानने ५८ वर्षतक शासन किया और अिस असेंमें भारतीय भाषाओंके २५९ ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद हुआ। पर दुख है कि आज अिन ग्रंथोंमेंसे कुल ५६ ग्रंथ ही चीनी त्रिपिटकमें मिलते हैं। शेष पुस्तकें नष्ट हो चुकी हैं। आज ये नष्ट पुस्तकें न तो भारतमें प्राप्य हैं, न चीनमें।

धीरे-धीरे वू, वेअी और शू राज्यकी शक्ति क्षीण हो गअी और असकी जगह पच्छिमी तिसन राजवंश (२६५ अी.— ३१६ अी.) का अुदय हुआ। किन्तु अिन दिनों अुत्तर चीनमें तातार लोगोंका लगातार हमला होता रहा। अिसलिये अिस समय अुत्तर चीनमें भारतीय साहित्यके प्रसारमें बड़ी रुकावट रही। पर दक्षिण चीन अिस राजनीतिक अुथल-पुथलसे बहुत अंशोंमें पृथक् रहा। अतः अिस युगमें भारतीय मिशनरियोंको अधिकतर हम दक्षिण चीनमें ही काम करते पाते हैं।

अिस युगके सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति हैं भिक्षु धर्मरक्ष। अिनके नामसे पाठक अिन्हें भारतीय न समझ लें। अिनका असल नाम था यूअेह-ची और ये शक थे। अिनके पिता चीनके कान-सू प्रान्तमें रहते थे। बचपनसे ही ये चीनी वातावरणमें पले थे। सिर्फ आठ वर्षकी ही आयुमें अिन्होंने घर छोड़ दिया और अेक भारतीय पंडितके प्रभावसे श्रामणेर बन गये। ये बहुत ही प्रतिभाशाली अुच्च विचारक, महत्त्वाकांक्षी और घुमक्कड़ स्वभावके थे। अेक भारतीय विद्वान्के साथ अिन्होंने अनेक देशोंका भ्रमण किया। यात्रामें अिन्हें जहाँ कहीं भी बौद्ध ग्रंथ मिले, संग्रह करते गये। अिस तरह अिन्होंने अगणित बौद्ध ग्रंथोंका संचय किया। अपनी यात्रा समाप्त कर २८४ अी. में धर्मरक्ष चांङ्-अेन आकर रहने लगे। यह स्थान भारतीय ज्ञान-विज्ञान, धर्म और साहित्यके प्रचारका प्रधान केन्द्र था। अिस समय तक धर्मरक्षने संस्कृत तथा अन्य अनेक भाषाओंकी अच्छी जानकारी हासिल कर ली थी। चांङ्-अेनमें धर्मरक्ष २८४ अी. से ३१३ अी. तक रहे। विद्वत्ताके साथ-साथ अिनमें वक्तृत्व शक्ति और संगठन-शक्ति भी गजबकी थी। हजारों आदमी अिनका धर्मोपदेश सुननेको अेकत्रित होते थे। शिक्षाओंकी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिन्होंने भी विद्वान् अनुवादकोंका अेक दल तैयार किया जो अिनके साथ तो काम करता ही था, अिनकी मृत्युके बाद भी अिनके अुद्देश्यकी पूर्तिमें लगा रहा।

अुत्तर चीनकी राजनैतिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अिसलिये अिन्हें मजबूर हो चांङ्-अेन छोड़कर शांतुङ् प्रान्तमें चला आना पड़ा। अिन्होंने कुल २११ भारतीय ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया; किन्तु दुख है कि आज अिन ग्रंथोंमेंसे सिर्फ ९० चीनी अनुवाद रूपमें मौजूद हैं, पर भारतमें तो वह भी नहीं हैं। अिनके द्वारा अनूदित ग्रंथोंमेंसे कुछके नाम ये हैं— पंचविंशतिसाहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता, दशभूमिक सूत्र, सद्धर्मपुण्डरीक, अुल्लम्बनसूत्र और ललितविस्तर आदि। अिनमेंसे सद्धर्मपुण्डरीक, अुल्लम्बनसूत्र और ललितविस्तरने चीनी जनताको ज्यादा आकर्षित किया।

तीसरी सदीके अन्तिम चरण और चौथी सदीके प्रारंभमें जिन अनेक भारतीय और अभारतीय विद्वानोंने चीनमें बौद्ध साहित्य और धर्म-प्रसारका काम किया अुनमें धर्मरक्षके बाद फा-किनका नाम महत्त्वपूर्ण है। ये पार्थियावासी होते हुये भी संस्कृतके अच्छे विद्वान् थे। २८१ अी. से ३०६ अी. तक चीनमें धर्म-प्रचार और अनुवाद-कार्य करते रहे। अिन्होंने कुल पाँच संस्कृत ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। अिनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ अशोकावदानका चीनी अनुवाद है। भारतके महान् सम्राट् और आर्य संस्कृतिके प्रसारक अशोकका अिस ग्रंथमें सांगोपांग वर्णन है। ग्रंथ कुल दस अध्यायोंमें समाप्त हुआ है। भारतीय अितिहासकी यह अेक अमूल्य निधि है। अिस पुस्तकके अनुवादने चीनीमें फा-किनको अमर कर दिया। पता नहीं राष्ट्रभाषामें हम कबतक अिस चीनी अनुवादको पढ़ सकेंगे।

अिन्हीं दिनों चीनके अेक भ्रमणप्रिय भिक्षु चू-शिह-हिंग मध्य-अेशियामें घूमकर मूल संस्कृत ग्रथोंकी खोजमें लगे थे। अुन दिनों खोतन भारतीय संस्कृति और विद्याका अेक प्रसिद्ध पीठ था। मालूम होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहीं शिह-हिंगने संस्कृतका भी अभ्यास किया होगा। खोतनमें ही अिन्हें पंचविंशतिसाहस्रिका प्रज्ञापारमिताकी मूल प्रति मिली थी। अिसे बड़ी कठिनाअीसे अिन्होंने अपने शिष्य पुण्यधनके हाथ चीन भेजा था। २९१ अी. में चूशू-लानने अिसे चीनी भाषामें अनुवाद किया।

चू-शू-लान अेक भारतीय भिक्षु थे। अिनका यथार्थ नाम शुक्लरत्न मालूम पड़ता है। अिनके दादाका नाम रुद्र था जो अपने समयके प्रसिद्ध विद्वान् थे। मालूम होता है ये सीमांत प्रदेशके रहनेवाले थे। जब अुस प्रदेशमें गृह यद्ध हुआ तो पंडित रुद्र चीन आकर होनानमें बस गये। यहीं शू-लान या शुक्लरत्न पैदा हुये। शुक्लरत्न बचपनसे ही विद्याप्रेमी थे। अिनके चाचा संस्कृतके पंडित थे। अिन्हीसे शुक्लरत्नने भी संस्कृतका अध्ययन किया। ये प्रसिद्ध पंडित धर्मरक्षके शिष्य थे। चीनी और संस्कृत दोनोंपर ही समान अधिकार होनेके कारण अनुवाद-कार्यमें अिन्होंने बड़ी मदद की।

त्सिन वंशके अंतिम हिस्सेमें भारतीय धर्म, संस्कृति और साहित्यके महान् पृष्ठपोषक और अिसीके लिये आत्म-बलिदान करनेवाले पो फा-त्सुको हम कैसे भूल सकते हैं! अिनका अध्ययन बहुत विस्तृत और ठोस था। ये अपने धुनके पक्के और दृढ़ संकल्पवाले थे। अपने समयके ये सबसे अधिक प्रभावशाली विद्वान् थे। चांङ्-अेनमें बौद्ध ग्रंथोंके अध्ययन-अध्यापनके लिये ही अिन्होंने अेक मठ बनवाया। अुनकी विद्वत्ता और अुच्च व्यक्तित्वने अुनके आस-पास हजारों तरुण पंडितोंको अेकत्र कर दिया। वहाँका गवर्नर अुन्हें अपना गुरु मानता था।

(अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलूचना

: श्री रामेश्वर दयाल दुबे, अेम. अे. साहित्यरत्न :

जिस विषयको लगभग भूल ही गया था अुसका स्मरण दिलाया हमारे अेक चपरासीने। कार्यालय पहुँचनेपर अुसने सूचना दी "ब्राह्मण पेपर रख आया।"

"कौन ब्राह्मण ?" मेरा संक्षिप्त प्रश्न था।

अुसने अुत्तर दिया—"आपने कल कहा था, वही ब्राह्मण पेपर रख आया।" तब स्मरण आया। भंडार विभागसे 'ब्राअुन पेपर' मंगाया था जिसके 'ब्राअुन' को अिस भाअीने 'ब्राह्मण' बना दिया है।

मुझे प्रसन्नता है कि 'आलूचना' का साहित्य पैदा करनेवाले मेरे आस-पास भी रह रहे हैं।

गत परीक्षाओंके मौकोंपर 'आलूचना'के दूरस्थ निर्माताओंने काफी सामग्री भेजी है। अुसका सदुपयोग यहाँ क्रमसे किया जायगा।

अैसा प्रतीत होता है कि 'मुहावरों' का अर्थ (?) निकालने और अुनका वाक्योंमें प्रयोग करनेमें परीक्षार्थियोंकी कल्पनाशक्तिमें ज्वार आ जाता है।

प्रश्न था - नीचे लिखे मुहावरोंका अर्थ लिखकर वाक्योंमें प्रयोग कीजिये।

१. सिरपर बिजली गिरना	२. रोटी तोड़ना
३. कानपर जूँ रेंगना	४. हथियार डालना
५. बन्दर क्या जाने अदरकका स्वाद	६ चोली दामनका साथ

अब अुत्तर देखिये —

सिरपर बिजली गिरना—परीक्षार्थीने 'बिजली' शब्दको प्रूफकी गलती माना है। जो अुसके ख्यालसे 'बिल्ली' होना चाहिये था। परीक्षार्थीने अिस मुहावरेका प्रयोग अपने वाक्यमें अिस प्रकार किया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जेवड़ (भोजन) कर रहा था, माड़ी (छत) परसे मेरे सिरपर अेक बिल्ली गिरी।"

बिजलीकी जगह बिल्ली गिरी, यह तो ठीक ही हुआ, मगर कमबख्त गिरी बड़ी बेमौके।

× × ×

रोटी तोड़ना—

परीक्षार्थीने लिखा है "रोटी जब कड़क हो जाती है तब दांतसे तोड़ी जाती है। जिनके दांत नहीं होते अैसे वृद्ध रोटी नहीं तोड़ सकते।"

वृद्धोंका ही कहना है कि दुनियामें शायद वे ही सबसे अधिक रोटी तोड़ते हैं।

× × ×

कानपर जूँ रेंगना—

परीक्षार्थीने लिखा है— "भारतके 'अुत्तर प्रदेश' में अेक शहर है जिसका नाम है कानपुर। अिस शहरमें जूं रेंगते रहते हैं।"

परीक्षार्थीके भौगोलिक ज्ञानको अुसकी कल्पना शक्तिने पछाड़ दिया है। परीक्षार्थी कृपा करके यह और लिख देता, तो अच्छा होता कि ये जूँ कहां रेंगते रहते हैं, सड़कपर न?

हथियार डालना—

परीक्षार्थीने लिखा है "यारके गलेमें हाथ डालनेको हथियार डालना कहते हैं!"

जब मैं सिनीमा देखने जाता हूँ तो यारके गलेमें हाथ डालकर जाता हूँ।"

मालूम होता है परीक्षार्थी जितना सिनेमा प्रेमी है अुतना ही यार प्रेमी भी।

× × ×

बन्दर क्या जाने अदरकका स्वाद—

परीक्षार्थीने लिखा है—"बन्दर तो बढ़िया बढ़िया फल खाता है। वह अदरकको क्यों खायेगा? अिसलिये बन्दर अदरकका स्वाद नहीं जानता। जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे पंडित जवाहरलालजी राशनका अन्न नहीं खाते, अुन्हें क्या मालूम कि राशनकी रोटियाँ कैसी होती हैं।"

पंडितजीकी बन्दरसे तुलना ! पाप शान्त हो, पाप शान्त हो।

चोली दामनका साथ -

परीक्षार्थीने लिखा है—"चोली सीनेके लिये दामन (मोटा सूजा) की जरूरत होती है। दामनके बिना चोली नहीं सी जा सकती।"

कहाँ चोली, कहाँ दामन और कहाँ परीक्षार्थीका ज्ञान।

× × ×

अेक प्रश्न था—

'बापूके प्रति' अथवा 'सूखी पत्ती' कविताका भाव लिखिये।

अेक परीक्षार्थीने 'बापूके प्रति' कविताका भाव अिस प्रकार लिखा है—

"बापूकी प्रीति अपनपर कैसी है, जैसी माँ की प्रीति अपनपर है। माँ अपनको पालन करती है। बापूजी जब बाहरसे आते हैं तो अपनके लिये बढ़िया चीजें लाते हैं।"

प्रतीत होता है परीक्षार्थी माँ बापका विशेष प्यारा है। काश! यह अुत्तर अुसके पिताजी पढ़ पाते।

× × ×

दूसरे परीक्षार्थीने 'सूखी पत्ती' में 'सूखी पत्नी' के दर्शन किये और सूखी पत्नी अर्थात दुबली पत्नीके गुणगान अिस प्रकार किये हैं—

" सूखी पत्नी बहुत अच्छी होती है। वह लम्बी होती है। वह जल्दी दौड़ सकती है। मोटी पत्नी क्या दौड़ेगी ? सूखी पत्नीको रेलकी खिड़कीसे चढ़ा सकते हैं। मोटी पत्नीको कौन अुठा सकेगा।" आदि आदि

कृषकाया स्त्रियाँ अिस प्रशंसासे अवश्य प्रसन्न होंगी। परीक्षकने तो बेचारे परीक्षार्थीको शून्य ही दिया।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न था— बाघ सिंहका चरित्र चित्रण कीजिये।

रक्षाबन्धन नाटकमें बाघसिंह अेक प्रमुख पात्र है। बाघसिंह अेक वीर राजपूत हैं। अुनकी वीरता प्रशंसनीय है।

किन्तु परीक्षकने जिन शब्दोंमें बाघसिंहजीका चरित्र चित्रण किया है वह कम प्रशंसनीय नहीं है।

परीक्षार्थीने लिखा है—"बाघ और सिंह- दोनों जंगली जानवर हैं। दोनों जंगलमें रहते हैं और शिकार किया करते हैं। संसारमें अफ्रीकाके बाघ और सिंह बहुत प्रसिद्ध हैं।'

× × ×

रक्षाबन्धन नाटकपर ही अेक दूसरा प्रश्न अिस प्रकार था—

रक्षाबन्धन नाटकका भाव क्या है?

परीक्षार्थीने अुत्तर दिया है— ''रक्षाबन्धनका भाव तो १=) है, पर यह कीमत ज्यादा है। पुस्तकका कागज भी अच्छा नहीं, फिर भी १=) रखा गया है। दस आनेसे अधिक नहीं होना चाहिये था।"

× × ×

सुभद्राकुमारीकी अेक प्रसिद्ध रचना की नीचे लिखी दो पंक्तियाँ हैं जिनका अर्थ पूछा गया था।

पूजा और पुजापा प्रभुवर
अिसी पुजारिनको समझो।
दान दक्षिणा और निछावर
अिसी भिखारिनको समझो॥

परीक्षार्थीने जो अुत्तर दिया है वह अिस प्रकार है—

"अेक पुजारी था, वह भगवानसे कहता है कि हे प्रभु तुम पूजा और पुजापा मेरी अिसी पुजारिनको समझ लो।

वहीं पर अेक भिखारी खड़ा था। अुसने यह सुना और वह भी बोल अुठा "अगर यह बात है तो हे प्रभु, दान दक्षिणा और निछावर तुम मेरी अिस भिखारिनको समझ लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे परीक्षार्थीने अपने अुत्तरमें और प्रगति की है। अुसने लिखा है- "पुजारी कहता है कि हे प्रभो, तुम यह समझ लो कि मैं पूजा करता हूँ, पुजापा करता हूँ तो अपनी पुजारिनकी ही करता हूँ। हे प्रभु, मैं दान देता हूँ, दक्षिणा देता हूँ, तो अपनी अिसी भिखारिनके लिये देता हूँ।"

पुजारीकी पत्नी-भक्ति सुन्दर है, और परीक्षार्थीकी प्रतिभा-शक्ति अति सुन्दर।

× × ×

अेक प्रश्न था—नीचे लिखे शब्दोंके लिंग बदलिये—

शेर, नौकर, मेम, अूँट।

अेक परीक्षार्थीने लिंग परिवर्तन अिस प्रकार किया है।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
शेर	शेरवानी
नौकर	नौकरी
मेम अूँट	साहब अूंट

शेरकी स्त्री शेरवानी कैसे हुअी—यह तो शेरवानी (अचकन पहननेवाले बता सकेंगे, अुसी प्रकार नौकर ही कह सकेगा कि नौकरी अुसकी पत्नी है या पति। मगर मेम अूंटको साहब अूंट अच्छे मिले।

—शेष फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशोंमें हिन्दीकी पत्र-पत्रिकाअें

श्री यज्ञनारायण चतुर्वेदी

स्वयं अपने ही देशमें अभी तक राजभाषा अंग्रेजी होनेके कारण आंग्ल भाषाकी पत्र-पत्रिकाओंको लोग जितना अधिक महत्व देते आ रहे थे अुतना हिन्दीके समाचार पत्रों और पत्रिकाओंको नहीं। फिर विदेशोंमें हिन्दी पत्रोंकी कहाँ चल सकती है—जहाँ पर अंग्रेजीका अन्तर्राष्ट्रीय रूप फैला हुआ है और हिन्दी जाननेवालोंका भी अेकदमसे अकाल है। किन्तु असी परिस्थितियोंमें भी विदेशोंमें हिन्दीकी पत्र-पत्रिकाओंके प्रचारका अेक छोटा-सा अितिहास है, जो समय-समयपर मुरझाता हुआ भी पल्लवित होता रहा है।

विदेशोंसे प्रकाशित होनेवाले हिन्दी पत्रोंकी संख्या अँगलियोंपर गिनी जा सकती है, अुनमें भी अधिकांशका कलेवर अंग्रेजीके साथ लिपटा हुआ है। विभागांकके रूपमें हिन्दीकी सामग्रियोंको भी स्थान मिलता रहता है। सत्य तो यह है कि अुन्हें अर्द्ध हिन्दी पत्रिकाकी ही संज्ञा अधिक अुपयुक्त है। विदेशोंमें असे हिन्दी पत्रोंके प्रकाशनका श्रीगणेश अधिक पुरातन नहीं है—'अिंडियन ओपीनियन'में महात्मा गांधीने हिन्दी विभाग भी रक्खा था और श्री भवानीदयाल संन्यासीको अिसीलिये नैटाल बुलाया था कि विदेशोंमें भी हिन्दीका प्रचार बढ़े। किन्तु वहाँ हिन्दी जाननेवालोंके अभावके कारण कुछ काल बाद विवश होकर यह विभाग अुन्हें बंद कर देना पड़ा। फिर भी संन्यासी जीकी दृढ़ धारणा थी कि हिन्दुस्तानियोंमें देश प्रेम, आत्मोन्नति आदिके लिये हिन्दीका ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। अतः अिसी भावनासे प्रेरित होकर अुन्होंने 'धर्मवीर' तदन्तर 'हिंदी' का प्रकाशन किया। 'धर्मवीर' केवल चार वर्षों तक चला और 'हिंदी' की आर्थिक दशा अत्यंत प्रचार करनेपर भी न सुधर सकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर संन्यासी.जी राजनीतिक जीवनमें अत्यंत व्यस्त हो गअे। फलतः 'हिंदी' का प्रकाशन भी बंद हो गया।

मारीशससे निकलनेवाले साप्ताहिक पत्र 'मारीशस अिंडियन टाअिम्स' में भी हिंदीकी कुछ सामग्री रहती है तथा धार्मिक दृष्टिकोणपर 'आर्यवीर', 'आर्यपत्रिका' तथा 'सनातन धर्म' आदि पत्र असफल रूपसे निकलते रहे हैं जिसके फलस्वरूप हिंदीका आंशिक प्रचार अब तक वहाँ हो सकता है। केवल आवश्यकता अिस बातकी है कि किसी सुव्यवस्थित पत्रका प्रकाशन अुत्साही कार्यकर्ता द्वारा वहाँसे हो।

सुवामें 'फिजी समाचार' का प्रकाशन जन-सेवाके दृष्टिकोणसे हुआ जिसमें अंग्रेजीका विभाग भी रखा गया है। अिसके अतिरिक्त 'वैदिक संदेश' तथा 'सनातन धर्म' आदि साम्प्रदायिक पत्र निकलकर थोड़े दिन चलनेके पश्चात बंद हो गअे। 'शांति दूत' व 'राजदूत' का प्रकाशन यद्यपि आज दिन भी हो रहा है और जनताकी भी अभिरुचि पत्र विशेषमें कम नहीं है किन्तु अुनका स्तर अूंचा न होना बहुत खलता है।

'तारा' नामकी पत्रिका भी फिजीसे ही निकलती है जिसमें अच्छे-अच्छे विषयोंका चयन रहता है और प्रत्येक अंककी पृष्ठ संख्या १०० तक पहुंच जाती है। नांदासे 'दीनबंधु' आज भी निकलता है, किंतु अुसकी पृष्ठ-संख्या केवल चार रहती है।

संक्षेपमें, विदेशोंसे प्रकाशित होनेवाली हिंदीकी पत्र-पत्रिकाओं की यही छोटी सी तालिका है। अितने थोड़े अनियमित रूपमें निकलनेवाले हिंदीके पत्रोंसे अुपनिवेशोंकी जनताकी तृप्ति कैसे की जा सकती है? फलतः आज विदेशोंमें हिंदी पत्रोंकी माँगकी पूर्ति थोड़े बहुत रूपमें स्वदेशसे भी होने लगी है। अुस मांगका हमें अुस समय यथार्थ रूपसे बोध होता है जब हम देखते है कि 'कल्याण' (गोरखपुर) तथा 'हिंदी-नागरी प्रचारिणी पत्रिका' (काशी) की अधिकांश प्रतियाँ विदेशोंके लिये भेजी जाती हैं। नवंबर १९४७ में अजमेरसे 'प्रवासी'का प्रकाशन भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवासी भारतीयोंकी समस्याओंको समक्ष रख कर किया गया, जिसमें अन्यान्य अुपयोगी स्तम्भोंके साथ-साथ प्रवासी भारतीयोंकी समस्याओंपर अत्यंत गवेषणात्मक लेखादि रहते हैं। अिस पत्रकी अधिकांश प्रतियां बाहर भेजी जाती हैं। स्पष्ट है कि विदेशोंके लिये अैसे हिंदी पत्र पत्रिकाओंकी आज दिन आवश्यकता है जो वहांकी जनताकी मानसिक भूखको शांत करें और हिंदी प्रचारमें सहयोग दें।

अिस समय हिंदीकी पत्र पत्रिकाअें अत्यंत सीमित पैमानेपर विदेशोंमें निकल रही हैं। विदेशोंमें हिंदी जाननेवालोंके अभाव, आर्थिक कठिनाअियों और कुशल कार्यकर्ताओंमें अुत्साहकी कमीके कारण हम देखते हैं कि जितनी हिंदीकी पत्र पत्रिकाअें पूर्ण हिंदी अथवा अर्द्ध अंग्रेजीकी सामग्रियोंके साथ विदेशोंमें निकल रही है अुनकी दशा संतोषजनक नहीं है। थोड़ेसे साधन और अल्प अुत्साहको लेकर यदि किसीने आगे बढ़नेकी कोशिश की है तो अुसे प्रायः असफलता ही हाथ आयी है। विदेशोंमें पत्रोंके प्रकाशनके लिये ठोस सामग्रीकी कमी है, कुशल संपादन कलाकी आवश्यकता और अुससे भी अधिक अपनी राष्ट्रीय सरकारकी सहायताकी जरूरत है। आज दिन अुपनिवेशोंकी जनतामें हिंदीकी भावना अुमड़ रही है। केवल आवश्यकता है वहांके लिये अुत्साही कार्यकर्ताओंकी। आज दिन हिंदी राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन हो गअी है। अुसके प्रसार तथा साहित्यकी प्रचुरताके लिये क्या अिस बातकी आवश्यकता नहीं है कि अधिकसे अधिक लोग अुसे सीखें पढ़े और लिखें भी? अुस प्रचारका माध्यम क्या हम आज दिन पत्र पत्रिकाओंके रूपमें विदेशोंमें नहीं देख रहे हैं। आशा है हमारी सरकार तथा देशकी प्रमुख साहित्यिक संस्थाअें अिस दिशाकी ओर अवश्य अुचित कदम अुठाअेंगी।

—'भारत'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांतिनिकेतनमें राष्ट्रभाषा हिन्दी

हिन्दी भवन शांतिनिकेतनके अध्यक्ष श्री मोहनलाल वाजपेयीने श्री वैजनाथसिंह 'विनोद' के नाम निम्नलिखित पत्र भेजा है। पत्रमें शांतिनिकेतनमें हिन्दीकी गतिविधिपर प्रकाश डाला गया है। शांतिनिकेतन अेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है और वहाँ संसारके प्रत्येक हिस्सेसे लोग अध्ययनके लिअे आते हैं। अैसे स्थानमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका महत्व कितना है, अिसे लोग आसानीसे समझ सकते हैं। —सं०

प्रिय भाअी,

"राष्ट्रभाषा" सम्बन्धी परिपत्रक पाकर प्रसन्नता हुअी। आपके तत्वावधानमें वह अेक विशिष्ट पत्र होकर ही रहेगा, अिसमें संदेह ही क्या है!

परिपत्रकमें तीन प्रश्न हैं। पहलेका ही कुछ अुत्तर दे सकता हूँ। राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य शांतिनिकेतनमें वैसे तो दीर्घ कालसे चलता आ रहा था; पिछले चार वर्षोंसे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अंतर्गत और भी सुश्रृंखल भावसे चलने लगा है। विश्वभारती जिस प्रकार विश्व संस्कृति का तीर्थस्थल है, यहाँकी राष्ट्रभाषाकी कक्षाओंमें भी अुसी प्रकार देशी विदेशी अध्यापक और छात्रोंका अच्छा सम्मिलन हुआ करता है। चीनी जापानी, फ्रेंच, जर्मन, चेक, अंग्रेज, अमरीकन, बाली-जावा आदि पूर्वीय द्वीप समूहोंके अधिवासी और देशके अहिंदी भाषी छात्र अिन कक्षाओंमें आते रहे हैं और श्रद्धाके साथ हिंदी सीखते रहे हैं। हमारा प्रचार कार्य प्रचार विहीन है, अर्थात जो अपनी सहजात रुचिसे अपना आग्रह लेकर आते हैं, अुन्हें ही हम सिखाते हैं; कन्वर्ट करने नहीं जाते। अिसीलिये बाधाओंका सामना भी हमें नहीं करना पड़ता। सहायक सभी हैं। हिंदी भवनके अध्यापकों चीन भवनके अध्यापकोंने अपना अकृपण सहयोग दिया है। क्रमशः 'कोविद' तककी परीक्षाका केन्द्र यहाँ अब हो गया है। पिछले दो वर्षोंसे यहाँकी अेक छात्री ही समूचे बंगालमें 'प्रवेश' और 'परिचय' परीक्षाओंमें सर्वप्रथम आअी है। अिस प्रकार हमारा यह कार्य संख्याकी दृष्टिसे बहुत विपुल न होनेपर भी अपने ढंगका महत्व रखता है। विदेशियोंमें राष्ट्रभाषाके प्रचारका अैसा केन्द्र शायद ही देशमें अन्यत्र हो।

सस्नेह
मोहनलाल वाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत रूसमें सांस्कृतिक प्रगति

: श्री व्लादिमीर स्पाक :

पिछली सदीके महान रूसी कवि निकोलाअी नेक्रासोव, जो अपनी रचनाओंमें जनता की दुर्दशाके चित्र पेश किया करते थे, सुदूर भविष्यमें स्थित अैसे सुखी जीवनका सपना देखते थे जब कि खेत जोतनेवाला साधारण किसान भी बेलिन्स्की और गोगोलकी किताबोंको बाजारसे खरीद कर अपने घर ला सकेगा। नेक्रासोवके जमानेका यह सुन्दर सपना, अेक अैसा सपना जो कि रूसी जातिके सबसे अच्छे प्रतिनिधियोंका प्रिय सपना रहा है—आज सोवियत देशमें अेक जीवित और साफ दिखाअी पड़ने वाला यथार्थ बन गया है।

सोवियत कालके अेक और महान कवि, हमारे अग्रज, मायाकोवस्कीने भी लिखा था कि "अेक अच्छी किताब आपके और मेरे लिये, किसानों और मज-दूरोंके लिये, समान रूपसे जरूरी है और सभी अुसे समझ सकते हैं।" लेकिन मायाकोवस्कीके लिये यह अेक अैसी बात थी जो खुद अुसके ही समयमें यथार्थ रूप धारण कर सोवियत जीवनकी अेक प्रकट सचाअी बन चुकी थी।

यह सत्य कि साहित्यकी दुनिया लाखों-करोड़ों जनता की दुनिया बन गअी है, किताबोंने जनताके दैनिक जीवनमें घर कर हर सोवियत मर्द और औरतके लिये अनिवार्य आवश्यकताका स्थान ग्रहण कर लिया है,—समाजवादकी यह शानदार सफलता मास्कोमें अभी हालमें होनेवाली महान प्रदर्शिनीमें साकार हो अुठी है। चौदह बड़े-बड़े कमरोंमें वे सब किताबें सजाकर रखी गअी हैं जो सोवियत प्रकाशन-घरोंसे पिछले सालोंमें निकली हैं। ज्ञानकी तमाम शाखाओंसे संबन्धित विविध प्रकारकी किताबें,–राजनीति, ललित साहित्य, अलबम, पोस्टर और किताबों के चित्र—सभी कुछ यहां दिखाअी पड़ता है। प्रदर्शिनीके पहले कमरेमें अेक स्टैण्ड पर सोनेके अक्षरोंमें लिखा हुआ है कि :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"१९१८ से १९४९ के अन्त तक सोवियत संघमें ९७०८२३ पुस्तकोंकी कुल मिलाकर बारह अरब साठ करोड़ प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।"

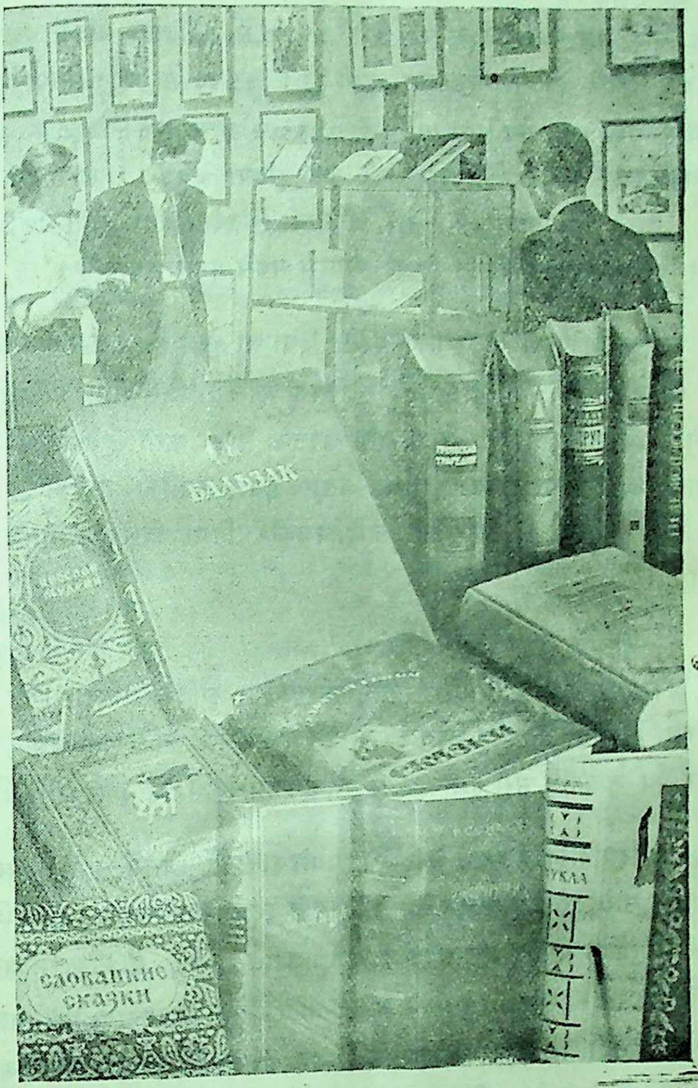

मास्कोमें पुस्तकोंकी प्रदर्शनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचमुच, ये सोनेके ही शब्द हैं। चार्ट और डायाग्रामोंमें दिखाया गया है कि सोवियत संघमें किताबोंका प्रकाशन हर साल बढ़ता जा रहा है,—ठीक अुसी प्रकार जैसे कि सोवियत जनता संस्कृति, विज्ञान और अुन्नतिकी मंजिलोंको अेकके बाद पार कर आगे बढ़ रही है। १९४५ में सोवियत संघमें पुस्तकोंकी २९३०.३ लाख प्रतियां प्रकाशित हुअी थीं। १९४७ में यह संख्या बढ़ कर दुगनी हो गअी। अर्थात अिस वर्ष कुल ५४१०.२ लाख पुस्तकें प्रकाशित हुअीं। दो साल बाद, १९४९ में, पुस्तकोंकी कुल संख्या ६८३०.५ लाख तक पहुँच गअी। देशके हर नागरिकके लिये औसतन कितनी किताबें छापी गअीं, अिस दृष्टिसे विचार करनेपर सोवियत संघका संसारमें सबसे पहला स्थान है।

मायाकोवस्की का हवाला पहले दिया जा चुका है। यहां अुसका अेक और अुद्धरण देना बेजा न होगा। सोवियत कालके अिस सबसे प्रतिभाशाली कविने सोवियत पुस्तकोंकी बहुत भारी खपतका जिक्र करते हुअे लिखा था कि "सामूहिक पैमानेपर पुस्तकोंका यह प्रसार हमारे संघर्षका नतीजा है, न कि अिस बातका कि किसी जन्मजात साहित्यिककी प्रतिभा विशेषने अिन्हें प्रसव किया है!"

आअिये, अब हम प्रदर्शिनीके कमरोंका अेक चक्कर लगाअें। पुस्तकें और प्रकाशनके आंकड़े हमारे सामने सांस्कृतिक क्रांतिका शानदार चित्र खोल कर रख देंगे और सोवियत जनताके वास्तविक जीवनकी झांकी तथा संघर्ष, श्रम, साहस और अुत्साहसे भरा हुआ अुसका वर्तमान हमें प्रदर्शिनीमें देखनेको मिलेगा।

प्रदर्शिनीकी शुरूआत अेक अैसे ग्रंथसे होती है जिसमें हमारी सदीका सारा ज्ञान सारभूत रूपमें प्रस्तुत है। यह ग्रंथ है स्तालिनका लिखा हुआ सोवियत-संघकी कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक) का अितिहास,—अेक संक्षिप्त अध्ययन। प्रज्वलित मशालकी तरह अिस ग्रंथने मानव-जातिके लिये साम्यवादकी मंजिल तक पहुँचनेके मार्गको आलोकित कर दिया है। यह ग्रंथजो कि लाखों व्यक्तियोंका गुरु और मित्र बन गया है, दुनियाकी ६६ भाषाओंमें छप चुका है और अिसके ३५८९९००० प्रतियोंके २३८ संस्करण निकल चुके हैं। व्यापक प्रसारके ये आंकड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेनिन और स्तालिनकी शिक्षाओंके अजेय प्रभावका सबसे ज्यादा बोलता सबूत पेश करते हैं।

कम्युनिस्ट पार्टीके अितिहासके अतिरिक्त प्रदर्शिनीमें मार्क्सवाद और लेनिनवादकी क्लासीकल रचनाअें भी हैं। अिनमें लेनिनके लेख-संग्रहों (चतुर्थ संस्करण), और जे. वी. स्तालिनके लेख-सग्रहोंका प्रमुख स्थान है। अिनके अलावा बहुत बड़ी तादाद सोवियत संघके केन्द्रीय, प्रादेशिक और जातीय प्रकाशन-घरोंसे निकली अुन किताबोंकी है जिनमें मार्क्स, अेंगेल्स, लेनिन और स्तालिनकी विभिन्न रचनाअें अलग-अलग छपी हैं।

प्रदर्शिनीमें सोवियत राजनैतिक साहित्यके कमरोंको देखकर अविस्मरणीय अन्द्री ज्हादोनोवके ये शब्द आप-से-आप याद आ जाते हैं—"मार्क्स, अेंगेल्स, लेनिन और स्तालिनकी शिक्षाअें हमारे देशमें तमाम लोगोंकी सम्पत्ति बन चुकी हैं।"

दूसरे कमरोंको देख कर जहां सोवियत लेखकोंकी रचनाअें रखी हुअी हैं, यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सोवियत ललित साहित्य जनताके बहुत बड़े हिस्सोंमें किस हद तक प्रचलित हो चुका है। खपतमें मेक्सिम गोर्कीकी पुस्तकोंका नम्बर सबसे आगे है।

गोर्कीकी रचनाओंके नवीनतम संस्करणके आखिरी पंद्रहवें खंडको प्रकाशित हुये अभी कुछ समय भी नहीं बीता है कि तीस खण्डोंवाले नये संस्करणके लिये चन्दा आना शुरू हो गया है और अुसका पहला खण्ड प्रकाशित भी कर दिया गया है। अिस नये संस्करणकी तीन लाख प्रतियां छप रही हैं। खण्डोंको प्रतियोंकी संख्यासे गुणाकर देनेपर प्रतियोंकी कुल संख्या नब्बे लाख हो जाती है। गोर्कीकी जो रचनाअें अलग-अलग स्वतंत्र पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित हुअी हैं, अुन्हें अिसमें शामिल नहीं किया गया है। अुन सबको यहां गिनाना सर्वथा असम्भव है। केवल अितना कहना काफी होगा कि गोर्कीके अुपन्यास 'मां' के सोवियत संघमें ११० संस्करण निकल चुके हैं।

वी. मायाकोवस्की, अे. टाल्सटाय, अेम. शोलोखोव, अेन. आस्त्रोवस्की, अे. फैदेयेव, के. सिमोनोव, वी. पोलेवाअी, वाअी. कोलास तथा और कितने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकोंकी रचनाओंके बहुत बड़े-बड़े संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। लगभग ४० अैसे सोवियत लेखकोंका नाम लिया जा सकता है जिनकी पुस्तकोंके दस-दस लाखसे ज्यादा प्रतियोंके कभी-कभी संस्करण निकल चुके हैं।

पुस्तकोंकी असाधारण रूपसे अूंचे दर्जेकी छपाअी-सफाअी बरबस निगाहको अपनी तरफ खींच लेती है। सोवियत-पुस्तकोंको ग्राहकका ध्यान आकर्षित करनेके लिये ढोल पीटनेकी,—दूसरे शब्दोंमें चटकीला अिश्तहारी बाना धारण करनेकी जरूरत नहीं पड़ती। सादगी, सुन्दरता और सच्ची कला सोवियत मुद्रण-शैलीकी विशेषता है। सोवियत संघमें पुस्तकोंके चित्र चोटीके कलाकारोंसे बनवाये जाते हैं। पुस्तकोंके लिये बने बहुतसे चित्र, रूसी कलाकी निधि त्रेत्याकोव आर्ट-गैलरी में प्रदर्शनके लिये रखे गये हैं।

ध्यान देनेकी बात यह है कि अिस प्रकारका कलापूर्ण मेकअप खास तौरसे अुपहारमें देनेके लिये तैयार किये गये गिने-चुने संस्करणोंका ही नहीं होता, बल्कि भारी संख्यामें छपनेवाली पुस्तकोंके आम संस्करणोंका भी होता है। कुक्रीनिक्सीने अेम० गोर्कीके अुपन्यास 'फोमा गोर्देयेवय' के लिये जो चित्र बनाअे थे, कुछ दिन पहले अुनपर 'स्तालिन पारितोषिक' घोषित किया जा चुका है। ये चित्र खासतौरसे सामूहिक संस्करणोंके लिये ही बनवाये गये थे। अभी हाल ही में जो बहुतसी किताबें सुन्दर संस्करणोंमें निकली हैं, अुनमें पी० बैज्होवकी ' मैलाचाअिट कास्केट ', अे० फैदेयेवकी ' दी नाअिन्टीन ', बी० अेज्हायेवकी ' फार अवे फ्राम मास्को ', अेन० रिबाककी ' दी रादा आफ पैरियास्लावल 'और अेम० अयुज़ोवकी 'अबै' वगैरे हैं। रूसी व विदेशी क्लासीकल लेखकोंकी भी काफी पुस्तकें प्रदर्शिनीमें रखी गअी हैं। सोवियत संघके लोग रूसी और विश्व-साहित्यकी सभी सच्ची सफलताओं और क्लासिकल परम्पराकी कितनी कद्र करते हैं, यह किसीसे छिपा नहीं है।

अे० पुश्किन, अेम० लर्मोन्तोव, अेन० गोगोल, आअी० तुर्गनेव, अेन० नेक्रासोव, अेल० टाल्स्टाय और अे० चेखोव जैसे महान रूसी लेखकोंकी रचनाओंके सभी प्रकारके संस्करण,—स्पेशल स्कूल सीरीज़ और बच्चोंके लिये सुचित्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षक संस्करण, सामूहिक किसान पुस्तकालय सीरीज़, रूसी अुपन्यास सीरीज़, अेक खण्डवाले 'सीलेक्टेड वर्क्स' (चुनी हुअी रचनाअें), बहुत खण्डोंके संयुक्त भारी-भरकम संग्रह और विज्ञान-अेकेडेमीके लिये निकाले गये विशिष्ट संस्करण,—प्रदर्शिनीमें सभी दिखाअी पड़ते हैं।

लिओ टालस्टायकी रचनाओंका अभी हालमें निकला नब्बे-खण्डीय संस्करण विशेषकर अुल्लेखनीय है। यह अनोखा संस्करण विस्तार और वैज्ञानिक प्रामाणिकताकी दृष्टिसे संसारमें अपने जोड़की दूसरी मिसाल नहीं रखता। यह रूसके अुन साहित्यिक पण्डितोंके कठोर परिश्रमका फल है जो वर्षों तक अिस महान साहित्यिक-प्रतिभाकी पाण्डुलिपियोंका गम्भीर अध्ययन करते रहे हैं।

महान रूसी लेखकोंकी पुस्तकोंके साथ साथ प्रदर्शिनीमें विश्व साहित्यकी क्लासिकल पुस्तकोंके भी कितने ही संस्करण रखे गये हैं। यहाँ महान फ्रेंच साहित्यके प्रतिनिधि बालज़क, स्टैंढल, फ्लाबर्ट, गीद मोपासाँ, ह्यूगो, मेराअिम, जोला और ज्यौर्ज सैंडकी पुस्तकें हैं; ब्रिटिश साहित्यके प्रतिनिधि शेक्सपीयर, स्विफ्ट, फीलिंडिग, स्टर्न, बायरन, डिकन्स, थैकरे और गाल्सवर्दीकी पुस्तकें हैं; जर्मन साहित्यके प्रतिनिधि गेटे, शिलर, ग्रिम ब्रदर्स और हेनरिक मानकी पुस्तकें हैं। अिसी प्रकार अमेरिकन साहित्यके प्रतिनिधि मार्कट्वेन, ड्रेज़रकी पुस्तकें; अिटैलियन साहित्यके प्रतिनिधि दांते और गोल्दोनीकी पुस्तकें; पोलिश साहित्यके प्रतिनिधि मिकीविज्क, ओज़ेस्को, सिअेन्कीविज्क और प्रूसकी पुस्तकें और चैक साहित्यके प्रतिनिधि चोपक और यर्ज़ी वौल्करकी पुस्तकें हैं। पश्चिमके आधुनिक प्रगतिशील लेखकोंमें हावर्ड फास्ट, लुअी अरागान, पाब्लो नेरुदा, अन्ना-सेघर्स, तिंग लिंग अित्यादिकी रचनायें भी रूसी अनुवादोंमें बराबर निकलती रही हैं।

हमने यहां अुन तमाम विदेशी लेखकोंके नाम नहीं गिनाये हैं जिनकी पुस्तकें सोवियत-संघमें बहुत अधिक प्रचलित हैं। अिन किताबोंके संस्करणोंका थोड़ा अंदाजा देनेके लिये यहां कुछ आंकड़े देना जरूरी है। सोवियत संघमें ह्यूगोकी रचनाओंका ५० लाख प्रतियोंका संस्करण निकाला गया है। मोपासांकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकोंकी ४० लाखसे अूपर प्रतियां निकली हैं। बाल्जक, डिगन्स, रोमां रोलां और बार्बूसकी किताबोंकी २० लाखसे अूपर प्रतियां निकल चुकी हैं। शैक्सपीयर, शिलर, गेटे, हीन, बाल्जक, स्टैण्डल, गीद मोपासां और मिकीविक्जकी रचनाअें कअी कअी खण्डोंमें शीघ्र ही प्रेससे बाहर आनेवाली हैं।

कलापूर्ण साहित्यके, जिसमें विदेशी साहित्य भी शामिल है, प्रकाशनके लिये सोवियत संघमें कितना बड़ा क्षेत्र है, अिसका अंदाजा नीचेके आंकड़ोंसे हो सकता है। केवल १९४९ में विभिन्न संस्करणोंकी १३ करोड़ तिरासी लाख प्रतियां, युद्ध-पहलेके साल १९४० से तिगुनी प्रतियां छपी थीं।

अेक अलग कमरेमें केवल बच्चोंकी पुस्तकें रखी हैं। प्रदर्शिनीमें कला, विज्ञान, अिंजीनियरिंग और कृषि-विज्ञानकी समस्याओंपर लिखी पुस्तकें, अुत्पादनके अिन्नोवेटर-श्रमिकों-द्वारा स्तेखानोवाअित-अनुभवोंके प्रचारार्थ लिखी गअी पुस्तिकाअें; स्कूलोंकी शिक्षा-पुस्तकें; कलापूर्ण चित्र-संग्रह तथा और भी बहुत तरहकी सोवियत पुस्तकें रखी गअी हैं।

अिन कमरोंमें से गुजरते समय मनुष्य आनंदोल्लाससे रोमांचित हो अुठता है। यह प्रदर्शिनी अिस समाजवादी देशके लोगोंके जीवन और संस्कृतिकी सजीव तस्वीर पेश करती है।

—'सोवियत भूमि'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

महाराष्ट्र

कोल्हापुर जिला राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन— कोल्हापुर जिला राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन गत २९ और ३० जुलाअीको राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके परीक्षा मंत्री **पंडित रामेश्वर दयाल दुबे,** अेम. अे. साहित्यरत्न, की अध्यक्षतामें हुआ।

प्रातःकाल कोल्हापुर नगर पालिकाके अध्यक्ष श्री द० मा० सालोखे ने विद्यापीठ हायस्कूलके प्रांगणमें झंडा फहराया। अिस अवसरपर आपने कहा—आज हमारा राष्ट्र स्वतंत्र है। अतः हमें अेक स्वतंत्र राष्ट्रके नागरिककी जिम्मेदारियोंको भली भांति समझना चाहिये। आजकी परिस्थितिमें राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखना प्रत्येक भारतवासीका कर्तव्य है।

सम्मेलनका अुद्घाटन करते हुअे प्रिन्सिपल **सी. रा. तावडेने** कहा – भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी घोषित हो चुकी है। भाषाके बारेमें अब कोअी झगड़ा नहीं है। अतः हमें हिंदीका प्रचार तेजीसे शुरू कर देना चाहिये। अंग्रेजी सीखनेके लिये हमने जो परिश्रम किया है, अुससे कम परिश्रम में ही हम हिंदी अच्छी तरहसे सीख सकते हैं।

सम्मेलनके स्वागताध्यक्ष **पं. नारायण शास्त्री वालावलकरने** सम्मेलनमें अुपस्थित सभी प्रतिनिधियों अेवं दर्शकोंका हृदयसे स्वागत किया। तदुपरांत **श्री चितलेजी** का भाषण हुआ। आपने कहा कि राष्ट्रभाषा हिन्दीका स्वरूप निश्चित हो चुका है। अब हम सबको मिलकर अुसकी अुन्नति करना है। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीका प्रचार करनेवाली सभी संस्थाओंको हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अंतर्गत कार्य करना चाहिये।

चितलेजीके भाषणके अुपरान्त पं. रामेश्वर दयाल दुबे ने अध्यक्ष पदसे बोलते हुअे कहा-आजसे चौदह वर्ष पहले पूज्य महात्मा गांधीकी प्रेरणासे समितिने राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य प्रारंभ किया। हिन्दी पहलेसे ही हमारे देशकी राष्ट्रभाषा रही है। विधान-परिषद द्वारा घोषित किये जानेके अुपरान्त ही हिन्दी राष्ट्रभाषा हो गअी हो अैसी बात नहीं। हां, अब अुसपर राष्ट्रभाषाकी मुहर अवश्य लग गअी है। कुछ लोगोंको भय है कि हिन्दीके प्रचारसे प्रांतीय भाषाओं को क्षति पहुंचेगी पर हिन्दीने कभी प्रांतीयताका प्रचार नहीं किया। जब हम अंग्रेजीके शब्दोंको अपना सकते हैं तो प्रांतीय भाषाओंके शब्दोंको तो सहर्ष स्वीकार करेंगे। अिससे हिन्दीके शब्द भंडारमें वृद्धि होगी। हमने अंग्रेजोंको तो अपने देशसे निकाल दिया है किन्तु अंग्रेजी भाषाको अभी भी गलेसे लगाअे हुअे हैं। अब हमें अंग्रेजी को भी बिदा करना है। राष्ट्रभाषा हृदयोंको जोड़नेका साधन है और अुसके नामपर हमें घृणित प्रचार नहीं करना चाहिये। हमारा अुद्देश्य विशुद्ध राष्ट्रभाषाका प्रचार करना है। जनताके सहयोगके बलपर ही वर्धा समितिका कार्य चल रहा है। आशा है, अुसे अिसी प्रकार जनताका सहयोग मिलता रहेगा।

दुबेजीके भाषणके अुपरान्त सम्मेलनमें अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुअे। सम्मेलनकी सफलताके लिये राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद, भारत सरकारके खाद्य मंत्री श्री. के. अेम. मुंशी, बंबअीके प्रधान मंत्री श्री. बालासाहब खेर, राष्ट्र-कवि श्री. मैथिलीशरण गुप्त, महाराष्ट्र प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक श्री. पं. मु. डांगरे आदिके संदेश प्राप्त हुअे थे।

पूना— गत २८ जुलाअी को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के परीक्षामंत्री **पं. रामेश्वर दयाल दुबे** अेम. अे. साहित्यरत्न स्थानीय 'राष्ट्रभाषा सेवा मंदिर' में पधारे। मंदिर के संचालक **श्री. सज्जनराम केणीने** अुपस्थित जनोंसे दुबेजी को परिचित कराया। तदुपरांत भाषण करते हुअे दुबेजीने कहा—सेवा मांदिर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यके संबंधमें बहुत कुछ सुन चुका था। आज प्रत्यक्ष देखनेको मिला है। सचमुच यह संस्था आदर्श कार्य कर रही है। लेकिन अेक 'सेवामंदिर' से काम नहीं चलेगा। हमें देशभरमें सेवामंदिरों का जाल बिछाना है। मैं आशा करता हूँ कि 'सेवामंदिर' से निकला हुआ प्रत्येक व्यक्ति सेवाभावसे प्रेरित होकर 'सेवामंदिर' के आदर्शको कार्य रूपमें परिणत करेगा।

ओंकार हिन्दी वर्ग--गत वर्ष १ ली अक्टूबर को दशहरेके शुभ अवसरपर प्राध्यापक श्री. चितले अेम. अे. बी. टी. द्वारा अिस वर्ग का अुद्घाटन हुआ। सात वर्गों में कुल १३८ विद्यार्थी शामिल हुअे। सर्व श्री स. अ. कुलकर्णी, फगरे, जोशीराव, गोगटे, मनूवैद्य, कुमुदिनी, अिनामदार आदिने शिक्षण-कार्य किया। सर्वश्री नगरकर, चितले अेवं श्री. गोखलेने भी सहायता की। परीक्षाफल संतोषजनक रहा। कोविदमें ७१, परिचयमें ८९, प्रवेशमें ८० और प्रारंभिकमें १०० प्रतिशत विद्यार्थी अुत्तीर्ण हुअे। प्रवेशमें कु. शशिकला रानडे, परिचयमें श्री. गोखले तथा श्री. पांडे और कोविदमें श्री. प्र. दि. रानडेने विशेष योग्यता दिखाअी। श्री. पांडे परिचय में पूना केन्द्रसे सर्वप्रथम अुत्तीर्ण हुअे।

विदर्भ नागपुर

बुलडाणा– ता. २३ जून, शामके ५॥ बजे, सरकारी हाअी स्कूलमें म्यूनिसिपल अधिकारी श्री भिखूलालजी की अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरण समारोह धूमधामसे मनाया गया। श्री प्रधानाध्यापक बक्षीजीने अेक सुन्दर भाषणमें हिन्दी 'राजभाषा' का महत्व समझाया। अनन्तर प्रांतीय संचालक शर्माजीने भाषण देकर प्रमाणपत्र वितरण किये। सभामें सरकारी-गैरसरकारी प्रतिष्ठित नागरिक अुपस्थित थे। यहां प्रचार कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है, अिससे प्रांतीय संचालक बहुत प्रभावित हुये। अिसका श्रेय श्री बक्षीजी को तथा अुनका साथ देनेवाले सर्व श्री खपलीकर, सुपे, समर्थ आदि को है। बुलडाणा हमारे प्रान्तके तपस्वी वयोवृद्ध राष्ट्रीय नेता पूज्य कानडे शास्त्रीजी (डिप्युटी स्पीकर, मध्यप्रदेश) का निवासस्थान है। बुलढाणा मध्यप्रदेश का पचमढ़ी-अनन्तर प्राकृतिक शोभासम्पन्न अत्युत्तम आरोग्यवर्धक स्थल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात

अहमदाबाद— गत १५ अगस्तको स्वतन्त्रता दिवसके अुपलक्ष्यमें अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें स्थानीय प्रचारकों और राष्ट्रभाषाके परीक्षार्थियोंकी अेक सभा कार्यालयमें **श्री. मोहनलालजी भट्टकी** अध्यक्षतामें हुअी। गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री **श्री जेठालालजी जोशी** तथा अध्यक्ष महोदयने आजकी परिस्थितिपर सार-गर्भित भाषण दिअे। वंदेमातरम्के पश्चात् सभा समाप्त हुअी।

स्थानीय शाहीबाग वर्गकी ओरसे १५ अगस्तको **श्री. जेठालालजी जोशीकी** अध्यक्षतामें वक्तृत्व प्रतियोगिताका आयोजन हुआ। लगभग ४० व्यक्तियोंने अिसमें भाग लिया जिनमेंसे प्रथम तीनको पुरस्कृत किया गया। शाहीबाग कांग्रेस समितिके मन्त्री तथा स्थानीय म्यु. कारपोरेटर **श्री रावलजीने** राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें अेक महत्वपूर्ण भाषण दिया। अध्यक्ष महोदयके व्याख्या-नके अुपरांत कार्यक्रम समाप्त हुआ।

१३ अगस्तको **श्री मुस्तफा शेखकी** अध्यक्षतामें स्थानीय ताज-पुरवर्गका प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया।

दरियापुर राष्ट्रभाषा प्रचार वर्गकी ओरसे श्री. प्रो. जे. बी. शांडिल्यके सभापतित्वमें वक्तृत्व प्रतियोगिताका आयोजन हुआ। १५ अगस्तको श्री. **केशवराम शास्त्रीकी** अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव भी मनाया गया।

श्री दरियापुर राष्ट्रभाषा प्रचार वर्गकी ओरसे वर्गके अेक प्रचारक **श्री गोविन्दलाल शाहका** स्थानीय गुजरात कालेजमें हिन्दी प्राध्यापक हो जानेके अुपलक्ष्यमें अभिनंदन किया गया।

गत १ अगस्तको अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे समितिके कार्यालयमें 'तिलक जयंती' मनाअी गअी। अनेक वक्ताओंने स्व. लोकमान्य तिलकके प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री दरियापुर राष्ट्रभाषा प्रचार वर्गके पुस्तक भंडारका अुद्घाटन नगर कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष **श्री. गुलाम रसूल कुरेशीने** किया ।

बम्बअी

गत २३ जुलाअीको श्री नाणावटी विद्यालयमें 'नवभारत टाअिम्स' के प्रधान सम्पादक **श्री राजबहादुर सिंह** की अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया। बम्बअी प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मंत्री श्री **कांतिलाल जोशी**ने अपने भाषणमें कहा कि आजकल देशमें प्रांतीयताका जहर फैल रहा है। अुसे दूर करनेके लिये हिन्दीका अध्ययन आवश्यक है। अध्यक्ष महोदयने अपने भाषण में बम्बअी सरकार की हिन्दी सम्बंधी नीतिपर प्रकाश डाला। समारोहमें श्री **गौरीशंकर जोशी,** श्री **रामवल्लभ शास्त्री** अेवं **श्री. नटवरलाल** नाणावटीके भी व्याख्यान हुअे।

स्वतंत्रता दिवस—गत १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवसके अुपलक्ष्यमें बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके कार्यालयमें सभाके मंत्री श्री कान्तिलाल जोशीने राष्ट्रीय झंडा फहराया। अनेक प्रचारक अेवं विद्यार्थी भी अिस समय अुपस्थित थे।

हिन्दी प्रचार कार्यालय माटुंगा की ओरसे १५ अगस्तको "जीवन प्रकाश" भवनमें स्वातंत्र्य दिवस मनाया गया। अिस अवसरपर अप्रैल १९५० की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाणपत्र दिये गये। विद्यार्थी वक्ताओं को पुरस्कृत भी किया गया। सभाके अध्यक्ष श्री कांतिलाल जोशीने अपने भाषणमें स्वतंत्रता दिवसके महत्वपर प्रकाश डाला। श्री धीरेन्द्र परीख तथा श्री किशोर बूचके भी व्याख्यान हुअे।

शास्त्री हॉल राष्ट्रभाषा वर्ग की व्यवस्थापिका श्रीमती **तारा बाअी अभ्यंकर** द्वारा गत १५ अगस्तको शास्त्री हॉलके सभा भवनमें बहनोंकी अेक सभा **श्री कांतिलाल जोशी** की अध्यक्षतामें हुअी। अध्यक्षने अपने भाषणमें बताया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि गत स्वातंत्र्य युद्धमें हमारी बहनोंने जिस तरह हिस्सा लिया था अुसी तरह आज भी अुन्हें राष्ट्रके अुत्थानमें हिस्सा लेना चाहिअे ।

भारतीय विद्याभवन राष्ट्रभाषा वर्ग की ओरसे भवनके सभागृहमें गत १५ अगस्तको श्री **कांतिलाल जोशी**की अध्यक्षतामें स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया । श्री जोशीजीने अपने भाषणमें राष्टीय अेकता और हिन्दीके प्रश्नपर प्रकाश डाला । **श्री. जगजीवनराम त्रिवेदी** का भी व्याख्यान हुआ ।

हैदराबाद

राष्ट्रभाषा विद्यालयकी स्थापना--श्री. मुन्नालाल भवन गौलीपुरा हैदराबादमें हिन्दी सेवकोंकी अेक महत्वपूर्व बैठक मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय बेगम-बाजारके प्रधान अध्यापक **श्रीयुत पी. अेस. सारस्वत** हिन्दी विशारदकी अध्यक्षतामें हुअी जिसमें सर्व श्री **रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय** बी. अे. अेल. अेल. बी. विशारद प्रधान मारवाडी हिन्दी विद्यालय सुलतान बाजार, कविराज श्री **अे. अेच. दिलबाग** बी. अे. विशारद प्रधान दिलबाग हिन्दी पाठशाला (मलकपेठ) श्री **जगन्नाथ प्रसादजी** सिरोही बी. अे. विशारद व्यवस्थापक कल्पना द्वैमासिक (हैदराबाद) **श्री धर्मानन्दजी** काला अुपप्रधान मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय सुलतान बाजार अेवं श्री **अेम. अेल. त्रिपाठी** 'पत्रकार' आदि अुपस्थित थे ।

अुक्त सभामें हैदराबादके भिन्न भिन्न स्थानोंमें हिन्दी परीक्षाओंके केन्द्रकी व्यवस्था अेवं आवश्यकताकी कमीको दृष्टिगत रखते हुअे यह तय किया गया कि गौलीपुरामें राष्ट्रभाषा विद्यालयकी स्थापना की जाय जिसका सम्बन्ध हैदराबाद हिन्दी-प्रचार सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा अेवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागसे हो । अिस विद्यालयमें हिन्दीके प्रथमा, विशारद, अुत्तमा अेवं बाल शिक्षा-प्रौढ़-शिक्षा आदिका अध्ययन कराया जायगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य भारत

बैरागढ़ (भोपाल) -- अप्रैल ५० की रा० भा० परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाण पत्र-वितरणोत्सव-स्थानीय स्कूलके हैडमास्टर **श्री. चूहड़मल** अेस० टी० सी० की अध्यक्षतामें ता. १३–८–५० को मनाया गया। सर्वप्रथम **श्री. तोतलदास** अध्यापकने विद्यार्थियोंसे राष्ट्रभाषा हिन्दीका अध्ययन करनेकी अपील की। तदुपरान्त स्थानीय राष्ट्रभाषा-प्रचारक **श्री. रूपकुमार जेठानी "घायल"** ने अुपस्थित सज्जनोंको हिन्दीके महत्वसे अवगत कराया। **पं. सनमुखदासजी 'मित्र'** ने अपने व्याख्यानमें शरणार्थियोंसे हिन्दीका ज्ञान प्राप्त करनेका अनुरोध किया।

अन्तमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। सर्व-प्रथम अुत्तीर्ण छात्रोंको पुरस्कृत भी किया गया।

मणिपुर

राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण छात्रोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव स्थानीय आर्यन थियेटर हालमें **श्री· कालाचांदसिंह** शास्त्री बी. अे. की अध्यक्षतामें मनाया गया। राष्ट्रभाषा प्रचारक **श्री. छत्रध्वज शर्मा** तथा **श्री. नीलवीर शर्मा** शास्त्री कोविदने अपने भाषणोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी अुपयोगिता पर प्रकाश डाला। अंतमें अध्यक्ष महोदयने प्रमाण पत्र बांटे। सर्व प्रथम अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको पारितोषिक दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

परीक्षा-फल—

सितम्बर ५० की राष्ट्रभाषा-प्रचार-परीक्षाओं तथा 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षाका परीक्षाफल ता० ३०-११-५० को प्रकाशित होगा।

कार्यक्रम—

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

शनिवार ३० सितम्बर		रविवार १ अक्तूबर	
१०॥ से १॥	२॥ से ५॥	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
कोविद १	कोविद २	कोविद ३	कोविद ४
×	परिचय १	परिचय २	परिचय ३
×	×	प्रवेश १	प्रवेश २
×	×	प्रारम्भिक	×

मंगलवार ता. ३अक्तूबर ७॥ से १०॥
कोविद अुर्दू

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा जिस तारीख और जिस समय होगी परीक्षार्थियोंको अुसकी सूचना केन्द्र-व्यवस्थापक यथा समय देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन :—

गत परीक्षाके समय परीक्षा-व्यवस्था देखनेके लिये अधीक्षक भेजे गये थे। अुनकी रिपोर्टसे पता चला कि कुछ केन्द्रोंमें गड़बड़ी हुआी थी। परिणाम-स्वरूप केन्द्र तोड़ दिये गये तथा केन्द्रोंकी परीक्षायें अमान्यकी गयी और परीक्षा-फल प्रकाशित नहीं किया गया।

आगामी परीक्षाके समय भी अनेक केन्द्रोंमें अधीक्षक भेजे जावेंगे जो अचानक पहुँचकर केन्द्रकी परीक्षा-व्यवस्थाका अधीक्षण करेंगे।

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि नियुक्त अधीक्षकों द्वारा चाही हुअी सभी आवश्यक जानकारी अुन्हें दें। परीक्षा-व्यवस्थामें किसी प्रकारकी शिथिलता सहन न की जा सकेगी।

प्रत्येक समयकी अुत्तर पुस्तकें परीक्षा समाप्त होते ही सीलबन्द हो जानी चाहिये।

अुत्तर पुस्तकोंके अैसे सीलबंद बंडल सोमवारको ही रवाना कर देने चाहिये। विलम्बसे भेजी जाने वाली अुत्तर-पुस्तकें स्वीकार नहीं की जावेंगी।

सोमवारको ही अुत्तर-पुस्तकोंके साथ —

१. परीक्षा-निरीक्षक विवरण पत्रक

२. अनुपस्थिति पत्रक

३. कोविदके मौखिक तथा लेखन-कार्य प्राप्तांक पत्रक तथा लेखन-कार्यकी निबन्ध-बहियाँ भेज देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा व्यवस्था खर्च—

केन्द्र-व्यवस्थापाकोंसे अनुरोध है कि केन्द्रकी परीक्षा-व्यवस्थाका खर्च लिख भेजते समय खर्च-विवरण-पत्रकको ध्यानसे पढ़ जावें। और अुसमें दी हुअी सूचनाओंके आधारपर ही खर्च-ब्यौरा लिख भेजें। खर्च-विवरण-पत्रकमें दी हुअी मदोंके अलावा अन्य प्रकारके खर्च स्वीकार न किये जा सकेंगे।

खर्च-ब्यौरेके साथ आवश्यक रसीदें-वाअुचर अवश्य आने चाहिये।

परीक्षकोंसे निवेदन —

अिस बार लगभग ९६ हजार परीक्षार्थी परीक्षाओंमें सम्मिलित हो रहे हैं। परीक्षाओंका परीक्षा-फल समयपर निकलनेके लिये हमें अपने परीक्षकोंके पूर्ण सहयोगकी आवश्यकता है। परीक्षकोंसे अनुरोध है कि जो सूचनाअें अुन्हें अुत्तर-पुस्तकके साथ मिलती हैं अुन्हें विशेष ध्यानसे पढ़ लें और अुन्हींके अनुसार कार्य करें।

परीक्षक-नियुक्ति-पत्र प्रायः सभी परीक्षकोंके पास पहुँचा दिये गये हैं। परंतु अधिकांश परीक्षकोंकी ओरसे परीक्षक स्वीकृति-पत्र नहीं आये हैं। परीक्षकोंसे निवेदन है कि वे स्वीकृति-पत्र शीघ्र भेजनेकी कृपा करें। अन्यथा अिस बारकी परीक्षाओंमें हम अुनका सहयोग प्राप्त न कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
आसाम	श्री. गोविंद प्रसाद दास	२१३५	पलाशबारी
,,	,, अेन नीलमणि सिंह	२१३६	अिम्फाल
,,	,, जितेन्द्र चन्द्र चौधुरी	२१३७	शिलांग
बंगाल	,, गोपाल रञ्जन सिनहा	२१३८	द. कलकत्ता
,,	,, भवानी प्रसाद चट्टोपाध्याय	२१३९	,,
अुत्कल	,, पद्मनाथ शतपथी	२१४०	टांगी
,,	,, गोविंद चन्द्र मिश्र	२१४१	ब्रह्मपुर
मध्यभारत	,, सनमुखदास गोविंदराम मित्र	२१४२	बैरागढ
गुजरात	,, मूलगर अमृतगर गोस्वामी	२१४३	जामनगर
,,	,, जेठालाल प्रभुलाल ठक्कर	२१४४	पेटलाद
,,	,, रामचन्द्र अिन्द्रभान दवे	२१४५	नयाडीसा
,,	,, विष्णुप्रसाद मल्लिकार्जुन पण्ड्या	२१४६	आणंद
,,	,, गोविंदराम अुधाराम वाघवानी	२१४७	अहमदाबाद
,,	,, मोहनलाल नाथालाल शास्त्री	२१४८	,,
,,	,, मदन मोहन रामसेवक तिवारी	२१४९	,,
,,	,, विट्ठलदास फुलचंददास महेता	२१५०	कालोल
,,	,, जयन्तिलाल रेवाशंकर रावल	२१५१	सुणाव
,,	,, हेमन्तकुमार केशवलाल पटेल	२१५२	बड़ौदा
,,	,, चंदुलाल छगनलाल पुरोहित	२१५३	दुधवाड़ा
,,	,, विष्णुप्रसाद पुंजालाल सेवक	२१५४	डाकोर
,,	,, मगनलाल भीखाभाओी पटेल	२१५५	पिलवाओी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त		नाम	क्रमांक	स्थान
गुजरात	,,	डाह्यालाल ओघड़लाल आचार्य	२१५६	लीम्बड़ी
,,	,,	दयाशंकर जमीयतराम पंड्या	२१५७	अहमदाबाद
,,	,,	नटवरलाल डुंगरजी अजबाणी	२१५८	साणंद
,,	,,	मोरारभाअी मोतीभाअी पटेल	२१५९	ड़भाली
,,	,,	आनंदी बहन बोधाशंकर रावल	२१६०	बिलोदरा
,,	,,	विट्ठलभाअी बारोट	२१६१	विसनगर
,,	,,	लक्ष्मीशंकर रेणाशंकर जानी	२१६२	महेसाना
,,	,,	शान्तिकुमार नरसिंहभाअी पटेल	२१६३	वड़थल
,,	,,	नटवरलाल अम्बालाल व्यास	२१६४	झालोद
,,	,,	कनैयालाल सांकलेश्वर व्यास	२१६५	अहमदाबाद
,,	,,	पुरुषोत्तम गुलाबदास नायक	२१६६	वालस
,,	,,	रमणिकलाल वाडीलाल शाह	२१६७	साणंद
,,	,,	पं. गोरेलाल जैन 'विशारद'	२१६८	हिम्मतनगर
,,	,,	वल्लभदास दयालजी चंदाराणा	२१६९	गोधरा
,,	,,	शान्तिलाल नाथालाल शाह	२१७०	सोजित्रा
,,	,,	विजयसिंह पर्वतसिंह "राज"	२१७१	भरुच
,,	,,	शांता जे. पीनार	२१७२	वढवाण शहर
,,	,,	विष्णुप्रसाद पुंजालाल सेवक	२१७३	डाकोर
महाराष्ट्र	,,	सुका हुना महाजन	२१७४	नसिराबाद
,,	,,	कमल दामोदर आपटे	२१७५	अहमदनगर
,,	,,	रघुनाथ श्रीधर वैद्य	२१७६	रत्नागिरी
,,	,,	दत्तात्रय नारायण वाहाड़राय	२१७७	अहमदनगर
,,	,,	कु. शरद गणेश शारङ्गपाणी	२१७८	नाशिक शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त		नाम	क्रमांक	स्थान
महाराष्ट्र	,,	अनन्त नारायण पेण्ड्से	२१७६	पूना २
,,	,,	सोनुताओी पालकर	२१८०	सातारा
,,	,,	कु. शशिकला नरहर भिसे	२१८१	,, शहर
,,	,,	दिनकर श्रीनिवास देशमुख	२१८२	पाथर्डी
,,	,,	सौ. निर्मला दत्तात्रय घाणेकर	२१८३	कल्याण
,,	,,	जन्हेरचंद नेमीदास देवकर	२१८४	,,
,,	,,	शशिकांत शीवाभाओी पटेल	२१८५	पुणें २
,,	,,	कृष्णाजी बलवंत नानिवडेकर	२१८७	कोरेगांव
,,	,,	सौ. मालती भास्कर भिड़े	२१८८	पुणें
,,	,,	शंकर पांडुरंग पाध्ये	२१८६	रोहा
,,	,,	कु. अुषा श्रीपाद भिड़े	२१९०	विजापुर
,,	,,	रामचन्द्रराव खंडोजीराव कदम	२१९१	येल्लूर
,,	,,	देवाप्पा वैजू:जाधव	२१९२	,,
,,	,,	राजलदास जगतराय	२१९३	पिंपरी कँम्प
,,	,,	बाबुराव भोजू वाघुलदे	२१९४	जलगाँव
,,	,,	सरस्वती मोरेश्वर जोशी	२१९५	पुणें २
,,	,,	गोरधनदास रणछोड़दास सचदेव	२१९६	थाणा
बम्बओी	,,	कृष्णराव दत्तात्रय नाओीक	२१८६	गिरगाँव
,,	,,	धनजी शामजी भोट	२१९७	बम्बओी
,,	,,	कु. विमल नारायणराव मालंडकर	२१९८	दादर
,,	,,	शान्तिलाल भगवानदास बलसारा	२१९९	,,
,,	,,	सीताराम मारुतिराव चंदावरकर	२२००	,,
,,	,,	कु. मालती नागेशराव हेरेकर	२२०१	खार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त		नाम	क्रमांक	स्थान
,,	,,	जयन्तिलाल चीमनलाल शाह	२२०२	बम्बअी
,,	,,	मोरारजी जयराम गणात्रा	२२०३	मुलुन्ड़
,,	,,	पुरुषोत्तम छन्नुलाल दुबे	२२०४	घाटकोपर
,,	,,	रामदास गोपाल धोत्रे	२२०५	ठाकुरद्वार
,,	,,	जयन्तीलाल हीरालाल भावसार	२२०६	बोरीवली
,,	,,	कमल दामोदर पटवर्धन	२२०७	दादर
,,	,,	सौ. ताराबाअी मारुतिराव चंदावरकर	२२०८	,,
,,	,,	जतीन्द्र सचीन्द्र महेता	२२०९	विलेपारले
,,	,,	अीन्दीरा वाडीलाल ठाकर	२२१०	,,
,,	,,	कुञ्जबाला महेन्द्र नाणावटी	२२११	बम्बअी
,,	,,	धरमशी रसिकलाल हन्सराज	२२१२	,, ९
,,	,,	नागड़ा अमृतलाल चत्रभोज	२२१३	बम्बअी
,,	,,	दन्ड़ खेतशी देवशी	२२१४	,, ९
,,	,,	कु. यशवन्ती गोविन्द नाड़कर्णी	२२१५	दादर
,,	,,	नागरदास जवेरचन्द शाह	२२१६	बम्बअी
,,	,,	गोशर रायशी चांपशी	२२१७	,,
हैदराबाद द.	,,	अनन्त शर्मा, जयतीर्याचार्य चिंचोली	२२१८	शिकंदराबाद
आन्ध्र	,,	चल्ला श्री रामचन्द्र मूर्ति	२२१९	बाँची
,,	,,	मादेरी सांबमूर्ति	२२२०	अनकापल्ली
,,	,,	मुक्कामल वेन्कट सुब्रह्मण्य वीर गंगाधरराव	२२२१	विजयवाड़ा
वि. नागपूर	,,	कु. शेवन्ती द. पशीने	२१२७	वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त		नाम	क्रमांक	स्थान
वि. नागपुर	,,	जगन्नाप्रसाद पाण्डे	२१२८	,,
,,	,,	हरी महादेव क्षीरसागर	२१२९	खामगाँव
,,	,,	कृपाशंकर त्रिवेदी	२१३०	अमरावती
,,	,,	नीलकन्ठ हरीहर जामदार	२१३१	नागपुर
,,	,,	कु. शेवन्ती बाओी घायाळ	२१३२	नागपुर
,,	,,	सौ. मनोरमाबाओी व. भालेराव	२१३३	,,
,,	,,	विनेबा कृष्णाजी डगेमुगे	२१३४	खामगाँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
गुजरात	सचीन	१६७६
,,	पेथापुर	१६७७
,,	नापा	१६७९
,,	खोरासा	१६८२
,,	प्रतापनगर	१६८३
,,	अळीना	१६८५
,,	हारीज	१६९०
महाराष्ट्र	सुरेबान	१६८०
,,	मंगसूळी	१६८६
,,	नरसिंगपुर	१६८७
,,	सावळज	१६८८
,,	पाडळी	१६८९
वि. नागपुर	जबलपुर	१६९१
उत्कल	बड़गड़	१६७८
आन्ध्र	जल्लिकाकिनाड़ा	१६८१
विदेश	पोर्टब्लेअर	१६८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीके अुत्कृष्ट शब्दकोष प्राप्य

कोषका नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य	डाक-व्यय
१. शासन शब्दकोष [Administrative Dictionary]	४३०	१५-०-०	--
२. प्रामाणिक हिन्दी-कोष	१३००	१०-१०-०	०-८-०
३. आदर्श हिन्दी शब्दकोष (संक्षिप्त)	७६३	६-०-०	०-६-०
४. हिन्दी रत्न कोष (हिन्दी-हिन्दी)	५८८	५-०-०	०-६-०
५. भार्गव हिंदी-अंग्रेजी कोष (संक्षिप्त)	१०५०	४-०-०	०-६-०
६. भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी कोष	१२६२	६-०-०	०-८-०
७. अुर्दू-हिन्दी कोष	४९४	४-८-०	०-६-०
८. हिन्दुस्तानी-गुजराती कोष	३७६	४-०-०	०-८-०
९. मराठीसे हिन्दी शब्दसंग्रह	५३०	६-०-०	०-४-०
१०. मराठी-हिन्दुस्तानी कोष	११९	२-०-०	०-६-०
११. राष्ट्रभाषा-मराठी लघुकोष	२४३	२-८-०	०-६-०
१२. भार्गव बाल हिन्दी कोष	६५६	३-०-०	०-६-०
१३. भार्गव अंग्रेजी हिन्दी कोष (संक्षिप्त)	१०८८	४-०-०	०-६-०

जिनको आवश्यकता हो वे कोषकी पूरी कीमत (डाक-व्ययसहित) पेशगी भेजकर मँगा लें। वी. पी. से कोष नहीं भेजे जाते।

-- पुस्तक-विक्री-विभाग

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर, वर्धा

—समितिका नया पता—

समितिके पोस्ट आफिसका नाम 'हिन्दीनगर' है। अिसलिये समितिका पता अब अिस प्रकार है—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर वर्धा (म. प्र.)

भविष्यमें पत्र-व्यवहार अिसी पतेपर होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

साहित्यका साथी

(नवीन परिवर्तित संस्करण)

लेखक— आचार्य पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी डी. लिट्.

साहित्यका साथी साहित्यके विद्यार्थियों और साहित्यकारोंका ग्रंथ है। असके द्वारा साहित्यके विभिन्न अंगों-अुपांगोंकी (ध्वनि, रस, रीति, अलंकार, काव्यके भेद, नाटक, अुपन्यासके तत्वोंकी विवेचना और समीक्षा शास्त्र) समीक्षाको छात्रोपयोगी बनानेका प्रयत्न किया गया है। आचार्य द्विवेदीका हृदय अेक मानवतावादी मनीषीका हृदय है। वे जहाँ काव्यकी अुपयोगिता, अुसका हृदय संवेद्य होना मानते हैं, वहीं समस्त प्राचीन काव्य शास्त्रोंके वस्तुविन्यास और रीति परंपराओंसे परिचित होनेके कारण अुसकी शैलीको भी अेक साहित्योचित कसौटीपर कसकर परखते हैं। आचार्यजीके पास अपना अेक निश्चित मत है, जिसके पीछे है अतीतका अुज्ज्वल काव्यादर्श और भविष्यका सामाजिक जीवन। वे किसी भी रचनाको आजकलके प्रभाववादी आलोचकोंकी तरह सिर्फ अूपर-अूपरसे ही न देखकर अुसे वस्तुनिष्ठ और शास्त्रीय दृष्टिसे देखते हैं तथा तह तक पहुँच जाते हैं।

मूल्य केवल- १॥)

मिलनेका पता— पुस्तक विक्री विभाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर वर्धा।

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्ट्र भाषा

१०.५०

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल काँगड़ी

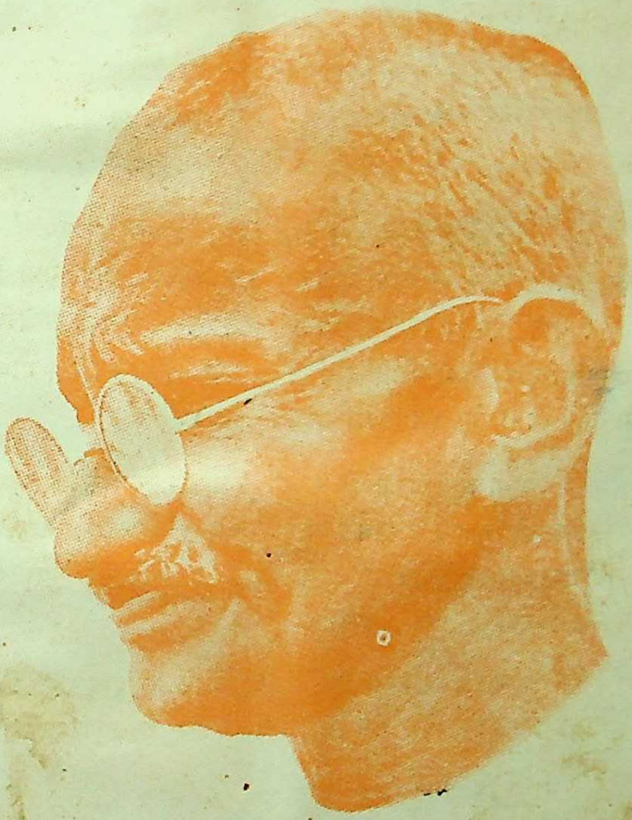

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख				पृष्ठ
१. कांग्रेस अधिवेशनमें हिन्दीकी प्रमुखता		...	...	४६३
२. चीनमें भारतीय साहित्य	....	...	...	४६५
३. 'ही' और 'भी'	...	...	...	४७३
४. कांग्रेसके नये अध्यक्ष—राजर्षि टंडनजी		...	...	४७८
५. 'गेहूँ और गुलाब'	...	...	...	४८३
६. अुर्दू लिपि	...	...	...	४८६
७. प्रांतीय हलचलें	...	....	...	४९२
८. परीक्षा विभाग	...	...	...	५०२

'राष्ट्रभाषा'का रूपपरिवर्तन

'राष्ट्रभाषा'के प्रचारका अेक अध्याय समाप्त हो गया। राष्ट्रने हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया है। अब यह आवश्यक हो गया है कि हिन्दीमें देशके सभी प्रदेशोंकी साहित्य-संम्पत्ति अेवम् चिन्ता-धाराकी अभिव्यक्ति हो। अतः अैसे साहित्यका निर्माण अनिवार्य हो गया है, जिससे हिन्दी माध्यम द्वारा सभी भारतीय भाषाओंके साहित्यका परिचय प्राप्त हो सके।

अिसी आवश्यकताको सामने रखकर नवंबरसे 'राष्ट्रभाषा के स्वरूपमें परिवर्तन हो जायगा। अबसे अुसमें समस्त भारतीय भाषाओंके साहित्यकी गतिविधि और प्रवृत्तियोंके परिचयके अतिरिक्त साहित्यकी कुछ अुत्तम रचनाअें भी रहा करेंगी।

आशा है विभिन्न भारतीय भाषाओंके साहित्यकार, प्रान्तीय संचालक केन्द्र-व्यवस्थापक और प्रमाणित प्रचारकगण अिस दिशामें हमारी सहायता करेंगे।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९]   वर्धा, अक्टूबर—१९५०   [अंक १२

कांग्रेस अधिवेशनमें हिन्दीकी प्रमुखता

कांग्रेसके नासिक अधिवेशनमें राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडनने कांग्रेसके अितिहासमें प्रथम बार अध्यक्ष पदसे हिन्दीमें भाषण करते हुअे राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें कहा—

"भारतीय संविधानका मुख्य दृष्टिकोण यह है कि देशके विभिन्न भाग अपनी स्थानीय शासन सुविधाओंको रखते हुअे केन्द्रीय शासनके द्वारा आपसमें बंधे रहें और आपसमें अधिक समीप आनेकी ओर अुनकी प्रवृत्ति हो। अिसीसे हमारा देश बलवान और संसारमें आदरका पात्र हो सकेगा।

हिन्दी भाषाको सरकारी कामोंके लिये प्रधानता देकर अिसी प्रवृत्तिको बल दिया गया है। मेरा विश्वास है कि संविधानका यह अंग देश भरमें विचारों की अेकता और प्रादेशिक प्रेम बढ़ानेमें जादूका काम करेगा जो सांस्कृतिक काम पूर्व समयमें संस्कृत भाषाने किया था अुससे अधिक शक्ति देनेवाला काम हिन्दीसे होनेवाला है। संस्कृत भाषाका गहरा प्रभाव हमारे देशकी अूपरी श्रेणियोंमें था किन्तु हिन्दी जनताके भीतर घुसकर और प्रादेशिक भाषाओंसे अुनकी बहिनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाते आदान प्रदान कर देशके समस्त जन-समुदायमें अैक्य और प्रेमकी चेतना अुत्पन्न करनेवाली है। अपनी अेक बहिनको राष्ट्रभाषाके सिंहासनपर बैठाकर हमारी प्रादेशिक भाषाअें भी स्वयं आदरित और सुखी होंगी और अपने-अपने साहित्यिक विकाससे फूले फलेंगी।

बिना संविधानके सहारे हिन्दीकी शक्तिने भिन्न-भिन्न प्रदेशोंको अपनी ओर खींचा था और अब संविधानका सहारा पाकर वह तो देश भरकी जनताकी सम्पत्ति बन गअी है। अुसके रूप निर्माणमें भी दिन-दिन समस्त देशका हाथ होगा। अिससे अुसका शब्द और साहित्य-भंडार बढ़ेगा और अुसकी अुपयोगिता विस्तृत होती जायगी।

वास्तविकताको देखते हुअे संविधानने अभी अंग्रेजीकी मुख्यता १५ वर्षों के लिअे मानी है। परन्तु यह हमारे देशवासियोंके हाथमें है कि अपनी दूरदर्शिता और लगन तथा प्रेमयुक्त परिश्रमसे अिस अवधिकी समाप्तिसे बहुत पहिले अपनी स्वीकृत राष्ट्रभाषाकी अपेक्षा अधिक आदर लेकर अपनी सामूहिक शक्ति बढ़ाये और जब अवसर देखें तब संविधानमें भी मिल-जुलकर और अेक मत होकर आवश्यक परिवर्तन कर लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनमें भारतीय साहित्य

: श्री. सुमन वात्स्यायन :

(गतांकसे आगे)

गृहयुद्धने शांतिप्रिय पंडित फा-त्सुको चांङ्-अेन छोड़नेको विवश कर दिया। वे कान-सू प्रांतमें चले गये। वहांके गवर्नरने अिन्हें भिक्षु वेष छोड़ देनेको कहा। किन्तु फा-त्सु जैसे सुसंस्कृत और दृढ़ संकल्पी व्यक्ति अिसे कब स्वीकार कर सकता था। पर शासकका कोप चुप कैसे बैठता। फा-त्सु गिरफ्तार करके मार डाले गये।

फा-त्सुका प्रभाव चीनी जनताके सभी श्रेणीके लोगोंपर था। अिस समयतक सभ्य-असभ्य कहेजानेवाले सभी तरहकी जातियोंमें भगवान् तथागतका संदेश अिन कर्मठ भिक्षुओंने पहुँचा दिया था। लांङ्-शानके जंगली लोगोंको जब फा-त्सुकी हत्याकी खबर लगी तो अुन्होंने आक्रमण शुरू कर दिया। अब कान-सूमें भी गृहयुद्ध शुरू हो गया। बहुत परिश्रमके बाद शांति स्थापना हो सकी। फा-त्सुने कुल २३ संस्कृत ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। अिनमेंसे अब सिर्फ ५ ही प्राप्य हैं। फा-त्सुका महत्त्व अनुवाद कार्यके कारण अुतना नहीं है जितना कि अपने अुद्देश्यकी सिद्धिके निमित्त आत्मबलिदान करनेसे। चीनवासी होते हुये भी भारतीय संस्कृति और साहित्यकी बलिवेदीपर अुन्होंने अपनेको बलिदान कर दिया। वास्तवमें अुनके बलिदानने वह काम किया जो सैकड़ो-हजारों विद्वान नहीं कर सकते थे। अुनका जीवन सभी दृष्टिसे सफल रहा। वे युग-युगान्तर तक भारतीय संस्कृतिके अुपासकोंके श्रद्धा भाजन बने रहेंगे।

बुद्धदान

पच्छिमी त्सिन वंश (२६५—३१६ अी.)के पतनके बाद चीनकी राजनैतिक हालत अच्छी नहीं रह गअी। तातार और हूणोंके लगातार हमले होते रहे और अुन्होंने दोनों प्राचीन राजधानी चांङ्-अेन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लो-याङ्पर अधिकार कर लिया। पर अिन विदेशियोंके अधिकारारूढ़ होनेपर भी अुत्तर चीनमें बौद्ध धर्मके प्रचारमें विशेष बाधा नहीं पड़ी। क्यों कि अिन्हीं दिनों कूचाके अेक प्रसिद्ध विद्वान् बुद्धदान लो-आङ् आये। राजा शी-लेअीने अिनका बहुत सम्मान किया। शी-लेअीसे भी अुसका अुत्तराधिकारी शी-हू पर बुद्धदानका ज्यादा प्रभाव पड़ा। बुद्धदानकी शिक्षा कश्मीरमें हुअी थी। अिसलिये वे संस्कृतके भी अच्छे पंडित थे। विद्वताकी अपेक्षा अिनकी अलौकिकताका प्रभाव अधिक था। अिसलिये अुत्तरी चीनपर विदेशियोंका शासन होते हुये भी भारतीय संस्कृति और साहित्यके प्रचारमें कोअी रुकावट नहीं पड़ी। भारतीय साहित्यका अध्ययन-अध्यापन पूर्ववत् ही चलता रहा।

श्रीमित्र

जिस समय अुत्तर चीनमें अिस प्रकारकी अव्यवस्था फैल रही थी अुसी समय दक्षिण चीनमें पूर्वी त्सिन राजवंश (३१७ अी.) का अुदय हुआ। अिस वंशको भारतीय संस्कृतिका संरक्षक कहा जाय तो कोअी अत्युक्ति नहीं। अिस वंशके शासन कालमें भारत तथा मध्य अेशियाके अनेक ख्यातिप्राप्त विद्वान् चीन गये। भारतीय साहित्यके प्रचारमें कूचाका स्थान सर्वप्रथम रहा है। अुन दिनों यह भारतीय संस्कृतिका अेक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। ३१२ अी. के आसपास श्रीमित्र नामके अेक तरुण कूचासे चीन आये। कहते हैं ये वहाँके युवराज थे और बुद्धके संदेशका प्रचार करनेके लिये ही राज्याधिकार अपने छोटे भाअीको सौंप भिक्षु बन गये। ये तांत्रिक बौद्ध थे और चीनमें तंत्रवादके मार्ग-दर्शक माने जाते हैं जो बादमें चीनके प्रमुख बौद्ध संप्रदायोंमेंसे अेक बना। श्रीमित्रने तांत्रिक संस्कृत ग्रंथोंका ही चीनी भाषामें अनुवाद भी किया।

धर्मरत्न और संघदेव

अिस कालमें आगम साहित्यका अच्छा प्रसार रहा। भिक्षु धर्मरत्नने ११० संस्कृत ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। अिनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकांश आगम साहित्यसे ही संबंध रखते थे। अब अिनके द्वारा अनुदित सिर्फ २३ ग्रंथ चीनी त्रिपिटकमें सुरक्षित हैं। राजनीतिक स्थिति ठीक नहीं रहनेके कारण अिस युगके अनुवादोंमें अेकरूपता और सामंजस्यका बड़ा अभाव था। अुत्तर चीनमें काम करनेवालोंका दक्षिण चीनमें काम करनेवालोंसे कोअी मेल नहीं हो पाता था। अिसलिये अेक ही ग्रंथका अनेक बार अनुवाद हो जाता था। महान आचार्य कुमारजीव के समय तक यह सिलसिला कायम रहा। अिसलिये धर्मरत्न और धर्मनन्दीके बाद ही हम संघदेव जैसे महान पंडितको भी आगम साहित्यको चीनीमें रूपान्तर करते देखते हैं। संघदेवका जन्म कश्मीरमें हुआ था। ये बड़े ही प्रतिभावान गंभीर विद्वान थे। धर्म प्रचारकी प्रेरणा लेकर ही ये कश्मीरसे मध्य अेशियाके रास्ते ३८३ अी. में चांङ्-अेन पहुँचे। अिनका त्रिपिटकका अध्ययन बहुत ही गहरा और विस्तृत था, विशेष रूपसे अभिधर्मपिटकका।

भिक्षु संघदेवके कुछ ही पूर्व धर्मनन्दी नामके अेक भिक्षुने अेकोत्तरागम (अंगुत्तर निकाय) का चीनीमें अनुवाद किया था। यह अनुवाद बहुत अच्छा नहीं बना था। अिसलिये संघदेवको अिस अनुवाद को मूलसे मिलानेके लिये लो-यांङ् बुलाया गया। ये वहाँ चार-पाँच वर्षों तक रहे। यहीं अिन्होंने अभिधर्मज्ञानप्रस्थानशास्त्र, अभिधर्मविभाषा और अभिधर्महृदयशास्त्रका अनुवाद किया। कुछ समय बाद ये दक्षिण चीनमें (लू-शान) चले गये। यहाँ भी कुछ संस्कृत पुस्तकोंका चीनीमें अनुवाद किया। यहाँसे फिर ये नानकिङ् चले आये। अिनका यश अिस समय तक चीनमें दूर-दूर तक फैल चुका था। चीनी जनता अिनके पांडित्यसे बहुत प्रभावित हुअी। अेक श्रद्धालु अफसरने अिनके लिये अेक मठ बनवा दिया। यहीं मध्यमागम (मज्झिमनिकाय) तथा अभिधर्मके कुछ ग्रंथोंका चीनी भाषामें अनुवाद किया। अिन्होंने ही पहले पहल कात्यायनीपुत्रका ज्ञानप्रस्थान शास्त्रका महाविभाषा टीकासहित चीनी भाषामें अनुवाद किया। सच तो यह है कि अबतक बौद्ध दर्शनका चीनी जनताको विशेष परिचय नहीं हो पाया था। आचार्य संघदेवने ही अिस कमीको पूरा किया। संघदेव अेक महान् पंडित और अुत्साही प्रचारक थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धभद्र

चीनी जनताको अवतंसक सूत्रोंसे परिचय करानेवालोंमें शाक्य-वंशी बुद्धभद्रका नाम सर्व प्रथम है। ये बुद्धके चाचा अमृतोदनके वंशमें पैदा हुये थे। अिनका अध्ययन गहरा और बड़ा विस्तृत था। फा-हियेनका साथी चे-येन जब कश्मीर आया था तब बुद्धभद्र वहीं थे और अिनसे अुनकी भेंट भी हुअी। ये बड़े गहरे मित्र बन गये और भारतका भ्रमण करते हुये दोनों विद्वान समुद्रके रास्ते तोकिन होते हुये चीन पहुँचे। प्रसिद्ध भिक्षु कुमारजीवको अिन्होने बड़ी सहायता पहुँचाअी। मालूम होता है ये चीनी भाषाके भी अच्छे जानकार थे। स्वतंत्र और घुमक्कड़ स्वभावके होनेके कारण अिन्होंने कभी किसीकी संरक्षता प्राप्त करनेका प्रयत्न नहीं किया। अक्खड़पनके कारण अिन्हें काफी दिक्कतोंका सामना करना पड़ा।

लु-शानमें रहते हुये बुद्धभद्रने कअी ग्रंथोंका अनुवाद किया। अिनके द्वारा अनुदित ग्रंथोंमें बुद्ध अवतंसकसूत्र, बुद्धध्यानसमाधिसागर-सूत्र, महावैपुल्यतथागतगर्भसूत्र (नष्ट) मंजुश्रीप्रणिधानसूत्र महत्वपूर्ण है। अवतंसकके सिद्धांतोंने चीनी जीवनपर बहुत प्रभाव डाला और जापानी बौद्धोंमें अिसका स्थान अब भी महत्वपूर्ण है। चीनके प्रसिद्ध विद्वान और दार्शनिक फा-त्सांङ् (६४३-७१२) ने अवतंसक सिद्धांतोंको बहुत प्रश्रय दिया। अिन्होने सूत्रोंकी अपनी व्याख्याकी। यथार्थमें यही निकाय था जिसने चीनी विद्वानोंके विचारोंको मुख्य रूपसे प्रभावित किया।[1] जापानमें अवतंसकको केगन कहते हैं। 'केगन महत्वपूर्ण है क्योंकि शाक्य मुनिने ज्ञानप्राप्तिके तीसरे सप्ताहमें ही अिस सूत्रका अुपदेश दिया था।'[2] अिसके दो सम्पूर्ण अनुवाद है। अेक साठ खंडोंमें बुद्धभद्र (४१८-५२०अी.) ने किया था और दूसरा अस्सी खंडोंमें शिक्षानन्दने (६९५—६९९ अी. में) किया था।[2]

---

१. दे. ते. सुजुकी

२. बो. ले. सुजुकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धभद्रका दूसरा महत्वपूर्ण कार्य था फा-हियेनको विनय ग्रंथोंके अनुवादमें मदद देकर चीनके मठीय जीवनको स्थिर और सुव्यवस्थित बनाना। २५० ओी. में धर्मकालने प्रातिमोक्षका चीनी भाषामें अनुवाद किया था पर यह बहुत प्रभावशाली नहीं हुआ। बौद्ध सिद्धांतोंको ग्रहण कर लेनेपर भी अभीतक चीनमें बौद्ध संघ और अुसके अनुशासनकी भावना दृढ नहीं हो पायी थी। अुसमें कोअी अेकरूपता भी नहीं थी। यद्यपि कुछ समय पूर्वसे ही भारतीय मिशनरी और चीनी भिक्षु अिस अभावका अनुभव कर रहे थे फिर भी अिसकी पूर्ति तो हुअी महान यात्री फा-हियेन द्वारा ही। बुद्धभद्रने फा-हियेनकी मददसे महासांघिक निकायके अनेक ग्रंथोंका अनुवाद किया।

फा हियेन

"जिन परिस्थितियोंसे होकर मैं गुजरा, अुन्हें जब मुड़कर देखता हूँ तो बरबश मेरा हृदय पिघल जाता है और पसीना छूटने लगता है। मेरे सामने अेक निश्चित लक्ष्य था (और अिसीलिये) खतरोंका मैंने मुकाबला किया, बिना विचार किये, बिना अपनेको सुरक्षित रखे मैंने खतरनाक जगहोंको रौंदा। जहाँ मृत्यु अवश्यंभावी थी मैंने अपने जीवनको खुला छोड़ दिया।"—फा-हियेन

फा-हियेन अुत्तर चीनके रहनेवाले थे। बचपनमें ही माता-पिताने अिन्हें बौद्ध मठमें रख दिया। बड़े होनेपर ये भिक्षु बन गये। जैसा कि हम अूपर कह चुके हैं, अब तक चीनका मठीय जीवन अनुशासनबद्ध नहीं था। भारतीय भिक्षुओंसे फा-हियेनने भारतके बौद्ध मठके विनयानुकूल अनुशासनमय जीवनकी चर्चा अवश्य सुनी होगी और चीनी मठोंके अनियमित जीवनकी तुलना अुसने अवश्यकी होगी। फा-हियेनको जिस कमीका वहाँ अनुभव हुआ अुसकी पूर्तिके लिये वह भारत आकर अपनी आँखोंसे यहाँके मठोंके रहन-सहनको देखनेके लिये अुत्सुक हो अुठा। अुसका अेक मात्र लक्ष्य विनय (भिक्षु अनुशासन ग्रंथ) और अुसका व्यवहार सीखनेका था। अुसने अिसकी परवाह नहींकी कि अुसे अपने लक्ष्यकी पूर्तिके लिये क्या क्या कष्ट अुठाना पड़ेगा। वास्तवमें "अेशियाके अितिहासमें ३९९ ओी. अेक महान दिन था जब कि संस्कृतिका केन्द्र और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यताका प्रकाश भारतके लिये चीनी युवकोंका अेक दल चीनसे प्रस्थान करता है। अिस नये आन्दोलनका नेता फा-हियेन था जिसने ३९९ अी. में चीन छोड़ा और ४१४ अी. में १५ वर्षोंतक विदेशमें रहकर चीन लौटा।[1]

अनेक वर्णनातीत कष्टोंको झेलते हुये यह महान् चीनी यात्रीने गोबीके रेगिस्तानको पार कर तुरफान पहुँचा। वहाँ अुसे किसी कारवाँकी प्रतीक्षामें कुछ दिनों तक ठहरना पड़ा। फिर ३५ दिनोंकी दुखद यात्राके बाद तकलामकानका रेगिस्तान पारकर वह खोतन पहुँचा। यहाँ यह प्रश्न अुठता है कि फा-हियेन ने स्थल मार्गसे ही क्यों यात्राकी। क्यों कि फा-हियेनके समय तक भारत और चीनके बीच समुद्री व्यापार काफी अुन्नत हो चुका था, जैसा कि हम अूपर लिख चुके हैं। लेकिन बात यह थी कि फा-हियेनके समयतक चीनके कानसू प्रान्तसे लेकर भारतकी अुत्तरी सीमातक अनेक भारतीय अुपनिवेश बसे हुये थे। अिसे ही आज हम 'अुपरला भारत' कहते हैं। अिन भारतीय अुपनिवेशोंमें बौद्ध धर्मका बहुत प्रचार था। ये देश 'आठवीं शताब्दी अि. तक पूरी तरह भारतीय बने रहे। कनिष्कने खोतनके राजा विजयसिंहके पुत्र विजयकीर्तिके साथ मिलकर भारत वर्षपर चढ़ाअी की थी। अनुश्रुतिके अनुसार पहले पहल सम्राट अशोकके समय खोतनमें अेक भारतीय अुपनिवेश स्थापित हुआ था— अर्थात् कनिष्कसे पौने चार शताब्दी पहले। चीन और भारतवर्षके बीच व्यापारका यही मुख्य रास्ता बन गया। क्यों कि चीनके अुत्तर-पच्छिमी कानसू प्रान्त तक कूचा, खोतन आदि भारतीय अुपनिवेशोंकी सीमायें तब पहुँचती थीं, अिस कारण भी चीनको अुसी तरफसे भारतवर्ष अेक दम नजदीक पड़ता था।[2]

फा-हियेनके रास्तेमें कूचा पड़ता था जो अुन दिनों भारतीय संस्कृति और विद्याका महान् केन्द्र था। चीनी तुर्किस्तानमें अुत्तरी तरिम

---

[1] प्रभात मुकर्जी

[2] पं. जयचन्द्र विद्यालंकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्न्यकाका नाम कूचा था, जो शायद पुराणोंमें कुशद्वीप कहा गया है। वराहमिहिरने कुशिक जातिका भी अुल्लेख किया है। अशोकावदानके चीनी अनुवादमें कूचा अशोकके राज्यमें था। अीसाकी तीसरी सदीमें कूचा बौद्ध धर्मका अेक बहुत बड़ा केन्द्र था। वहाँ अेक हजार मन्दिर और विहार थे। वह के विद्यार्थी विद्याध्ययनके लिये भारततककी दौड़ लगाते थे। चीनी लेखकोंके अनुसार कूचाका संगीत भारतसे निकला था। फा-हियेनके अनुसार वहाँ लोग संस्कृत पढ़ सकते थे। वहाँ चार हजार हीनयानी भिक्षु थे'।[1] कूचाकी लिपि भी संस्कृतसे ही मिलती-जुलती थी। चीन और भारतके बीचके देश चीनके रेशम-मार्गपर पड़ते थे। और सच पूछा जाय तो राजनैतिक और आर्थिक दृष्टिसे ये सब देश चीनके प्रभावमें थे। अिसलिये भी फा-हियेनको यही रास्ता ठीक मालूम पड़ा होगा। खोतनसे वह कश्मीर आया और फिर सिन्धके किनारे-किनारे पंजाब। अुसने भारतके तमाम प्रसिद्ध स्थानों और ज्ञान-पीठोंका भ्रमण किया। अुस समय तक बौद्ध-धर्ममें अनेक निकाय (संप्रदाय) बन चुके थे। अुनके विनय (भिक्षु-नियमग्रंथ) में काफी भेद हो चुका था। अिस लिये अुसने अनेक विहारोंमें रहकर विभिन्न निकायोंके विनयोंका अध्ययन किया। अध्ययन और मठीय जीवनके निरीक्षणके साथ-साथ वह ग्रंथ-संग्रह भी करता जाता था।

अिस प्रकार कुछ वर्षोंतक भारतमें रहनेके पश्चात् फा-हियेन ताम्रलिप्ति बन्दरगाहसे जहाजमें सवार हो लंका (लगभग ४१२ अी. में) चला गया। अुन दिनों लंका स्थविरवादी और महासांघिकोंका गढ़ था। वास्तवमें बिना लंका यात्राके अुसकी भारत-यात्रा अपूर्ण ही रहती। लंकामें भी यह कर्मठ भिक्षु अध्ययनके साथ-साथ ग्रंथ-संचयमें लगा रहा। लंकासे वह जहाज द्वारा पश्चिमी जावा पहुँचता है। अुस समयतक जावामें भारतीय लोग अच्छी तरह जम-चुके थे। अुन दिनों वहाँ पूर्णवर्मनका शासन था। फा-हियेनके कथनानुसार अुस समय जावामें ज्यादातर ब्राह्मणधर्मके माननेवाले ही थे। बौद्ध धर्मका प्रचार

[1] श्री राहुलजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष नहीं हो पाया था। वहांसे ४१३ ओी. के करीब ओक भारतीय जहाजसे वह कैंटनके लिये प्रस्थान करता है। जिस जहाजसे वह यात्रा कर रहा था अुसपर दो सौ भारतीय व्यापारी थे।[1]

फा-हियेन जब अनेक अलभ्य ग्रंथोंके साथ लंकासे ओक भारतीय व्यापारी जहाजमें यात्रा कर रहा था तब ओक दिन समुद्रमें बड़े जोरका तूफान अुठा। जहाजियोंने अिस तूफानका कारण पोथियोंको समझा और वे फा-हियेनके १५ वर्षके अिस अमूल्य संचित निधिको अमंगलकारी मान समुद्रमें फेंकना चाहते थे। सौभाग्यवश किसी तरह तूफान शांत हो गया। यदि थोड़ी देरके लिये हम फा-हियेनके हृदयमें अुस समय अुठने-वाली भावनाओंकी कल्पना करें तो कैसा लगे। फा-हियेन लंकामें दो वर्षोंतक रहा। अुसने लंकाका अच्छा वर्णन किया है। अुसके अनुसार 'लंकामें पहले मनुष्य नहीं रहते थे, राक्षस आदि ही वास करते थे। विभिन्न देशोंसे व्यापारी लोग व्यापारके लिये आते थे। और अिस तरह यह देश बसता गया। अुस समय लंकाका शासक महानाम था। अभयगिरिमें संस्थापित भगवान् बुद्धके दन्तधातुका जलूस अुसने देखा था। संभवतः भारतीय अुपदेशक कुमार काश्यप अुन दिनों लंकामें थे। अभयगिरि बिहारसे फा-हियेन संयुक्तागम और अभिधर्मप्रकरण-पादकी ओक-ओक प्रति भी ले गया था।[2]

फा-हियेनकी लंका यात्राका सिर्फ धार्मिक महत्त्व ही नहीं है। अिसी समयसे चीन और लंकाके बीच राजनैतिक सम्बन्ध भी कायम हुआ। महानामने तथा लंकाके दूसरे राजाओंने चीन सम्राटके दरबारमें अपने राजदूत भेजे। चीन वासियोंने जब अपने देशमें भिक्षुणी-संघ कायम करना चाहा तो लंकाके धर्मगुप्तकनिकायकी भिक्षुणियोंने वहाँ जाकर अुनकी मदद की।[3]

---

[1] विजनराज चटर्जी [2] बे. मा. बरूआ [3] जी. सी. मेंडिस

(अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ही" और "भी"

:श्री रामेश्वर दयाल दुबे, अेम. अे. साहित्यरत्न:

कुछ शब्द अैसे होते हैं जिनके अर्थमें बड़ा सूक्षम अन्तर होता है। जो व्यक्ति भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त करना चाहता है अुसे शब्दोंके वास्तविक अर्थ को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये वरना कभी कभी बड़ा अनर्थ हो जाता है।

ही और भी--भी अैसे ही शब्द हैं। अिन्हींके सम्बन्धमें यहाँ कुछ विवेचन किया जायगा।

केवल, मात्र, सिर्फ, ही--बहुत कुछ समानार्थक शब्द हैं। किसी व्यक्ति या वस्तु विशेषपर जोर देने के लिये अिन चारों शब्दों का प्रयोग किया जाता है। किंतु यहाँ यह न समझ लेना चाहिये कि अिनके दोहरे प्रयोगसे दोहरा जोर आ जाता है।

१. केवल राम मात्र परीक्षामें अुत्तीर्ण हुआ।

२. सिर्फ अहमद ही बम्बअी जावेगा।

अिन दोनों वाक्योंमें जोर देनेवाले शब्दों का दोहरा प्रयोग हुआ है जो व्यर्थ है। केवल अेक शब्द का प्रयोग होना पर्याप्त था। दोनों वाक्यों का शुद्ध रूप अिस प्रकार होगा:—

१. केवल राम परीक्षा में अुत्तीर्ण हुआ।

२. अहमद ही बम्बअी जावेगा।

ही—अेक अव्यय है और अिसका व्यवहार जोर देनेके लिये होता है। जिस शब्दके पीछे यह शब्द आता है अुसीपर जोर देता है। अुदाहरण से यह स्पष्ट हो जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(त) आज गोपाल रुपया दे देगा।

(थ) आज ही गोपाल रुपया दे देगा।

(द) आज गोपाल ही रुपया दे देगा।

(ध) आज गोपाल रुपया ही दे देगा।

(न) आज गोपाल रुपया दे ही देगा।

वाक्य (त) अेक साधारण वाक्य है। किसी भी शब्दपर जोर नहीं दिया गया है। वाक्य (थ) में 'आज' के बाद 'ही' जोड़ा गया है। अिसलिये आज शब्दपर जोर पड़ा है। वाक्य (थ) का अर्थ हुआ=भविष्य का अब कोअी प्रश्न ही नहीं है आज ही गोपाल रुपया दे देगा।

वाक्य (द) में गोपाल शब्दके पीछे 'ही' जोड़ा गया है अिसलिये जोर 'गोपाल' पर आ पड़ा है। अिस लिये वाक्य (द) का अर्थ हुआ=दूसरा व्यक्ति नहीं, आज गोपाल ही रुपया दे देगा।

वाक्य (ध) में 'ही' का प्रयोग 'रुपया' शब्दके पीछे हुआ है अिसलिये जोर 'रुपया' पर आ पड़ा है। अतः अिस वाक्य का अर्थ हुआ=और कोअी वस्तु नहीं, आज गोपाल रुपया ही दे देगा।

वाक्य (न) में दे क्रिया के पश्चात 'ही' आया है अिसका अर्थ हुआ= आज गोपाल रुपया दे देगा यह निश्चित है।

अूपरके अुदाहरणोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वाक्यमें 'ही' का स्थान बदल देनेसे वाक्यके अर्थमें बहुत अन्तर आ जाता है।

'ही' शब्द का प्रयोग 'अवश्य' के साथ नहीं करना चाहिये। 'अवश्य' स्वयं जोर देनेवाला शब्द है। अिसलिये:—

"अहमद अवश्य ही बम्बअी जाअेगा" वाक्य शुद्ध नहीं है। 'अवश्य' अथवा 'ही'—अेक का प्रयोग होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ही' का प्रयोग हीनता अथवा अुपेक्षा प्रकट करनेके लिये भी होता है। जैसेः—

(क) क्या मिला, चार ही रुपये न ? काम तो देखो।

यहाँ के पीछे "ही" आकर ४ संख्या की हीनता प्रकट कर रहा है।

(ख) क्या बरात आअी, दस ही तो आदमी आये।

(ग) अगर अब डाक्टर आ ही जाय तो क्या होगा।

वाक्य (ग) में 'आ' क्रियाके पश्चात 'ही' आया है। 'ही' यहाँ यह सूचित कर रहा है कि अब डाक्टर का आना बेकार है।

अभ्यास की दृष्टिसे यहाँ कुछ अशुद्ध वाक्य और अुनके शुद्ध रूप दिये जा रहे हैं।

(अशुद्ध) केवल व्यापारियों मात्र सेही चन्दा लिया जावेगा।
(शुद्ध) केवल व्यापारियों से चन्दा लिया जावेगा।
(अशुद्ध) हम सब तो सिर्फ आपपर ही निर्भर हैं।
(शुद्ध) हम सब तो आप पर ही निर्भर हैं।

नीचे यहाँ कुछ अैसे शब्द दिये जाते हैं। जिनमें ही जोड़नेसे नया रूप बन जाता हैः—

(क) (ख)	(क) (ख)
अब+ही=अभी	कब+ही=कभी
जब+ही=जभी	तब+ही=तभी
अिस+ही=अिसी	अुस+ही=अुसी
अिन+ही=अिन्हीं	अुन+ही=अुन्हीं
किन+ही=किन्हीं	जिन+ही=जिन्हीं
जिस+ही=जिसी	किस+ही=किसी
यहाँ+ही=यहीं	वहाँ+ही=वहीं
कहाँ+ही=कहीं	जहाँ+ही=जहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूंकि ख वर्गके शब्दोंमें 'ही' जुड़ी हुआी है। ही अिसलिये अिन शब्दों के साथ पुनः 'ही' नहीं जोड़ना चाहिये।

नीचे लिखे वाक्य अशुद्ध ही समझे जावेंगे :—

(च) किसी ही प्रान्तमें जाओ।

(छ) गान्धीजीने कभी ही मांस नहीं खाया।

(ज) कहीं ही बैठ जाओ।

(झ) वह अभी ही आया।

अूपर लिखे सभी वाक्यों में ही का प्रयोग अनावश्यक है।

'भी' अेक अव्यय है।

यह किसी अेक व्यक्ति या वस्तुके साथ दूसरे व्यक्ति या वस्तुका निश्चयपूर्वक होना सूचित करता है।

(प) रामके साथ लक्षमण भी वन गये।

(फ) तुम्हारे साथ मैं भी चलूंगा।

(ब) वेतनके साथ भोजन भी मिलेगा।

(भ) सजाके साथ जुरमाना भी हुआ।

अिन वाक्योंका अर्थ स्पष्ट है। वाक्य (प) का अर्थ हुआ राम अकेले वन नहीं गये अुनके साथ लक्ष्मण भी गये।

और अगर यह वाक्य अिस प्रकार होता :—

"रामके साथ लक्ष्मण ही गये"। तो अिसका अर्थ होता कि=रामके साथ और कोअी नहीं गया केवल लक्षमण गये।

अिस अुदाहरणसे यह स्पष्ट है कि 'ही' और 'भी' समानार्थी शब्द नहीं 'है', वरन अेक प्रकारसे विरोधार्थी हैं।

'ही' का अर्थ हुआ केवल वही व्यक्ति या वस्तु; जब कि 'भी' का अर्थ होता है अुनके साथ अन्य व्यक्ति या वस्तु भी।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और' के पश्चात जब 'भी' जुड़ जाता है तब "और भी" शब्दका अर्थ होता है—अधिक—विशेष जैसे ! –

(क) पानी बरसकर और भी आफत ढा रहा है।

(ख) तुम चल रहे हो तो और भी अच्छा है।

(ग) पूईके साथ खीर मिल रही है तो और भी अच्छा है।

× × ×

कभी-कभी 'भी' का प्रयोग "तक"के अर्थमें भी होता है। जैसे:—

(च) हिमालयकी ऊँची चोटियोंपर पशु तो क्या, पक्षी भी नहीं दिखाई देते।

(छ) चटनी, तरकारीकी तो बात छोड़िये, रोटीके साथ खानेके लिये दाल भी नहीं थी।

(ज) सर्व प्रथम आनेकी तो बात क्या, वह उत्तीर्ण भी नहीं हुआ।

× × ×

जहांपर आवश्यक हो, वहीं 'भी' का प्रयोग होना चाहिये। प्रायः लोग 'भी' का प्रयोग बड़ी असावधानीसे किया करते हैं जिसके कारण भाषा सदोष बन जाती है।

श्री रामचन्द्र वर्माने अपनी पुस्तक अच्छी हिन्दीमें ठीक ही लिखा है कि "'भी' लगानेकी यह प्रवृत्ति बहुत बुरी है। 'भी' के अनावश्यक प्रयोगसे जहां तक हो सके बचना चाहिये। फालतू शब्दोंका प्रयोग फालतू आदमियोंको ही शोभा देता है, समझदारोंको नहीं।"

नीचे लिखे वाक्योंमें 'भी' का प्रयोग अनावश्यक है :—

(क) तुम यह हरगिज भी नहीं ले सकते।

(ख) मैं बिल्कुल भी बात करना नहीं चाहता।

(ग) चाहे जैसे भी हो यह काम तुम करो।

अतः 'भी' के अनावश्यक प्रयोगसे बचना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेसके नये अध्यक्ष---राजर्षि टंडनजी

पं. बाबूराम मिश्र

प्रारंभिक जीवन

श्री टंडनजीने सारा जीवन देशसेवामें व्यतीत किया है। अुनका जन्म १८८२ में प्रयागमें हुआ और वहीं अुन्होंने अपना बचपन बिताया और

शिक्षा दीक्षा समाप्त की। वंग-भंगकी जागृतिने आपको प्रभावित किया और स्वदेशी आपके जीवनका अंग बन गयी। अुसी समय १९ : में आपने विदेशी चीनीका भी परित्याग कर दिया। अुस समय देशमें विदेशी चीनीकी ही भरमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती थी और अुसका प्रभाव देशकी आर्थिक अवस्थापर बहुत बुरा पड़ता था। यह लगभग २४ करोड़ रुपयोंका प्रश्न था। श्री टंडनजीने देशको गरीबीसे बचानेके लिये अुस समय विदेशी चीनीको छोड़ा और लाल शक्कर या गुड़का व्रत लेकर अपनेको गरीब देशवासियोंके साथ मिला दिया। अैसी दशामें क्या आश्चर्य है कि आज जनताने अुन्हें अपना प्रतिनिधित्व करनेके लिये चुना। श्री टंडनजी जनतामें जितने घुले-मिले हैं, अुससे जितने समीप हैं, और अुसके हृदयको जितना स्पर्श कर सकते हैं, अुतना कोअी अन्य कर सकता है अिसमें सन्देह है।

१९०५ में स्वर्गवासी गोखलेकी अध्यक्षतामें जब कांग्रेस हुअी, श्री टंडनजी अुनके अंगरक्षक नियुक्त किये गये। अुसके ६ वर्ष पूर्व जब वे केवल १७ वर्षके थे अर्थात १८९९ से स्वयंसेवकके रूपमें सार्वजनिक सेवा-कार्योंमें योग देने लगे थे और कांग्रेसके तत्कालीन कार्योंमें भी। अगले वर्ष १९०६ में वे सूरत कांग्रेसमें पहिली बार कांग्रेस प्रतिनिधि होकर गये और तबसे बराबर ही कांग्रेसमें काम करते रहे हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दीकी सेवा

कांग्रेसका तत्कालीन कार्यक्षेत्र संभवतः आपकी क्रियाशक्तिके लिये काफी नहीं था और आपने यह भी अनुमान किया कि कांग्रेसने देशके लिये जिस स्वराज्यकी कल्पनाकी है, वह तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक अुसे राष्ट्रभाषा न दी जाय। आपने अिसीलिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन को जन्म दिया और अुसके प्रधान मंत्रीके रूपमें वर्षों अुसका कार्यभार संभाला और आज भी आपके जीवनसे अुसका अभिन्न सबंध है! आज हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी जो स्थिति है, अुसका श्रेय श्री टण्डनजीके नेतृत्व को है।

श्री टण्डनजी चमड़ेके जूते नहीं पहनते। चमड़ेके जूतोंका पहनना अुन्होंने जिस घटनाके बाद छोड़ दिया है वह बहुत ही मनोरंजक है। अुन दिनों श्री टण्डनजी महामना मालवीयजीके निकट संपर्कमें रहते थे। अुन्हीं दिनों करवी (बांदा) के कुछ लोग मालवीयजीके पास आये। करवीमें अेक कसाअीखाना खुलने जा रहा था और ये लोग चाहते थे कि वहां कसाअीखाना न खुले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालवीयजीने मसविदा बनाने का काम श्री टण्डनजी को सौंप दिया और श्री टण्डनजी को जब यह मालूम हुआ कि करवीमें मांसाहारियोंकी संख्या कम होते हुओ भी केवल चमड़ेके व्यापारके लिये वैसा होने जा रहा है, तब अुन्होंने चमड़ेके जूतेका व्यवहार ही छोड़ दिया। अुन दिनों बुन्देलखंडमें अकाल था और गायों की कीमतसे ज्यादा अुनके चमड़ेकी कीमत मिल जाती थी। श्री टण्डनजी अुसी दिनसे चमड़ेका अुपयोग नहीं करते। श्री टण्डनजी अपने विचारके अितने पक्के हैं कि आप जब हाअी कोर्टमें वकालत करने लगे, तब भी वे कभी चमड़ेका जूता पहिन कर नहीं गये।

सिद्धान्तकी दृढ़ता

श्री टण्डनजीके भोजनमें नमक नहीं रहता। अुनका कहना है कि नमकसे अुस वस्तुका वास्तविक स्वाद ही नहीं रह जाता। आप दूध और घी भी नहीं खाते। साबुनका आपको शौक नहीं है, आप मिट्टी और अन्य प्राकृतिक साधनोंको पसन्द करते हैं। प्रति दिन कुछ देर धूपमें रहना आपका नियम है। खादीके मोटे वस्त्रोंकी भांति आपको भोजनमें मोटा अनाज भी रुचता है। आपको अपने राशन कार्डपर जो कुछ मिलता है, अुसीसे काम चलाते हैं। गेहूँ निपट जानेपर जौ और चनेसे न केवल अपना काम चलाते हैं वरन अपने यहाँ आये हुअ का भी अुसी से सत्कार करनेमें आपको हिचक नहीं होती! लखनअूमें अेक दिन आपके यहाँ अन्य प्रान्तोंके कुछ नेता आ गये। घरमें जो थोड़ा चावल था, वही आलुओंके साथ आतिथ्यमें अुन्हें मिला। श्री टंडनजी नियम और अनुशासनके बड़े पक्षपाती हैं और वे अेक ओर जहाँ अपने कार्डके राशनसे ही काम चलाते हैं वहाँ दूसरी ओर अन्नका अेक दाना भी बरबाद नहीं होने देते।

अुनकी यह बात भी विदित ही है कि वे अुत्तर प्रदेशीय विधान सभाके अध्यक्षपदके वेतनके रूपमें जो भारी रकम प्रतिमास पाते थे अुसे वे अपना व्यक्तिगत खर्च निकालनेके बाद लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित सर्वेण्ट आफ पीपुल्स सोसायटीको दे दिया करते थे जिसके वे गत् २२ वर्षसे अध्यक्ष हैं। अिस विधान सभाके अध्यक्षके पदपर श्री टण्डनजीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३७ से पिछले महीने तक काम किया। श्री टंडनजी महात्मा गांधीजीके सम्पर्कमें आनेके बाद असहयोग आन्दोलनमें आ गये और अपनी अच्छी खासी चलती हुआी वकालत छोड़ दी। यद्यपि घरेलू परिस्थितियाँ, अुसके अनुकूल नहीं थीं, परन्तु श्री टंडनजीने मातृभूमिके आह्वानके आगे अुनकी परवाह नहीं की और अवर्णनीय आर्थिक कष्टोंमें होते हुअे भी न विचलित हुअे और न स्वर्गवासी बजाजजीसे आर्थिक सहायता लेना ही स्वीकार किया, जिसके लिये स्वयं बजाजजीने अपने अेक मित्र द्वारा कहलाया था। पहले असहयोग आन्दोलनके बाद श्री टंडनजी कुछ समयके लिये नाभाके दीवान भी अिस शर्तपर हो गये थे कि वे जो निर्णय करें, अुनमें हस्तक्षेप न किया जाय। यद्यपि नाभाके महाराजको वैसा करनेका साहस नहीं हुआ तथापि श्री टंडनजीको न तो अुस पदका मोह बांध सका और न अुस पदका भारी वेतन ही। श्री टंडनजी स्वभावसे ही निर्लिप्त हैं। अुनमें राग-द्वेष, अभिमान, प्रपंच, और अहंभाव नहीं है। श्री टंडनजी अैसे महापुरुष हैं जिससे अुनके प्रतिद्वन्द्वी भी पूर्ण न्याय होनेका ही विश्वास करते हैं। अुनका न्याय शाब्दिक नहीं, मन, वाणी और कर्मका होता है।

सात बार जेल यात्रा

श्री टंडनजी देशके स्वाधीन होनेसे पहिले लगभग ७ बार जेल गये हैं। यद्यपि वे महात्मा गांधीके अनुयायी हैं और अुनके सत्य अेवं अहिंसाके सिद्धान्तमें अुनका पूर्ण विश्वास है फिर भी वे देशकी समस्याओंपर हमेशा ही स्वतन्त्र दृष्टिसे विचार करते रहे हैं और कितने ही मसलोंपर अुनके मौलिक विचार हैं। हिन्दी और हिन्दुस्तानीके सम्बन्धमें गांधीजीसे अुनके मतभेदकी बात पुरानी नहीं है। हिन्दीके राष्ट्रभाषा स्वीकार किये जानेके लिये अुन्होंने देशमें बाहर और विधान परिषदमें जो सेवा की है, अुसे हिन्दीके अितिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जायगा। अन्तमें अुस समय भी श्री टंडनजी अपने सिद्धान्तपर अडिग रहे और अुस दबावके बावजूद जो अुनपर पड़ सकता था। राष्ट्रभाषाके साथ तथाकथित अन्तर्राष्ट्रीय अंकोंके वे आज भी वैसे ही विरोधी हैं। अुसी तरह वे भारतके विभाजनके भी विरोधी थे और अन्त तक विरोधी रहे। जून १९४७ में जब विभाजन प्रस्ताव आल अिन्डिया कांग्रेस कमेटीमें आया, श्री टंडनजीने हर अुसके विरोधकी नेतृत्व किया था। श्री टंडनजी सिद्धान्तके व्यक्ति हैं और यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं जानते कि सिद्धान्तसे गिरना किसे कहते हैं सिर जाय तो जाय परन्तु मेरा धर्म न जाय, अिस अुच्च आदर्शके प्रतिरूप हैं श्री टंडनजी जिन्हें राष्ट्रने अपना नेता चुना है।

कांग्रेसको वर्तमान परिस्थितिमें श्री टंडनजीके जैसे दृढ़ व्यवहारिक, सत्यनिष्ठ, अनुशासनप्रिय और निष्पक्ष नेतृत्वकी आवश्यकता थी जो लोकसेवकोंमें मची हुअी आपाधापीको रोककर न केवल कांग्रेसकी प्रतिष्ठा बढ़ा सके बल्कि कांग्रेसकी शक्तियोंका संचालन अिस ढंगसे कर सके कि अुससे देशकी सत्ताको स्फूर्ति और शक्ति मिले और अुससे जनताका वास्तविक हित हो। प्रतिनिधियोंने ठीक ही यह मानकर श्री टंडनजीको निर्वाचित किया है कि अुनके नेतृत्वमें कांग्रेसको नया जीवन मिलेगा और निश्चय ही खोअी हुअी प्रतिष्ठा मिलेगी। त्याग, तप और सत्यनिष्ठामें सूर्यकी किरणों अैसी शक्ति होती कि अुनकी सामूहिक क्रियाके आगे स्वार्थ, भ्रष्टाचार और अकर्मण्यता आप ही अपना मार्ग खोजने लग जाती है।

—'भारत'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गेहूँ और गुलाब'

श्री शीलभद्र साहित्यरत्न

"गेहूँ और गुलाब" हिन्दीके यशस्वी शब्दशिल्पी श्री रामवृक्ष बेनीपुरीके १९ शब्दचित्रोंका संकलन है। पुस्तकके मुखपृष्ठपर सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री अिन्द्रदुग्गड़के चित्र तो हैं ही, अिसके अतिरिक्त अुन्हींके प्रायः प्रत्येक शब्द-चित्रके साथ लगभग अुतने ही रेखाचित्र भी दिये गये हैं।

श्री बेनीपुरीने चलती-फिरती चिड़ियोंके हूबहू फोटो अुतारनेवाले कलाकारकी तरह समाजके चलते फिरते सजीव प्राणियोंका मांसल चित्र अपनी मँजी हुअी कलमसे अिस ग्रंथमें प्रस्तुत किया है। अुनकी "गेहूँ और गुलाब" शीर्षक रचना अूपर-अूपरसे कुछ अैसी लगती है कि अुसमें संभवतः वर्तमान भौतिकवादी (साम्यवादी) आन्दोलनके विरुद्ध अुन्होंने कोअी नया नारा दिया हो। पर बात अैसी नहीं है। वर्तमान पूँजीवादकी तुलना अुन्होंने राक्षसत्वसे की है। जो राक्षसत्व, बेनीपुरीके शब्दोंमें 'राक्षसता'—"रक्त पीती थी अभक्ष खाती थी"। और दूसरोंका शोषण-पीड़न ही जिसका अुद्देश्य था। आपका कहना है कि गेहूँकी दुनिया अर्थात् भौतिकताकी माया अब खत्म होने जा रही है; "जा आर्थिक रूपमें रक्त पीती रही राजनीतिक रूपमें रक्तकी धारा बहाती रही।" और अब गुलाबकी दुनिया—संस्कृतिका संसार—आनेही वाला है। अुस संसारमें पेटपर संस्कृतिकी विजय होगी—गेहूँपर गुलाबकी। वस्तुतः यहाँ कलाकारने जाने या अनजाने अुसी विचारधाराको अपनी कल्पना द्वारा चित्रित किया है; जो अिस युगके बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय आदर्शके लिये जूझ रही है। और जिस विचारधाराका कहना है कि हमारी संस्कृति सामंती संस्कृति और पूँजीवादी सभ्यतासे अधिक सुरुचिपूर्ण होगी अधिक संयमशील। अुसमें न गेहूँके लिये हाहाकार मचा रहेगा और न गुलाब विलासिताका प्रतीक बनेगा। वह समाज धरती परही दूसरा स्वर्ग चाहे भलेही न बसा सके; पर वह मनुष्यको नग्न बुभुक्षाकी जड़तासे और विलासिता पूर्ण राक्षसत्वसे अूपर ले जायगा, अुसकी प्रवृत्तियोंको अूर्द्धगामी बना सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यमें अिसी सत्यको साकार करनेका स्वप्न प्रगतिशील साहित्यकार भी देख रहे हैं—अिसीके लिये तो वे भी प्रयत्न कर रहे हैं। यहाँ चलकर यदि समाजवादी और साम्यवादी कलाकार अेक ही स्तरपर पहुँच जाते हैं तो अिसमें कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है। यदि कोअी आश्चर्यकी बात हो सकती है; और है भी तो यही कि लोग यह क्यों नहीं समझ पाते कि राजनीतिके क्षेत्रमें दलबंदीके नामपर नअी-नअी गुटबंदियाँ की जा सकती हैं, परन्तु साहित्यके मंदिरमें और सांस्कृतिक-क्षेत्रमें साम्यवाद और समाजवादके नामपर कोअी विभाजक रेखा खींच सकना असंभव-सा है।

"जहाज जा रहा है" अिस संग्रहका दूसरा शब्दचित्र है। गंगाके पुलिनपर कलाकार खड़ा है। अगाध जलराशिपर जहाज जा रहा है। अुसकी अूपरी मंजिलपर कुछ बाबू चहल-कदमी कर रहे हैं और कुछ आराम कुर्सीपर लेटे हैं। और नीचे, निचले खानेमें, थर्ड क्लासमें, लोग खचा-खच भरे हैं—पिस रहे हैं भीड़-भाड़में। यही तो आजके समाजका सही और सजीव चित्र है। गंगामें अेक सड़ी लाश पानीपर तैर रही है, अूपर अेक कौआ अुसपर बैठनेके लिये हवामें पर तोल रहा है। दूसरी ओर पानी भरनेको काँखमें कलसी लिये तुरत आअी युवती भय-त्रस्त दृष्टिसे यह दृश्य देख रही है। जहाज जा रहा है पटनेकी अट्टालिकाओंपर अपना धुआँ फेंकते हुअे, अुसके अेक ओर राजधानीकी विशाल अट्टालिकाअें हैं; दूसरी ओर अूँघतेसे झोपड़े, कटे खेत, अुजड़े गाँव, अधगिरे घर। सचमुच यह चित्र दर्शनीय है— प्रशंसनीय।

'चरवाहा' शीर्षक रचनाकी पंक्तियाँ भी बहुत ही अच्छी बन पड़ी हैं। अेक चरवाहा कोअी चीज भूनकर खा रहा है। गर्मी और भूखके मारे अुसे न अुसे अुगलते बनता न निगलते। अेक तरफ अुसके पेटमें बुभूक्षाकी ज्वाला है, दूसरी ओर अुसके मुँहमें तत्काल भुने पदार्थकी गर्मी। जो पानी अुसकी जीभपर लार बनकर चू रहा था वही अुसकी आँखोंसे आँसू बनकर टपक रहा है। शायद 'कफन' शीर्षक कहानीमें प्रेमचंदजीके भाव भी कुछ अिसी प्रकारके हैं!

"छब्बीस वर्ष बाद" शीर्षक रेखा-चित्रमें श्री बेनीपुरीने अेक अतीतके धुंधले रोमांसका आकर्षक चित्र अुपस्थित किया है। पर अुस रोमांसकी ट्रेजडी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठभूमिमें भी कलाकारका व्यक्तित्व निखर अुठा है। अिसी प्रकार अिस संग्रहके "नींवकी अींट", "पुरुष और प्रकृति", "ये मनोरम दृश्य", "किसको लिख रहे है आप" तथा "मीरा नाची रे" आदि शब्द-चित्र भी आकर्षक अेवं विचारोत्तेजक हैं।

अिस ग्रंथकी शैलीसे लेकर पुस्तककी छपाअी-सफाअी तकमें अेक आभिजात्य वर्गीय कलात्मक अभिरुचि प्रकट हो रही है। सर्वत्र कौशल अेवं प्रसाधनको प्रमुखता दी गअी है। अैसा प्रतीत होता है कि कलाकारने अपनी अिस रचनामें कलाको ही क्रांतिकी अपेक्षा अधिक महत्व दे डाला है। अिसे देखकर कहीं-कहीं प्रगतिवादी आलोचकोंके मनमें यह प्रश्न अुठ सकता है कि क्यों समाजवादी बेनीपुरीका कलाकार जो अब तक अपनी रचनाओंमें 'टेकनीक'पर अेक विशिष्ट प्रकारकी विचार-धाराको ही महत्व देता आ रहा था; आज शोषक और शोषित दोनोंके ही चित्रोंको तटस्थ भावसे ही देख रहा है। अुसकी नसोंका अुष्णरक्त अुसकी आँखोंमें आँसू बनकर या लाली बनकर नहीं अुतर पाता? क्यों मैक्सिम गोर्कीकी तरह स्पष्ट रूपसे बेनीपुरी शोषितोंके पक्षमें अधिक झुकेहुअे नहीं दीखते? क्यों पुराने दार्शनिकोंकी तरह तटस्थ होकर ही वे सभी वस्तुओंका विश्लेषण कर रहे हैं? क्या यह अुम्रका तकाजा है?— वार्द्धक्यकी शालीनताका? या कुछ और? अिसका अुत्तर तो अुनकी आगामी कृतियोंसे ही मिलेगा। पर अितना तो स्पष्ट है कि बेनीपुरीजी अपने अल्हड़ यौवनके क्रांतिकारीपनको अपनी अिस कृतिमें कलात्मकतासे दबाकर ही खड़े हुअे हैं। जो भी हो हम अुनकी अिस नूतन रचनाका अिसलिये स्वागत करते हैं कि अिसमें अुनके कलाकारका व्यक्तित्व ही सर्वत्र परिलक्षित होता है।

'गेहूँ और गुलाब', शब्द-चित्र, लेखक श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, रायल साअिज, पृष्ठ संख्या १२५, मूल्य ५), प्रकाशक जनवाणी प्रकाशन, १६१। १ हरिसन रोड, कलकत्ता नं ७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुर्दू लिपि

डाक्टर अैजाज हुसेन

दुनियामें झगड़ा सदा अिस बातपर होता है कि फलाँ चीज हमारी है अुसकी नहीं, लेकिन हिन्दी-अुर्दूवालोंका झगड़ा अिसके बिलकुल अुलटा है। यहां अिस बात पर झगड़ा है कि दोनों तरफसे यह कहा जा रहा है कि यह चीज हमारी नहीं तुम्हारी है, अिसको ले लो, जो चाहो करो, मगर हमारे सामनेसे हटा दो। मिसालके लिये अुर्दू जबान ही को ले लीजिये, यह असलमें हिन्दी जबानकी ही सूरत या शाख है। अिसका व्याकरण, अिसके शब्द, महावरे-कहावतें सब हिन्दी या हिन्दुस्तानी हैं अिसकी पैदायश भी यहीं हुअी। अिसके परवान चढ़ानेवाले सौ फी सदी हिन्दुस्तानी हैं मगर फिर भी हिन्दीवाले अिसे अपनानेको तैयार नहीं। कम या ज्यादा यही हाल अुर्दूवालोंका है। वह हिन्दुस्तानके होते हुये भी हिन्दीको अपनी जबान कहनेके लिये तैयारी नहीं। अिस खयालके पीछे कारण तो बहुत से हैं मगर अेक खास कारण जबानको जबान न समझनेका है। अिसको कुछ खास लोगों या खास तबकेकी मिलकियत करार देना है। अिसकी मिलती जुलती बातोंसे ज्यादा अिसकी अुन बातोंपर जोर दिया जाता है जो अेक दूसरेको अलग करती हैं। मिसालके लिये अुर्दूमें फारसी अरबीके अलफाज आ जानेकी वजहसे हिन्दीवाले अिसे हिन्दी माननेको राजी नहीं। कहते हैं यह हमारी चीज नहीं रह गयी, विदेशी न सही तो विदेशियोंकी ऐसी हो गयी है गोया किसी हिन्दुस्तानीको अगर पतलून न पहना दिया जाय तो वह हिन्दुस्तानी न रह जायगा या संस्कृतके शब्द आ जानेके कारण अुर्दूवालोंको हिन्दीको अपनी चीज न समझना अैसा ही है जैसे अिस जमानेमें किसीको गेरुआ वस्त्रमें देखकर हिन्दुस्तानी कहनेसे शर्माना। अुर्दूसे हिन्दीवालोंके वैरकी सबसे बड़ी वजह अिसका वह रूप है जिसमें यह लिखी जाती है। मेरा मतलब रस्मुलखत यानी लिपिसे है। अिसकी लिपि करीब फारसी है। अिस भेषमें अिसको हिन्दीवाले देख कर यकीन कर लेते हैं कि यह हिन्दुस्तानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं और अिस खयालके साथ ही नफरत की अेक लहर दौड़ जाती है। हाँलाकि अगर जरा भी धीरजके साथ गौर किया जाय तो यह खयाल धुअेंकी तरह फौरन आखोंसे ओझल हो जाता है। उर्दूका अिस लिपिमें होना ताज्जुबकी बात नहीं। बल्कि अेक लिहाजसे जरूरी था। जिस वक्त अिसकी पैदायश हुअी उससे बहुत पहलेसे हिन्दुस्तानमें फारसी जबान सरकारी जबान थी, अुसका जोर अितना था कि कोअी कोअी हिन्दीकी किताबें भी अिसी जबानमें अुस वक्त लिखी गयीं। जब यह जबान बोलचालसे बढ़कर लिखावटमें भी आने लगी तो सामने सबसे पहला ढाँचा फारसी जबानका मिला। अुसका रिवाज और कारोबार ज्यादा और अूँचा समझा जाता था। बहती गंगामें कौन हाथ धोना न चाहेगा? अिस नयी जबानको भी फारसी लिपिमें लिखना शुरू कर दिया गया और यह वक्तकी जरूरतोंकी पाली हुअी चीज और लोगोंके मेलजोल और अेकता की निशानी अिसी तरहसे आगे बढ़ने लगी। जबान ही पर नहीं, अुस वक्त हर मैदानमें अिरानी असर जाहिर हो रहा था। जिन्दगीकी हर हरकतमें अेक तरीका अुभर रहा था। खाने-पहनने, मिलने-जुलने, फन, मजहब, कौमियत हर अेकमें तेजीके साथ अेक तबदीली हो रही थी। नया कलचर न खालिस हिन्दुआनी था न खालिस अिसलामी। दोनोंके मेलजोल और रहन सहनका असर लेकर एक नयी तहजीब, नयी जिन्दगी सामने आ रही थी। अैसी हालतमें लोगोंकी जबान न संस्कृत रह सकती थी न फारसी, बल्कि दोनोंकी मिलावट या लगावसे नयी तहजीब, नये विचारोंको अेक नये ढंग और नयी जबानसे जाहिर करनेकी जरूरत महसूस हुअी। अिसलिये हिन्दीके ज्यादासे ज्यादा शब्द वगैरह लेकर फारसी लिपिमें लिखना शुरू कर दिया गया। अच्छा हुआ या बुरा हुआ अिसका फैसला अिस समय करना तो मुशकिल है और शायद अिसकी जरूरत भी अिस मजमूनके लिहाजसे नहीं है। हमको तो अिस वक्त यह देखना है कि अिस समय उर्दू जिस लिपिमें लिखी जा रही है वह हमारी जरूरत और आसानीके लिहाजसे कहांतक मुनासिब है।

कोअी जबान अपने साथ अपने लिये लिपि लेकर नहीं पैदा होती। जिस मुल्कमें पैदा होती है वहींके लिहाजसे अुसकी लिपि भी बन जाती है क्योंकि आवाज आबोहवाके असरसे हलक (कण्ठ) से निकलती है और जिस तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहांके रहनेवाले आवाज निकालते हैं और जिस किस्मके शब्द बनते हैं अुनके अदा करनेके लिये अुसी सरजमानका ढांचा ज्यादा सही और आसान भी होता है। अिस लिहाजसे अुर्दूको हिन्दुस्तानके ही किसी ढांचमें ढाला जाना चाहिये था, मगर जैसा हमने अूपर कहा है अुस वक्त चूँ कि फारसी जबानका बोलबाला था अिसलिये रिवाज और आसानीके लिहाजसे अुर्दूको यही ढाँचा दे दिया गया। लेकिन आज अिसी ढाँचेसे जबानकी तरक्कीमें रुकावटें नजर आती हैं। अुस समय प्रेस न था, हाथकी लिखाओी होती थी अिसलिये कोओी दिक्कत न थी, अब यह बात नहीं है। यह जमाना मशीनका जमाना है और जमानेके साथ हमको चलना है। जबानको भी अिसी रास्तेपर गुजरना है। फारसी खत कितना ही खूबसूरत सही मगर छपानेमें जितनी कठिनाअियाँ हैं अिनको देखकर अिस खूबसूरतीसे हाथ अुठाना पड़ता है। अैसा सोना किस कामका जिससे कदम अुठाना दुश्वार हो जाय, या खुद सुन्दरता पसीना-पसीना हो जाय। आअिये जरा गौर करके अुर्दूके मौजूदा खतकी खराबियोंपर अेक सरसरी नजर डालें और फिर सोचें कि आखिर अिसका अिलाज क्या है।

जब कभी कोओी किताब आप छपाना चाहते हैं तो सबसे पहले कातिबकी तलाश होती है और अिस खयालसे कि कहीं खत न हो जाँय, आप अिस पर जोर देते हैं कि अेक ही लिखनेवाला शुरूसे आखिरतक रहे ताकि खत न बदले लिखाओीमें फरक न आये। कातिब खतको खबसूरत रखनेके लिये हाथ रोक रोक कर कलम चलाता है जिसका नतीजा यह होता है किताब देरमें लिखी जाती है, फिर अिसके अलावा वह मजदूर पेशा होनेके कारण जिन्दगीकी और जरूरतोंकी अुलझनमें भी पड़ा रहता है, बीमार भी होता है, गल्ला भी लाता है, किसीकी तामीरदारी भी करता है। गरज कि दूसरी परेशानियोंकी वजहसे पूरा वक्त मुश्किलसे आपके काममें दे सकता है और फिर जब किसी न किसी तरह किताब खतम होती है तो फिर आप अुसकी गलतियोंको दुरुस्त करते हैं और कातिब चाकूसे अपनी लिखी हुओी अिबारतको छीलता है या कागज काटकर दूसरे कागजपर लिखकर चिप्पी लगाता है। फिर प्रूफके लिये यही कातिबका लिखा हुआ कागज पत्थरपर जाता है और जब प्रूफकी गलतियां बनायी जाती हैं तो पत्थरपर लिखनेवाला अुलटे हरूफ लिखकर गलतियां बनाता है फिर कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरी बार मशीनपर छपनेके लिये यह किताब जाती है। यह सब तरीका इतना तूफानी है कि मालूम होता है किताबका अपना अेक मुल्कसे दूसरे मुल्कका सफर करना है। जमाना जल्दी चाहता है मगर तरीका अिसकी अिजाजत नहीं देता। नतीजा यह है कि बड़ी कठिनाअियोंके बाद किताब छपती है। अिसका असर बाजारपर भी बुरा पड़ता है और किताब छापनेवाले पर भी। अब अगर यही चीज टाअिपमें छपती होती तो कितनी जल्द हो जाती। अेक कातिबसे लिखानेकी जगह आप बहुतसे कम्पोजिटर लगा सकते थे। न खत बदलनेका डर होता और न गलती दुरुस्त करनेमें कातिबको और पत्थरपर हरूफ बनाने वालेको छील छीलकर मिटा मिटाकर शब्द बदलने पड़ते। अेक गलती पर टाअिप हटाकर आसानीसे दूसरा टाअिप लगा देते और फौरन किताब छप जाती।

आप कहेंगे कि अुर्दूके टाअिप भी हैं किताबें, अखबार, रिसाले वगैराह टाअिप ही में छापे जाँय जैसे अीरान, मिस्र, अरबमें होता है। लेकिन दिक्कत यह है कि यह टाअिप अितने खूबसूरत नहीं होते जितना आप चाहते हैं। आपकी नजरोंको तकलीफ होती है अिस टाअिपमें किताब देखकर, अच्छे खूबसूरत (नस्तालीफ) टाअिप बनानेके लिये हिन्दुस्तानने लाख रुपये खर्च किये, बहुतसा वक्त दिया, फिर भी कोअी बात अच्छी न हो सकी क्योंकि मौजूदा अुर्दू लिपिमें अितने जोड़ हैं कि अुनका मिलाना और जल्दी काबीज भी कर लेना बड़ा मुश्किल काम है।

अुर्दू लिपिके अेक दूसरे दोषपर भी नजर डालिये। आवाजके लिहाजसे कुछ हरूफ अैसे हैं जो मिलते जुलते हैं। अुनका फरक आवाजसे नहीं मालूम होता मिसालके लिअे से, स्वाद, सीन और ज़ाल, जो, स्वाद, जो को ले लीजिये अिनको सुनकर आसानीसे नहीं समझमें आता कि शब्द किस हरफसे लिखा जाय, नतीजा यह होता है कि लिखावटमें काफी गलतियाँ हो जाती हैं और सही न लिखनेवाला नालायक समझा जाता है, हालाँकी लिखनेवालेसे ज्यादा लिखावटकी खराबी होती है। अिसी सिलसिलेमें अिस मुश्किलपर भी नजर डाल लीजिये कि अुर्दू लिपिमें अितने जोड़ मिलाने पड़ते हैं कि बच्चोंको हरूफ पहचाननेमें वह आसानी नहीं होती जो अलग-अलग हरूफमें होती है। मेरा मतलब नागरी और रोमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

महाराष्ट्र

जलगांव—गत ६ अगस्तको पूर्व खानदेश: राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका चुनाव हुआ। निम्नलिखित व्यक्ति पदाधिकारी चुने गये। अध्यक्ष— श्री हरिकृष्णदास शंकर मेहता (नसिराबाद), अुपाध्यक्ष — श्री गणपत भगवान चौधरी (जलगांव), मंत्री— श्री रा. बा. पाटील (जलगांव), अुपमंत्री— श्री वि. अ. देशपांडे (नसीराबाद), कोषाध्यक्ष—श्री गो. भो. वाघुळदे (जलगांव) सदस्य— श्री चां. ग. चौधरी (खिर्डी), श्री वि. गो. माळी (चोपड़े), श्री. घ. ग. नारखेड़े (विरोदें), श्री. रा. कौ. वराडे (खिर्डी), श्री. के. गो. जोशी (अमलनेर), श्री ह. आ. कोल्हे (सालवें), श्री ब. फु. रडे (भादली), श्री ध. तु. गावंडे (साफी), श्री के. चि. भंगाले (जामनेर), श्री अंबालाल रावळ (पाचोरा), श्री संतोष अर्जुन पाटील (तलोंदेदिगर), श्री ज. मु. चौधरी (जलगांव), श्री बा. पुं. मोहरीर (नसीराबाद), श्री कृ. पा. पाटील (भालोद), श्री द. गो. मोहरीर (नसीराबाद)।

भिंगार केन्द्रका प्रमाणपत्र वितरण समारोह गत २० जुलाअीको नगर म्युनिसिपल बोर्डके शिक्षणाधिकारी श्री मेहेंदळे जीकी अध्यक्षतामें हुआ। अिस अवसरपर श्री डावेर तथा श्री हिरेके भाषण हुअे। अध्यक्ष महोदयने अपने व्याख्यानमें हिन्दी सीखनेपर जोर दिया। श्री मो. व. देशमुखने श्री शिंदे (प्रारं.) तथा सौ. हीरादेवी पाटील (प्रवेश) को सर्वप्रथम अुत्तीर्ण होनेके अुपलक्ष्यमें पुरस्कृत किया।

अष्टा—अप्रैल १९५० की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरण समारोह २४-८-५० को प्रांतीय संचालक श्री पं. मु. डांगरेकी अध्यक्षतामें मनाया गया। विशेष योग्यतामें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको पारितोषिक दिये गये। तदुपरान्त हिन्दी शिक्षक श्री सा. बा. सनदेजी कें. व्य. श्री शं. ब. सुखठणकर बी. अे. बी. टी. डिप्. अेड् (अेडिंबर), श्री डी. बी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौगुले, श्री पुराणिक, श्री पवार आदिके व्याख्यान हुअे। अध्यक्ष श्री पं. मु. डांगरेने "राष्ट्रभाषाके महत्वपर" १॥ घंटा तक सारगभित भाषण दिया। श्री अे. डी. आतारके आभार प्रदर्शनके अुपरान्त राष्ट्रगीतके साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पूना—स्थानीय राष्ट्रभाषा सेवा मंदिर गत दो सालसे राष्ट्रभाषाका प्रचार करता आ रहा है। कुल मिलाकर लगभग सवा तीन सौ विद्यार्थी राष्ट्रभाषाकी गत परीक्षाओंमें सम्मिलित हुअे थे। परीक्षा फल संतोषजनक रहा—प्रारंभिक ९७, प्रवेश ९१, परिचय ९३, कोविद ६० तथा बातचीत ७६ प्रतिशत। हर सत्रमें 'सेवा मंदिर' के विद्यार्थी सर्वप्रथम आये हैं। अिस बार श्री सुरेश माधव कुळकर्णी प्रवेश परीक्षामें सर्वप्रथम अुत्तीर्ण हुअे हैं।

प्रांतीय समितिके कार्यकर्ता श्री शांताराम ना. रासने, श्री वसंत रा. काले और श्री रा. म. जाधव परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण हो चुके हैं। हार्दिक बधाअी।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा संचालित शिक्षक सनद विद्यालयकी ओरसे भी गत २० अगस्तको वनविहार टोलीका आयोजन हुआ। सुबह ७॥ बजे विद्यार्थिगण मोटरमें वानवडी पहुँचे। विद्यार्थियोंकी टोलियाँ बनाअी गअीं और अनेक तरहके खेल खेले गये। खेलके अुपरान्त श्री पु. वि. रहाळकर तथा श्री वसंतराव गद्रे द्वारा फोटो लिये गये। भोजनके बाद मनोरंजक कार्यक्रम हुआ जिसमें श्री चिं. बा. ओंकार, सुश्री शकुन्तला गाडगिल तथा श्री ग. ल. बरवेने विशेष रूपसे भाग लिया।

कोल्हापूर—श्री मद्दयानंद निःशुल्क हिंदी विद्यालयका सोलहवाँ-स्नेह-सम्मेलन और प्रमाण पत्र वितरण समारोह श्री द. मा. साळोखीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। झंडावंदनके साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। श्री वि. द. घोटणे (सदस्य महाराष्ट्र प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति) ने अपने भाषणमें विद्यालयकी गतिविधिसे अुपस्थित जनोंको परिचित कराया। तदुपरांत अध्यक्ष श्री साळोखेजीने प्रमाणपत्र वितरित किये। श्री मे. गो. लाटकर (कोविद), सौ. शकुन्तला फड़के (परिचय), श्री यशवंत भोअी (प्रवेश) तथा श्री वा. वि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठल्ये (प्रारंभिक) को प्रथम आनेके अुपलक्ष्यमें पारितोषिक प्रदान किये गये [श्री आठल्येजी महाराष्ट्र प्रान्तमें सर्वप्रथम आये हैं] मनोरंजक कार्यक्रम भी सफल रहा । श्री ठाकुर रचित " छोटूका विजयी संघ " नामक नाटक विशेष अुत्साहसे खेला गया । सम्मेलनमें सर्वश्री द. ह. शेळके, मुर्के, जी. टी. मालिक मंत्री आर्य समाज, गणपतराव पाध्ये सम्पादक " गर्जना " राव सो. माळी, वि. रा. पुगावकर आदि विशेष रूपसे अुपस्थित थे ।

गत १५ अगस्तको स्वतंत्रता दिवसके अवसरपर स्थानीय राष्ट्रभाषा सेवा-मंदिरकी ओरसे शहरके बाहर चिंचवडमें अेक वनविहार टोलीका अयोजन किया गया । डॉ गोखेलेने राष्ट्रीय झंडा फहराया । तदुपरांत विद्यार्थी अेवं शिक्षकोंके व्याख्यान हुअे । दोपहरको भोजनके अुपरान्त विद्यार्थियोंने टोलियाँ बनाकर तरह तरहके खेल खेले । मनोरंजक कार्यक्रम भी हुअे । श्री केणीजीका प्रहसन, गायन तथा श्री माणकोजीके तिलस्मी प्रयोग विशेष अुल्लेखनीय रहे । फोटोग्रूपके अुपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

मनमाड़ — यहाँके अुत्तीर्ण छात्रोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव स्थानीय सरकारी ट्रेनिंग कॉलेजके मुख्य-अध्यापक श्री. सोहनीजीकी अध्यक्षतामें गत १५ अगस्तको मनाया गया

गत २७ अगस्तको नासिक जिला समितिकी कार्यकारिणी समितिकी अेक विशेष बैठक स्थानीय जी. आय. पी. अिन्डियन हायस्कूलमें जिला समितिके कोषाध्यक्ष श्री. द. वि. केतकरजीकी अध्यक्षतामें हुअी ।

बैठकने जिला समितिके मन्त्री श्री. का. का. घुलेके (जो अेक वर्षके लिअे कांदिवली जा रहे हैं) स्थानपर नासिकके सहायक रेशनिंग अफसर श्री. सूरजमलजी सुराणा बी. अे. को नियुक्त किया । जिला समितिका कार्यालय नासिक शहरमें रखा जाना तय हुआ । श्री. शांतिभाअी जोबनपुत्राने श्री. घुलेजीकी आज तककी सेवाओंपर प्रकाश डाला तथा श्री. लेजीने सभीको अिस बातका विश्वास दिलाया कि वे शीघ्र ही वापस आकर अपना कार्य संभालेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोलापुर-- स्थानीय हिन्दी वर्गकी ओरसे महाकवि तुलसीदासकी जयन्ती वर्ग संचालक श्री. दे. द. कुलकर्णी बी. अे. (आनर्स) रा. कोविदकी अध्यक्षतामें न्यू हायस्कूलमें मनाअी गयी। गोस्वामीजीके सम्बन्धमें अनेक वक्ताओंके भाषण हुअे।

बम्बअी

राष्ट्रभाषा प्रचार मन्डलकी ओरसे गत् ४ जुलाअीको दादर कॉन्वेंट स्कूलमें राष्ट्रभाषाके वर्ग शुरू हुअे। बम्बअीके प्रचारक श्री गुन्डुरावजीने वर्गका अुद्‌घाटन करते हुअे हिन्दीके महत्वपर प्रकाश डाला और कहा हिन्दी अब अंग्रेजीका स्थान ले रही है अतः कॅथॉलिक लोगोंको हिन्दी सीख लेना चाहिये।

राष्ट्रभाषा प्रचार मंडलकी ओरसे दूसरा राष्ट्रभाषा केन्द्र स्थानीय लोअर माहीम अपर प्रायमरी म्युनिसिपल स्कूल, आगरबजारमें खोला गया है। स्थानीय मुख्याध्यापक श्री रणदिवेजीने केन्द्रका अुद्‌घाटन करते हुअे विद्यार्थियोंसे हिन्दीका ज्ञान बढ़ानेकी अपील की। सौ. मराठे अेवं श्री वासुदेव सुले भी अिस अवसरपर अुपस्थित थे।

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा दादरकी कार्यकारिणी समितिका चुनाव गत २९ जुलाअी १९५०को हुआ। निम्नलिखित व्यक्ति पदाधिकारी चुने गअे— श्री. बी. टी. परमार अध्यक्ष, श्री. परशुराम पुराणिक अुपाध्यक्ष, सौ. लीला रा. केळकर अुपाध्यक्ष, कु. सुशीला कर्णिक मन्त्री, श्री. हर्षद् भट्ट प्रचार मन्त्री, श्री. विजय पानसरे प्रबन्ध मन्त्री, श्री. रामचन्द्र वा. केळकर खजाँची, श्री. मिश्रीलाल व्यास, श्री. म. शं. गोडबोले, श्री. सी. मा. कुण्टे, कु. सुशीला गोगवेकर, कु. सुनन्दा कलबाग, श्री. चिं. वि. शेजवलकर, डॉ. शि. म. चरेगांवकर, श्री. श्रीराम पवार —सदस्य

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, दादरके तत्त्वावधानमें आयोजित 'हिन्दी साहित्य विवेचन व्याख्यान माला' के अन्तर्गत दूसरा व्याख्यान गत १५ अगस्तको 'आधुनिक हिन्दी साहित्यकी प्रगति' पर हुआ। वक्ता श्री. राजबहादुरसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक, 'नवभारत टाअिम्स' ने अपने भाषणमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्रसे लेकर आज तकके प्रमुख साहित्यिकोंकी विशेषताओंपर प्रकाश डाला। व्याख्यानके अुपरान्त राष्ट्रभाषा प्रचार सभा दादरके प्रचारकोंका सम्मेलन हुआ।

बोरीवली-- गत राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्रमें प्रांतीय अर्थ सचिव श्री. वैकुन्ठभाअी महेताकी अध्यक्षतामें हुआ। महेताजीने अपने भाषणमें हिन्दी सीखनेकी आवश्यकतापर जोर दिया। अिस अवसरपर सर्वश्री शिवशंकर ठाकर, जयवंती चेम्बुरकर, हरिचरण जी, हरिशंकर शुक्ल आदिके व्याख्यान हुअे। अुत्सवको सफल बनानेका श्रेय श्री. रतिलाल पाठक तथा श्री. सर्वदयन रावलको है।

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा भान्डुप— गत १५ अगस्तको सभाकी ओरसे पहला प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। श्री. ब. कुन्दरगिणीने अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया तथा श्री के. रामानुजयने दीक्षान्त भाषण दिया। प्रथम श्रेणीमें अुत्तीर्ण दो छात्रोंको पुरस्कृत किया गया। राष्ट्रभाषाका यह नया प्रचार केन्द्र है। स्थानीय जनताके अुत्साहको देखते हुअे यह आशा की जाती है कि केन्द्र अच्छी प्रगति करेगा।

गत १३ अगस्तको राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र वालकेश्वरका वार्षिकोत्सव बम्बअी म्यु. कारपोरेशनके सदस्य श्री भानुशंकरजी याज्ञिककी अध्यक्षतामें बड़ी धूमधामसे मनाया गया। अिस अवसरपर बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मन्त्री श्री. कान्तिलाल जोशी, श्री श्यामबहादुर सिंह केन्द्र संचालक, प्रचारक तथा विद्यार्थी काफी संख्यामें अुपस्थित थे। अध्यक्ष महोदयने अुत्तीर्ण छात्रोंको प्रमाण-पत्र वितरित किअे मनोरंजक कार्यक्रमके अुपरान्त सभा समाप्त हुअी।

गुजरात

सूरत— यहांके राष्ट्रभाषा पुस्तकालयको रूटर अफसर श्री. टी. अेस. श्रीनिवासनके विशेष प्रयत्नसे हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजीकी लगभग सात सौ रुपयेकी पुस्तकें प्राप्त हुअी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालम— यहांके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव १६ जुलाअीको वालम शिक्षा मण्डलके प्रमुख श्री. रतिलाल जोषीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। जोषीजीने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीपर सुन्दर ढंगसे प्रकाश डाला।

चांदोद— यहांके अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत ३० जुलाअीको राजवैद्य श्री. दत्तात्रय हरडीकरकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

मीयांगाम— यहां भी प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव १६ जुलाअीको बड़ौदाके जिला निरीक्षक श्री सोमाभाअी जोषीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

प्रभासपट्टन— राष्ट्रभाषा-परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण यहांके विद्यार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरण समारोह स्थानीय पुरातत्व-विभागके कार्यकर्ता श्री. चुनीलाल मानशंकर देसाअीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

वलसाड़— अिस केन्द्रमें राष्ट्रभाषा प्रचारार्थ अेक समितिकी स्थापना हो चुकी है। पदाधिकारी अिस प्रकार हैं — प्रमुखः—श्री. शिवकुमार महेशदत्त पन्डितजी, मन्त्रीः—श्री. छगनलाल डाह्याभाअी भावसार केन्द्र-व्यवस्थापकः— श्री गजानन नरहरि शास्त्री, सदस्यः— श्री. जेकीशनदास छबीलदास परीख, श्री हरकीशनदास भीखाभाओ मिस्त्री, श्री. डाह्याभाअी दयालजी देसाअी, श्री लीलावती नागरजी देसाओ।

जोडियाः— जोडिया हाअीस्कूलमें हालार विभागके शालाधिकारीकी अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया।

बीजापुर— ६ अगस्तको बीजापुर तहसील राष्ट्रभाषा प्रचारक मण्डलकी अेक सभा कांग्रेस हाअुसमें गु. प्रा. रा. प्रचार समितिके सदस्य तथा पिजवाअी हाअीस्कूलके आचार्य श्री. छगनलाल पटेलकी अध्यक्षतामें हुअी। सभामें तहसील समितिका चुनाव अिस प्रकार हुआ— अध्यक्ष श्री. छगनलालजी पटेल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुपाध्यक्ष श्री. दयाशंकर जोशी, मन्त्री श्री. नारायणभाअी पटेल, सहमन्त्री श्री. रघुनाथजी ब्रह्मभट्ट, प्रचार मन्त्री श्री. शंभुलालजी नायक। आठ अन्य सदस्य भी चुने गअे।

कुकरवाड़ा और बीजापुरमें भी प्रमाणपत्र वितरणोत्सव बड़े समारोहके साथ मनाअे गअे।

वडनगर— अिस केन्द्रके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव नवीन सर्वविद्यालयमें गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री श्री. जेठालालजी जोशीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। श्री जोशीजीने अपने भाषणमें हिन्दी-हिन्दुस्तानीके प्रश्नपर बोलते हुअे राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर प्रकाश डाला।

वाघोडिया— अिस केन्द्रके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाणपत्र वितरणोत्सव स्थानीय नगरपालिकाके अध्यक्ष श्रीयुत मंगलदास पोलाकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर स्थानीय तालुका कांग्रेस समितिके अध्यक्ष श्रीयुत फूलाभाअी सुखलाल आर्य और बड़ौदाके जिला निरीक्षक श्री. सोमालाल जोशीने भाषण दिये।

अध्यक्ष महोदयने आगामी परीक्षामें प्रथम आनेवाले परीक्षार्थियोंको पुरस्कार देनेके लिये कुछ सहायता की।

जेतपुर— अिस केन्द्रका प्रमाणपत्र वितरणोत्सव श्री. करीमभाअी हाअीस्कूलमें स्कूलके मुख्य आचार्य श्री. मार्तन्ड विष्णु सितुतकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अिस अवसरपर केन्द्र-व्यवस्थापक महोदयने राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें भाषण दिया।

राजस्थान

अजमेर—ता. १२ अगस्तको श्री रामनारायण चौधरीके सभापतित्वमें अजमेर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे प्रमाण पत्र वितरणोत्सव मनाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भमें श्री चौधरीजीका भाषण हुआ। तत्पश्चात् मंत्री श्री देवदत्त शर्माने कार्यविवरण अुपस्थित किया। प्रान्तीय संचालक पं. दौलतराम शर्मा और जयपुरके केन्द्र व्यवस्थापक श्री सेवारामजीके भाषणके अनन्तर स्थानीय म्यूनिसिपल स्कूल बोर्डके संयोजक श्री भगवतीप्रसाद बेरीने परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र दिये और चारों परीक्षाओंमें सर्वप्रथम आये हुये विद्यार्थियोंको पुरस्कृत किया। श्री रामनारायण चौधरीजीने भी सर्वप्रथम विद्यार्थियोंको २०) की पुस्तकें भेंट कीं।

सिन्ध-राजस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक पं. दौलतराम शर्माने जोधपुर, जयपुर, फूलेरा और मेड़तारोड़ केन्द्रोंका निरीक्षण किया। जयपुर और मेड़तारोड़के विद्यार्थियोंमें आपके व्याख्यान भी हुये। मेड़तारोड़में श्री चम्पारामजीने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी परीक्षाअें शुरू कर दी हैं।

जयपुर—स्थानीय सद्भावना मंडल तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे जन्माष्टमी महोत्सव टाअूनहालमें धूमधामसे मनाया गया। श्री मुनि जिनविजयजी समारोहके अध्यक्ष थे। प्रारंभमें स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री सेवारामजीका राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यकी प्रगतिपर अेक संक्षिप्त भाषण हुआ। तदन्तर विद्यालयकी बालिकाओंने अेक वादविवादका आयोजन किया। वादविवादके अुपरान्त राजपूताना विश्वविद्यालयके अुपकुलपति डाक्टर जी. अेल. महाजनी द्वारा विद्यालयकी विभिन्न परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण छात्राओंको प्रमाणपत्र वितरित किये गये। अिस अवसरपर अपने भाषणमें श्री महाजनीने हिन्दीके महत्वका अुल्लेख करते हुअे बतलाया कि विश्वविद्यालय सदैव हिन्दीको मान्यता देनेका प्रयत्न करता रहा है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न परीक्षाओंमें अिंग्लिशके स्थानपर अब हिन्दीके शिक्षाका माध्यम घोषित कर दिया गया है। अुपकुलपति महोदयके भाषणके पश्चात अध्यक्ष श्री मुनिजीका भाषण हुआ, जिसमें अुन्होंने सिन्धी तथा अहिन्दी भाषा भाषी भाओ बहनोंके हिन्दी प्रेमकी सराहना की। श्री जवाहरलालजी जैनके भाषण तथा बालिकाओंके गीतके पश्चात अुत्सवकी कार्यवाही समाप्त हुअी।

जयपुर डिवीजनमें राष्ट्रभाषाके कार्यको अच्छी तरह चलानेके लिये अेक समितिकी स्थापना हुअी है जिसके प्रधान राजस्थानके प्रमुख जनसेवक श्री जवाहरलालजी संपादक लोकवाणी चुने गये हैं। अब जयपुर डिवीजनमें राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य व्यवस्थित ढ़ंगसे होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदर्भ नागपुर

खामगांव--प्रांतीय संचालक श्री हृषीकेश शर्मा यहाँ प्रचार कार्यकी प्रगतिका निरीक्षण करने नागपुरसे आये। २२ जूनको तिलक राष्ट्रीय विद्यालयमें सायंकालीन आश्रम प्रार्थनाके अुपरान्त गत फरवरीकी राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण अुक्त विद्यालयके भाओ बहनोंको प्रमाणपत्र दिये गये। विद्यालयके प्रधान आचार्य अेवं कलाचार्य, जिला प्रचार समितिके अध्यक्ष श्री पंधे गुरुजीने और प्रांतीय संचालक शर्माजीने राष्ट्रभाषाके महत्वपर कुछ शब्द कहे।

ता. ७ जुलाईको प्रातः ८॥ बजे सरकारी कन्या हाअीस्कूलमें श्री पंधे गुरुजीकी अध्यक्षतामें खामगांव नगरके समस्त अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र वितरणार्थ अेक अच्छा समारोह मनाया गया। प्रांतीय संचालक शर्माजीने कोविद आदिमें सर्वप्रथम अुत्तीर्णोंको प्रमाणपत्र व पुरस्कार बाँटे। कन्याओंने गीत, संवाद आदिके पश्चात हिन्दीकी आवश्यकतापर भाषण दिया। श्री पंधे गुरुजीने भी राष्ट्रभाषाका तात्विक विवेचन किया। जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संगठक श्री सेवकजीने भी अंतमें राष्ट्रभाषा परीक्षाओंका आजका महत्व समझाया। अिस समारोहमें सरकारी हाअीस्कूलके हेडमास्टर श्री जहागीरदारजी, सहायक अध्यापक श्री हुडाअूजी, न्यू अिरा हाअीस्कूलके प्रधान अध्यापक श्री महाशूरजी, अुनके स्कूलके हमारे सहयोगी श्री अष्टोकरजी, अेंडेड अंजुमन हाअीस्कूलके हेडमास्टर जनाब हफीजुल्ला खान साहब और हिन्दी हाअीस्कूलके मुख्याध्यापक श्री नमाजी, देशभक्त डॉ. अेकबोटे अेम. अेल अे. आदि अुपस्थित थे। नगरके हमारे साथी प्रमाणित प्रचारक श्रीवास्तवजी, मुखियाजी म. ला. कालेजी अेवं हमारी राष्ट्रभाषा प्रचारमें सक्रिय सहयोग देनेवाली श्रीमती सौ. घारपुरे (हेडमिस्ट्रेस), श्री. सौ. कठाणे विशारद अेवं अन्य हिन्दी-प्रेमी अध्यापिकाअें यहाँके रा भा. प्रचार कार्यमें बहुत अुत्साहपूर्वक सहयोग देती हैं। अिस समारोहको सफल बनानेमें कन्याशालाकी प्रधानाध्यापिका श्रीमती चाफेकरजी, जो अब बदलकरके नागपुर डिविजनकी शाला-अिन्सपेक्टर होकर नागपुर जा रही हैं, नाम विशेष अुल्लेखनीय है। खामगांवमें सरकारी हाअीस्कूलके हेडमास्टर श्री सहस्रबुद्धेजीने अपने स्कूलके शिक्षकों और सैकड़ों विद्यार्थियोंको अधिकसे अधिक राष्ट्रभाषा-प्रेमी बनाया है। आशा है, अुनके स्थानपर आये हुअे हेडमास्टर साहब तथा हेडमिस्ट्रेस श्री. सौ. घारपुरे दोनोंका राष्ट्रभाषा प्रचारमें पूरा-पूरा सहयोग हमें मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाँदुरा-- यहाँ अेडेड् हाअीस्कूलमें अपना केन्द्र है। श्री प्रधानाध्यापक तजूरकरजी तथा केन्द्रव्यवस्थापक श्री. पांडेजी बड़े अुत्साहसे कार्य कर रहे हैं। यहाँ भी अेक प्रशस्त धर्मशालाके हालमें ता. २२ जूनको प्रमाणपत्र वितरण समारोह प्रान्तीय संचालक श्री.शर्माजीकी अध्यक्षतामें मनाया। गया अिस अवसरपर जिला संगठकने हिन्दीका महत्व समझाया। श्री. पांडेजी वयोवृद्ध केन्द्र-व्यवस्थापक हैं और बड़ी श्रद्धाके साथ स्थानीय शिवाजी हाअीस्कूल आदि संस्थाओंके सहयोगसे प्रचार कार्यको संभाले हुअे हैं। नाँदुरामें श्री. अत्तरकर राष्ट्रभाषाके अुत्साही प्रमाणित प्रचारक हैं।

जलगाँव (जामोद) तहसीलका सदर मुकाम और हमारा राष्ट्रभाषा केन्द्र है। ता. ७ जुलाअीको यहाँ सरकारी अेंग्लोवर्नाक्युलर स्कूलके हॉलमें प्रमाण-पत्र वितरण समारोहका आयोजन प्रमाणित प्रचारक अेवं न्यूअरा हाअीस्कूलके हेडमास्टर श्री वड़ोदकरजी अेम. अे ने किया था। अिस अवसर-पर नगरके अनेक वकील, सरकारी-अधिकारी वर्ग,शिक्षक अेवं नागरिक अुपस्थित थे। राष्ट्रभाषा-अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रान्तीय संचालकने प्रमाण पत्र प्रदान किये और हिन्दी राष्ट्रभाषा अेवं मराठी मातृभाषाके महत्वपर भाषण दिया। जिला संगठक श्री. भवरलाल सेवकजीने भी अपने जिलेकी प्रगतिपर प्रकाश डाला जलगाँवमें श्री. भिसीकरजी हेडमास्टर, केन्द्र-व्यवस्थापक श्री. गोडबोलेजी श्री. वड़ोदकरजी प्र. प्र. अिस केन्द्रको प्रगतिपर ले जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

परीक्षा-फल—

सितम्बर ५० की राष्ट्रभाषा-प्रचार-परीक्षाओं तथा "राष्ट्रभाषा रत्न" परीक्षाका परीक्षाफल ता. ३० नवम्बर१९५०को प्रकाशित होगा।

परीक्षार्थियोंको अपने केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे ही परीक्षा-फल प्राप्त करना चाहिये। परीक्षा-फल जाननेके लिअे आये हुअे पत्रोंका अुत्तर वर्धा कार्यालयसे न दिया जायगा।

आगामी (फरवरी / अप्रैल १९५१) परीक्षाओंकी परीक्षा-तिथिः—

राजस्थान, विदर्भ-नागपूर, अुत्कल, हैदराबाद (दक्षिण) आंध्र तथा दक्षिण आफ्रिकाके लिअे--

आगामी प्रचार परीक्षाअें ता. २४। २५ फरवरी १९५१ को होंगी।

आवेदन पत्र **केन्द्र-व्यवस्थापकके** पास देनेकी अन्तिम तारीख **२३ दिसम्बर** है।

आसाम, बंगाल, मध्य-भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बअी, कर्नाटक तथा लंकाके लिअे--

आगामी प्रचार परीक्षाअें तथा 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षा अप्रैल १९५१ के मध्यमें होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित तिथिकी सूचना--

'राष्ट्रभाषा' के आगामी अंकमें दी जायगी।

सीधे प्रार्थना-पत्र—

फ़रवरी १९५१ की परीक्षाओंके लिअे सीधे प्रार्थना-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख १५ नवम्बर है।

कोविद परीक्षामें सीधे सम्मिलित होनेके लिअे साधारणतया स्वीकृति नहीं दी जाती है।

परिचय परीक्षामें भी सीधे बैठनेपर प्रतिबन्ध लगाया गया है। योग्य व्यक्तियोंको अपने प्रार्थना-पत्र केन्द्र व्यवस्थापकके द्वारा अुत्तीर्ण परीक्षाकी मूल-प्रति (अथवा प्रमाण-पत्रकी प्रतिलिपि, जिसपर केन्द्र-व्यवस्थापकका हस्ताक्षर होना अनिवार्य है।) सहित वर्धा कार्यालय पहुँचाना चाहिअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य-पुस्तक-सूची

(फरवरी अेवं अप्रैल १९५१ के लिअे)

१. राष्ट्रभाषा प्रारंभिक परीक्षा

शुल्क :— १-८-० (प्रश्नपत्र १) अंक १०० समय ३ घंटे

(१) प्रारंभिक बोधिनी (परिवर्तित संस्करण, रा. भा. प्र.) ०-६-०
(२) राष्ट्रभाषाकी पहली पुस्तक (रा. भा. प्र. समिति) ०-६-०
(३) राष्ट्रभाषा दूसरी पुस्तक (,, ,, ,,) ०-७-६
(४) अुड़ते जुगनू (,, ,, ,,) ०-८-०
(५) रा. भा. का सरल व्याकरण भाग १ (,,) ०-१०-०

२. राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षा

शुल्क— २-८-० (प्रश्नपत्र २) प्रत्येक प्रश्न-पत्र ३ घंटे

पहला प्रश्नपत्र—गद्य-पद्य पूर्णांक १००

(१) राष्ट्रभाषा तीसरी पुस्तक (प्रचार समिति, वर्धा) ०-७-६
(२) गुलदस्ता भाग १ (,,) ०-६-०

नीचे लिखी कवितायें छोड़कर:—

१. धीर नर, २. बालककी कल्पना, ३. चाह, ४. अुठो जागो, ५. तेरी छबि, ६. हमेशा प्रेमकी रट हो जबाँ पर।

दूसरा प्रश्न-पत्र— (कहानी, पत्र, निबन्ध-व्याकरण, मुहावरे तथा अनुवाद) पूर्णांक १००

(१) कहानी संग्रह भाग १ (परिवर्तित संस्करण, १९५१) ०-६-०
(२) सरलरचना और पत्रलेखन (प्रचार समिति वर्धा) ०-६-०
(३) राष्ट्रभाषाका सरल व्याकरण भाग १ (,,) ०-१०-०
(४) मुहावरे और कहावतें (,,) ०-१२-०

३–राष्ट्रभाषा परिचय परीक्षा

(प्रश्नपत्र ३)

शुल्क— ३-८-० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पहला प्रश्नपत्र—पद्य— पूर्णांक-१००

(१) पंचवटी (श्री मैथिलीशरण गुप्त) ०-६-०
(२) गुलदस्ता भाग २ (प्रचार समिति, वर्धा) ०-८-०

नीचे लिखी कवितायें छोड़कर—

१. प्रार्थना, २. प्रियतम, ३. आप बचा लूं अपने:तअीं, ४. परिचय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. सरसोंका सौजन्य, ६. कुतुबमीनार, ७. मेरा निश्चय, ८. जननी, ९. अभिलाषा।

दूसरा प्रश्नपत्र—गद्य, नाटक तथा कहानी पूर्णांक १००

(१) चलती हिन्दी	(प्रचार समिति, वर्धा)	०-१२-०
(२) रक्षा बन्धन	(श्रीहरिकृष्ण प्रेमी)	१-१-०
(३) कहानी संग्रह भाग २ परिवर्तित संस्करण, १९४९		०-१२-०

तीसरा प्रश्नपत्र— (निबन्ध, व्याकरण, मुहावरे, अनुवाद और पत्रलेखन)

सहायक पुस्तकें

(१) मुहावरे और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा)	०-१२-०
(२) रा भा. का सरल व्याकरण भाग २	०-१२-०
(३) निबन्ध प्रबोध	२-४-०

४. राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा

(प्रश्नपत्र ४, लेखन-कार्य और मौखिक परीक्षा)

शुल्क— ६-०-० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पहला प्रश्नपत्र—पद्य पूर्णांक १००

(१) जयद्रथ-वध	(श्री मैथिलीशरण गुप्त)	०-१२-०
(२) गुलदस्ता भाग ३	(प्रचार समिति, वर्धा)	०-१२-०

नीचे लिखी कविताऍं छोड़कर—

१. कबीरदासजीका तीसरा पद, "झीनी झीनी बीनी चदरिया"।

२. तुलसीदासजीका 'विजय रथ' ३. 'जय जय प्यारा भारत देश'।

४. विधवा, ५. जगत अुबारो, ६. ग्राम, ७. अुर्दू पद्यमेंसे 'चुने फूल'।

दूसरा प्रश्न-पत्र—(गद्य, नाटक, और कहानी) पूर्णांक १००

(१) कहानी संग्रह भाग ३	परिवर्तित संस्करण	०-१२-०
	अथवा	
पुराना संस्करण	(प्रचार समिति, वर्धा)	
(२) शाहजहाँ	(श्री द्विजेन्द्रलाल राय)	०-१-८
(३) पाँच अेकांकी	(प्रचार समिति, वर्धा)	१-०-०
(४) आधुनिक गद्य संग्रह	(प्रचार समिति, वर्धा)	१-८-०

तीसरा प्रश्नपत्र—(शीघ्रवाचन, मुहावरे, व्याकरण, निबंध, अनुवाद) पूर्णांक १००

(१) निशागीत	(श्री अन्नत गोपाल शेवडे)	२-०-०
(२) आत्म-कथा	(गांधीजी : संक्षिप्त संस्करण)	१-८-०
(३) गोदान	(श्री प्रेमचंद संक्षिप्त संस्करण)	४-०-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) मुहावरे और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा) ०-१२-०
(५) संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण १-८-०

चौथा प्रश्नपत्रः—(हिन्दी भाषा तथा साहित्यका अितिहास, समालोचना और सामान्य ज्ञान)

पूर्णांक १००

(१) हिन्दी भाषा और लिपि (श्री धीरेन्द्र वर्मा) १-०-०
(२) हिन्दी साहित्यका संक्षिप्त अितिहास (नन्ददुलारे वाजपेयी) १-०-०

अथवा

हिन्दी साहित्यका अितिहास (व्रजरत्नदास) १-४-०

समालोचना ज्ञानके लियेः—

साहित्यका साथी (रा. भा. प्रचार समिति) १-८-०

सामान्य-ज्ञानके लिअे नीचे दिये साहित्यसे सहायता लीजा सकती है—

१. हिन्दुस्थानकी समस्यायें (जवाहरलाल नेहरू) ३-०-०
२. आजकी समस्यायें (राहुल सांकृत्यायन) ०-१२-०
३. हिन्दीके साप्ताहिक समाचार पत्र, मासिक-पत्र पत्रिकाअें, समितिका मुखपत्र 'राष्ट्रभाषा,

मौखिक परीक्षा १०० अंककी होगी।

(हस्तलिखित पठन वाचन ३० अंक, कंठस्थ गद्य पद्य २० अंक और मौखिक बातें ५० अंक)

कोविद परीक्षाके लिये लेखन कार्य स्वतंत्र रूपसे ५० अंकका रहेगा। अुसमें १८ अुत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य है। परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें कोविदके अुपयुक्त, आठ निबंध लिखेंगे। प्रत्येक निबंध कमसे कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुसे अपने शिक्षकसे जँचवाना चाहिये। परीक्षार्थी अिन आठ लेखोंको अपनी क्रम-संख्याके साथ अपने मौखिक परीक्षकके पास देंगे। निम्न-सूचीसे कोअी भी आठ निबन्ध लिखें :—

निबन्ध-सूची

(१) प्रकृति-सौन्दर्य (२) विद्यार्थियोंका अपने देशके प्रति कर्तव्य (३) पुरातन तथा आधुनिक सभ्यता : (४) निबन्ध-कला (५) हिन्दी-साहित्यकी प्रगतिमें संतोंका सहयोग। (६) हिन्दीकी पत्र पत्रिकाओंका विहंगावलोकन। (७) हमारा स्त्री समाज। (८) राष्ट्रभाषा प्रचारके कुछ ठोस सुझाव। (९) पर्यटन (१०) भारतकी वर्तमान समस्यायें (११) सच्चरित्रता (१२) शिक्षा और आचरण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	कमांक	स्थान
बंगाल	श्री० मणिलालजी गुप्त	२२२२	कर्सियांग
अुत्कल	,, पं. वेदव्रत शास्त्री	२२२३	पलसरा
,,	,, प्राणकृष्ण स्वामी	२२२४	जगतसिंहपुर
,,	,, निमाओचरण पण्ड़ा	२२२५	पार्लाखिमिड़ी
राजस्थान	,, चन्द्रसेन दोसी	२२२६	टीमेड़ा (कु.)
गुजरात	,, शास्त्री रामेश्वरप्रसाद अेस पालीवाल	२२२७	अहमदाबाद
,,	,, करसनभाओी ल. पटेल	२२२८	झाडेश्वर
,,	,, सूरेन्द्रराय म. देसाओी	२२२९	व्यारा
,,	,, भीखालाल अं. ठक्कर	२२३०	पादरा
,,	,, बबलभाओी पु. पटेल	२२३१	रणुंज
,,	,, भद्रा लालभाओी सतिया	२२३२	अहमदाबाद
,,	,, कान्तिलाल ह. पुरोहित	२२३३	कोलवड़ा
,,	,, नारायणभाओी ह. पटेल	२२३४	विसनगर
,,	,, शंकरलाल ल. शेख	२२३५	बामणगांव
,,	,, नरसिंहभाओी गि. पटेल	२२३६	आणंद
,,	,, दशरथलाल बु. शाह	२२३७	अहमदाबाद
,,	,, तिलकमंजरी भो. शाह	२२३८	,,
,,	,, सोमालाल जे. पण्ड्या	२२३९	मेघरज
,,	,, रणछोडभाओी का. पटेल	२२४०	बावला
,,	,, शनुभाओी द्वा. पटेल	२२४१	कोसिन्द्रा
,,	,, पुरुषोत्तमभाओी छो. पटेल	२२४२	प्रतापनगर
,,	,, कुमुदराय पुरुषोत्तम शास्त्री	२२४३	चाँदोद
,,	,, प्राणशंकर शां. त्रिवेदी	२२४४	अहमदाबाद
,,	,, प्रमिला विष्णु साठे	२२४५	छोटा अुदयपुर
,,	,, अंबालाल पु. पटेल	२२४६	रामोल
,,	,, कृष्णलाल चु. लिम्बाचिया	२२४७	विसनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112530

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
गुजरात	,, पं. गौरीशंकर सा. तिवारी	२२४८	बड़ौदा
,,	,, तुलसीभाओी जे. पटेल	२२४९	वेहचराजी
,,	,, छगनलाल हरिराम ठक्कर	२२५०	तेरा
,,	,, भोलानाथ मा. चतुर्वेदी	२२५१	साबरमती
महाराष्ट्र	,, शान्तिलाल स. चौहाण	२२५२	नांदगांव
,,	,, भार्गव जगन्नाथ वैसास	२२५३	दापोली
,,	,, रामदास गोपाळ भोंगे	२२५४	शिंदखेड़ा
,,	,, जनार्दन कृ. जवळकर	२२५५	वेलगांव
,,	,, पिताम्बर पुंजो नेहते	२२५६	भालोद
,,	,, घनश्याम माधव भारवे	२२५७	हिंगोणे
,,	,, हरीभाऊ भि. भापकर	२२५८	अहमदनगर
,,	,, मनोहर गोविंद प्रधान	२२५९	पुणें
,,	,, यशोदाबाओी रघुनाथ सुतार	२२६०	नसिराबाद
,,	,, वासुदेव गोविंद आलवणी	२२६१	सातारा
,,	,, प्रभाकर शंकर मजूमदार	२२६२	जलगांव
,,	,, मुक्ता शंकर कारापुरकर	२२६३	मडगांव-गोवा
,,	,, पंढरीनाथ गिरधर तलेले	२२६४	हबर्डी
,,	,, सौ. सुशीलाबाओी कृ. पाटील	२२६५	भालोद
,,	,, बालकृष्ण पुंडलीक मोहरीर	२२६६	नसिराबाद
,,	,, काशिनाथ मयाराम पाटील	२२६७	जलगांव
,,	,, सौ. मनोरमा र. केलकर	२२६८	नांदगांव
बम्बओी	,, यशवन्त नरहर पण्डित	२२६९	परेल
,,	,, मधुसूदन अु. त्रिवेदी	२२७०	विलेपारले
,,	,, विष्णु कृष्ण अभ्यंकर	२२७१	बम्बओी ४
,,	,, भागीरथी ना. गोरडीया	२२७२	विलेपार्ले
,,	,, सौ. लीला विष्णु अभ्यंकर	२२७३	बम्बओी ४
हैद्राबाद द.	,, गणेशप्रसाद	२२७४	हैद्राबाद (द.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
हैद्राबाद द.	,, रामप्रतापजी परिहार	२२७५	लात्तुर
,,	,, रामसिया "रमेश" जयराम गुप्त	२२७६	हिंगोली
,,	,, प्रिय बन्धु शर्मा	२२७७	हैदराबाद द.
आन्ध्र	,, अेस टी. वी. श्रीनिवास दीक्षित अ.	२२७८	ब्राम्हण कोडूरु
वि. नागपुर	,, सौ. अिन्दुमति महादेव देवघरे	२२७९	अमरावती कँप
,,	,, बालकृष्ण खुंटाजी लहाने	२२८०	सिंदी बु ॥
,,	,, अन्नपूर्णा प्रल्हादराव चौधरी	२२८१	वर्धा
,,	,, शिवरतन किसनलाल पान्डे	२२८२	नान्दुरा
,,	,, पंढरीनाथ वि. डुलके	२२८३	हिंगणघाट
,,	,, विट्ठलदास चु राठी	२२८४	नांदा-गोमुख
,,	,, भाअूराव मा माण्डवकर	२२८५	वर्धा
,,	,, कमलाकर घनश्याम पाटील	२२८६	खामगांव
,,	,, लक्ष्मीप्रसाद मा. पटेल	२२८७	,,
,,	,, रंगनाथ व्यंकटेश जपे	२२८८	अकोला

भूल सुधार

गत मासकी रा. भा. में श्री० विष्णप्रसाद पुंजालाल सेवकका नाम गलतीसे दो बार छप गया है। अुनका सही क्रमांक २१५४ है, पाठक कृपया सुधार लें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
मध्यप्रदेश	चिचोडी (बड)	१६९२
हैदराबाद	शाहपुर	१६९४
,,	राजेश्वर	१६९५
,,	गुरकिट फल	१६९६
,,	संगारेड्डी	१६९७
आफ्रिका	लोरेन्सीं मार्क्वीस	१६९३

112538

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठीसे हिन्दी शब्द संग्रह

मराठी भाषा-भाषी विद्यार्थियोंको हिन्दी शब्दोंके मराठी पर्यायवाची शब्दोंकी जानकारी न होनेसे हिन्दी शब्दोंका शुद्ध प्रयोग करनेमें असुविधा होती है। अुनकी अिसी कठिनाअीको दूर करनेके लिअे हमने अुपरोक्त कोष मँगालिया है। प्रतियाँ थोड़ी ही बची हैं। जिन राष्ट्रभाषा प्रेमियोंको आवश्यकता हो, कोषकी कीमत (डाक-व्यय सहित) पेशगी भेजकर मँगा लें।

पृष्ठ संख्या ५३०

मूल्य डाक-व्यय सहित ६–४–०

मिलनेका पता —

—पुस्तक-विक्री-विभाग
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर (वर्धा)

—समितिका नया पता—

फोन नं. ४५

समितिके पोस्ट आफिसका नाम 'हिन्दीनगर' है। अिसलिये समितिका पता अब अिस प्रकार है—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर, वर्धा (म. प्र.)

भविष्यमें पत्र-व्यवहार अिसी पतेपर होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

गुरुकुल-दीपिका, विजय धौलाद

साहित्यका साथी

(नवीन परिवर्तित संस्करण)

लेखक— आचार्य पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी डी. लिट्.

'साहित्यका साथी' साहित्यके विद्यार्थियों और साहित्यकारोंका ग्रंथ है। अिसके द्वारा साहित्यके विभिन्न अंगों-अुपांगोंकी (ध्वनि, रस, रीति, अलंकार, काव्यके भेद, नाटक, अुपन्यासके तत्वोंकी विवेचना और समीक्षा शास्त्र) समीक्षाको छात्रोपयोगी बनानेका प्रयत्न किया गया है। आचार्य द्विवेदीका हृदय अेक मानवतावादी मनीषीका हृदय है। वे जहाँ काव्यकी अुपयोगिता, अुसका हृदय संवेद्य होना मानते हैं, वहीं समस्त प्राचीन काव्य शास्त्रोंके वस्तुविन्यास और रीति परंपराओंसे परिचित होनेके कारण अुसकी शैलीको भी अेक साहित्योचित कसौटीपर कसकर परखते हैं। आचार्यजीके पास अपना अेक निश्चित मत है, जिसके पीछे है अतीतका अुज्ज्वल काव्यादर्श और भविष्यका सामाजिक जीवन। वे किसी भी रचनाको आजकलके प्रभाववादी आलोचकोंकी तरह सिर्फ अूपर-अूपरसे ही न देखकर अुसे वस्तुनिष्ठ और शास्त्रीय दृष्टिसे देखते हैं तथा तह तक पहुँच जाते हैं।

मूल्य केवल— १॥)

मिलनेका पता— पुस्तक विक्री विभाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दीनगर वर्धा।

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar